आधुनिक भारत के निर्माता

सरोजिनी नायडू

तारा अली बेग

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

फाल्गुन 1902 ● मार्च 1981

प्रकाशन विभाग

मूल्य 11.50 रु०

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार पटियाला हाउस, नई दिल्ली 110001 द्वारा प्रकाशित

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस नई दिल्ली 110001
कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर बम्बई 400038
8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता 700001
एल० एल० ऑडीटोरियम, 736 अन्नासलै, मद्रास 600002
बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग अशोक राजपथ पटना - 800004
निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम - 695001
10 बी० स्टेशन रोड लखनऊ - 226004

नवदीप प्रिंटर्स 723/200 भोजपुर शाहदरा, दिल्ली 110053 द्वारा मुद्रित

भूमिका

डा० सवपल्ली राधाकृष्णन न अपने राष्ट्रपति पद क कायकाल म तथा कुमारी पद्मजा नायडू ने मुझे यह जीवनी लिखन को कहा था। उनके आग्रह और प्रोत्साहन स ही मैंने इस स्वीकार करन का साहस किया क्योकि इस विलक्षण महिला की मूलात्मा को पकड पाना और फिर उस श न्दा म निरूपित करना उतना ही असभव काय है जितना कि सूर्योदय और सूर्यास्त का वणन। इस बुनियादी बाधा के कारण जीवनीकार अधिक से अधिक यह कर सकता है कि वह एक अत्यत असामान्य जीवन की घटनाआ का वणन करता चला जाए तथा इस ग्रथमाला की मर्यादाओ को ध्यान म रखकर अपन आपको उनके उस योगदान पर केंद्रित कर दे जो उन्होन एक क्रातिकारी युग मे अपने उच्च आदर्शों बलिदानो और भव्य वक्तृत्व कौशल द्वारा इस देश को एकसूत्र में बाधने के लिए एक नेता के रूप मे किया।

यह भी कोई आसान काम नही था। प्राय लोग पत्र टिप्पणिया और ऐतिहासिक अभिलेख तथा कागज फोटो, अखबारो की फाइलें आदि नही रखते तथा व्यक्तिगत स्मृति के आधार पर भी उनके जीवन के 1919 से 1936 के उस काल के बारे मे अधिक सामग्री प्राप्त नही हो सकी जिसमें वह बबई राजनीति में अत्यधिक व्यस्त रही। अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के समस्त अभिलेख नष्ट कर दिए गए थे तथा यदि महाराष्ट्र सरकार और अमूल्य स्रोत ग्रथो द हिस्ट्री आफ द फ्रीडम मूवमेन्ट' के विद्वान सपादक श्री एच० के० पाठक से सहायता न मिली होती तो उनके जीवन का यह अध्याय वस्तुत अपूण रह जाता।

सरोजिनी नायडू के असख्य मित्र और सहयोगी थे, जिनमें से अनेक उस समय जीवित थे जब मैं उनके व्यक्तिगत सस्मरणो का सग्रह कर रही थी। मुझे समय और अतद ष्टि प्रदान करन वालो में य लोग उल्लेखनीय है—लेडी ठाकरसी, शातिबेन मोरारजी, जमनादास द्वारकादास कानजी द्वारकादास नवीन खाडवाला,

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी और लीलावती मुंशी, विट्ठलभाई झवरी, कमला देवी चट्टोपाध्याय, सुनलिनी देवी, गुनू' चट्टोपाध्याय, गाशीबेन कप्टन, जरीना और इब्राहीम करीमभाई, कुलसुम सयानी, कनल भडारी (सरोजिनी के एक समय के जेलर), डा० सतीश सन सोफिया वाडिया (जिन्होंने पी०ई०एन० के समस्त अभिलेख मुझे उपलब्ध कराए), आचाय जे०बी० कृपलानी, अरुणा आसफ अली, रेणुका र, 'मिन्नी' मुखर्जी, श्रीमती चितरजन दास, श्रीमती एन० सी० सेन, कुमारी मेरियन वारवल महारानी कूच विहार, लेडी प्रीतिमा मित्तर, श्रीमती सुषमा र और गणपति शकर दमाई। जिन लागो ने मुझे लिखित जानकारी अथवा टिप्पणियां भेजी उनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं—डा० राधाकृष्णन (यद्यपि उन्होंने जो पत्र मुझे भेजने का वादा किया था वे कभी मिले ही नही), चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, देविका रोरिक, डा० मनमोहन कौर, कोदड राव, बी० शिव राव, एस० के० पाटिल, एम० आर० मसानी, आबिद अली, रामेश्वरी नेहरू, मणि बेन पटेल हसा मेहता एम० सी० छागला, शकरलाल बक्र, सादिक अली, आदम आदिल और सरला दवी साराभाई।

सरोजिनी की बहिन गुनू' ने हैदराबाद में अपनी मृत्यु से पहले अनेक भेटो में मुझे महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। वह अपने परिवार के बारे म विविध रोचक सामग्री की खान थी और पद्मिनी सेनगुप्त द्वारा लिखी गई सरोजिनी की श्रेष्ठ जीवनी से मुझे उनके प्रारम्भिक जीवन के बार म ता बहुत सी सामग्री मिली ही, पूरक शोध का एक अद्भुत प्रारूप भी प्राप्त हुआ।

मैं पद्मजा नायडू की भी बहुत ऋणी हू। जब वह बगाल की राज्यपाल थी तथा अत्यधिक व्यस्त भी थी, उन्होंने उस समय मुझे घटो बिठाकर व्यक्तिगत सस्मरण ही नही सुनाए, वरन् उन्होंने अपनी मा के पत्रो की प्रतिलिपियां, मेरे उपयोग के लिए देश भर म बिखरे उनके पुराने मित्रो की सूचियां तथा समाचारपत्रो में प्रकाशित उनके भाषणो की कतरनें भी तयार कराइ जिनके सहारे पर मैं यह पुस्तक बहुत सीमा तक उनकी मा के शब्दो मे ही तैयार कर सकी। उन्होंने छोटी मोटी तथ्यात्मक भूलो विशेषत उनके परिवार से सबधित भूलो के निराकरण की दृष्टि से अत मे पाण्डुलिपि का अध्ययन भी किया।

मेरा एक अत्यत असाधारण साक्षात्कार सी० पी० रामास्वामी अय्यर के साथ रहा जबकि वह नब्बे वष के थे और मैं उनके देहात से एक महीने पहले ही उनसे

मिली थी। वह बहुत ही शिष्टता से पेश आए और मैंने पाया, उनकी प्रखर स्मृति अद्भुत थी। उथल-पुथल के अनेक वर्षों में सरोजिनी उनकी मित्र और सहकर्मी रही थी। उन्होंने उनके बारे में एकदम सही और कालक्रमागत जानकारी ही नहीं दी वरन् उन्होंने सरोजिनी के संपूर्ण जीवन का दृष्टा होने के नाते उनके व्यक्तित्व की गहराई में सहृदयतापूर्वक व्याख्या की।

मैं नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय के निदेशक श्री बी०आर० नन्दा की भी कृतज्ञ हूं। उन्होंने मुझे ऐसे अभिलेख दिए जो राष्ट्रीय अभिलेखागार में भी नहीं हैं और 1912 में 'बाम्बे क्रानिकल' के पिछले अंक भी दिए। उन्होंने इतिहास सम्बन्धी संभावित भूलों का पता लगाने की दृष्टि से अंतिम पाण्डुलिपि पढ़ने की भी कृपा की।

मैं अनेक लोगों की ऋणी हूं उनकी भी जिनके नाम यहां नहीं दिए जा सके हैं। इनमें विशेष रूप से मेरे पति की गणना की जा सकती है जिनकी सहायता के बिना यह पुस्तक लिख पाना असंभव था क्योंकि मेरे पति अपनी किशोरावस्था में ही सरोजिनी नायडू को अच्छी तरह जानते और उनसे स्नेह करते थे। अतः यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक जितनी मेरी है उतनी ही उनकी है। हम दोनों के लिए यह एक अप्रतिम व्यक्ति की स्मृति में किया गया स्नेहसिक्त श्रमदान रहा है।

—तारा अली बेग

प्रस्तुत पुस्तकमाला

इस पुस्तकमाला का उद्देश्य भारत की उन विभूतियो की जीवनिया प्रकाशित करना है जिनका हमारे राष्ट्रीय पुनरुत्थान एव स्वाधीनता सग्राम मे प्रधान योगदान रहा है।

यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारी वतमान तथा आने वाली पीढियो के लिए इन महान व्यक्तियो की जानकारी सहज सुलभ हो। खेद का विषय है कि कुछ अपवादो को छोडकर ऐसे महापुरुषो की प्रामाणिक जीवनिया उपलब्ध नही है। प्रस्तुत पुस्तकमाला इसी अभाव की पूर्ति की दिशा मे एक प्रयास है। हमारा विचार है कि अपने इन विख्यात नेताओ के सरल सक्षिप्त जीवन चरित अधिकारी विद्वानो से लिखवाकर प्रकाशित करें।

व्यावहारिक कठिनाइयो के कारण यह सम्भव है कि हम ऐतिहासिक कालक्रम का पालन न कर सकें। तथापि, हमे पूर्ण विश्वास है कि शीघ्र ही इस पुस्तक माला म राष्ट्रीय महत्व के सभी यशस्वी व्यक्तियो के जीवन चरित सुलभ हो जाएगे। श्री आर० आर० दिवाकर इस पुस्तकमाला के प्रधान सम्पादक हैं।

अनुक्रमणिका

सराजिनी का ज म 13 फरवरी 1879 का हुआ था। वह एक वनानिक और अग्रणी शिक्षाशास्त्री की सबसे बडी बेटी थी। उनका पारिवारिक जीवन असाधारण था। अग्रेजी साहित्य के समालोचक और लेखक आथर साइम स को उ होने अपने पिता के बारे म लिखा था

'मेरे पुरखे महान स्वप्नदप्टा, महान विद्वान और महान तपस्वी थे। मरे पिता स्वय स्वप्नदप्टा हैं, एसे महान स्वप्नदप्टा और महापुरप जिनका जीवन शानदार विफलता रहा है। मेरा विचार है कि समूचे भारत म ऐसे विद्वान वहुत अधिक नही मिलेंगे जिनका ज्ञान मेर पिता के ज्ञान की अपक्षा अधिक हो और उ ह जितना स्नेह मिला उतना कम ही लोगो को नसीब हुआ होगा। उनकी श्वेत दाढी लम्बी और घनी है और उनका चेहरा हामर जसा है। वह हँसते हैं तो आसमान सिर पर उठा लेत है। उ हान अपनी समूची सपत्ति दसरा की सहायता करने और कीमियागीरी इन दा महान उद्देश्यो पर लुटा डाली है। कि तु जैसा आपको विदित ही है यह कीमिया गीरी एक कवि की सौदय पिपासा, शाश्वत सौन्य पिपासा का ही भौतिक रूप था। स्वण के निर्माता काव्यस्रष्टा हाते है। य दो मजनहार रहस्या के प्रति विश्व की गुप्त आकाक्षा को आलोडित करते हैं और मेर पिता म सम्पूण वनानिक प्रतिभा की मूलभूत जिनासा की जो असाधारण क्षमता है वही मुझमे सादयबोध वन गई है।

अपने पिता के प्रति सरोजिनी के ये उदगार उनकी उस जीवन प्रेरणा की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति है जिसन उनकी काव्य प्रतिभा को सवारा और स्वर प्रदान किया था। कि तु सबसे अधिक महत्त्वपूण बात यह है कि उ होने पच्चीस वष की युवावस्था म यह रहस्य जान लिया था कि उनके पिता की कीमिया गीरी और उनकी अपनी कविता का स्रोत एक ही ह। अघोरनाथ की सबसे छाटी वेटी सुहासिनी न मुझे बताया कि एक दिन उनके पिता कह उठे— मिल गया मिल गया, मैंने उसे पा लिया। वास्तव म उनको सोना बनान का गुर नही वरन निम्न कोटि की धातुओ और सोने का रासायनिक भेद नात हो गया था। सरोजिनी ने शब्दा के माध्यम स वही अनुभूति प्राप्त की जो रासायनिक पदार्थों की मदद से उनके पिता को प्राप्त हुइ थी। जवाहरलाल नहरू न ठीक ही कहा

था कि सरोजिनी हमारे स्वाधीनता सघष को उच्चतर स्तरा पर ले गई ।[1] उनका यह चमत्कार बहुत रहस्यमय है शब्द ता आखिर शब्द ही होते है वक्तत्व कला एक बात है और भापा पर अधिकार बिल्कुल दूसरी । कवि शब्दो का बिम्बजाल बुन सकते हैं और विचारक उनम गहन चिंतन भर सकते है किन्तु श्रोताओ की चेतना को उ नत स्तरा तक ले जाना किसी कीमियागर के ही वश की बात है ।

जहा तक ज्ञात है 1902 मे उन्हाने पहली बार भापण दिया था । तब से जीवन भर उ होने अपने प्रभावशाली शब्दा तथा ज्वलत आत्मनिष्ठा के माध्यम मे अपने श्राताआ को मत्रमुग्ध किया । प्रत्येक बार उनके श्रोता महसूस करते कि उनकी चेतना अधिक ऊचाई तक उठ गई है, वे तल्लीन हो जात और यद्यपि वे यह नही बता सकते थे कि सराजिनी न अपने भापण म क्या कहा तथापि उन्ह लगता था कि पल भर के लिए व ऊचे स्तर पर जिए है । 1906 के अखिल भारतीय सामाजिक सम्मेलन म महिलाओ को शिक्षा स सबधित प्रस्ताव पेश करते समय सरोजिनी नायडू का भापण सुनने के बाद गाखले ने उ ह लिखा था—' मैं तुम्हे अपनी ओर मे अत्यधिक सम्मान और उत्साहपूण बधाई देता हू । तुम्हारा भापण श्रेष्ठतम काटि की बौद्धिक वक्तता से कही अधिक एक पूण कलाकृति था । हम मबने पल भर के लिए ऐसा अनुभव किया कि हम किसी उन्नत स्तर तक उठ गए हैं । '[2] रामेश्वरी नहरू ने अपनी किशोरावस्था मे ही सरोजिनी नायडू के बार म लिखा था —उन्हाने जो कुछ कहा उसका मार बताना ता सभव नही है । यह कुछ समझ मे नही आया कि वह क्या कहना चाहती थी किन्तु उन्हान जा कुछ कहा उमका ऐसा मादक प्रभाव हुआ कि श्राता अपन अस्तित्व को भूलकर उनके भापण के सुरभित सौन्य मे खो गए। वह घडी बीन गई उनका भापण समाप्त हुआ । उस समय मै छोटी थी और मेरा मस्तिष्क प्रभावो को तेजी के माथ ग्रहण करता था । मुझ पर उनके शब्दो से नशा सा छा गया और उनके शब्द जा घटा तक मेरे कानो मे गूजत रहे । मोतीलाल नेहरू और सरोजिनी नायडू दोना ने

---

1 जवाहरलाल नेहरू का सविधान सभा मे भापण

2 'गोखने द मन (गोखले का व्यक्तित्व) लेखिका—सरोजिनी नायडू, बाम्बे क्रानिकल 1915 ।

देखा कि मुझ पर कैसा गहरा प्रभाव हुआ है और वे हँस हँसकर मुझे देखते रहे।

बाद के वर्षों में महिला आन्दोलन की उत्साही समर्थक मनन मुग्धा सरोजिनी नायडू के इस उद्बोधन पर ही सार्वजनिक जीवन में उतरीं कि स्त्रियों को महिलाओं को राष्ट्र के जीवन में साझीदार होना चाहिए। उन्होंने लिखा कि सरोजिनी नायडू में श्रोताओं को एक-दूसरे ही लोक में पहुँचा देने की अनुपम शक्ति है। उनके श्रोताओं की चेतना स्वयमेव ऊँची उठ जाती है और वे अपनी दुनिया से भिन्न किसी दूसरे लोक में पहुँच जाते हैं। इस प्रकार पिता और बेटी दोनों में एक ही ज्वाला का स्पंदन होता है। पिता का जीवन भले ही सांसारिक विफलता रहा हो, बेटी की गणना भारतीय शान्तियुग के महानतम व्यक्तियों में की जाती है। भले ही अघोरनाथ चट्टोपाध्याय निम्नकोटि की धातुओं से सोना बनाने में विफल रहे हों, सरोजिनी के बचपन पर उनके स्पर्श ने सोने का ही प्रभाव डाला जिसके कारण उनका जीवन ऊँचा उठा और स्वयं उन्होंने भी अपनी स्पंदनशील मानवीयता के माध्यम से उन सब देशवासियों का जीवन ऊँचा उठाया जो उनकी प्रतिभा, उनके स्नेह और उनकी सार्वजनीन उदारता के प्रभाव में आए।

पिता की उस हँसी ने भी जो आसमान को सिर पर उठा लेती थी अत्यन्त गंभीर स्वभाव की इस बालिका पर गहरा प्रभाव डाला। उन्होंने बचपन से ही माता पिता के उस घर में पिता के हास्य विनोद की महान शक्ति का दर्शन किया था जिसमें विचारकों, कवियों और क्रांतिकारियों, सामान्य सामाजिक लोगों, संबंधियों और मित्रों के आने जाने का तांता लगा रहता था और जहाँ उनकी सौम्य माँ को इस घर के अपरिमित अतिथि सत्कार के लिए सीमित साधनों वाले एक छोटे से रसोईघर में भाँति भाँति का भोजन तैयार करना पड़ता था। उन्होंने एक मित्र को लिखा था—मुझे मृत्यु के द्वार से लौटे हुए मुश्किल से दो महीने हुए हैं। क्या मुझे खुशी नहीं होनी चाहिए? मेरे जीवन या शायद मेरे स्वभाव ने मुझे जो कुछ दिया है उस सबमें मैं हँसी को अनमोल मानती हूँ।[1]

---

1 आर्थर साइमन्स: सरोजिनी नायडू के काव्यसंग्रह 'दि गोल्डन थ्रेशोल्ड', 1905 की भूमिका से।

वह जहा भी रही हँसी की आदत ने जीवन भर उनके आसपास के वातावरण को उल्लासपूर्ण बनाए रखा। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण उनकी वह प्रतिभा थी जिसके बल पर वह मजाक मजाक म ही भावनात्मक खाइयों को पाट देती थी। 1947 म दिल्ली के एशियाई सम्ब ध सम्मेलन म उनकी सिंह गजना के बाद जब एक भाव विह्वल प्रशसिका ने उनके समीप जाकर उनस कहा—"ओह श्रीमती नायडू! आपका भाषण अदभुत था मुझे तो रुलाई आन को हो गई।" तब उन्होने उसकी ओर मुडकर विनोद किया— रुलाई आन को हो गई ? तुम्हारा क्या मतलब है ? अरे वहा तो हर कोई रो रहा था।"

स्वाधीनता के पश्चात भारत के प्रथम गवनर जनरल चक्रवर्ती राजगोपाला चार्य ने उनके बारे मे लिखा था—' सरोजिनी देवी असदिग्ध रूप से उन थोडे से लोगो मे स थी जिनम स्वाधीनता सघष के दौरानवास्तविकताओ की परखके साथ सायविनादकी क्षमता भी जुडी थी। राबट बर्नें ने उन्हे अपनी दिनकेड फकीर' नामक पुस्तक मे 'महात्मा गाधी के छोटे से दरबार की विदूषक' की पदवी दी। उनके असख्य मित्रो को उनके जीवन की ऐतिहासिक घटनाओ की अपेक्षा उनके विनाद प्रसग अधिक याद आते हैं। इन सब प्रसगो मे तथा महानता के प्रति उनके हल्के फुल्के दृष्टिकोण केपीछे उनकी गहन बौद्धिकता और मानवीयता की अतर्धारा का दशन होता है। महात्मा गाधी को तो उन्होन मिकी माउस की उपाधि दे डाली थी जो बहुत लोकप्रिय हुई। इसी अतर्धारा से प्रेरित होकर आथर साइमन्स ने लिखा था—"मुझे अभी तक किसी ऐसे व्यक्ति के अस्तित्व का बोध नही था जो बौद्धिक परिपक्वता की वैसी विस्तत भूमिका पर खडा हो जिस पर सत्रह वष की यह बालिका खडी है जिसके साथ निजी कष्टो और मानसिक उद्वेगो की चर्चा उसी तरह की जा सकती है जिस प्रकार किसी बूढी और चतुर महिला के साथ। पूव म परिपक्वता जल्दी आ जाती है। ऐसा लगता है कि यह बालिका स्त्री का पूरा जीवन जी चुकी है। लेकिन उसके पीछे कुछ और भी है जो उसका व्यक्तिगत नही है। वह उस चेतना स सबधित है जो ईसाई चेतना से कही अधिक पुरानी है। मैने उस चेतना का दशन, उसकी उस परम मानसिक शाति मे किया है, जिसके सामने प्रत्येक तुच्छ, महत्वहीन और क्षणिक उद्वेग भस्मीभूत हो जाता

है। मुझे उस चेतना पर अचरज हुआ और मैंने उसे सराहा। उसका शरीर कभी पीड़ामुक्त नहीं रहा और न ही हृदय कभी संघर्षों से मुक्त।'

साइमन्स के नाम अपने एक पत्र में सरोजिनी ने लिखा था

"आइए, मेरे साथ मार्च के सुहावने सवेरे का आनंद लीजिए। सुनहली, नीली और रुपहली छाती वाली सहस्रों छोटी छोटी चिड़ियों में जीवन की मुखर मुग्धता फूटी पड़ रही है। सब कुछ ऊष्मामय, चंचल और आवेगपूर्ण है जैसे जीवन और प्रेम की उल्लासपूर्ण तथा सतत आमंत्रणकारी वांछा में उत्कटता और निर्लज्जता आ गई हो। ये छोटी सुरीली चिड़िया ऐसी लगती हैं मानो मेरी आत्मा संगीत के रूप में साकार हो उठी हो तथा ये तेज सुगंध (चंपक और शिरीष) वायुसार में घुले हुए मेरे मनोवेग हैं। यह दहकता नीला और सुनहला आकाश तो मानो 'मैं ही हूं, मेरा वह अंश जो सतत और उद्धततापूर्वक, और हां कुछ सीमा तक जानबूझकर मेरे उस अंश पर विजय प्राप्त कर लेता है जो नसों नाड़ियों और स्नायु तंतुओं से बना है जो पीड़ित होता है और क्रंदन कर उठता है, तथा जो संभवत कल अथवा बीस वर्ष बाद मर जाएगा।"

साइमन्स आगे कहते हैं, "उनके भीतर सदा चिड़ियों की तरह हृदय में 'गीत संजोए मुक्त और स्वतन्त्र गगनचारी बनने की कामना थी। वह अत्यंत दुर्बल काया में बहुत अधिक आग लिए चल रही थीं। एक बार उन्होंने मुझे लिखा था—'एक अंधेरी रात को मैं उद्यान में खड़ी थी और मेरे बालों में जुगनू भरे हुए थे। इस स्थिति ने मुझे एक विचित्र अनुभूति से भर दिया मुझे ऐसा लगा कि मैं तनिक भी मानवी न थी परीलोक की आत्मा थी।' इटली में उन्होंने साधुओं के चेहरे ध्यान से देखे और उस क्षण उनके मन में सर्वस्व त्याग कर उनकी जैसी शांति प्राप्त करने की कामना जाग उठी और तब उन्होंने साइमन्स को लिखा।
जब हम रक्त को उष्णता प्रदान करने वाली गर्म धूप में लौट आते हैं और सड़क पर तेजी से कदम बढ़ाते हुए नर नारियों के चेहरों पर निगाह डालते हैं, उन

नाटकीय चेहरों पर जिन पर जीवन के परेशानी भरे अनुभव गुजरे हैं और अपने चिह्न छोड़ गये हैं तब हमारा हृदय भर आता है। धरती के इस रंगीन गुंजन युक्त और जीवन मानवीय जीवन का परित्याग जानबूझ कर कैसे किया जा सकता है?

किशोरावस्था में लिखे गये इस पत्र की विशेषता यह है कि इससे यह पता लगता है कि यह उस कवयित्री के जीवन में राष्ट्रीय जीवन और स्वाधीनता संघर्ष के विस्तृत रंगमंच पर कैसे उतर आई जिसमें एक अप्रकाशित कविता संग्रह की रचना हुई—जिस पर 3 अक्तूबर 1896 की तारीख में सरोजिनी चट्टोपाध्याय के हस्ताक्षर हैं गद्यगीत—नीलाकुंज[1] और क्रमश 1905, 1912 तथा 1917 में तीन कविता संग्रह प्रकाशित हुए। काव्यमय जीवन के कल्पनालोक के परित्याग और सार्वजनिक जीवन में उनके प्रवेश के अनेक कारणों का उल्लेख मिलता है किन्तु इटली से लिखा गया यह पत्र हमें इस परिवर्तन के वास्तविक कारण का बोध कराता है। वस्तुत स्वाधीनता संघर्ष की राजनीति की अपेक्षा स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मानवीय जीवन की वास्तविकता में उनकी रुचि तथा जनसाधारण की आवश्यकताओं का गहन बोध भारत को सरोजिनी नायडू की सबसे अधिक स्थायी देन है। उनके चिंतन में मानव सिद्धान्तों और आस्थाओं से सदा ऊपर रहा तथा सिद्धान्तों की संकीर्ण मांगों की अपेक्षा उन्होंने प्रेम के आदर्शों का पालन किया। क्योंकि उनमें ये गुण अत्यधिक विकसित हो चुके थे अत यह अवश्यम्भावी था कि अपने देश के राजनीतिक जीवन में उनकी भूमिका एकता के मूलतत्व पर आधारित होती। उनकी महानतम देन इसी क्षेत्र में है और इसी क्षेत्र में उन्हें अपने पिता की भांति एक शानदार विफलता का सामना करना पड़ा।

अघोरनाथ चट्टोपाध्याय के परिवार और उनकी पत्नी वरदा सुंदरी देवी के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। यह स्वाभाविक ही है क्योंकि सरोजिनी जैसा

---

1 आरकाइव्ज, नेशनल लाईब्रेरी, कलकत्ता।

व्यक्ति जब राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर लेता है तो उस वातावरण का अध्ययन करने की सहज इच्छा होती है जिसमे ऐसी प्रतिभा को पोषण मिला हो। उनके घर मे जहा कमठता और सजनात्मक चिंतन के वातावरण पर पिता का प्रभुत्व था वही घरेलू जीवन पर उनकी मदुल तथा बगला सस्कृति म पगी माँ का आधिपत्य था। उस मा के सबसे छोटे बेटे हरीन्द्रनाथने जिन्हे कुछ समालोचक उनकी सबसे बडी बहन सरोजिनी की अपेक्षा बडा कवि मानते है—अपनी माँ की आँखो का गुणगान करते हुए लिखा था कि उनमे करुणा, क्षमा और चिंतन सदा छलकता रहता था। वस्तुत उनका जीवन एक आदश हिन्दू नारी का जीवन था जो जागने से लेकर सोने तक निष्ठा से ओतप्रोत रहता है। उनकी यह निष्ठा प्रत्येक काय मे झलकती थी, भले ही वह पति के बहुमख्यक मित्रो के लिए नाना व्यजन तैयार करने के रसोईघर से सम्बन्धित होती अथवा असाधारण जीवनी शक्ति से ओतप्रोत अपने आठ बच्चो के परिवार के प्रति पूण समपण अथवा सादगी से। वह अपने पति के अच्छे भोजन के प्रति स्वस्थ रुचि सरोजिनी ने अपनी माँ की पाक कला से ही प्राप्त की थी।

उनकी सादगी ने सरोजिनी को बहुत प्रभावित किया तथा ऊच नीच का भेदभाव रखे बिना सबसे समानता का व्यवहार करने की असमान्य क्षमता प्रदान की। इस सादगी ने उन्हे एक स्पष्ट अन्तदृष्टि और शब्दाडम्बर से मुक्ति प्रदान की। वरदा सुन्दरी देवी जैसी श्रेष्ठ महिला के स्वभाव म पाखड की गुजायश ही न थी, न उन्हे घर से बाहर के जीवन मे किसी प्रकार की रुचि थी। मा का ऐसा स्वभाव बच्चे के लिए सबसे बडी सुरक्षा होता है। यदि उनम परिवार से प्रथक कोई अभिरुचि रही होगी तो सम्भवत वही उनकी कविताओ और गीतो म अभिव्यक्त होती रही होगी जिन्हे वह प्राय गाया और गुनगुनाया करती थी। हरिन्द्रनाथ कहते है कि वह दरवाजे के ऊपर वाली खिडकी म बैठकर गाया करती थी और उस समय उनकी आँखे आसुओ से डबडबाई रहती थी। सरोजिनी प्राय आधी हँसी और आधी गम्भीरता के स्वर मे कहा करती थी कि, "मैं तो मात्र कवयित्री गायिका हू।" सम्भवत यह विशेषण उन्होने मूलत उन भावना-प्रदान गीतो से लिया था जिन्हे उनकी मा अनामे अनुपम सुरीले स्वर मे गाया करती थी। शायद अनजाने मे ही मा की

वह आत्मा बालिका में प्रवश कर गई जो उन गीतो में अभिव्यक्त होती थी, जिन्हे गाते समय उनकी आखा स आसू झरने लगत थे।

गहन आतरिक बाता के अतिरिक्त उनका घर निस्सीम सक्रियता से भी परिपूर्ण था। वह एक ऐसा घर था जिसमें सामाजिक जीवन अपनी समस्त जय-पराजय लिए विचरण करता था जिसमे चुनौतिया का सामना करना होता था तथा स्वत त्रता की ज्योति सदा प्रज्ज्वलित रहती थी।

हैदराबाद के भावी भाषाविद और विद्वान अघोरनाथ न बचपन में पूर्वी बगाल के अपन पुरखा के गाव ब्रह्मनगर म पूवजो के सस्कृत पाडित्य से बहुत कुछ सस्कार ग्रहण किया था।[1] पूर्वी बगाल नदिया का देश है तथा उसके निवासिया के लिए ब्रह्मपुत्र नदी के भव्य सागर सगम का विशेष आकषण रहा है। कहत है यही 14 वष के अघोरनाथ न 9 वष की एक छोटी सी बालिका को नाव में बठे देखा था। यही बालिका बाद मे जाकर इस तरुण की पत्नी बनी जिसे उनके सबसे छोटे काव्यप्रेमी बेटे ने ब्राउनिंग के शब्दा मे 'आधी परी और आधी चिडिया कहा। अघोरनाथ की युवावस्था के बारे मे अनेक अदभुत कहानिया सुनन को मिलती है जिनसे ज्ञात होता है कि कलकत्ता विश्वविद्यालय के इस निधन तरुण छात्र न किस प्रकार पुस्तके उधार लेकर सडक के किनारे लगी लालटेना की राशनी में अध्ययन किया। उन्हे पढाई का खच स्वय उठाना पडता था, शायद इसीलिए वह केवल मेधावी विद्वान ही नही एक महान भाषा विद भी हो गए। उन्हान ग्रीक, हिब्रू फ्रेंच जमन तथा रूसी भाषाओ पर अधिकार प्राप्त कर लिया था।

जब अघोरनाथ अध्ययन के लिए विदेश गए तो उन दिना की प्रथा के अनुसार उनकी युवा पत्नी घर पर ही रही। वह केशवचन्द्र सेन के ब्रह्म समाज आश्रम मे रहकर श्रेष्ठ गहिणी बनन का प्रशिक्षण लेती रही।[2] उनके पति

---

1 अघोरनाथ चट्टोपाध्याय ले० पी० सी० राय चौधरी, अमृत बाजार पत्रिका', 25 नवम्बर 1946।

2 'सरोजिनी नायडू , ले० पदमिनी सेनगुप्त एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1966।

को गिलक्रिस्ट छात्रवृत्ति मिल गई और वह इंगलैंड चले गए। 1877 में उन्होंने हैडिनबरा विश्वविद्यालय से भौतिकी में डिग्री प्राप्त की तथा इसी दौरान रसायनशास्त्र में वेक्सटर पुरस्कार एवं होप पुरस्कार भी प्राप्त किए।[1] कहा जाता है कि विज्ञान में डाक्टरेट पाने वाले वह प्रथम भारतीय थे। इंग्लैंड से वह जर्मनी में बोन गए जहां उनकी प्रतिभा तथा गहन शोधदृष्टि को जर्मन वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया। भारत लौटने पर वह विज्ञान की सेवा में जीवन नहीं लगा पाए ठीक वैसे ही जैसे देश की पुकार ने सरोजिनी को अपना जीवन काव्य साधना के प्रति समर्पित करने का अवसर नहीं दिया। पिता और पुत्री दोनों के लिए देश की पुकार कविता अथवा विज्ञान की साधना के सुख की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

अघोरनाथ और उनकी निष्ठावान पत्नी वरदा सुंदरी देवी, दोनों ही महिला-शिक्षा के प्रबल पक्षपाती थे। उस युग में यह एक अद्भुत बात थी। 1878 में वह हैदराबाद स्कूल में अध्यापक नियुक्त हुए। वहां शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी था। बाद में वह 'न्यू हैदराबाद कालेज' के संस्थापक और प्रिंसिपल बने। वह कालेज कालांतर में 'निजाम कालेज' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अपनी पत्नी तथा कुछ मित्रों की सहायता से उन्होंने एक महिला कालेज की स्थापना की जो उस्मानिया विश्वविद्यालय से संबद्ध था।

अघोरनाथ पढ़ाने का लोभ संवरण नहीं कर पाते थे। इसी वृत्ति ने उन्हें एक प्रमुख शिक्षाशास्त्री बना दिया। उनकी नातिन पदमजा ने उनके बारे में बताया कि "अपने नाना की सबसे पहली स्मृति मेरे मन में यह है कि वह मुझे बगीचे में फूल दिखाते और उनके लैटिन नाम बोलते जाते थे। वह चाहते थे कि मैं वे नाम याद कर लूं।" अघोरनाथ का अपने बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ा वह कहा करते थे कि यदि मेरे बच्चे अपनी बुद्धि के बल पर जीवित नहीं रह सकते तो उस जीने से मरना अच्छा। एक बार सुहासिनी यह कहती हुई घर में घुसी कि मैं अपनी कक्षा में प्रथम आई हूं। सुनकर वह गंभीर हो गए और बोले—सच बेटी? क्या तुम्हें मालूम है कि सूर्य की क्या प्रकृति है? सुहासिनी ने उत्तर

---

1 आर० एम० जाम्भेकर—सरोजिनी नायडू मेमोरियल वाल्यूम, 1968।

2 सुहासिनी जाम्भेकर, 1969, खार में भेंट वार्ता।

दिया – नहीं। वह पूछने गए, वर्षा कैसे होती है ? हवा क्या है ? और जब सुहासिनी हर बार 'नहीं' दोहराती रही तो वह बोले "अपना ज्ञान बढ़ाओ। प्रथम ज्ञान की अपेक्षा बहुत सी बातें जानना अधिक महत्वपूर्ण है।" यदि भारत में अघोरनाथ सरीखे शिक्षक होते और उनके घर ऐसे खुले होते जिनमें चर्चा और परिचर्चा के द्वारा ज्ञान और विद्वत्ता विद्यार्थी के व्यावहारिक चिंतन का विषय बन जाते तो आज भारत का तरुण कितना बदला हुआ होता।

सहज ही न्यू हैदराबाद कालेज तेजी के साथ हैदराबाद का सांस्कृतिक केंद्र बन गया। और जब कक्षाएं समाप्त हो जाया करतीं तो विद्यार्थी डा० चट्टोपाध्याय के चरणों में बैठकर उनके प्रवचन ध्यानपूर्वक सुनने के लिए उनके घर पर एकत्र हो जाया करते थे। वहां आधुनिक परिवेश में स्त्रियों की स्वतंत्रता, विशेषतः उनकी आर्थिक स्वतंत्रता, बाल विवाह के प्रति वितृष्णा, विधवा विवाह के प्रोत्साहन आदि सामाजिक सुधारों की निरंतर चर्चा रहती थी। वास्तव में वहां का ज्ञानमय वातावरण प्राचीन भारत के अरण्य विश्वविद्यालयों सरीखा था जिनमें गुरु-शिष्य संबंध अनेक प्रकार के अनुशासन और निरंतर संपर्क पर आधारित होता था तथा शिक्षक वास्तव में गुरु होते थे। कालांतर में चट्टोपाध्याय गृह की इन सभाओं ने हैदराबाद की समस्त सुसंस्कृत और सक्रिय प्रतिभा को अपनी ओर खींच लिया तथा उसे डा० अघोरनाथ का दरबार कहा जाने लगा।

ये अनौपचारिक सभाएं समान चिंतन के आधार पर सहज ही सक्रिय समूहों में उभर कर सामने आने लगीं। शीघ्र ही अंजुमन ए-अखवान उस सफा (बंधुत्व समाज) का जन्म हुआ जिसका प्रयोजन देश की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान का मार्ग खोजना था। उस समय ब्रिटिश शासन संभवतः चरम उत्कर्ष पर था। अंग्रेजों ने अनेक साधनों द्वारा कानून और व्यवस्था, स्थानीयप्रशासन, राजस्व संग्रह तथा व्यापक रेलवे व्यवस्था के माध्यम से यातायात के साधनों की स्थापना कर ली थी तथा अपना शासन चलाने के लिए अंग्रेजी के माध्यम से सुप्रशिक्षित नम्र और आज्ञाकारी निम्नस्तरीय भारतीय अधिकारियों का एक वर्ग तैयार कर लिया था। ब्रिटिश अधिकारी आराम से जिंदगी बिताते थे। उनकी सेवा के लिए अनेक घरेलू नौकर चाकर रहते थे तथा

उनकी पत्नियां घर के उस लघु साम्राज्य पर शासन करती थीं। उनके मनोविनोद के लिए विशुद्ध अंग्रेजी क्लब होते थे तथा गर्मियों में वे सब नीलगिरि अथवा हिमालय की पहाड़ियों के दर्शनीय स्थलों का आनंद लूटने चले जाते थे। 19वीं शताब्दी के अंग्रेज सरकारी अधिकारियों और शिक्षकों में कुछ लोग अवश्य ऐसे थे जिन्होंने अपने ज्ञान और मानवतावादी दृष्टिकोण के द्वारा देश के विकास में भारी योगदान किया किंतु उनमें से अधिकांश इतने मेधावी न थे और वे अपने पद, सुविधा तथा सत्ता का उपभोग पूरी अहम्मन्यता के साथ करते थे।

1883 में जब हैदराबाद के दीवान सालारजंग की मृत्यु हुई तो प्रशासन के संचालन का कार्य एक परिषद को सौंपा गया जिसमें कुछ प्रमुख व्यक्ति थे। उनके अध्यक्ष स्वयं निजाम बने। उस समय हैदराबाद उस सार्वभौमिक प्रभुत्ता संधि का अंग था जो ब्रिटेन ने भारत के देशी नरेशों के साथ की थी और जिसके अंतर्गत राज्य का शासन एक ब्रिटिश रेजीडेंट की सतर्क निगाह के नीचे चलाया जाता था। उन्हीं दिनों "चादा रेलवे स्कीम" के नाम से एक ऐसा विवाद उठ खड़ा हुआ जिसके कारण अघोरनाथ को हैदराबाद से निष्कासित कर दिया गया। इस योजना के अनुसार हैदराबाद से वाडी तक की राज्य रेलवे एक ब्रिटिश कंपनी को सौंपी जानी थी जिसे वारंगल तक रेलवे लाइन बिछाने तथा दो शाखा लाइनें डालने का ठेका दिया गया था—एक भद्राचलम अथवा बेजवाडा तक और दूसरी चादा तक। यह योजना बहुत ही मनमाने ढंग से तैयार की गई थी। जनता के मन में इस बात पर रोष उमड़ रहा था कि रेलवे लाइन जैसे सार्वजनिक प्रश्न पर प्रशासन गोपनीयता बनाये हुए था। यह योजना आर्थिक दृष्टि से भी बहुत अव्यवहारिक थी। डा० अघोरनाथ और हैदराबाद कालेज के प्रिंसिपल मुल्ला अब्दुल कय्यूम ने मिलकर चादा स्कीम पर विचार करने और उससे संबंधित तथ्यों को जनता के सामने पेश करने की मांग उठाने के लिए एक समिति का गठन किया। रेजीडेंसी परिषद् से यह सहन नहीं हुआ। उसने डा० अघोरनाथ को सेवा से निलंबित कर दिया। 19 और 21 मई 1883 के 'टाइम्स आफ इंडिया' और 'दक्कन टाइम्स' गजट में यह समाचार मुखपृष्ठ पर मोटे मोटे अक्षरों में छपा था। टाइम्स ने यह समाचार भी प्रकाशित किया कि प्रख्यात विद्वान अघोरनाथ

में उसके उज्ज्वल भविष्य का विश्वास था। व यह जान गए थे कि भारत पराधीनया से अवश्य ही मुक्त होगा।

'उस सुदूर काल में मैं बहुत छोटी थी और उस समय उनके चरित्र की उत्कृष्टता तथा आस्था का महत्त्व तब स्पष्टत न समझ पाती थी, न सही तौर पर उसका मूल्याकन ही कर सकती थी। काफी समय बाद तक भी मैं यह नही सोच पाई थी कि उनके जसे लोग भले ही भारतीय पुनर्जागरण के अत्यत प्रसिद्ध अग्रदूत न हो, वे उसके प्रारभिक अग्रदूत अवश्य थे।"

अघोरनाथ ने समाज सुधार के सघप और हैदराबाद के बुद्धिजीविया में राजनीतिक चेतना के जागरण का मागदशन तो किया ही, वह उन प्रारभिक भारतीयो में से भी एक थे जिन्होंने उस राष्ट्रीय सगठन की स्थापना में सहायता दी जो आगे चलकर इडियन नेशनल काग्रेस कहलाई।[1] अब्दुल कय्यूम और रामचद्र पिल्लै के साथ मिलकर उन्होंने हैदराबाद में स्वदेशी आदोलन की जडें जमाने में मदद दी। अब्दुल कय्यूम राज्य के पैमाइश और बन्दोबस्त विभाग के अधिकारी थ। अघोरनाथ की तरह अपनी आजीविका को सकट में डालकर वह उस आदोलन को बगाल से हैदराबाद ले गए। अनेक बगाली तरुण केवल एक जोडा कपडा लेकर हैदराबाद जा पहुचे और देशभक्त लोगो में स्वदेशी वस्तुआ धोती दियासलाई साबुन, बटन आदि का प्रचार करने लगे। उस समय स्वदेशी आदोलन नया नया ही था। अत ब्रिटिश सरकार ने तब तक स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण पर प्रतिबध नही लगाया था। इन कायकर्ताओं में संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान श्रीपाद दामोदर सातवलेकर भी थे। उन्होंने अपने सस्मरणों में तरुण बगालियों और उनके गुप्त राजनीतिक कायकलाप की चर्चा की है। उन्होंने यह भी लिखा है कि अघोरनाथ ने अनेक छोटी गैरसावजनिक सभाओं की अध्यक्षता की। निश्चय ही उनमें से अनेक सभाए उनके घर में हुई होंगी जहा उनके चपल

1 डा० सैयद अब्दुल लतीफ सराजिनी नायडू ममोरियल वाल्यूम 1968

2 पी० सी राय चौधरी, अमृत बाजार पत्रिका', 25 नवम्बर, 1967

बच्चों ने गोपनीय और महत्वपूर्ण घटनाओं के उत्साह और उत्तेजन को आत्मसात करना शुरू कर दिया होगा। इन घटनाओं ने आगे जाकर उनके जीवन को संवारा।

अघोरनाथ और वरदा सुन्दरी देवी के आठ असाधारण बच्चे थे जिनकी सम्मिलित शक्ति बहुत अधिक थी। उनमें से प्रत्येक भिन्न प्रकार की प्रतिभा से सम्पन्न था तथा प्रत्येक ने दुनिया को महत्वपूर्ण देन दी। सरोजिनी का जन्म 13 फरवरी 1879 को हुआ था। वे उनमें सबसे बड़ी थी तथा सबसे अधिक प्रसिद्ध हुई। वे मूलतः उदार विचारों की थीं तथा यदि उनका जन्म इतने क्रांति काल में न हुआ होता तो वे भारतीय और विदेशी साहित्यिक क्षेत्रों में अग्रणी रही होतीं। वीरेन्द्रनाथ का जन्म 1880 में हुआ था। वह जन्मजात क्रांतिकारी थे और जहां कहीं भी जन्म होते वह क्रांति की राह अपनाते। उनके क्रियाकलाप के कारण उन्हें भारत से देश निकाला दिया गया तथा 2 सितंबर 1942 को स्तालिन युग में उनका रहस्यात्मक हृदय की गति रुक जाने से हुआ। यूरोप में उनकी मृत्यु का यह समाचार उनके परिवार को बहुत देरी से मिला। दूसरे भाई भूपेन्द्रनाथ का जन्म 1882 में हुआ था। वह हैदराबाद में सहायक महालेखा अधिकारी हो गए थे। उनका देहान्त 1933 में बम्बई में हुआ। मृणालिनी का जन्म 1883 में हुआ था। उन्हें परिवार में प्यार से गुनू कहा जाता था। उन्होंने कैम्ब्रिज से विज्ञान में आनर्स परीक्षा पास की और वह शिक्षिका बनीं। बाद में वह गंगा राम कालेज लाहौर की प्रिंसिपल हो गई थीं। उनकी छात्राएं उन्हें इतना अधिक स्नेह देती थीं कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन शिक्षा को समर्पित कर दिया तथा आजीवन अविवाहिता रहीं। सुनालिनी देवी का जन्म 1890 में हुआ था, वह एक उत्कृष्ट कलाकार और नर्तकी बनीं। उन्होंने श्री राजम के साथ विवाह किया और उनका बेटा प्रह्लाद सी० राजम अमरीका के एन आर्बर में अपनी ही संस्था में एक प्रख्यात वैज्ञानिक हुआ। रणेन्द्रनाथ का जन्म 1895 में हुआ और उनका देहांत 1959 में कैंसर से हुआ। उनकी इकलौती बेटी मृणालिनी हैदराबाद में आंध्र प्रदेश जीवन बीमा कोष की सचिव हुईं।

अघोरनाथ के सबसे छोटे तथा सबसे अधिक तेज तर्रार बेटे हरीन्द्रनाथ का जन्म 1898 में हुआ। वह कवि, कलाकार तथा नाटककार हुए। उनमें स्वच्छन्दता-

वादी कवि मूर्तिमान हो उठा। उनका इकलौता बेटा राम इजीनियर परामश दाता हुआ। राम की मा भूतपूव समाजवादी नेता कमला दवी चट्टोपाध्याय न अपना पूरा जीवन भारत की पारपरिक कला एव हस्तकौशल का पुनर्जीवित करने मे खपा दिया। इसमे जहा उह सम्मान और महत्व मिला वही देश को निर्यात का एक विशाल बाजार भी प्राप्त हो गया। सरोजिनी की सवस छोटी बहिन सुहासिनी का जम उनकी दसरी सतान पदमजा के जम के एक वप बाद 1901 में हुआ था। सुहासिनी अपने भाई वीरेद्र की तरह उत्कट साम्य वादी हुई तथा वह और उनके पति आर० एम० जाम्भेकर बबई के उपनगरी खार म रहन और काम करने लगे। सरोजिनी के भाई बहनो मे 1969 म केवल हरीद्र आर सुहासिनी जीवित बचे थे।

मणालिनी सुहासिनी और हरीद्रनाथ ने अपने बचपन की बहुत सी घट नाओ का उल्लेख किया है। सुहासिनी का बराबर यह शिकायत रही कि वह बहुत छोटी थी और उस अपनी बडी बहन के बारे म ज्यादा याद नही है। सुहासिनी जब छह वप की हुई उस समय सरोजिनी का विवाह हो चुका था और वह सावजनिक जीवन म प्रवेश कर चुकी थी। हरीद्रनाथ भी उस समय छोटे ही थे फिर भी उहाने अपनी पुस्तक 'जीवन और मैं" (लाइफ एण्ड माइसेफ) म सरोजिनी की प्रिय शैली म सजीव बिम्बो और समद्ध भाषा के माध्यम से अनेक नितात पारिवारिक घटनाओ का उल्लेख किया है।

अपने जीवन के अतिम दिना म गुनू सुनाया करती थी कि बचपन म सरो जिनी छोटे भाई बहना पर बहुत रौब जमाती थी। उहाने परिवार के छोटे सदस्या पर शासन करना अपना अधिकार ही मान लिया था तथा वह ऐसी बाता की जिम्मेदारी भी उठा लेती थी जो उनकी राय म माता पिता के काय क्षेत्र मे आती थीं। देहात से एक वप पूव 1968 म गुनू न एक घटना सुनाई थी। बात यह हुई कि अकबर हैदरी ने उनके परिवार को यह चेतावनी दी थी कि वीरेद्र के क्रातिकारी कायकलाप से सरकारी अधिकारी चौकन्ने हो गए हैं अत हो सकता है कि उसके कारण परिवार पर कोई विपत्ति टूट पडे। अकबर हैदरी न सरोजिनी से कहा कि इस बार म कुछ करो, अपन भाई को सावजनिक तौर पर अस्वीकार कर दो। अपने माता पिता को बचाने की चिंता और

लिखा है कि कम्युनिस्ट इटरनेशनल की तीसरी काग्रेस के अवसर पर वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय जी० ए० लुगानी और पी० खानखोजे ने "भारत और विश्वक्रांति" विषय पर प्रबध भेजा था जिसे कम्यूनिस्ट इण्टरनेशनल की कायसमिति और काग्रेस के पूर्वी दशो की समस्याओ से सम्बधित आयोग के सामने रखा गया था। उन्होने लेनिन के नाम एक पत्र लिखकर उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की थी। उन्होने लिखा था कि हम आशा है कि आपके पास जब समय होगा तब हमे आपसे मिलकर भारत की समस्या के बारे म बात करने का अवसर मिलेगा।

बाद म वीरेन्द्र ने स्वीकार किया कि उस प्रबन्ध के अधिकाश अश राजनीतिक दृष्टि से गलत थे फिर भी लेनिन न उत्तर दिया था। वह पत्र मार्क्सिज्म लेनिनिज्म सस्थान के केन्द्रीय दलीय सग्रहालय मे पाच सौ एक नम्बर पर सुरक्षित है। लेनिन का यह उत्तर 8 जुलाई 1921 का है। वीरेन्द्रनाथ उन दिनो सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ की विज्ञान अकादमी के अतगत भारतीय प्रजातीय विज्ञान विभाग म वरिष्ठ वैज्ञानिक के रूप म काय कर रह थे और उन्होने अकादमी की साधारण बैठक म प्रस्तुत अपने प्रतिवेदन म लेनिन के पत्र के निम्न अवतरण का हवाला दिया था—'मने आपके प्रबध को गहरी रुचि लेकर पढा है लेकिन नए प्रबध की क्यो आवश्यकता है मैं शीघ्र ही इसके बारे म आपके साथ चर्चा करूगा।"

वीरेन्द्रनाथ क्रांति के उग्र पक्ष के प्रतिनिधि थे। वह भारत नही लौटे। जमनी म उनके जीवन और कार्यों का विस्तृत विवरण बर्लिन की विज्ञान अकादेमी के डा० हर्स्ट क्रूगर न उनकी जीवनी के रूप म दिया है। स्वीडन के लेखक ईलिया एहरनबग न उन्हे महान भारतीय कहा है। भाई न जहा क्रांतिकारी राजनीतिक जीवन के अग्रिम दस्ते म विदेशो म ख्याति प्राप्त की वहिन न वहा भारत म एक सवथा भिन्न माग स प्रसिद्धि पाई। समग्रता और सजनात्मकता सरोजिनी के स्वभाव की मूल प्रवृत्तिया थी। स्वभावत वह सामजस्य और बधुत्व, शाति और प्रेम स ओतप्रोत थी तथा उन्होने अपन जीवन म रोषपूर्ण और कठोर भाषा का प्रयोग केवल मातृभूमि के प्रति होने वाले अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध ही किया।

1908 में सरोजिनी नायडू को कैसरे-हिन्द का स्वर्णपदक प्राप्त हुआ। वीरेन्द्रनाथ के जीवन और कार्यों के साथ इससे बढ़कर और क्या वैषम्य हो सकता था। उन दिनों रजीडेंसी में दी जाने वाली शानदार दावतों में उनका सामाजिक-व्यक्तित्व सबसे अधिक मुखर रहता और जिस समय मूसा नदी की भयंकर बाढ़ ने हैदराबाद के जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया तथा वहां के लोगों को अकथनीय संकटों का सामना करना पड़ा उस समय उन्होंने लेडी हैदरी के साथ मिलकर बाढ़ सहायता कार्य के लिए स्वयंसेवकों को संगठित किया। संगठन की दिशा में उनका यह पहला बड़ा प्रयास था। सरोजिनी के स्वभाव में एक बहुत बड़ा गुण यह था कि वह सब तरह के लोगों में घुलमिल जाती थीं। इस गुण के कारण उनमें जनसाधारण को साथ लेकर काम करने की क्षमता विकसित हो गई।

1891 में भारत में स्त्रियों की शिक्षा की स्थिति आज जैसी न थी और स्कूलों में तो विरले ही कोई लड़की दिखाई पड़ती थी। अघोरनाथ चट्टोपाध्याय हमेशा समय से आगे चलते थे और उनको इस बात में तनिक भी असाधारणता न लगती थी कि उनकी बारह वर्ष की बेटी वैज्ञानिक या गणितज्ञ बने। चट्टोपाध्याय परिवार में इंग्लैंड की पारिवारिक परम्पराओं के अनुसार अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाएं पढ़ाने के लिए अध्यापिकाएं होती थीं। बाद में फारसी का अध्ययन भी शुरू किया गया, लेकिन हैदराबाद में कोई हाई स्कूल न था जिसमें सरोजिनी नायडू मैट्रिकुलेशन परीक्षा की तैयारी कर सकतीं। परिणामतः उन्हें मद्रास भेजा गया। अंग्रेजी के अध्यापक उनके बारे में कहा करते थे कि सरोजिनी इतनी प्रतिभाशाली हैं कि उसने तीन वर्ष का पाठ्यक्रम एक वर्ष में पूरा कर लिया है।

बारह वर्ष की अवस्था में प्रथम श्रेणी में मैट्रिकुलेशन पास करना सरोजिनी की महान सफलता थी। निश्चय ही उनका बौद्धिक विकास अपने सहपाठियों की अपेक्षा कहीं अधिक रहा होगा। इसका कारण यह नहीं था कि उन्हें प्रकृति की ओर से अधिक बुद्धि मिली थी वरन यह था कि बचपन में ही वह विद्वत्तापूर्ण वातावरण में पली थीं। चौदह वर्ष की अवस्था तक पहुंचते पहुंचते उन्होंने अंग्रेजी के सभी प्रमुख कवियों की रचनाओं का अध्ययन कर डाला था।

ब्राउनिग शेली और टेनीसन उन्हें बहुत प्रिय थे। इससे भी बड़ी बात यह थी कि उनके परिवार में बच्चों और बड़ों के जीवन के बीच कोई दूरी न थी। घर के भीतर आए दिन होने वाली परिचर्चाओं में बच्चे भी पूरी तरह शामिल होते थे। दर्शन, विज्ञान वनस्पतिशास्त्र, कीमियागीरी गणित और राजनीति दैनिक जीवन के ऐसे ठोस अंग बन गए थे कि घर में ही ज्ञानप्राप्ति की प्रक्रिया सहज हो गई थी तथा यह विद्यालय के घिसे पिटे अध्ययन की अपेक्षा अत्यधिक आकर्षक और आनंददायी थी।

सम्भवत पिता के घर पर होने वाली इन चर्चाओं में ही सरोजिनी की भेंट डा० गोविन्दराजुलु नायडू से हुई थी। तरुण नायडू चिकित्साशास्त्र का अध्ययन करके एडिनबरा से लौटे ही थे। उनके प्रति सरोजिनी के प्रेम का परिचय उनकी प्रारम्भिक कविताओं में व्यक्त हुआ है। ऐसा लगता है कि सरोजिनी के माता पिता को इस प्रेम प्रसंग के बारे में कुछ चिंता थी। चिंता का कारण यह नहीं था जैसा कि कुछ लोगों ने लिखा है, कि डा० नायडू अब्राह्मण थे वरन यह कि सरोजिनी की अवस्था बहुत कम थी और वह इतनी अधिक भावुक थी कि उस भावुकता के कारण उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा था। यह अस्वस्थता जीवनभर उनके साथ लगी रही। 1869 में जब वे इंग्लैंड में थी तब तो उनकी हालत बहुत ही बिगड़ गई थी। मैट्रिकुलेशन के बाद मद्रास में बीते तीन वर्षों को वह अपने जीवन के सबसे अधिक सुखी वर्ष मानती थी। उस समय के बारे में उन्होंने लिखा है[1]

'मेरा विचार है कि बचपन में मुझे कविता लिखने का कोई विशेष चाव न था हालांकि मेरा स्वभाव बहुत ही कल्पनाप्रिय और स्वप्नशील था। पिता के मार्गदर्शन में मुझे कठोर वैज्ञानिक रीति से प्रशिक्षण मिला था। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि मुझे एक महान गणितज्ञ अथवा वैज्ञानिक बनना चाहिए किन्तु मुझे उनसे और अपनी मां से (मां ने भी कुछ बंगला गीत लिखे हैं) काव्यप्रेम की जो प्रवृत्ति उत्तराधिकार

---

1 सरोजिनी नायडू के कविता संग्रह द गोल्डन थ्रेशोल्ड 1905 की भूमिका में।

म मिली थी वह अधिक सशक्त सिद्ध हुई। जब मैं 11 वष की थी तब एक दिन बीजगणित के एक सवाल के साथ जूझ रही थी, वह सही निकलता ही न था, लेकिन उसी समय मुझे एक कविता सूझी। मैंने उसे लिख लिया। उस दिन से मेरे कवि जीवन का आरम्भ हुआ। तरह वष की आयु मे मैंने एक लम्बी कविता लिखी—लेडी आफ द लेक—छह दिन मे तरह सौ पक्तिया। उसी वष मैंन दो हजार पक्तियो का एक नाटक लिखा। यह पूरी तरह भावनामय सजन था जो बिना किसी पूव चिंतन के हुआ था। उसका उदय चिकित्सक के उस आदेश का उल्लघन करने के क्षणिक आवेश मे हुआ था जिसके अनुसार मुझे बीमार घोषित कर दिया गया था तथा पुस्तक छूने तक की मनाही कर दी गई थी। लगभग इसी समय मेरा स्वास्थ्य स्थायी तौर पर खराब हो गया और मेरा नियमित अध्ययन का क्रम भग हो गया। इस क्षति की पूर्ति के लिए मैंन आगे जाकर घोर स्वाध्याय किया। जहा तक मुझे याद पडता है मेरा अधिकाश अध्ययन चौदह से सोलह वष की अवस्था के बीच हुआ। मैंन एक उपन्यास लिखा और डायरिया के अनेक मोटे मोटे पोथे लिख डाले। उन दिनो मैं बहुत गम्भीर थी।'

सरोजिनी की सबसे बडी बेटी पद्मजा ने बताया कि उस अवस्था मे उनकी मा आचरण की मर्यादाओ का इतना भारी आग्रह रखती थी कि उससे दूसरा को परशानी होती थी। अपने बचपन मे उन्होने गम्भीरतापूवक लिखा था 'एक और वष बीत गया। मैंने इस जगत को बदलने के लिए क्या किया।" इस प्रकार के उदगार परिवारो मे प्राय उपहास का विषय बन जाते हैं। सरोजिनी ने अपनी सहज बुद्धि के आधार पर यह समझ लिया था कि अपने मन की गम्भीरतम बातो को गोपनीय रखना चाहिए और इसका सबसे अधिक कारगर उपाय हँसी है। उन्होने आथर साइमन्स को लिखा था "मैंने अपने आपको साधारण बना लिया है। और मैं यह सीख गयी हू कि ऊपर से दूसरो की तरह ही रहना चाहिए। सब लोग सोचते है कि मैं बहुत खुशमिजाज, अच्छी और बहादुर हू यानी मुझमे वे सब बाते है जिनका होना व्यक्ति के लिए आम तौर पर अच्छा माना जाता है। मेरी मा मुझे शात किन्तु दढसकल्प वाली बालिका के रूप म जानती है। एक शात बालिका।" सरोजिनी के स्वभाव म आगे जाकर

जो विनोद की झलक दिखाई दती थी वह महज ऊपरी थी, उसके पीछे एक गम्भीर सराजिनी हमेशा छिपी रहती थी। अपन विनोदी स्वभाव के कारण उ हे गाधीजी के लघु दरबार म विदूषक की पदवी प्राप्त हा गई थी। कि तु उस सबके पीछ छिपी गम्भीरता उनके भाषणा म और कार्यों से व्यक्त हो जाती थी। बाद के काल म ता उनके भाषणा म गहरी दाशनिकता प्रकट होने लगी थी। उनकी छोटी बहिन मणालिनी न मुझे बताया कि केवल 13 वष की बालिका सराजिनी हर रविवार को पडोस के घर म जाती और वहा प्राथना तथा भजन कराती थी। एक बार आगन म कुछ झगडा हो गया ता वह डयाढी म खडी बग्घी पर चढ गई और चिल्लाकर बडे ही अदाज स बाली, "जा लाग दो या तीन लागा के समथन के आधार पर सही हान का दावा करत हैं व मूख हात हैं।" यह लोकत त्र की काव्यात्मक अभिव्यक्ति थी जिसका उ हान आग जाकर जोरदार समथन किया। इस प्रकार की घटनाओ का ही शायद यह परिणाम हुआ कि उनम यह विश्वास हो गया कि मेरे श द जनता पर प्रभाव डाल सकते हैं और मैं उसे आदेश दे सकती हू तथा उसका मागदशन कर सकती हू।

उन प्रारम्भिक वर्षों म सरोजिनी का मन जीवन के प्रति उत्साह स भरपूर था। उस उत्साह का परिचय उनके काव्य स बहुत सही तौर पर मिलता है। नवम्बर 1894 म उ हाने 'प्रेम (लव) शीषक स एक गीत लिखा जिसम उनके भावा की कामलता व्यक्त हुई ह

मैं तुमसे प्यार करती हू उस ममत्व से

जिसका रूप अपरिवतनीय है।

रात के सितारो की तरह।

मेरा प्रेम कहीं अधिक सशक्त है मत्यु से,

मेरा प्रेम उषा की प्रभा जसा निमल है।

मैं यह जानने को उत्सुक नहीं हू

कि तुम मुझसे प्रेम करते हो या नहीं,

निर्माण करें।

> मेरे लिए इतना काफी है कि तुम हो श्रेष्ठतम, प्रियतम, सर्वोत्तम
> तुम्हें सौंपती हूं अपने हृदय की निधियां।

ये पंक्तियां उस पुरुष के प्रति उनकी तीव्र किन्तु गुह्य भावनाओं की ओर संकेत करती हैं जिससे मैंने उन्होंने तीन वर्ष पश्चात विवाह किया। उन्होंने एक छोटा सा फारसी नाटक भी लिखा जिसका नाम मेहर मुनीर है। इसे उनके पिता ने एक स्थानीय पत्रिका में प्रकाशित करा दिया था। इस नाटक की कुछ अंग्रेजी प्रतियां मित्रों को भेजी गई थीं जिनमें हैदराबाद के निजाम भी थे। वह उस नाटक से इतने आकृष्ट हुए कि उन्होंने सरोजिनी को एक विशेष उपहार देने का प्रस्ताव रखा। निजाम सरोजिनी की प्रतिभा और उनके काव्य प्रेम से परिचित थे। संभवतया एक तरुण प्रतिभा को प्रोत्साहन देने के विचार से ही उन्होंने सरोजिनी के पिता से कहा कि सरोजिनी स्वयं यह बताए कि वह शाही-सौगात के रूप में क्या लेना पसंद करेगी। इतिहास इस विषय पर मौन है कि सरोजिनी ने अपनी सौगात स्वयं पसंद की थी या नहीं। वास्तव में आर्थर साइमन्स ने उनकी कविताओं की भूमिका में लिखा है कि वह अपनी इच्छा के विपरीत इंग्लैंड गईं। इस बारे में केवल यह जानकारी उपलब्ध है कि 1895 में निजाम ने सरोजिनी को एक वजीफा प्रदान किया था जिसमें उनका इंग्लैंड आने जाने का खर्च और 300 पौंड प्रतिवर्ष की रकम शामिल थे। इस शताब्दी के आरम्भ में श्रीमती एनीबीसेंट के साथ सोलह वर्षीय सरोजिनी की वह समुद्र यात्रा उन असाधारण कार्यों की शुरुआत थी जो उन्होंने जीवन में किए। इंग्लैंड में उन्हें कुमारी मैनिंग के संरक्षण का सौभाग्य मिला। कुमारी मैनिंग ने लंदन में भारतीय विद्यार्थियों के लिए बहुत कार्य किया, उनकी सुसज्जित बैठक में उस काल के कुछ महान साहित्यकारों का आना जाना रहता था।[1] सरोजिनी वहीं एडमंड गॉस से मिली थीं जिन्होंने उनको कवयित्री बनने की प्रेरणा दी। इस सुसंस्कृत परिवेश में यह भारतीय लड़की पुष्पित और विकसित हुई जो रेशमी वस्त्र पहनती थी और जिसकी बड़ी बड़ी काली आंखों की गहराई और उनकी सफलता प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करती थी। वह महान बुद्धिजीवियों की

---

1 पी० सी० राय चौधरी, 'अमृत बाजार पत्रिका'

बैठका म सास्कृतिक चर्चा के वातावरण की अभ्यस्त थी और यहा शायद पहली बार अपने पिता के स्थान पर वह स्वय लोगा के आकषण का केन्द्र बन गई थी।

उस समय कम्ब्रिज म प्रवश पाने के लिए वह बहुत छोटी थी इसलिए वह लदन के किग्स कालेज म पढी। लेकिन बाद म वह कैम्ब्रिज म पढी और दो वष बाद गटन कालेज म भरती हुई। उस समय तक उनका अपना व्यक्तित्व विकसित हो चुका था। वह साहित्य समालोचक गास की मित्र बन गई थी और प्राय उनके घर पर जाया करती थी। कुमारी मनिग के यहा वह इग्लड म इ्सन को लोकप्रिय बनाने वाले विलियम आचर सरीखे प्रख्यात साहित्यकारो स मिलीं। उनके भावी प्रकाशक हाइनमान स भी उनकी भेंट वही हुई थी। गटन कालेज म भरती होने स पहल के दो वष उनके लिए बडे निर्णायक सिद्ध हुए। उस समय की गतिविधि स यह भी स्पष्ट हो जाता है कि विश्वविद्यालयीन जीवन से वह क्या थक गइ थी तथा वहा का अनुशासन उन्ह जीवन के विकास और अध्ययन की दष्टि स क्या निरथक महसूस होने लगा था। सभवत उनके साथियो का व्यवहार उनके प्रति सरक्षको जसा हो गया था, जो उनको गरिमामय नही लगता था अत वह उस सह नही पाइ। सरोजिनी के बारे मे लिखते हुए वे लोग ऐसी भाषा का प्रयोग करते थे यहा एक छोटी सी भारतीय लडकी है जो कविता लिखने के सिवाय और कुछ नही करती। गास और साइमन्स सरीखे लोगो ने भी जान अनजाने म उनके लिए इसी प्रकार की भाषा इस्तेमाल की। आथर साइमस ने 1904 म सरोजिनी के प्रथम काव्य सग्रह की भूमिका में लिखा 'जो लोग इग्लैंड में उनसे (सरोजिनी स) परिचित थ उन्ह मालूम है कि इस लघुकाया का समूचा जीवन उसकी आखोमें केद्रित हो गया था। व आखें सौंदय की ओर सहजता से मुड जाती थी जैसे सूरजमुखी का फूल सूरज की ओर। और तब वे आखें ऐसे खुलती चली जाती थी कि बस आखे ही आखे दिखाई पडती थी। वह हमेशा भारतीय सिल्क की साडी में लिपटी रहती थी। वह कद मे छोटी तो है ही, उनके लम्बे काले बाल उनकी पीठ पर नीचे तक खुले लटके रहते थे, जिसके कारण उन्हे देखकर किसी बच्चे के होने का भ्रम होता था। वह बहुत

शून्य हैं। वे अनुभूति और बिम्बों की दृष्टि से पाश्चात्य हैं तथा टेनीसन और शली की रचनाओं की प्रतिध्वनियों पर आधारित हैं। मैं दावे से तो नहीं कह सकता लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि उनमें ईसाई पलायनवाद के वातावरण का भी पुट है। उत्कट तरुण कवयित्री के प्रति गास की यह ईमानदारी निर्णायक सिद्ध हुई। उन्होंने सरोजिनी को परामर्श दिया कि तुमने मिथ्या अंग्रेजी शैली में जो कुछ लिखा है उसे रद्दी की टोकरी के हवाले कर दो और अपने निजी देश के यथार्थ दर्शन के आधार पर नए सिरे से सृजन का समारम्भ करो। सरोजिनी ने त्वरा और कुशलतापूर्वक इस निर्देश का पालन किया और शीघ्र ही अपनी स्वाभाविक प्रतिभा प्राप्त कर ली। 1897 में सरोजिनी ने गॉस को लिखा

'आपने रविवार को मुझसे जो कुछ कहा उसके लिए धन्यवाद देने का साहस नहीं जुटा पा रही हूं। आप यह नहीं जान सकते कि उन शब्दों का मेरे लिए कितना महत्व है। लोग हमेशा मेरे जीवन में किस प्रकार रंग भर देते हैं और मेरी उस गहरी आत्म ग्लानि और हताशा में, जिसमें मैं प्रायः जीती हूं किस तरह नयी आशा और नया साहस जगा देते हैं इसे आप नहीं जान पाएंगे। कविता ही वह चीज है जिससे मैं ऐसी उत्कटता, सघनता और पूर्णता के साथ प्रेम करती हूं, कि वह मेरे जीवन की संजीवनी बन गई है, और अब आपने मुझे यह चेतना दी है कि मैं कवयित्री हूं। मैं कवयित्री हूं। मैं इस मन्त्र का जप मन ही मन करती रहती हूं जिससे कि इसे सिद्ध कर सकूं। क्या आप मुझे यह अनुमति देंगे कि मैं आपको अपने बारे में कुछ बताऊं? मैं आपको यह बताना चाहती हूं कि मेरी ग्यारह वर्ष की अवस्था से आप किस प्रकार मेरे जीवन को प्रभावित करते रहे हैं।

मैं सुन्दर, स्वप्निल और असामान्य परिस्थितियों में पलकर बड़ी हुई हूं लेकिन उन परिस्थितियों में ऐसा कुछ नहीं था जो मुझे प्रत्यक्षतः काव्य की दिशा में प्रोत्साहन देता, वास्तविकता तो यह है कि हमारे ऊपर पड़ने वाले सबसे अधिक सशक्त प्रभाव विज्ञान और गणित के थे। मैंने हमेशा कविता से प्रेम किया लेकिन मैं यह सोच भी नहीं सकती थी कि मैं स्वयं कविता लिख सकती हूं। मैंने अपने इस नए दुस्साहस के बारे में किसी को

कुछ नही बताया लेकिन मैं लिखती चली गई। मरे मन म कल्पनाए बहुत सहजता और तीव्रता से अवतरित होती गइ हालाकि इसम कोई स देह नही कि व बचकानी और कमजोर थी। मेर पास उनका कोई प्रमाण शेष नही है जिसके आधार पर मैं उनकी कहानी कह पाती। न जाने कैसे वे मेरे पिता के हाथो पड गद तथा शीघ्र ही यह बात सबको मालूम हो गई। फिर ता मुझे अदभुत माना जान लगा और मै जो कुछ भी करती, उसका अनोखा और दैवी मान लिया जाता। मुझे उन दिना अकारण ही अत्य त स्नेहपूवक कि तु विवेकहीन प्रशसा और अनुशसा मिली। उसस मेरे भीतर मिथ्या दम्भ पैदा होन वाला ही था कि न जाने कैसे और क्या एडमड गास के नाम का जादू भरा प्रभाव मुझ पर पडन लगा। उस जमाने म मेरे लिए वास्तविकताओ की अपेक्षा जादुई मिथक अधिक सत्य हुआ करत थे अत मेरे मन म एक धु धली और अस्फुट सी चेतना उदय होने लगी कि चाहे जसे भी हो यह जादुई नाम (एडमड गास) मेरे जीवन पर सबसे अधिक सशक्त और अपरिहाय प्रभाव सिद्ध होगा। मैं लिखती चली गई और हैदराबाद मेरी रचनाओ के बार मे अधिकाधिक पागल होता चला गया। मरे विचार से वस्तुत सारे भारत मे ही मुझे मा यता दी जान लगी। लेकिन जसे जसे मेरी प्रशसा म वद्धि होती गई वस वैस मैं स्वय स ऊबती गई और मर मन मे उत्कट कामना जाग उठी कि कोई मेरी कविताओ की सही रीति से आलोचना कर पाता। मुझ मालूम है कि मेरी कविताए बहुत कमजोर हाती थी लेकिन मैं तो यह जानना चाहती थी कि उनम आग के लिए श्रेष्ठतर रचनाओ की काई सम्भावनाए निहित है या नही। अ तत निराश होकर मैने आपको एक पत्र लिखा (मैं साचती हू वह बहुत बचकाना पत्र रहा होगा)। यह तब की बात ह जब मैं कोई 14 15 साल की थी, लेकिन मैंन वह पत्र अगले दिन जला डाला।

'उसके बाद मैं एक लम्बी और भयकर बीमारी से पीडित रही जिसन मुझे मतप्राय कर दिया और मुझे ऐसा लगता है कि कुछ समय के लिए उसने मरी मानसिक क्षमताआ को आशिक रूप से निर्जीव कर डाला। ऐसा लगता था कि काव्यप्रेम और श्रेष्ठतर रचना की कामना क अतिरिक्त

और सब कुछ जीवन मे से समाप्त हो गया ह। उनके बाद मैं इग्लड आई। तब मैं 16 वष की थी। सोलह वष की अवस्था की दप्टि से मैं अपने आपको बहुत ही अनानी मानती हू क्योकि मेरे लिए इग्लड का अथ था शैली और कीट्स जिनका देहान्त हो चुका है और एडमड गास जो जीवित है तथा मरी कल्पना के इग्लैंड का एक बहुत बडा अश हैं। शेष म मैं केवल वेस्टमिनस्टर एब्बे और टेम्स को जानती थी। ऐसी स्थिति म मैंन निश्चय किया कि मुझे एडमड गास से मिलना चाहिए। पहले छह महीने के भीतर तो मैं एक पक्ति भी नही लिख पाइ, न और कुछ कर ही सकी, और उसके उपरान्त अचानक स्रोत फूट पडे तथा मैं लिखने लगी, लिखन लगी, लिखने लगी। मरा विचार है तीन महीन मे मैंन 45 कविताए लिखी! भयकर! लेकिन मुझे ऐसा लगा कि ये कविताए मेरी पहले की कविताओ की अपक्षा कमजोर हैं। मैंने आपके पास कविताओ की जो पहली खेप भेजी थी उसमे कमजोर कविता के इस असाधारण विस्फोट म से छाटी गई कविताए थी।

"फिर, जनवरी म मन आपके दशन किए और कल्पना ने मेरे लिए आकार ग्रहण कर लिया। मैं निराश नही हुई थी। वस्तुत मैं उस दिन को कभी नही भुला पाऊगी क्योकि एक ही झटके मे उस नए महान जीवन मे मेरी चेतना मुखर हो उठी जिसकी मैंने हमेशा कामना की थी और जिसके पीछे इतना लम्बा समय गवाया था। उस दिन से मुझे महसूस हाने लगा कि मैं बदल गई हू। मुझे ऐसा लगा कि मैंने बचकानी बाते छाड दी है और नई तथा सुन्दर आशा और आकाक्षा का परिधान पहन लिया और मैं विकसित होती चली गई, विकसित होती चली गई, मैं उसको महसूस कर रही हू मैं पहले की अपेक्षा अधिक स्पष्टता से देख पा रही हू अधिक तीव्रता से अनुभव कर रही हू, अधिक गहराई से सोच पा रही हू और कला की उस सुन्दर आत्मा पर अधिक उत्कटता और अधिक निस्वार्थ भाव से प्रेम कर रही हू जो अब मुझे मेरे जीवन और रक्त की अपेक्षा अधिक प्रिय हो गई है और इस सबके लिए मैं आपकी कृतज्ञ हू। मैं जानती हू कि मैं अपनी भावनाओ को तनिक भी ठीक प्रकार व्यक्त नही कर पाई हू। लेकिन मुझे

विश्वास है कि आप मुझे समझ लेंगे और मेरी इस अभियक्ति को अयथा नही लेंगे।

'मेरी इच्छा है कि जिस प्रकार इतने लम्बे समय से आप मेरे जीवन पर इतना श्रेष्ठ प्रभाव डालते रहे हैं उसी प्रकार आप हमेशा मुझे प्रभावित करते रहें। मैं जो कुछ भी लिखूगी वह सब आपको भेज दूगी और आप मुझे यह बताएगे कि आप उसके बारे मे क्या सोचते हैं। मेरी इच्छा है कि जसे-जसे मेरी रचनाए सुधरती जाए आप पहले की अपेक्षा अधिक कठोर और निमम होते जाए क्योकि मैं केवल चन्द वर्षों तक नही शताब्दियों तक साहित्य के क्षेत्र मे बनी रहना चाहती हू। यह मेरा दम्भ मात्र हो सकता है, लेकिन पर्वत शिखर से परे न जा सकने के बावजूद सितारो पर निगाह रखना क्या अच्छा नही होता? आपका इतना अधिक समय लेने के लिए मैं आपसे क्षमा मागने वाली नही हू क्योकि मैं आपको यह बताए बिना ही कि आपके प्रति कृतज्ञ होने के मेरे पास कितने कारण है, मैं हमेशा तक खामोशी के साथ कृतज्ञ नही रह सकती। मुझ पर सदैव विश्वास रखिएगा।'

सरोजिनी बिना किसी डिग्री अथवा डिप्लोमा के ही भारत लौट आइ। इस प्रकार इग्लैंड मे उनका शैक्षणिक जीवन विफल माना जा सकता है, लेकिन वह इतनी अधिक परिपक्व हो गईं कि घर से दूर बिताए तीन वर्षों ने उन्हे शुद्ध अर्थों म कवयित्री बना दिया। उनके जीवन का यह पक्ष 1917 म समाप्त हो गया। उसके बाद उन्होंने विरले ही कविताए लिखी। एसा लगता है कि एक देशी रियासत के स्वप्निल वातावरण म, जिसम दाशनिक से लेकर भिखारी तक भाति भाति के असख्य लोग उनके पिता के घर आते जाते रहते थे जिस का यात्मक प्रतिभा का पोषण हुआ था उसने सरोजिनी की आत्मा को उस प्रबल स्वप्निल अभीप्सा को तप्त कर दिया जो आगे जाकर भारत की स्वाधीनता के संघर्ष के उन्मेषकारी जीवन धर्म म समा गई।

पी० ई० दस्तूर ने सरोजिनी के बारे म ठीक ही लिखा है, "वह हर प्रकार से एक पूर्ण महिला थी और उन्होंने राष्ट्र के जीवन म जो भूमिका अदा की वह कम पुरुष अदा कर सकते थे। कोमल गीतों की लड़िया पिरोने वाली वह

मालिन भीषण राष्ट्रीय सघष मे के द्र म खिचती चली गई।"

सरोजिनी की यह स्वप्निल रामानी प्रवत्ति गटन मे लिखी गई कविताओ म सबस अधिक मुखर हुई है। उनम प्रेम शांति और सत्य के समस्त बिम्ब सजीव हो उठे हैं और प्रेम की उत्कट अभीप्सा व्यक्त हुई है। इसका कारण शायद यह था कि सरोजिनी को इग्लड म अपने घर, अपने देश की सुगध और रगीनी तथा शायद सबसे अधिक उस व्यक्ति की याद आती थी जिसे उन्होने अपना हृदय समर्पित कर दिया था। तीन साल के अतिम चरण म वह गम्भीर रूप स अस्वस्थ हो गइ तथा स्वास्थ्य लाभ के लिए स्विटजरलड और इटली गइ। वहा स जान वाले उनके पत्र इटली की ऐतिहासिक गरिमा के सम्मोहक उल्लेखो स भर होत थे। उन्होन लिखा 'यह मनुष्यो का देश है या दवो का? यह पृथ्वी है या स्वग?' वहा की वास्तविकताओ और यथाथ परिस्थितियो को उन्होन बढा चढा कर निरूपित नही किया तथापि उनकी इस इटली यात्रा का प्रभाव उनके भाषणो पर कई साल बाद प्रकट हुआ जिनम वह गेरीबाल्डी के श्रेष्ठ कार्यों का दृष्टान्त दिया करती थी। उन्होने सरोजिनी के देशभक्तिपूण स्वभाव को गहराइ क साथ प्रभावित और आदोलित किया था।

सितम्बर 1898 म सरोजिनी स्वदेश लौटी और उसी वर्ष दिसम्बर म उन्होने डा० नायडू से विवाह कर लिया। डा० नायडू उस समय महामहिम निजाम की शाही सेना की चिकित्सा सेवा के अध्यक्ष थे और उन्ह मेजर का पद दिया गया था। यह एक विलक्षण सयोग की बात है कि सरोजिनी के पिता न सुधारवादी उत्साह म केशवचन्द्र सेन का ब्रह्म विवाह विधेयक हैदराबाद म पेश किया था जो 1822 मे वहा के कानून का अग बन गया था। इसका प्रयोजन जाति बधन को तोडकर भारतीयो के बीच सिविल मैरिज की अनुमति देना था। इस कानून के अतगत होने वाला प्रथम विवाह था सरोजिनी का विवाह। इसके बाद में उन्होने एडमड गॉस को लिखा—' मेरी मा न मुस्लिम महिलाओं के लिए एक विराट स्वागत समारोह का आयोजन किया। उस अवसर पर गाने वाली महिलाओं ने महामहिम (निजाम) की गजलो मे स चुनी हुई कुछ सुदर गजलें गाईं।' सरोजिनी का विवाह मद्रास मे हुआ था। विवाह के अवसर पर पौरोहित्य, ब्रह्मसमाजीय रीति स पण्डित वीरशलिगम पन्तुलु

गुर न किया था। अत सराजिनी की मा न हैदराबाद मे विवाहोत्सव मनान के लिए केवल पर्दे वाली महिलाओ के लिए यह आयोजन किया था जिसम नए और पुरान सस्कारा का समावेश हुआ। यही तो भारतीय जीवन की विशेषता है।

सराजिनी किराए के मकान म रहती थी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नही था, फिर भी 1903 तक वह चार बच्चो की मा बन गइ। कोइ मा अपन बच्चो के बार म एसी चित्ताकषक कविता नही लिख सकेगी जसी कि सरोजिनी न अपन चार बच्च के बट जयसूय तीन वप की बेटी पदमजा, दा वप के बेटे रणधीर और एक वप की बेटी लीलामणि को समर्पित की थी। उन कविताआ म मा के प्यार की सजीवता उभर आई है जा अपन बच्चा के लिए जीवन के समस्त सुखो और विजया की कामना करती है। आठ-आठ पक्तिया की इन प्रत्येक कविताआ मे उन गुणा का वणन है जिनका आभास उन्हे उनके बचपन से मिला हागा। जयसूय के लिए उन्हाने लिखा

मर जीवन के मेघहीन निमल प्रभात म
उदय हुआ है स्वर्णिम सूय विजय का।

और वह कामना करती हैं कि उनका बेटा 'बनेगा सूय गीता का और मुक्ति का।' पदमजा के लिए सरोजिनी ने लिखा बनो तुम पदम कामिनी सम्पूण तन्मयता की सुवास, रणधीर के लिए 'रण दव बनो तुम देव स्नेह और शौय के' और लीलामणि के लिए मूर्तिमत मणि, बना तुम हास पुञ्ज और मुक्त रहो पीडा से।"

नायडू परिवार हर प्रकार स "हास पुञ्ज और पीडा-मुक्त" था। उस घर मे बच्चे ही नही पशु भी थे घोडे और एक छाटी दो पहिय की गाडी, बिल्लिया और चिडिया जिन्हें निकोलस निकोबर डिक डिक, महजोग और लेडी लिका ल्यूपिन सरीखे अजीबोगरीब नाम दिए गए थे। उनके यहा कुछ समय क लिए एक चीता

---

1 'सरोजिनी नायडू'—ले० पद्मिनी सेन गुप्त, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1966

और शेर के दो बच्चे भी पाले गए थे। व्यग्य विनोद तो वहा हर दम छाता ही था मजेदार बाते और कहानियो की भी दावत सी रहती थी, हर घटना को मिर्च मसाला लगाकर सुनाया जाता तथा उसे बेहद मनोरजक बना दिया जाता था। सरोजिनी का विवाह ब्रह्म समाज विधि से सम्प न हुआ था, उसमे ईसाई प्रतिज्ञाए दोहराई गई थी। जब सरोजिनी स पूछा गया कि क्या तुम इस पुरुष को अपने विधिवत विवाहित पति के रूप म स्वीकार करती हो—विल्ट दाउ टेक तो उ होने स्वीकृति मे कहा—आई विल्ट। (विल्ट 'विल' शब्द का प्राचीन रूप है पर विल्ट का एक अथ मुरझाना भी है) यहा विल्ट का प्रयोग उनकी विनोदी प्रकृति का परिचायक है।

उस समय के उनके जीवन के बारे मे अधिक विवरण उपलब्ध नही है। केवल एक पत्र मिला है जो उ होने हैदराबाद से दिसम्बर 1903 म एडमड गास को लिखा था। वह उनके साहित्यिक गुरु थे और सरोजिनी अपनी कविता की समालोचना के लिए उन पर निभर रहती थी। यह उनकी स्वप्निल रोमानी प्रकृति की परितृप्ति का काल था। इस काल म उ होन सद्य पत्नीत्व और मातत्व के आन द को भारत के प्रति एक नवीन चितन के साथ जोड लिया था। उ होने उस पत्र मे लिखा

'मैं आपकी ओर स कठोर आलोचना की अपेक्षा रखकर पाच न ही सी कविताए आपको भेज रही हू। य मेरी पिछले सप्ताह की कृतिया है—इस पूर वष का सजन। मधु बालक के प्रथम दो छ द आपको ज्ञात ही है सात वप पूव रच गए थे। छोटा सा हिना गीत मुझे बहुत आन द देता है। हिना एक कालातीत राष्ट्रीय सस्कृति का अनिवाय अग बन गई है। भारत म बालिकाए और विवाहित महिलाए हिना (महदी) की पत्तियो को पीसकर उससे अपनी हथेलिया और नाखूनो को रचाती हैं जिससे उन पर गहरा लाल रग उभर आता है। वह प्रस नता और उत्सव का प्रतीक बन गई है।

निजाम का प्रशस्ति गीत दो दिन पूव ही रमजान की दावत के सम्मान म आयोजित विराट दरबार मे उ हे मरी ओर स भेंट किया गया

था। उसके साथ ही एक प्रसिद्ध उर्दू शायर ने उसका शानदार उर्दू अनुवाद भी पेश किया था। उसने मेरी अंग्रेजी कविता के सादे वस्त्रों को लेकर पूर्व के भाषा सौष्ठव और बिम्ब विधान के सुनहरे मोतियों से कसीदाकारी करके प्रस्तुत किया था। मैं तो स्वयं निजाम के दरबार में पांच सौ पेटीबन्द दरबारियों के बीच जाने का स्वप्न भी नहीं देख सकती थी। यदि कहीं मैं ऐसा कर बैठती तो भारत भर में चर्चा का विषय बन जाती। जहां तक मेरी जानकारी है भारतीय परम्परा के इतिहास में यह भी अपने आप में एक नितान्त नई बात है कि एक महिला की ओर से पूरे दरबार में शासक को कविता भेंट की गई। यह भी परम्परा की दृष्टि से वर्जित है। निजाम का दरबार ही भारत का एकमात्र पूर्वी दरबार बचा है। उसमें अभी तक वह सब सामन्तकालीन शान शौकत बाकी है जिसे देखकर अलिफ लैला की दास्तान याद आ जाती है और मेरा विचार है कि भारत के समस्त देशी राजाओं में निज़ाम सबसे अधिक सुन्दर और मेधावी है तथा दुखपूर्वक कहना पड़ता है कि उनकी स्थिति सबसे अधिक करुणाजनक है। वह एक कवि के यथार्थ एकाकीपन को छिपाने के लिए राजपद की समस्त शान-शौकत और मूर्खतापूर्ण तड़क भड़क का सहारा लेते हैं। यदि भारतीय जाति अपने सुखद काल में होती और उन्हें अवसर मिलता तो वह एक श्रेष्ठ नेता सिद्ध होते लेकिन आज वह पूर्व के हेमलेट भर रह गए हैं। उनके गीत बहुत सुरुचि सम्पन्न और हृदय स्पर्शी होते हैं। उनमें वर्ड्स वर्थ का सा तरल रहस्यवाद और प्रशान्त मानवीय सरलता के साथ टेनीसन की कोमल कला और संगीत माधुरी का समावेश हुआ है। उनके ये गीत उनकी चारों राजधानियों में दरबारियों और किसानों द्वारा गाए जाते हैं और गरीबों को भी वे समान रूप से सुहाते हैं। मुझे खेद है कि मैं इन छोटी कविताओं की अपेक्षा कोई अधिक अच्छी भेंट भेजने में असमर्थ हूं। यह मेरी विवशता है क्योंकि मैं पूरे साल भर बहुत अस्वस्थ रही हूं। इस बीच अधिक से अधिक एक या दो सप्ताह ठीक रह पाती कि फिर बीमार पड़ जाती, यही क्रम चलता रहा। यदि अगले वर्ष ईश्वर ने मुझे समय समय पर अस्वस्थता से ऐसे अवकाश भी प्रदान कर दिए तो मेरा इरादा है कि मैं काव्य के समूचे सुनहरे इट-

मसाले से निजाम के साम्राज्य के विस्मृत नाटकों, गाथाओं और उत्कट सौंदय की पुनरचना करूंगी। कवियों ने हमेशा अपनी प्रतिभा से अतीत के सौंदय को सजीव किया है। हैदराबाद औरंगाबाद, गुलबर्गा और वारंगल के प्राचीन गौरव गाथा की पुनरचना म मुझे जीवन की कृतार्थता का भान होता है।"

बचपन मे जो हैदराबाद एक सामान्य नगर मात्र था वह अब सरोजिनी की कवि दृष्टि म उत्कृष्ट, इतिहास के रग से भरापूरा और शोध का चमत्कारपूर्ण विषय बन गया था।

सरोजिनी ने आथर साइमन्स को लिखा कि "आपको शायद मालूम नहीं है कि मेरे सामने हवा म कुछ सुन्दर कविताए तैर रही हैं और यदि ईश्वर ने कृपा की तो मैं अपनी आत्मा को जाल की तरह बिछा दूंगी और उन्हें इस साल पकड लूंगी। लेकिन शर्त यही है कि ईश्वर कृपा करके मुझे थोडा सा स्वास्थ्य प्रदान कर दे। मुझे अपना जीवन पूर्ण बनाने के लिए केवल इतनी सी ही वस्तु की आवश्यकता है क्योंकि शेले ने जिस आनन्द की आत्मा' का उल्लेख किया है वह मेरे छोटे से घर में निवास करती है मेरा बगीचा पक्षियों के संगीत से और लम्बा मेहराबदार बरामदा बच्चों से भरा पूरा है।" इस सब आनन्द के बावजूद उसके पीछे उस अस्वस्थता की काली छाया लगी हुई थी जो जीवन की क्षण भंगुरता का निरन्तर बोध कराती रहती थी। उनकी बहिन ने उनके बारे म लिखा है कि अस्वस्थता के कारण वह मृत्यु के बारे म बहुत सोचती थी और वह प्राय इस ढंग से बोलती थी मानो वह मृत्यु के कगार पर खडी हो। सम्भव है कि एम० पी० सारंगपाणि का वह अनुमान सही हो जो उन्होंने 1926 म अपने उस निबन्ध म व्यक्त किया था जो 'माडर्न रिव्यू' मे प्रकाशित हुआ था। श्री सारंगपाणि ने लिखा था कि शायद वह ऐसा सोचने लगी है कि उनका जीवन युवावस्था म ही समाप्त हो जाएगा। उनके मस्तिष्क में यह आशंका बस गई थी। इसी ने उनमे हताशा और गहरी निराशावादिता पैदा कर दी थी। कई साल पहले उन्होंने आथर साइमन्स को लिखा था कि, 'मैंने भी क्षण क्षण म जीने के सूक्ष्म दर्शन का अभ्यास कर लिया है। हा, यह प्रत्यक्षत कल मर जाना है अत आज 'खाओ पियो और मौज उडाओ' के ईपीक्यूरियन सिद्धान्त सरीखा

प्रतीत होता है तथापि यह एक सूक्ष्म दर्शन है। मैंने ऐसे अनेक क्षण बिताए हैं जिनमें मैंने मौत से जोहा लिया है और इस वाक्य में निहित सत्य को पूरी तरह पहचान लिया है। मेरे लिए वह भाषा का अलंकार नहीं रहा है वरन् यथार्थ तथ्य बन गया है। किसी भी क्षण मैं मर सकती हूं।"

साइमन्स ने भी यह बात समझ ली थी कि सरोजिनी हमेशा एकाकीपन में जीती थी। यह सही है। उनके लिए आनन्द के स्रोत मानो सूख चुके थे और वह उदास तथा मननशील बन गई थी। उनका दर्शन वस्तुतः उदारवादी था और इसी कारण वह दूसरों के लिए शक्ति और आनन्द का स्रोत बन गई थी। वह बीमार बच्चे अथवा किसी भी पीडित व्यक्ति में आत्मा उडेल देती थी। जिस समय जेल में कस्तूरबा के देहान्त से गांधी जी को पीडा हुई तो उनके लिए शक्ति और प्रेरणा का स्रोत बन गई थी।

पालकी के कहारों का गीत

1

धीमे, ओ धीमे उसे ले जाते हैं हम
हमारे गीतों के समीरण में फूल सी झूलती वह
धारा के फेन पर चिड़िया सी फिसलती वह
स्वप्न के ओठों पर स्मृति सी तैरती वह
मस्ती से, ओ मस्ती से उड़ते जाते हैं गाते हैं हम
डोरी में पिरोई मोती सी उसे ले जाते हैं हम।

2

कोमलता से, ओ कोमलता से उसे ले जाते हैं हम
हमारे गीत के ओसकण मे तारिका सी झूलती वह
ज्वार की लहर पर शहतीर सी उछलती वह
वधू की आखो से अश्रुकण सी ढलती वह
धीमे, ओ धीमे उड़ते जाते हैं गाते हैं हम
डोरी मे पिरोई मोती से उसे ले जाते हैं हम

ह० सरोजिनी नायडू
7 अगस्त, 1903

2. नए क्षितिज

प्रारम्भिक काल म सरोजिनी नायडू के बौद्धिक जीवन का के द्रबिंदु कविता थी। वह उनके आ तरिक अस्तित्व का के द्र बन गई थी। यह स्वाभाविक भी था क्याकि वे उत्कृष्टतम मुस्लिम सस्कृति के मध्य में रह रही थी, तथा तत्कालीन हैदराबाद में शाही ईरान की समस्त चमक दमक और उसके सास्कृतिक मूल्य जीवित थे तथा उसका शासक निजाम एक महान ख्याति प्राप्त कवि था। अतीत के मुस्लिम समाजो की तरह यहा भी कवि जनता का अ त करण और उसके हृदय का सवेदन-सूत्र माना जाता था। आत्मा और सवगो की गहराइया का खोजने के लिए कवि का य का माध्यम अपनाते थे। यह सब उच्चतर चेतना की खोज की दिशा में बहुत कुछ हि दुआ के भक्ति तत्व के सदश थी। उनके लिए कविता गीत के साथ जुड गई थी और वह सामूहिक जीवन मे एक महान भूमिका निबाहती थी। मौजूदा जमाने का मुशायरा उसी परम्परा को सीमित मात्रा में सजीव रखे हुए है। कविया के बारे में यह माना जाता था कि व सदा सही होत हैं। उनकी कल्पना शक्ति को सराहा जाता था और उनकी अन्तद ष्टि तथा उनके बुद्धि-कौशल की चर्चा लोगो की जिह्वा पर चढ जाती थी। इसमें आश्चय की कोई बात नही है कि इस वातावरण ने अपने सघन और उत्कट सवेगो को अभिव्यक्ति के लिए काव्य का माध्यम चुनन में सरोजिनी के उपचेतन को प्रभावित किया और अग्रेजी भापा तथा विदेशी कविया से प्रभावित होकर वे रगीन और मधुर सगीतमय काव्य का सृजन करन लगी।

एडमड गास ने सरोजिनी की आरम्भिक कविता में औपचारिकता अभ्वाभाविकता, अमौलिकता और निर्जीवता पाए जान का सकेत किया था। इसके पीछे क्या कारण रहा होगा इसका बोध गॉस के इस कथन से हो गया कि तुम अपने देश के वातावरण और विषयो के सदभ में सजन करो। इग्लैंड से अपने प्रिय वातावरण—प्रेम आनन्द परिवार, स्वदेश—में लौट आने से उनके अन्तगमन का द्वार उ मुक्त हो गया। उनके पास शब्दा का एक विशाल और समृद्ध स्मृति कोष था। सराजिनी सारगर्भित शब्दो का प्रयोग उनके सौष्ठव और उनकी लयात्मकता पर मुग्ध होकर करती थी। उस अगाध शब्द भडार के आधार पर उ होने कुछ बहुत सुदर गीत लिखे। ऐसे भी अवसर आते थे जब वह शब्दो से इस प्रकार सम्माहित हो जाती थी कि उनके अथ लय हो जाते थे। भारतीय नत्यकारो के बारे मे उनकी कविता में ऐसा ही हुआ है

रूप के आकषण मे तल्लीन मुग्ध नयन,
दिव्य अभीप्सा से उच्छवसित
ओह, कसे अग्निशिखा से प्रज्ज्वलित कामोद्दीपक वक्ष
डूबे हैं सुरभि मे अतल नरगिसी अन्तरिक्ष को,
चमक रहा जो जगमग ज्योति प्रपात मे चतुर्दिक उनके,
कसी उमादक, उमेषक हैं उत्कट सगीत की लहरो
कि बेध रही है तारागण को
वाछाओ की चीत्कार सी,
हूरों जसी सुदर नतकिया
कामविद्ध कर देतीं रात्रि के पिपासु प्रहरो को।

सराजिनी शब्दा को जो यह असाधारण आयाम प्रदान कर देनी थी वह आगे जाकर काव्य से वक्तत्व में समाहित हो गया। उनके श्रोता उनके शब्दा के बदी बन जाते, उनके साथ बहने लगते, मुग्ध हो जाते और इतने आह्लादित कि अन्त में उन्हे यह बोध तक न रहता कि वक्ता ने वास्तव में कहा क्या है।

चमत्कृत करने वाले शब्दों का प्रयोग था। उन्होंने अन्तिम समय तक जारी रखा लेकिन प्रकाशन में उनकी बहुत ही कम कृतियां आ सकी हैं। 'दा गोल्डेन थ्रेशोल्ड' (स्वर्णिम देहरी) 1905 में प्रकाशित हुई, इंग्लैंड में उसकी गणना सबसे अधिक बिक्री वाली पुस्तकों में थी। वहां सभी प्रमुख पत्रिकाओं तथा साहित्य-समालोचकों ने उसकी व्यापक पैमाने पर प्रशंसा की। 1912 में विलियम हाइनमान ने 'दा बर्ड अव टाइम' (काल पंछी) और 1917 में 'दा ब्रोकेन विंग' (भग्न पंख) का प्रकाशन किया। उनके बाल्यकाल की कुछ रचनाएं पत्रों में प्रकाशित हुई थी। कलकत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय के अभिलेखागार में उनकी कुछ प्रारम्भिक कविताएं सुरक्षित हैं। उनमें से एक कविता 3 अक्तूबर, 1896 की है, दूसरी 'ट्रैवलर्स सांग' (पथिक का गीत) उन्होंने 13 वर्ष की अवस्था में लिखी थी, तीसरी कविता उन्होंने चौदह वर्ष की अवस्था में अपने जन्मदिन पर लिखी थी। इसके अतिरिक्त वहां संग्रहीत कविताओं में से कुछ हैदराबाद और हैदराबाद के पास शोरपुर में लिखी गई थी जहां वे गर्मियों के दिनों में विश्राम के लिए जाती थीं। इनमें उनके भावी पति के बारे में उनके प्रखर प्रेम का बोध होता है। एक गद्यगीत 'नीलाम्बुज' में उन्होंने अपने समृद्ध, प्रवाहशील और आलंकारिक गद्य में उस स्वप्नलोक की रचना की है जो शाही विलास और शान शौकत में पगे हुए उनके स्वप्न संसार का प्रतीक था। लेकिन स्वप्न द्रष्टा एकाकी और अलग थलग दिखाई देता है। इस कविता का गीतिमय बालिका विश्व को स्पष्ट रूप में देखती है और काव्यमय भाषा में अपने भविष्य का चित्र खींचती है।

"तथापि, मुझे जाना होगा वहां जहां
अशांत विश्व करता है संकेत
और नियति के नगाड़ों की व्याकुल ध्वनियां बुलाती हैं मुझे,
तुम्हारे श्वेत गुम्बद की जगमगाती नींद से परे,
तुम्हारे घन प्राचीरों के स्वप्नों से दूर,
घमासान भीड़ के संघर्ष और कोलाहल के बीच
जड़ता और अन्याय के विरुद्ध मधुरिमामय प्रेम के युद्ध में।"

'नीलाबुज वास्तव म किशोरावस्था का स्वप्न है और उसम यह चेतना समाई हुई है कि जीवन म आह्लाद सुविधा और सौ दय का स्थान है, लेकिन कवि के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। कई साल बाद उनके काव्य-सग्रह 'स्कल्प्टेड फ्लूट' (रजतमडित वशी) की भूमिका म जोसफ ओसलाडर न लिखा था, 'इस महिला का भारत के वतमान कवियो म श्रेष्ठतम माना जाता है। यह कहना विरोधाभास सा लगेगा किन्तु वह एक भाव प्रवण दार्शनिक है। आदि से अत तक वह गीतकार है गीता की गायिका हैं। कीटस की भाति उन्होंने प्राय जीवन भर अस्वस्थता भोगी है। इसका बोध हमे उसक गीता के ताने बाने म व्याप्त एक विलक्षण प्रकार की उत्तप्तता म होता है। उसकी कविताए दहकती हैं। उनम ऊष्मा ह। जब वह चिडिया की तरह गाती हैं तब ऐसा लगता है कि वह आवाज अतल आकाक्षा की गहरी गुफा मे से आ रही है। उसके गीत क्षणभगुर नहीं हैं, जसे कि वन पाखी के गीत। वे सत्य की भाति शाश्वत हैं और उसका पक्षी सगीत सदा सत्य रहगा। वह महज लिखन के लिए नही लिखती। उसके काव्य मे किसी प्रकार की कृत्रिमता नहीं है। उसके गीतो म उसका हृदय मुखरित है।"

सी० पी० रामास्वामी अय्यर सरोजिनी को उस समय से जानत थे जब वह बचपन मे मद्रास मे पढती थी और उनके तीन कविता सग्रहो को महत्वपूण मानत थे। उन्होने कहा है कि उनका प्रथम काव्य सग्रह द गोल्डेन थ्रैशोल्ड' उनके आनदमय पारिवारिक जीवन के साथ जुडा है दूसरा बर्ड आफ टाइम' विकास काल के साथ जब श्रेष्ठ मानवतावादी आदश उनको प्रत्यक्षत आदोलित करन लगे थे और वह स्त्रियो की स्वतन्त्रता के लिए काम करने लगी थी तथा अतिम 'द ब्रोकेन विंग' उनके सवेगो की गाथा है। इसी काल म हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रति उनका उत्कट अनुराग पहले तो गोखले पर और बाद मे मोहम्मद अली जिन्ना पर केंद्रित हुआ जिन्हे उन्होने अपनी लेखनी से 'हिन्दू मुस्लिम एकता का दूत घोषित किया है।

गोखले ने उनसे पूछा था, 'तुम जस गीत पछी का भग्न-पख क्या होना चाहिए? इस प्रश्न से प्रेरित होकर उन्होने जो कविता लिखी उससे उनकी आत्मा की विजय का सकेत मिलता ह क्योकि उसके बाद उन्होने कुछ अपवादों

को छोडकर सभी कविताए जीवन मृत्यु और प्रेम के गीता के रूप म लिखी।

प्रश्न "महती प्रति किरण फूट पडी, शोक भरी रात बीत गई,
गहरी युग भर लम्बी निद्रा से, अतत वह जाग गई
बहुत दिनो से सोइ प्रसाद की मधु कलिया खोल रहीं—
नव अधर, आश पवन के पुनरावतन पर।
उत्सुक चित्त हमारे भरते फिर से मुग्ध उडानें
नव जाग्रत ज्योति का गौरव करने।
राह देखते जिसकी प्राण और देह वह आएगा निश्चित वसत,
गीत-पछी ऐसे मे क्यो तू भग्न पख।'

उत्तर "प्राचीन देश को मेरे जगा रहा फिर से जो वसत,
आवाहन उसका मेरे उन्मत्त, पीडित चित्त के प्रति जाएगा क्या व्यथ?
अथवा दुलक्ष्य शर नियति के कर देंगे मौन स्पदित स्वर
मेरे दूरगामी, कोमल, अविजित कठ के ?
या कोई निबल किंवा रक्तरजित पख थमा अथवा थका देगा
उडानें मेरी, मेरी वाछाओ के उन्नत साम्राज्य की ओर ?
लो देखो, उडती हू मैं नियत वसत के स्वागत मे
और लाघती तारागण को अपने भग्न-पख के बल पर।"

एक प्रकार से यह सौभाग्य की बात है कि उनका काव्य आधुनिक कविता के जन्म से पहले ही प्रभावित हो गया था, क्योकि आधुनिक कविता तो दशन रहित सत्य और गयता रहित अथपरकता के कठोर धरातल पर खडा है। उनका युग अनुशासनपूण चतुष्पदिया क छदबद्ध गीता, उच्च वैचारिकता वाले सम्बोधन गीतो तथा बिम्ब विधान और विविधता पर बल देन वाली कविता का था जा नन्ही-सी हीरक-कनी सी कविता का था। यह कहा जाता है कि उन्होने ऐसे समय मे काव्य रचना की जब अग्रेजी काव्य भावनाशीलता तथा शास्त्रीय शुद्धता की दृष्टि स निम्नतम स्तर पर जा पहुचा था।[1] इसम कोई सन्देह नही है कि ऐम

---

1 निसिम निज़ेकल पी० ई० दस्तूर, की पुस्तक सराजिनी नायडू' राव एण्ड राघवन, मैसूर

वातावरण म सरोजिनी के तराशे हुए शब्दों का प्रभाव बहुत व्यापक पड़ा और विशेषत इंग्लड म उनके काव्य का प्रभाव केवल उसके गुणो के आधार पर नही हुआ वरन इसलिए भी कि उसकी रचना एक अत्यत प्राचीन देश की एक अत्यन्य युवा नारी न की थी। सरोजिनी को यह विश्वास था और उन्होने 1946 म इस पुस्तक की लेखिका से कहा भी था कि आधुनिक कविता का कोई भविष्य नही है तथा अन्तत कविता को लौटकर छन्दबद्ध गीतो के अनुशासन और सौन्दय की दिशा मे जाना होगा। इसका यह अभिप्राय नही कि वह कविता के भविष्य को दूसरो की अपेक्षा अधिक स्पष्ट तौर पर देख पाती थी अथवा उन्हें उसका अधिक पूर्वाभास था वरन केवल यह कि उन्हे यह विश्वास था कि आधुनिक कविता मे अनुशासनहीनता और छन्दमुक्ति की लहर शीघ्र ही उतर जाएगी। इससे भी अधिक जिस तरह उनकी पीढी के बहुत से लोग आधुनिक कला को केवल इसलिए नापसन्द करते है कि उसम दृश्य सौन्दय नही होता उसी प्रकार वह यह महसूस करती थी कि आधुनिक कविता सौन्दय रहित है।

यदि इस बार म गहराई से अध्ययन किया जाए तो सम्भव है कि हम इस निष्कष पर पहुचें कि आधुनिक कविता के प्रति उनकी अरुचि उनकी आतरिक प्रकृति का परिणाम थी। आधुनिक कविता मे सत्य के अस्तित्व को तो शायद स्वीकार किया जा सकता ह लेकिन उसम आत्मा का उन्नयनकारी तत्व नही है। सरोजिनी की कविताओ मे हमे उस गौरवपूण रूपान्तरण का दशन होता है जो मत्य और नश्वर को एक दिव्यता प्रदान कर देता है और उच्चतर क्षेत्रों में ले जाता है। इसका एक उदाहरण 'भारत प्रशस्ति गीत' ह

"जागो ! हे मा जागो ! जीवित हो फिर से जाग उठो अवसाद त्याग अब,

और दूर ग्रहो से सगमित भार्या सी
जनो नया गौरव अपनी अकाल कोख से।
भविष्य तुम्हारा तुम्हे पुकारता लय-सकुल स्वर में
चन्द्र सम गौरव, गरिमा, विस्तत विजया की ओर,

जागो ! हे सुप्त मा जागो ! और मुकुट स्वीकार करो—
तुम ! प्रभुत्वमय अतीत की थीं साम्राज्ञी जो कभी ।"

उनके स्वभाव का यही पक्ष ही उन्हें मातभूमि की सेवा में खीचकर ले गया। प्रारम्भ में वह प्राचीन परम्पराओ मे निहित अन्याया के निवारण मे लगी जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने भारतीय नारी की मुक्ति की ओर अपनी शक्ति लगाई तथा बाद में सक्रिय राजनीतिक और क्रांतिकारी जीवन की ओर मुडी।

1898 म उनके विवाह से लेकर 1915 म राष्टीय जीवन मे उनकी सम्पूर्ण निमग्नता तक का काल उनके जीवन का गीत काल कहा जा सकता है। सराजिनी नायडू केवल इसी काल मे एक पत्नी, मा और कवि की भूमिका के प्रति सवत समर्पित रही।

उन्नीसवी शताब्दी की समाप्ति और बीसवी शताब्दी के आरम्भ काल मे हैदराबाद के कुलीन परिवारो म जीवन शान्त था और लोग अपने घरा म सास्कृतिक आदान प्रदान तक सीमित रहते थे। उस समय महिलाए पुरुषा से अलग-थलग सामाजिक जीवन व्यतीत करती थी। वे प्राय विवाहो अथवा अन्य उत्सवा के अवसर पर ही एकत्र हो पाती थी, या फिर कभी कभी चाय आयोजना म ही मिल पाती थी। वे मुख्यत घर की देखभाल तथा परिवार, बच्चा और स्वजना की चिन्ता मे ही व्यस्त रहती थी। त्योहारो पर कीमती साडिया और आभूषण पहनना उनके लिए अनिवार्य था। सराजिनी भी दूसरी महिलाओ की तरह सुन्दर मणि माणिक और वस्त्र पहनती थी। वस्तुत उनके समूचे काव्य म रग का समावेश है। सरोजिनी स्वय भी रग की भक्त थी। उन्हे कीमती रेशम, सोने की जजीरा, कधे के ब्रूच और चूडियो के प्रति बहुत लगाव था। यह रुचि उन्हे बगाली सस्कार से मिली थी। बाद मे एक स्वर्ण हार उनके आभूषणा का स्थायी अग बन गया था जिस पर सिंह के दो पजे बने हुए थे। 1918 म बीमारी की अवस्था मे बिस्तर पर ही उनका एक चित्र लिया गया था जिसमे वह काना की बालिया, गले का हार और चूडिया पहने हैं। बाल्यकाल के एक चित्र म वह कुर्ता जसी पोशाक पहने है जिसकी बाह लम्बी और झालरदार हैं, उसी चित्र म उनके भाई मखमली सूट, लम्बे सफेद मोजे और बूट पहने हैं और उनकी मा एक सुन्दर

सी साड़ी जिसकी किनारी चीनी कसीदाकारी की है और हाथों में हाथी दांत की चूड़ियां पहने है। उनके पिता सदा हैदराबादी वेशभूषा में रहते थे। दाढ़ी और निजाम के ढंग की टोपी में वह पूरी तरह मुस्लिम भद्रपुरुष लगते थे।

अधिकांश लोगों ने चट्टोपाध्याय और नायडू परिवारों के बारे में लिखा है कि उनका जीवन विलासितापूर्ण और विपुलता का था, लेकिन एक मित्र ने जो उनके अंतरंग जीवन को बहुत समीप से जानते थे, लिखा है कि वे —सादे, उदार और सुसंस्कृत थे। यदि ऐसा न होता तो शायद सरोजिनी नायडू अपने राजनीतिक जीवन में अनेक दशाब्दियों तक प्रवासी जीवन को न झेल पातीं तथा शिविरों, होटलों, झोंपड़ियों और जेलों में समान सहजता से न रह पातीं। उन्होंने प्रत्येक प्रकार के जीवन को एक सभ्यतापूर्ण और सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की। किंतु जब वह अपने घर में होतीं या किसी ऐसे मित्र के यहां जिसके घर को वह अपना ही घर समझती थीं तो खाने के सामान से लदी मेज पर अनेक चमत्कारपूर्ण व्यंजन तैयार करके रख देती थीं और उनके चारों ओर फूलों से लेकर आबनूस के नक्काशीदार फरनीचर तक अनेक सुरुचिपूर्ण वस्तुएं इकट्ठी होने लगतीं। यह इस बात का प्रमाण है कि सरोजिनी नायडू एक ऐसी महिला थीं जिसे घर को सुन्दर वस्तुओं से भर देने का बड़ा ही चाव हो।

उनकी अंतरात्मा में एक ओर जीवन के इन विशुद्ध नारी सुलभ पक्षों, सुविधापूर्ण जीवन, सुरक्षा और उल्लासप्रियता तथा दूसरी ओर उन्मेषकारी ऊर्जा के बीच एक संघर्ष भी रहता था जो उन्हें कभी भी शांति के साथ नहीं जीने देता था। जहां एक ओर वह लोगों से मिलने, गपशप करने इस या उस व्यक्ति के बारे में विस्तारपूर्वक कहानियां सुनाने और बीच-बीच में कहकहे लगाने तथा हंसने हंसाने (यह स्वभाव तो उन्होंने जीवन के अंत तक बनाए रखा) में असीम तृप्ति अनुभव करती थीं, वहीं उनके जीवन का सुधारक पक्ष भी था जो पूरी तरह घर के बाहर काम करने के लिए प्रतिबद्ध था। अंत में उनके जीवन के इसी पक्ष ने उनकी समूची शक्ति अपने में खपा ली। सी०पी० रामास्वामी अय्यर उन्हें मूलतः स्वप्न द्रष्टा मानते थे किंतु 1910 से 1916 के बीच वह एक ऐसे निर्णायक बिंदु पर पहुंच गई थीं जहां उनके स्वप्न यथार्थ में रूपांतरित होने लग थे, तब से उन्होंने घर में समय लगाना कम कर दिया था और राजनीतिक संघर्ष में पूरी तरह

उलझने के बाद तो वह वर्ष में बीस दिन ही घर के लिए निकाल पाती थी।

आरम्भ से सुधारवादी प्रकृति के कारण वह महिलाओं की समस्याओं में रुचि लेने लगी थी। व्यंग्य भरी तीखी भाषा के प्रयोग की प्रतिभा तो उनमें थी ही, अपने प्रारम्भिक भाषणों में से एक में उन्होंने संयुक्त परिवार प्रणाली को 'घरेलू चूहा' कहा था।

सरोजिनी नायडू के समस्त भाषणों का कोई लेखा उपलब्ध नहीं है। उनकी सबसे बड़ी बेटी का विचार है कि यदि लेखा होता तो भी उनके शब्दों का वास्तविक अर्थ किसी भी भाषण में प्रतिबिम्बित नहीं हो पाता। वह एक जन्मजात कुशल वक्ता थी। उनकी वक्तृत्व कला में समृद्ध भाषा, तूफानी प्रवाह, बुद्धि-चातुर्य और कारुण्य का ऐसा विलक्षण सम्मिश्रण होता था कि वह इन सब विशेषताओं को एक सुगठित बिम्बयुक्त साँचे में ऐसे ढाल देती थी कि उनके भाषणों को संवाददाता अथवा श्रोता पूरी तरह आत्मसात नहीं कर पाते थे। उनके जो थोड़े से भाषण प्रकाशित हो पाए हैं उनमें उनका आदर्शवाद और उनकी उत्कट भावनाओं की अभिव्यक्ति श्रेष्ठ शैली में हुई है। ऐसा लगता है कि भाषा उनके मुँह से उस सहजता और सुगमता से प्रवाहित होती थी जैसे कोई झरना किसी ऊँचे शैल शिखर से बह रहा हो। उनके समकालीन लोगों में केवल एनीबीसेंट को ही सरोजिनी जैसी यह प्रतिभा मिली थी जिसके कारण श्रोताओं में बिजली की लहर सी दौड़ जाती थी।

1903 में मद्रास में एक भाषण में उन्होंने कहा था

"अपनी यात्राओं, अपनी धारणाओं, अपनी आशाओं, अपनी आकांक्षाओं अपने स्नेह और अपनी सहानुभूतियों के विस्तार तथा विभिन्न प्रजातियों जातियों धर्मों और सभ्यताओं के साथ अपने सम्पर्क के द्वारा मैंने एक स्पष्ट दृष्टि प्राप्त कर ली है। मेरे मन में प्रजाति, धर्म अथवा रंग के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रहा है। जब तक आप विद्यार्थी बन्धुत्व की वह भावना प्राप्त नहीं कर लेते और उसके स्वामी नहीं बन जाते, तब तक आपको यह आशा नहीं करनी चाहिए कि आप सम्प्रदायवादी नहीं रहेंगे। और यदि मैं इस शब्द का प्रयोग करूँ तो कहा जा

1902 मे सरोजिनी ने कलकत्ता म सावजनिक सभाओ म भाग लिया और बम्बई में एक विराट जनसभा तथा महिलाओ की सभाओ म भाषण दिए। इन भाषणो म उन्होने महिलाओ की कमजोर सामाजिक स्थिति बाल विवाह विधवा विवाह, बहु विवाह (पुरुषो म) और महिलाओ की शिक्षा आदि विषयो को स्पश किया। उन्होने भावुकतापूण स्वर म महिलाओ का आवाहन किया कि वे घरो से बाहर आए काम म जुट जाए और व्यावसायिक क्षेत्रो म प्रवेश करें। उन्होने महिलाओ स शिकायत की कि वे परम्परा की जजीरो स जकडी हुई है और अपन चारो ओर फली हुइ दरिद्रता और पीडा, अस्पतालो म पडे हुए रोगियो बच्चो की उपेक्षा तथा अनाथो और विकलागो की व्यथा की ओर से आख मूदकर बठ गई है। उन्होने इस वास्तविकता का परिपूण दशन प्राप्त कर लिया था कि धार्मिक मतो क अलगाव ने दूसर धर्मों के अस्तित्व को तो अनुमति दे दी है लेकिन उसन दूसरो के दुख दद के प्रति सामान्य मानवीय चिन्ता और सवेदना के तत्वो का समापण नही किया ह। वह स्वय अपने मुस्लिम वातावरण मे घर पर एक आस्थावान हिन्दू थी, जन्म से ब्राह्मण और प्रेम तथा विवाह के सूत्रो म एक अब्राह्मण के साथ जुडी थी एव अदम्य देशभक्त होने के बावजूद वास्तव म एक विश्व नागरिक थी उनके श्रोताओ म से अधिकाश प्राय अपने सीमित दायर में ब द होते थे तथापि वे सरोजिनी के शब्दो पर इस कारण ध्यान देते और उन्ह स्वीकार करते थ क्योकि उनका व्यक्तित्व क्रियाशील था तथा उनके शब्द एक ओर चोट करने वाले तथा दूसरी ओर स्नेह और मानवतावाद से परिपूण होते थे। भारत में नारी स्वातन्त्र्य आन्दोलन का जन्म दन में उनकी सफलता में इस तत्व का बहुत योगदान रहा।

ऐसा नही है कि सरोजिनी नायडू भारत की प्रथम महिला सुधारक थी, पडिता रमाबाई, डा० श्रीमती मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, रमाबाई रानडे आदि अनक महान महिला सुधारक उनसे पहले अपने-अपन क्षेत्र में काम कर रही थी। सरोजिनी की विशेषता तो इस बात में थी कि उनमें अपन श्रोताओ का हृदय इस सीमा तक स्पश करन की विरल प्रतिभा थी कि वे मत्रमुग्ध हो जाते और उनका

---

1 सरोजिनी नायडू—ले० पी० ई० दस्तूर, राव एण्ड राघवन, मैसूर

प्रभाव ग्रहण कर लेते थे। उन्होंने अपने जीवन म जो काम किया यदि उसका विश्लेषण किया जाए तो यह जानकर आश्चय होगा कि उनम वह सगठनात्मक शक्ति नही थी जो 1930 तथा 1940 के दशकों मे महिलाओ म प्रकट हुई किन्तु दूसरा को काय के लिए प्रेरित करने की प्रतिभा उनम विलक्षण रूप मे विद्यमान थी। उनकी देन प्राय सम्पूणत उनके भाषणा तथा एक सचमुच सावभौम दष्टिकोण पर आधारित है। उन्होंने विशेषत महिलाओ से सम्बधित सामाजिक बुराइयो का जो स्पष्ट और विस्तत विश्लेषण किया, उसने एक ऐसे नेतत्व को जन्म दिया जिसे अपने काय की दिशा और महिला-स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रयोजन का सम्यक बोध था। वह नेतत्व अनन्त अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के सगठन मे केन्द्रित हो गया।

इस प्रारम्भिक काल की सबसे अधिक महत्वपूण घटना गोपाल कृष्ण गोखले के साथ उनकी भेट थी। 1915 म उनकी मत्यु पर सरोजिनी नायडू ने ' गोखले एक मानव" शीषक से उन्ह एक हृदयस्पर्शी श्रद्धाजलि समर्पित की जो बाम्बे क्रॉनिकल' म प्रकाशित हुई जिसम उन्होंने अनेक महत्वपूण घटनाओ का उल्लेख किया है

> एक दिन सवेरे सवेरे आम राष्ट्रीय समस्याओ के बारे म थोड़े से निराश और दु खी मन स उन्होने मुझसे पूछा, भारत के भविष्य के बारे म तुम्हारी क्या दष्टि है ? मैंने उत्तर दिया, 'आशापूण । उन्होने दूसरा प्रश्न पूछा, 'तुरन्त सामने जो समय आ रहा है उसके बारे मे तुम क्या कल्पना करती हो ? मैंने उल्लासपूण आस्था के स्वर म कहा 'पाच वष से भी कम समय म हिन्दू मुस्लिम एकता। उच्छवासपूण उदास स्वर म वह बोले, मेरी बच्ची तुम कवि हो लेकिन तुम बहुत अधिक आशावादी हो। तुम्हारे या मेरे जीवनकाल मे यह नही हो पाएगा। फिर भी जहा तक हो सके आस्था और आकाक्षा बनाए रखो।

' मैं इसे अपने लिए अनुपम गौरव की बात मानती हू कि मैं 22 *माच 1913 को लखनऊ म आयोजित मुस्लिम लीग के उस ऐतिहासिक अधि*वेशन म सम्मिलित हुई और मैंने उसमे भाषण भी दिया जिसम लीग ने अपने

नए विधान को अंगीकार किया था जिसकी सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि उसके द्वारा लीग ने राष्ट्रीय कल्याण और प्रगति के समस्त मामलों में सहभागी जाति के साथ निष्ठापूर्ण मेल मिलाप का निश्चय किया था। (बाद में जब वह गोखले से मिलीं तो) मैंने देखा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विख्यात नेता पत्रिकाओं के अवलोकन में व्यस्त था जिनमें मुस्लिम लीग और उसके नए आदर्शों की समीक्षा और समालोचना भरी पड़ी थी। जब उन्होंने मुझे देखा तो वह मेरी ओर हाथ फैलाकर ऊंचे स्वर में बोले, ओह, क्या तुम मुझे यह बताने आई हो कि तुम्हारी कल्पना सत्य थी।'

एक दिन (1913 में, लंदन में) मैंने उनके सामने अपने उस नए नाजुक ध्येय की चर्चा चलाई जिसे मैंने लंदन भारतीय संघ की ओर से हाथ में लिया था। यह एक नया छात्र संगठन था जिसकी स्थापना कुछ सप्ताह पहले ही मुहम्मद अली जिन्ना ने लंदन के भारतीय छात्रों के सक्रिय और उत्कट समर्थन के आधार पर की थी। वे जी जान से यह कोशिश कर रहे थे कि एक ऐसा स्थाई केन्द्र बना लिया जाए जो लंदन के बिखरे हुए भारतीय छात्र जीवन को संगठित कर सके। वह सहयोग और साहचर्य भावना की ऐसी सुदृढ़ परम्पराएं स्थापित करना चाहते थे जिनके आधार पर नया संगठन भविष्य के संघात्मक भारत के एक पुण्य आदर्श नमूने के रूप में विकसित हो जाता। संघात्मक भारत उनके सपनों का भारत था, और यह उनकी हार्दिक इच्छा थी कि सेवा के इस नए ध्येय पर अग्रसर होते समय उन्हें अपने इस अनूठे मित्र और भारत के सेवक (गोखले) के मुंह से सहानुभूति के दो शब्द और आशीर्वाद मिल जाते।

"पहले तो उन्होंने मेरी प्रार्थना को दृढ़तापूर्वक अस्वीकार कर दिया तथा अपने निर्णय के पक्ष में मुझे बताया कि उनके चिकित्सकों ने उन पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया है कि वह आवश्यक तनाव और थकान मोल न लें। यह सुनकर पहले तो मैं झिझक गई। लेकिन मेरी कठिनाई यह थी कि मैंने सोचे विचारे बिना ही संघ के कार्यकर्त्ताओं से वायदा कर दिया था कि वह (गोखले) अवश्य बोलेंगे, अतः मैंने उन्हें दुगनी शक्ति से मनाने की कोशिश की। वह बुदबुदाये तुम स्वयं ही स्वास्थ्य के समस्त नियमों का उल्लंघन नहीं करती हो मुझे भी उनकी अवज्ञा और द्रोह के लिए

उकसा रही हो। उनकी आखो म पलभर के लिए चमक आ गई और उन्होंने मुझसे पूछा, इसके अतिरिक्त यह बताओ कि तुम्ह क्या अधिकार था कि तुम मेरी ओर स वचनबद्ध हो बैठी ? मैंने उत्तर दिया तरण पीढ़ी के लिए आपसे आशा के सदेश की हर कीमत पर मागदशन करने का अधिकार।

'कुछ दिना बाद 2 अगस्त 1913 को उन्होंने कैक्सटन हाल म एक विराट और उत्साही छात्र समुदाय के समक्ष शानदार उदघाटन भाषण दिया तथा उनके सामने देशभक्ति और आत्मोत्सग क उन्नायक पाठ रखे। उनकी पीढ़ी के लोगो म एक अकेले उनम ही य पाठ साधिकार और गरिमापूवक प्रस्तुत करन की क्षमता थी।'

आगे वह एक घटना का उल्लेख करती है जिसन उनके जीवन पर गहरा प्रभाव छोडा।

"साझ गहराती जा रही थी और हम खामोश बठे थे। अतत किसी गहरे सवग से आलोडित उनकी स्वर्णिम वाणी न परामश और उपालभ के स्वर्णिम शब्दा द्वारा मौन भग किया। व शब्द इतने महान, इतने पुनीत और इतने उत्प्रेरक थे कि मैं सदा उनसे रोमाचित रही हू। उन्होंने मुझसे भारत की सेवा से प्राप्त होन वाले अनुपम आनद और उसके गौरव की चर्चा की। उन्होन कहा, आओ यहा मेरे सग खडी हो जाओ। नक्षत्र और पवत साक्षी हैं। उनके सामने अपने जीवन और अपनी प्रतिभा, अपने गीतो और अपनी वाणी, अपन चितन और अपने स्वप्नो को मातभूमि क पति समर्पित कर दो। ह कवयित्री! शैल शिखरो पर से दष्टिवोध प्राप्त करो और घाटियो म श्रम कर रह लोगो को आशा का सदेश सुनाओ।"

आधुनिक तरुण मानस इस दृश्य म भावावेशपूण नाटकीयता का दशन करेगा लेकिन सेवा की इस युग पुकार पर सरोजिनी का मन अपने आदशवादी उत्साह म समूची शक्ति के साथ आदोलित हो उठा। उन्हे वह वेदी मिल गई जिस पर वह पूजा-सुमन चढा सकती थी। वह श्रेष्ठ प्रयोजन मिल गया जिसके प्रति वह दह और आत्मा सहित सपूणत समर्पित हो सकती थी, और वह महिमामय व्यक्तित्व भी मिल गया जिसका नेतत्व सरोजिनी स्वीकार कर सकती थी। इसमे कोई अचरज की बात नही है कि इस घटना के बाद उनकी कविता और

कल्पना का जीवन सिकुड़ता गया और उसके स्थान पर एक नई सरोजिनी उभरने लगी।

उनके कथनानुसार उन्होने बाईस वर्ष की अवस्था म भाषण देना आरभ कर दिया था, और 1905 म तो वह विदेशी शासन की निंदा और हिंदू मुस्लिम एकता का प्रतिपादन करती हुई राजनीति म कूद पडी। जब लार्ड कर्जन ने, वृहद बगाल का विभाजन करने का निश्चय कर लिया तब कलकत्ता के नागरिको ने एक विशाल सावजनिक सभा मे विदेशी वस्तुआ के बहिष्कार के साथ प्रथम सगठित सविनय अवज्ञा आदोलन छेडा। भारतीय बधुत्व के प्रतीक के तौर पर आपस म राखिया बाधी गइ जिनके द्वारा एक ने दूसरे को मातभूमि की निष्ठापूर्ण सेवा के सूत्र म बाधा। विद्यार्थी यह आरोप लगाकर विद्यालया और विश्वविद्यालयो से निकल पडे कि हम अग्रेज शासको की दासता करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। 1906 मे अखिल भारतीय काग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर सरोजिनी के वक्तव्य और उनके युवास्वरूप ने श्रोताओ को हिला दिया। उस प्रारभिक अवस्था मे भी उनम पूर्ण आत्मविश्वास था। भावना स परिपूर्ण भाषण देने के पश्चात सरोजिनी मच से कूदकर राष्ट्रभक्ति के गीत गाने वाली महिलाओ मे जा मिली। इसी समय विद्यार्थियो के सम्मेलन भी शुरू हो गए थ। उनमे सरोजिनी की उपस्थिति युवको पर बहुत गहरा प्रभाव डालती थी। सरोजिनी वाराणसी, कलकत्ता और बिहार मे विद्यार्थियो की अनेक सभाओ म बोली। आरम्भ स ही उन्होने इन सावजनिक सभाओ म सर फिरोजशाह मेहता पडित मदनमोहन मालवीय गोपालकृष्ण गोखले सुरेंद्रनाथ बनर्जी मुहम्मद अली जिन्ना, दादाभाई नौरोजी लाला लाजपतराय और बाल गगाधर तिलक सरीखे महान समकालीन नेताआ के साथ भाषण दिए।

1906 मे उन्होने कलकत्ता म आयोजित आस्तिकता सम्मेलन मे एक भाषण दिया जो बहुत प्रसिद्ध नही हुआ किंतु उसमे उन्होने आध्यात्मिक जीवन म वयक्तिकता के तत्व पर बल दिया था। उन्होने वहा कहा कि भारत की मुक्ति आध्यात्मिकता म निहित है, भारत उसी के कारण आज तक जीवित रह पाया है जब कि यूनान और रोम सरीखी महान सभ्यताओ का अन्त हो गया। उनके इस भाषण मे सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होने समूची महान भारतीय धार्मिक धरोहर मे एकता के तत्व पर बल दिया। यह वह मूल तत्व है जिसे एक

राष्ट्रीय नेता के रूप में उनके जीवन और कर्म की प्रमुख देन माना जा सकता है।

1906 में कलकत्ता में भारतीय सामाजिक सम्मेलन के अवसर पर महिलाओं की शिक्षा से सम्बन्धित प्रस्ताव में उन्होंने एक संशोधन रखा था जिसमें हिन्दू के स्थान पर 'भारतीय' शब्द प्रयोग करने का सुझाव था। इस सुझाव के पीछे यह चेतना निहित थी कि भारत में उस एकता की स्थापना की आवश्यकता है जिसके अन्तर्गत अस्तित्वबोध के लिए जाति, मत अथवा धर्म का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं होगी। महिला शिक्षा के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि, "विश्व में भारत एक ऐसा देश है जो प्रथम शताब्दी के आरम्भ में एक महान सभ्यता के रूप में विकसित था और जिसने संसार की प्रगति में योगदान किया। यहाँ उच्चतम प्रतिभा और व्यापकतम संस्कृति से सम्पन्न महिलाओं के शानदार उदाहरण मिलते हैं। किन्तु विकासक्रम में हमारा भाग्य चक्र कुछ ऐसा चला कि तुलनात्मक दृष्टि से इस क्षेत्र में हमारी वर्तमान स्थिति हमारे लिए लज्जास्पद बन गई है। अब वह समय आ गया है जब हम सोचें कि दस बार में थोथे प्रस्ताव पारित करते रहने की अपेक्षा हम इस दिशा में किस प्रकार अधिक फलदायी परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।' सरोजिनी ऐसा महसूस करती थीं कि एक सम्मिलित राष्ट्रीय आदर्श की सिद्धि के लिए किए जाने वाले प्रयास का आंदोलन महिला प्रश्न के चारों ओर केन्द्रित किया जाए। उन्हें इस बात का खेद था कि महिला शिक्षा की अनिवार्यता को सर्वसम्मत स्वीकृति' तक नहीं मिल सकी थी।[1] खिन्नता से उन्होंने कहा, 'क्या किसी व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह दूसरे को पोषणदायी स्वच्छ वायु के सेवन के जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित कर दे? तब किसी को यह साहस कैसे हो सकता है कि वह दूसरे मनुष्य की आत्मा को स्वतंत्रता और जीवन के सनातन उत्तराधिकार से वंचित कर दे? किन्तु मित्रो! भारतीय नारी के मामले में पुरुष ने यही किया है। यही कारण है कि आज भारतीय पुरुषों की यह दुर्दशा हो गई है। आपके पिताओं ने आपकी माताओं को उनके सनातन जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित रखकर आपको, उनके बेटों को आपके उचित उत्तराधिकार से वंचित कर दिया है। अतः मैं आप पर यह दायित्व सौंपती हूँ कि आप अपनी महिलाओं को उनके प्राचीन अधिकार

1 सरोजिनी नायडू—ले० पद्मिनी सेनगुप्त

लौटा दें, क्योंकि जैसा कि मैंने कहा है राष्ट्र की सच्ची निर्माता हम हैं आप नहीं, और हमारे सक्रिय सहयोग के बिना प्रगति के समस्त चरणों में आपकी सब कांग्रेसें और सम्मेलन एक कदम बकार रहेंगे।

जिन दिनों सरोजिनी के पिता बंगाल के टैगोर, चितरंजन दास और केशव चन्द्र सेन सरीखे बौद्धिक महारथियों के साथ ब्रह्मसमाज के सुधारवादी आंदोलन में लगे थे उन दिनों उन्होंने काफी समय कलकत्ता में बिताया। उनके मित्र उन दिनों होने वाले सुखद पारिवारिक मिलनों को अभी तक याद करते हैं, जब सरोजिनी उद्यान में परिवार के भतीजे भतीजों और मित्रों से घिरकर बैठ जाती थी। वहां भी वह अग्रगामी और सुधारक परिवारों के उच्च-प्रयोजनयुक्त वातावरण में बहुत सहजतापूर्वक रहती थी। वस्तुतः उस युग को सुधार का युग कहा जा सकता है जिसमें पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त नई पीढ़ी ने भारतीय धारणाओं और प्रथाओं का निष्पक्षतापूर्वक परीक्षण प्रारम्भ कर दिया था तथा अपनी इस प्रवृत्ति के माध्यम से अपने साथी नागरिकों के जीवन में एक नए मानवतावाद और व्यापकतावाद का समावेश करा दिया था। यह वातावरण उस वातावरण से भिन्न था जो 1940 और 1950 के दशकों में राष्ट्रीय ध्येयों की पूर्ति की दृष्टि से निर्मित हुआ था जिसमें राजनीतिज्ञों को मतदाताओं को संतुष्ट और आकृष्ट करने की अनिवार्यता के सामने घुटने टेक देने पड़े तथा आदर्शवाद को तिलांजलि देनी पड़ी, यह स्थिति उस युग के मानवतावादियों के लिए अत्यंत कष्टकर सिद्ध हुई।

सरोजिनी बाल्यकाल से ही इस विरल वायुमंडल में पली थी और इसमें कोई अचरज की बात नहीं है कि अपने अंतिम दिनों में वस्तुतः समूचे राजनीतिक जीवन में ही उन्हें उत्तम कोटि के मानवीय मूल्यों के प्रति भीषण विश्वासघात के कारण व्यथा और वेदना रही। वह एक वीरांगना थी। वह प्रत्येक झंझावातपर उत्साह और साहस तथा उस अदम्य आत्मविश्वास के साथ आरूढ़ हो जाती थी जिसके आवेग में उन्होंने गोखले से कहा था कि पांच वर्षों में हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित हो जाएगी। किन्तु बार बार उन्हें लौट फिर कर निराश होना पड़ता था। शायद बचपन की उनकी व्यथा बार-बार लौट आती थी जिसने उन्हें हताशा के साथ अपने आपसे यह पूछने के लिए विवश किया था कि, "मैंने विश्व को बदल डालने के लिए क्या किया।"

सक्रिय सावजनिक जीवन मे कूद पडने के परिणामस्वरूप आन वाल दबावो और तनावो तथा उस अनिवाय आतरिक द्वद्वन जिनका सामना अपन परिवार को बहुत प्यार करनवाली प्रत्येक महिला को करना पडता है, सरोजिनी क स्वास्थ्य को 1913 मे फिर तोड डाला और वह इग्लड चली गइ। उस समय तक गोखल के साथ उनकी मत्री घनिष्ठ और साथक सम्बध का रूप ल चुकी थी। गोखले न जिस निष्काम उत्साह स भारत सवक समिति (सवेंटस आफ इण्डिया सासाइटी) के नि स्वाथ काय का सगठन किया था उसन इस उत्साही तरुण महिला मे राष्ट्रीय सेवा की भावना उत्पन्न कर दी जिसके कारण वह सावजनिक जीवन म प्रविष्ट हाने का कठिन निणय ले सकी। उनका वक्तत्व-कौशल श्रोताओ को प्रभावित करने म तत्काल सफल रहता था। इसम कोई आश्चय नही है कि गाखले ने पल भर म ही सराजिनी की इस शक्ति का पहचान लिया था तथा उन्हाने उन की जो सराहना उस समय की थी उसस सरोजिनी पर गहरा प्रभाव हुआ। गोखले मूलत एक आध्यात्मिक गुरु थे तथा उन्हने सरोजिनी के जीवन को प्रभावित करा के मामले मे उनके पिता का स्थान ले लिया था। सराजिनी के पुरान मित्र सी० पी० रामास्वामी अय्यर ने 90 वष की आयु म अपने देहान्त से कुछ महीने पहले ही मुझे बताया था कि, "सरोजिनी की प्रकृति हमेशा एक गुरु की माग करती थी। उनके जीवन पर पहला महत्वपूण प्रभाव उनक पिता का था। दूसरा प्रभाव गोखले की सेवा की पुकार का था। तीसरा प्रभाव जिन्ना का था जिनको राष्ट्रीयता के कारण उन्ह हिन्दू मुस्लिम एकता की वास्तविकता पर विश्वास हो गया था। अतत वह गाधीजी के आवाहन के सम्मुख पूरी तरह समर्पित हो गइ तथा उन्हने उनके प्रति तथा उनके आदर्शों के प्रति पूरी आस्था के साथ आत्म दान कर डाला। यह आत्मदान इस सीमा तक आगे चला गया कि उन्होन अपनी बहुमूल्य साडिया तथा अपन आभूषणो का परित्याग करके खादी वस्त्र धारण कर लिए तथा इस व्रत का पालन जीवन के अतिम क्षण तक किया। गाधीजी की आध्यात्मिक शक्ति इतनी प्रवल थी कि थोडे स सघष के बाद उन्हान (सराजिनी) उन्हे पूरी तरह आत्मसमपण कर दिया। गाधीजी को वह जितना चिढाती थी उतना और कोई नही करता था, लेकिन साथ ही वह उनके नेतत्व को सर्वोपरि मानती थी।"

सरोजिनी के भाई हरीन्द्रनाथ की पत्नी कमला देवी चट्टोपाध्याय ने गाधीजी के बार म कहा है कि वह अत्यन्त निष्कपट अपनत्वपूण थे यही वह चुम्बकीय

शक्ति थी जो सबको इनकी ओर खीचती थी। वह निर्विवाद रूप से अपनी अन्तर्दृष्टि पर विश्वास करते थे। वह न बहस कर सकते थे न वह इतने वाक्पटु ही थे कि लोगो को निरुत्तर कर सकते। लेकिन वह ऐसी महान आस्था के स्वामी थे जो उनके समीप जाने वाले प्रत्यक व्यक्ति को प्रभावित करती थी। वह केवल प्रेरित ही नही करत थे वरन् ऐसी अनुभूति जगा देते थे कि उन पर पूरी तरह विश्वास किया जा सकता था।' सराजिनी पर उनका यह प्रभाव इतना गहरा था कि उ होन एक बार भी ऐसा अवसर नही आने दिया कि गाधी जी उनकी निष्ठा पर सदेह कर पाते। उन्होने बाद मे स्वतत्रता सग्राम के चरमोत्कष काल मे उनके कधा पर महानतम राष्ट्रीय दायित्व सौपे।'

यह बात बहुत आश्चयजनक है कि गाधीजी न गाखले और सराजिनी दोनो के बारे मे यह कहा है कि उनकी पवित्रता गगा के समान थी। गोखले से पहली भेंट के बाद ही उन्होने कहा था "उन्हान मुझे स्नेहसिक्त स्वागत प्रदान किया और उनके व्यवहार ने तुरन्त मेरा हृदय जीत लिया। फीरोजशाह मेहता मुझे हिमालय जैसे लगे, लोकमा य तिलक महासागर के समान, किन्तु गोखले गगा सरीखे थे। हिमालय अनुल्लघीय है और सागर को भी आसानी से पार नही किया जा सकता, लेकिन गगा हम पवित्र स्नान का निमन्त्रण देती है।

18 अप्रल, 1913 को गोखले के नाम सरोजिनी न एक पत्र मे लिखा था

'यह छोटा सा पत्र आपके स्वास्थ्य मे तीव्र सुधार की कामना प्रकट करने के लिए लिख रही हू। मेरी बहुत इच्छा थी कि आपके रवाना होन मे पहले मैं आपसे मिल पाती लेकिन मुझे विश्वास ह कि हमारी भेंट यूरोप मे होगी क्याकि मेरे चिकित्सको ने अब मुझे यहा से जान का आदेश दे दिया है। वे कहते हैं कि मैं बीमार हू और और मैं भी माचती हू कि शायद यह सही है। जि ना आपके साथ यात्रा कर रह है। मुने विश्वास ह कि इसका एक कारण यह भी है कि वह उन समस्याओ के बारे म आपके साथ स्वतत्रतापूवक पूरी तरह चर्चा कर लेना चाहते है जो उन्ह भी आपकी ही तरह और यदि अनुमति दें ता कहू कि मुझे भी परेशान रखती है। मुझे विश्वास है कि इसका एक कारण यह भी है कि वह उन समस्याओ के बार म आपके साथ स्वतन्त्रतापूवक और पूरी तरह चर्चा कर लेना चाहते हैं। कृपया उनके बार म मेरे अभिमत और मेरी धारणा पर विश्वास

रखिएगा और उनको यह महसूस कराने के लिए अपने महान प्रभाव का उपयोग कीजिएगा कि वह एक ऐसे पुरुष हैं जिनकी महान काय प्रतीक्षा कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यदि आप दोनों ने मिलकर चर्चाए की तो आप उनमे वह आत्मविश्वास जगा सकेंगे जिसकी उनम कमी है और आपको एक नई आशा के साथ ही एक योग्य साथी मिलेगा। आप ही ऐसे दो व्यक्ति है जिनमे मुझे भरोसा है और आप मुझे यह विश्वास करने का सम्मान प्रदान करें कि मेरी नारी सुलभ और कवि सुलभ अन्तर्दृष्टि मुझे यह शक्ति प्रदान करती है कि मैं भविष्य को स्पष्ट और लगभग निश्चित रूप स देख रही हू।'

किन्तु 1902 से 1915 म अपनी मृत्यु के समय तक गोपाल कृष्ण गोखले ही सरोजिनी क जीवन के नियामक रहे। सरोजिनी ने उनके बारे मे लिखा है, एक सुखद सहानुभूति के साथ उनसे जो परिचय हुआ वह बढता ही गया और अतत एक घनिष्ठ और स्नेहिल साहचय के रूप मे पुष्ट हो गया जिसे मैं अपने जीवन की शीष उपलब्धिया म गिनती हू। यद्यपि हमारी मित्रता को सक्षिप्त और कटुतापूर्ण विलगाव के गभीर क्षणा मे भी गुजरना पडा तथापि बुन मिला कर वह प्राणदायी आध्यात्मिक आनन्द और बौद्धिक चर्चा तथा विमहमति की गतिप्रद चुनौती से सदा सजीव बना रहा।" 1912 मे इग्लड के लिए रवाना होने स पहले उन व्यस्त वर्षो मे सरोजिनी ने गोखले के साथ सवदनशील मत्री बनाए रखी। वह हिन्दू-मुस्लिम एकता और राष्ट्रीय स्वाधीनता क समान प्रयोजनो पर तो आधारित थी ही साथ ही उनके बीच वह विरल मैत्री भी थी जो कभी कभी ही देखने का मिलती है। जिसमे एक ऐसा पुरुष जो अपन उच्च आदर्शों और अनुकरणीय जीवन के लिए पूजनीय माना जाता हो एक ऐसी तरुण महिला के साथ घनिष्ठ मित्रता स्थापित करता है जा उच्चतर प्रयोजना मे साझीदार होने के अतिरिक्त आध्यात्मिक सगति की आवश्यकता की भी पूर्ति करती हो। सरोजिनी ने लिखा कि, "गोखले की महान और साथ ही विरोधाभासपूर्ण प्रकृति के रहस्या का अध्ययन मेरे लिए मानवीय मनोविज्ञान का एक बहुमूल्य पाठ सिद्ध हुआ। वह राजनीतिक विश्लेषण और सश्लेषण की अनूठी प्रतिभा के धनी थ, सुसयोजित तथ्यो और आकडा से सुसज्जित अकाट्य तर्कों पर उन्हे पूर्ण अधिकार था और वह पूर्ण सहजता तथा निर्भीकता स उनका उपयोग करते थे, विरोध करत समय वह सौजन्य नही खोत थ किन्तु उनकी पनी दृष्टि

पीछे से बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन चिंतायुक्त महीनों म उन्ह जिन तनावों को झेलना पड़ा और शाही कमीशन के सामने गवाही देने के सिलसिले म उन्होंने एक लम्बे समय तक जो घोर परिश्रम किया था उन सबने मिलकर गोखले के स्वास्थ्य को तोड डाला जिसे पहले ही मधुमेह और वर्षों के अथक परिश्रम ने खोखला कर दिया था। 19 फरवरी, 1915 को गोखले 48 वष की आयु म दिवगत हो गए। गोखले न लाड कजन की नीतियों की कठोर आलोचनाए की थी लेकिन उनके निधन पर कजन ने ही उनको महानतम श्रद्धाजलि समर्पित की। कजन ने ब्रिटेन की लाड सभा में कहा कि गोखले से अधिक ससदीय-क्षमता मैंने अपने जीवन-काल म किसी भी राष्ट्र के किसी अन्य पुरुष म नहीं पाई। गोखले ससार की चाहे किसी भी ससद म होते उन्हे सम्मानपूर्ण स्थान मिला होता।

गोखले की राजनीति दादाभाई नौरोजी, उमेशचन्द्र बनर्जी, ह्यूम, वेडरबर्न, बदरुद्दीन तैयबजी, दिनशा वाचा और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की राजनीति थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इन प्रवतकों म बाद की पीढियों द्वारा आकी गई मात्रा से कहीं अधिक महत्तर दृष्टि, साहसशीलता और राजनीतिक मेधा थी। निश्चय ही सरोजिनी नायडू की गणना भी स्वभावत आदर्शवादियों के उसी समुदाय म की जा सकती है बाद के राजनीतिज्ञों के समुदाय म नहीं। क्योंकि गोखले की तरह वह मूलत उदारवादी और मानवतावादी थी।

अपनी मित्रता के पूरे काल में गोखले सरोजिनी को उनके भाषणों और कार्यों की सराहना म निरन्तर पत्र भेजते रहे कभी कभी उनम सलाह अथवा प्रताड़ना भी रहती थी। वह उनके स्वास्थ्य के बारे में सदा चिन्तित रहते थे और एक भारतीय पिता की भांति यह सोचते थे कि यदि प्रशसा करूंगा तो उसका सिर फिर जाएगा। इतिहास के किसी भी काल में ऐसी कम महिलाएं मिलेंगी जिन्ह सरोजिनी की भांति इतनी कम अवस्था म सराहना और प्रशसा मिली हो। उनकी कविता का उत्तेजनात्मक प्रभाव हुआ जिसके कारण उन्ह समूचे भारत, इंग्लैंड और यूरोप म मान्यता प्राप्त हुई। समालोचकों ने उनकी तुलना ब्लेक से की और कहा कि उनकी कविताओं में जो समृद्ध बिम्ब विधान है उसके सामने अन्य अंग्रेजी कविताएं फीकी लगती हैं। जब उन्होंने एक वक्ता के रूप म जीवन आरम्भ किया तब भी उन्हे तत्काल प्रसिद्धि मिली।

मार्च 1912 की एक घटना में सरोजिनी ने अपने मन के अनुकूल एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। मुस्लिम लीग ने एक ऐतिहासिक अधिवेशन बुलाया जिसमें उसे वह विधान स्वीकार करना था जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय कल्याण और प्रगति के समस्त मामलों में हिन्दुओं के साथ सहयोग की कल्पना की गई थी। सरोजिनी ने इस अधिवेशन को सम्बोधित किया और एक भावुकतापूर्ण भाषण दिया। लेकिन स्मरणीय वह भाषण नहीं वरन वह पक्ष है जिसमें सम्भवतः एक भी महिला उपस्थित नहीं थी, जिसमें तरुणों द्वारा ही नहीं अपितु रूढ़िवादी तत्वों द्वारा भी नए प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किए गए तथापि कालान्तर में तो सरोजिनी की आशाएं धूल में मिल गईं तथापि उस समय यह कहा गया था कि मुस्लिम लीग की उस सभा ने "एक नए युग का सूत्रपात और आधुनिक भारतीय राजनीति के इतिहास के एक नए अध्याय का उद्घाटन किया।"

इस घटना के बारे में गोखले की प्रतिक्रिया का सरोजिनी ने इन शब्दों में वर्णन किया है "सम्मेलन की मूल-भावना के बारे में मैंने जो कुछ कहा था उससे वह क्षुब्ध नजर आते थे। जब मैंने उन्हें यह आश्वासन दिया कि जहां तक नई पीढ़ी का सम्बन्ध है उसके लिए यह केवल राजनीतिक उपादेयता का प्रश्न नहीं है वरन ईमानदारीपूर्ण आस्था और व्यापक तथा गम्भीर राष्ट्रीय दायित्वों के प्रति बढ़ती हुई उस चेतना का परिणाम है जिसने उन्हें इतनी उन्मुक्तता और उदारतापूर्वक हिन्दुओं के प्रति मैत्री का हाथ बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है, और साथ ही यह आशा प्रकट की कि कांग्रेस का आगामी अधिवेशन यदि उसकी अपेक्षा कहीं अधिक हार्दिकता से नहीं तो कम से कम उतनी ही हार्दिकता का प्रदर्शन करेगा, तो उनका थका हुआ और पीड़ा जर्जर चेहरा आनन्द से चमक उठा।' गोखले ने उनसे कहा, "जहां तक मेरा बस चलेगा ऐसा ही होगा।' और बाद में उन्होंने कहा कि "तुमने मुझमें एक नई आशा भर दी है। मैं जीवन और कर्म में नए सिरे से जुटने के लिए अपने भीतर काफी शक्ति अनुभव कर रहा हूं।

1915 में गोखले की मृत्यु से ठीक पहले सरोजिनी जो बीमार थी और इलाज के लिए इंग्लैंड गई हुई थीं, लेकिन अपने स्वभाव के अनुसार जब उन्हें यह मालूम हुआ कि जिन्होंने लन्दन भारतीय संघ नामक विद्यार्थी संगठन का निर्माण किया है तो आवेशवश वह अपनी अस्वस्थता को भूल गईं। जिन्ना में नेतृत्व के लक्षण उस समय उभर रहे थे। वह तरुणों की पुकार की अवहेलना नहीं कर सकती थीं

और यह जानकर कि जिन्ना ने लन्दन में भारतीय विद्यार्थियों के लिए एक केन्द्र की स्थापना की है उनकी कल्पना को ऐसे पंख लग गए कि उन्होंने गोखले को सुनने के लिए लालायित विद्यार्थियों का बिना सोचे समझे यह वचन दे दिया कि, "भारत का वह अनुपम मित्र और सेवक" उनको अवश्य सम्बोधित करेगा।

गोखले की मृत्यु पर सरोजिनी की जो श्रद्धांजलि प्रकाशित हुई थी उसमें यह सब पूरे विस्तार के साथ बताया गया है, जिसका उल्लेख इस अध्याय में पहले किया जा चुका है किन्तु तरुणों की आवश्यकताओं के बारे में उनकी सतत चिन्ता और तद्रूपता का सबसे अधिक स्पष्ट दर्शन उनके 29 जुलाई के उस पत्र में मिलता है जो उन्होंने गोखले को लिखा था। वह कहती है

> पोलक के पत्र से मुझे ऐसा आभास होता है कि शनिवार के लिए की गई घोषणा की औपचारिकता पर आप क्षुब्ध हैं। आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। हम मैं और मेरे लड़के चन्द प्रेरक शब्दों से पूर्णतया सन्तुष्ट हो जाएंगे। हम आपसे खास तौर पर यह चाहते हैं कि आप हमें प्रोत्साहित करें और यह बताएं कि यह संघ भावना चिन्तन, कर्म आदर्श और प्रयास के क्षेत्र में उस एकता का किस प्रकार प्रसार कर सकता है जो राष्ट्रीय पुनरुत्थान की बुनियादी शर्त है। हम यह चाहते हैं कि आप हमें बताएं कि जो तरुण इस संघ में वह प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे वे अपनी अपनी विशिष्ट परिस्थिति और अवसरों के अनुसार अन्तत अपने देश की पर्याप्त और सफल सेवा किस प्रकार कर सकते हैं। हमें ताड़ना न दें क्योंकि वह हम सब बहुत झेल चुके हैं। हम अपने आत्म सम्मान और स्वाभिमान को उच्चतर प्रयोजनों की सिद्धि के लिए पुनर्जीवित करना चाहते हैं। दस मिनट के भीतर आप हमें इतना प्रोत्साहन, परामर्श और प्रेरणा दे देंगे कि वह वर्षों तक प्रभावकारी रहेगा। मैं यहां हम शब्द का प्रयोग इसलिए कर रही हूं क्योंकि मैं अपने इन युवकों के साथ एकरूपता अनुभव कर रही हूं और इस क्षण एक अलग इकाई सी बन गई हूं। उनके साथ मैं भी पराजित और बहिष्कृत हो जाऊंगी तथा उनके साथ ही मैं भी पुनर्स्थापित और सशक्त बन जाऊंगी। अत हे प्रिय गुरु! हमें अपनी ओर से श्रेष्ठतम सीख दीजिए भले ही शब्द कम ही क्यों न हों।'

दक्षिण-अफ्रीका का काम निपटाकर गोखले भारत लौटे। उस समय 28

नवम्बर, 1913 को सरोजिनी ने पार्क लेन के एक प्राइवेट अस्पताल से उन्हें लिखा

'मैं यह पत्र शुश्रूषागृह से लिख रही हूं। कल मेरा आपरेशन होगा। चिकित्सकों का विचार है कि मैं सख्त बीमार हूं और मुझे भी इतना तो मालूम ही है कि मैं बहुत थकी हुई और काया से टूटी हुई हूं। पर मेरी आत्मा चिड़िया की तरह है जिसे पिंजरे में नहीं डाला जा सकता, अत मैं अपने शरीर और अपनी वांछा के देश (भारत) के बीच फैले सागर के पार आपको प्रेम और कृतज्ञता का संदेश भेज रही हूं। मैं आपके प्रति इसलिए कृतज्ञ हूं क्योंकि आपने अपने श्रेष्ठ जीवन का उदाहरण हमारे सामने रखा और मातृभूमि के प्रति निष्काम सेवा के आदर्श द्वारा हमें प्रेरणा दी है। दुख और सुख स्त्रियों के जीवन के अर्थ और उसके रहस्यों का सचमुच बोध करा देते हैं। परन्तु मैं इन सुन्दर और सार्थक प्रभावों के अतिरिक्त एक अन्य प्रभाव का उल्लेख कर रही हूं जिसमें मैंने देशभक्ति तथा सर्वस्व बलिदान करने वालों सर्वोच्च और निस्वार्थ सेवा के महानपाठ सीखे हैं और जिसके सम्मोहन में मेरे भीतर की नारी और कवयित्री ने आपके सिखाए हुए ये पाठ आत्मसात कर लिए हैं। आप मेरी पीढ़ी के लिए आशा की मशाल रहे हैं तथा मैं लन्दन, आक्सफोर्ड कैम्ब्रिज, एडिनबरा और जहां कहीं भी भविष्य निर्मात्री तरुण पीढ़ी के बीच गई मुझे यह देखकर आनन्द हुआ कि आप अभी तक उसके लिए एक मार्गदर्शक ज्योति और राष्ट्र सेवा के प्रतीक बने हुए हैं। मेरे जीवन में इससे बढ़कर आनन्द और गौरव दूसरा कुछ नहीं हो सकता। लेकिन मैं अपनी पीढ़ी या अपने उन युवकों की पीढ़ी की ओर से नहीं बोल रही हूं जिन्होंने मुझे अपना साथी और मित्र बना लिया है, मैं तो आपको अपना व्यक्तिगत आदर और प्रेम समर्पित करना चाहती हूं लेकिन मुझे शब्द नहीं मिल पा रहे हैं और मैं अपने-आपको इस मामले में बहुत दीन महसूस कर रही हूं। यदि मैं जीवित रही तो आप जानते ही हैं मेरा जीवन उसी देश की सेवा के प्रति समर्पित है जिसकी आपने अत्यन्त निष्ठापूर्वक और प्रभावशाली रीति से सेवा की है, किन्तु यदि मेरे लिए ऐसी मधुर नियति संभव नहीं हुई तो मैं चाहती हूं कि आप मेरे शब्दों को याद रखें। तरुण पीढ़ी पर विश्वास कीजिएगा व वह महसूस करने लगे हैं

कि एकता, सहयोग निस्वार्थ उद्देश्यों के प्रति निष्ठा और सेवा के मामले में ईमानदारी की भावना वे अनिवार्य संपदाएं हैं जो उन्हें राष्ट्र निर्माण के कार्य में अपने अंश के तौर पर भेंट करनी है। उन्हें इस बात की चेतना है कि उनके कंधों पर कौन सी मूल समस्या हल करने की जिम्मेदारी है— इतना ही नहीं, प्रयोजनों और आदर्शों की एकता के द्वारा तरुण पीढ़ी ने उसे अंशतः हल कर लिया है। जहां सर्वनिष्ठ कार्य और सर्वनिष्ठ आदर्शों का प्रश्न हो, वहां न कोई हिन्दू है न मुसलमान। हम जिस महान उद्देश्य के प्रति समर्पित हैं उसकी सिद्धि के लिए तरुण पीढ़ी की विशेष प्रतिभा ही उसकी सफलता का रहस्य है। हमारे बच्चे फूट डालने वाली आस्थाओं से ऊपर उठकर देश भक्ति की जोड़ने वाली मधुर और अमर भाषा सीख रहे हैं।

आप काम चाहते हैं, शब्द नहीं वास्तविक सेवा चाहते हैं लच्छेदार भाषा नहीं। लच्छेदार भाषा का जो युग बीत गया है, वह पुरानी पीढ़ी का युग था, नई पीढ़ी अधिक कठोर शालाओं में प्रकाशित हो रही है और वह जब बाहर आएगी तो व्यावहारिक ठोस, बुद्धिमत्तापूर्ण और सार्थक कर्म के लिए तैयार होगी।

'विदा ! मैं बहुत थक गई हूं, लेकिन मेरे मन में यह आशा और आस्था भरी हुई है कि हिंसा रोष और विभाजन के माध्यम से नहीं वरन धीरज, बुद्धिमत्ता और प्रेम के माध्यम से ही सफलता के लक्ष्य तक पहुंच पाएंगे।'

जनवरी, 1914 में उन्होंने लंदन से गोखले को लिखा कि जब मैं लंदन से गुजर रही थी तो वहां एक मित्र मुझसे मिलने आए और उन्होंने मुझसे कहा कि गांधीजी अफ्रीका के महानतम व्यक्ति हैं, वह अपने श्रेष्ठ भाषणों द्वारा समूचे अफ्रीका की चेतना सूक्ष्मतर प्रश्नों के बारे में जगा रहे हैं। उस व्यक्ति के बारे में यहां उन्होंने पहली बार उल्लेख किया है जिसने अंततः उनके जीवन को बहुत गहराई के साथ प्रभावित किया, यह सरोजिनी द्वारा किया गया पहला उल्लेख है। 1914 के वसंत में गोखले इंग्लैंड लौटे और सरोजिनी से मिलने गए। वह उस समय बिस्तर से लग गई थी। गोखले को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो रहा था। उन्होंने सरोजिनी से कहा कि, 'चिकित्सकों का विचार है कि अधिकतम सात

सभाल रखी जाए तो मैं अधिक से अधिक तीन वष और जी सकता हू ।"

सरोजिनी जब ठीक होन लगी तो दोना मित्र सैर के लिए जान लग, बाद म सरोजिनी ने उसका विस्तत वणन किया। एक रोज उ होन सरोजिनी स कहा, "आप मुझे अपने मस्तिष्क का एक कोना दे दीजिए जिसे मैं अपना कह सकू ।" पर तु तथ्य ता यह है कि उ होने ही अपनी लम्बी बीमारी क दिनो म सरोजिनी नायडू के मन मे आत्म विश्वास भरा और उ हें अपना विश्वास पात्र बनाया तथा उ ह राजनीतिक चतना प्रदान की। इसके बिना सरोजिनी के राजनीतिक जीवन मे कभी भी इस प्रकार की पूणता नही आ सकती थी। गोखले ने अ य किसी भी व्यक्ति की तुलना म इस बात का सर्वाधिक श्रेय प्राप्त किया कि सरोजिनी नायडू को महात्मा गाधी के सम्पक मे लाए।

सन् 1914 मे सरोजिनी भारत के लिए रवाना हुई। उ ह विदाई देते समय गोखले के अतिम शब्द थे—'मेरे विचार मे अब हम कभी नही मिलेंगे। फिर भी तुम यदि जीवित रहो तो यह सदव स्मरण रखना कि तुम्हारा जीवन देश की सेवा के लिए समर्पित है। जहा तक मेरा प्रश्न है, मेरा काम पूरा हो गया।' इस विदाई में एक क्रूर व्यग्य यह था कि वरिष्ठ नेता गोखले और उद्दीयमान देशभक्त सरोजिनी नायडू दोना ही अपने ऊपर मत्यु की छाया मडराते देख रहे थे। सरोजिनी को तो यह अनुभव शायद अपने प्रारभिक वर्षो से हो होता रहा था और वे दोना जानते थे कि देश सेवा म इनके लिए क्या निहित है। इसम कोई उग्र राजनीति निहित न थी, वरन् एक अचल और समर्पित उच्चादश उनके सम्मुख था, चाहे उसके लिए उनमें शक्ति और सामथ्य थी अथवा नहीं। एक बार इग्लड म जब वे दोनो स्वास्थ्य लाभ कर रहे थ, गोखले ने किंचित आग्रह के साथ कहा था, "क्या तुम जानती हो कि तुम्हारी इस असाधारण प्रतिभा के पीछे मुझे एक प्रकार की उदासी दष्टिगोचर होती है ? क्या यह इस कारण से है कि तुम मत्यु के इतनी सन्निकट आ चुकी हो कि उसकी प्रतिच्छाया तुम्हारे ऊपर मडराती प्रतीत होती है ?' सरोजिनी ने तुरत उत्तर दिया, "नही म जीवन के इतनी सन्निकट आ गई हू कि इसकी ज्वाला ने लगभग मुझे भस्म कर डाला है।" 19 फरवरी, 1915 को गोखले का निधन हुआ। यह समाचार सरोजिनी को कलकत्ता म मिला। उस समय उनका परिवार सरोजिनी के पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय की मत्यु से शोकाकुल

था। अपनी मृत्यु का कोई भी अनुमान लगाए बिना उन्होंने सरोजिनी को लिखा था, "मैं चाहता हूं कि मैं कहीं निकट ही होता ताकि मैं व्यक्तिगत रूप से तुमसे मिल आ सकता। फिर भी मैं आशा करता हूं कि तुम्हारे गीत, तुम्हारे भार को अभिभूत कर लेंगे।" सरोजिनी ने इसका उत्तर 8 फरवरी को इस प्रकार दिया, "आपके सहानुभूति भरे संदेश के लिए मैं अनुगृहीत हूं। मैं यह पत्र उसी छोटे से कमरे में लिख रही हूं, जिसमें मेरे पिता सदैव रहे थे और अपनी मृत्यु के दिन भी प्रातःकाल अंतिम समय तक वह बैठकर बातचीत करते रहे थे। उस समय भी उनमें जीवन और मृत्यु के प्रति उतना ही तेज, बुद्धिमत्ता और जादू भरा आकर्षण था और वह जीवन, मृत्यु तथा अन्य प्रिय विषयों पर निरंतर चर्चा करते रहे थे। मैं यह भी अनुभव कर रही हूं कि यह छोटा-सा कमरा उनकी स्मृतियों का शरण स्थल बन गया है, जो उनके जीवित जागृत होने का प्रमाण है। उन्होंने सदैव यह सिखाया था कि जीवन और मृत्यु वस्तुतः कुछ नहीं है। केवल विकास और उन्नति के एक स्तर से दूसरे स्तर तक बढ़ते जाना ही जीवन है। इस बात को आज मैं समझी हूं और बड़े दृढ़ विश्वास के साथ अब यह मैं मानती हूं और इस मानने से मेरा शोक किसी हद तक दूर हो गया है। मेरे पिता और मैं अब पहले से भी अधिक एकाकार हो गए हैं।

'मुस्लिम नगर हैदराबाद में मेरे पिता की मृत्यु पर जिस प्रकार शोक मनाया जा रहा है, वह उन समस्त भारतीय राजनीतिज्ञों के लिए आदर्श पाठ है जो हिन्दू-मुस्लिम एकता का सही अर्थ समझना चाहते हैं। हम अपनी विधवा मां को श्राद्ध के पश्चात उसी मुस्लिम नगर में ले जा रहे हैं जहां वह उन महिलाओं के बीच रहेगी जो उन्हें मां कहकर पुकारती हैं और जो मेरे पिता को पिता की तरह प्यार करती थीं। यह उस महान समस्या की अनुभूति है जिस पर भारत का भविष्य निर्भर है। मेरे ब्राह्मण माता पिता ने उसे सुलझा लिया था। यह मेरे लिए सर्वोच्च गौरव और संताप की बात है। मैं ईश्वर की आभारी हूं। जहां तक मेरा प्रश्न है मैं यह सोचे बिना ही कि वह कोई महान कार्य सिद्ध करने में लगे थे, उनके कार्य को जारी रखूंगी।"

जिस दिन गोखले का पुणे में देहांत हुआ उस दिन सरोजिनी कलकत्ता

की लवलाक सड़क पर अपने पिता के घर थी और उस दिन उनके पिता का श्राद्ध था। एक सप्ताह से कुछ ही अधिक समय के भीतर वह अपने स्नेहिल पिता और अपने आदरणीय मित्र दोनों से वंचित हो गई। पिता का उनके जीवन पर सबसे पहला प्रमुख प्रभाव पड़ा था और मित्र का दूसरा। किंतु अब सरोजिनी 36 वर्ष की हो गई थी और वह भारत के निर्माता के रूप में अपना जीवन कार्य आरम्भ करने को सन्नद्ध थी। 22 मार्च, 1913 को लखनऊ में मुस्लिम लीग के ऐतिहासिक अधिवेशन में उनकी भूमिका ने उनको हिंदू मुस्लिम एकता के दूत के रूप में मान्यता प्रदान कर दी थी तथापि उनका राजनीतिक जीवन 1916 को बम्बई कांग्रेस से शुरू हुआ जहां उन्होंने एस० पी० सिन्हा की अध्यक्षता में आयोजित अधिवेशन में स्वशासन सम्बन्धी प्रस्ताव पेश किया था। 1917 में कांग्रेस का अधिवेशन श्रीमती एनीबीसेंट की अध्यक्षता में कलकत्ता में हुआ। वहां सरोजिनी ने एक भावावेशपूर्ण भाषण में कहा, "मैं केवल महिला हूं। मैं आप सबसे कहना चाहती हूं कि जब आप पर संकट आ पड़े और जब आपको अंधेरे में मार्गदर्शन के लिए नेतृत्व की तलाश हो, जब आपको अपना झण्डा सम्भालने के लिए किसी की आवश्यकता हो और जब आप आस्था के अभाव से पीड़ित हों तब भारत की नारी आपका झण्डा सम्भालने और आपकी शक्ति को थामने के लिए आपके साथ होगी और यदि आपको मरना पड़े तो यह याद रखिएगा कि भारत के नारीत्व में चित्तौड़ की पद्मिनी की आत्मा समाहित है।"

राजनीति मे

सरोजिनी हैदराबाद की बेटी थी और हैदराबाद एक ऐसा नगर है जिसमे हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियो का संगम हुआ और जहा दोनो संस्कृतिया पुष्पित-पल्लवित हुई । इसी कारण यह बात तनिक भी आश्चर्यजनक नही लगती कि सरोजिनी के मन मे साम्प्रदायिक एकता की कामना का स्थान स्वतन्त्रता के बाद दूसरा था । जहा तक स्वतन्त्रता का प्रश्न है वह तो उनके जीवन की महानतम अभिप्रेरणा ही थी । वह सच्चे अर्थों मे एकीकरणवादी थी । इस मामले मे वह अपने गुरु गांधीजी से भी भिन्न थीं । गांधीजी विभिन्न सम्प्रदायो के निकटतम तथा अधिकतम मैत्रीपूर्ण सहअस्तित्व मे विश्वास करते थे किन्तु सरोजिनी को सर्वाधिक सुख समन्वय और एकता की साधना मे मिलता था और सम्भवत यही उनके जीवन का महानतम कार्य माना जा सकता है ।

1916 मे उन्होने लखनऊ के ऐतिहासिक नगर मे जिसकी तुलना हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियो के समन्वय की दृष्टि से केवल हैदराबाद से की जा सकती है, मुस्लिम लीग के सम्मेलन मे नम्रतापूर्ण किंतु निर्भीकतापूर्ण भाषण दिया । उन्होने कहा, "मैं केवल एक कारण से अपने आपको यहां आपके सामने बोलने की अधिकारिणी मानती हू और वह कारण यह है कि मैं अनेक वर्षों तक नई मुस्लिम पीढ़ी की एक वफादार मित्र तथा मुस्लिम महिलाओं के अधिकारो की समर्थक रही हू तथा मैं उनके उन अधिकारो के लिए उनके

पुरुषों से लडी हू जिन्हे इस्लाम ने तो बहुत पहले ही दे दिए थे किन्तु आपने उन्हे जिनसे वचित रखा है।'

मुस्लिम राजनीतिक नेता सरोजिनी के सिवाय सम्भवत अन्य किसी हिंदू के मुह से एमी निन्दा सुनने के लिए तयार नहीं हो सकते थे इसका कारण यह था कि वे उन्हे अपनी बहन की तरह मानते थे।

1918 मे जालन्धर म कन्या महाविद्यालय की छात्राओ को सम्बोधित करते हुए उन्होने महिला शिक्षा पर बल दिया और कहा कि, 'हमारे गुरु गाधीजी ने हम आदेश दिया है कि हम सभाओ म हिन्दुस्तानी भाषा मे भाषण दें। मैं आपसे प्राथना करती हू कि आप मुझे टूटी फूटी उर्दू म भाषण करने के लिए क्षमा करेंगी। आपकी उपप्राचाय ने महिला शिक्षा का समथन जोरदार और मन को मथ डालने वाले शब्दो म किया है तथा यह बताया है कि पजाब म आज तक भी महिलाओ की शिक्षा के मामले म पक्षपात और पाखडपूण रवया अपनाया जाता है। सकीण मस्तिष्क वाले लोग कहते हैं कि शिक्षा महिलाओ को साहसिक बना देती है। अत वह निंदनीय है। क्या हमारे भाई अपनी जन्म भूमि की वीरगाथाओ और उसके शास्त्रो को भूल गये ? भारत को इस बात का गव है कि उसकी महिलाए अपने भाइयो की अपेक्षा अधिक साहसिक और वीर रही है। किसी भी देश के उत्थान के लिए स्त्री पुरुष के बीच सहयोग आवश्यक है। आप राजनीतिक अधिकारो की माग करती हैं। कृपा करके यह मत भूलिएगा कि लगडा व्यक्ति धीमी गति से ही चल सकता है एक आख वाला एक पक्ष ही देख सकता है और एक पहिए की गाडी ठीक से नही चल पाती।' तथा मुस्लिम महिलाओ की समस्याओ का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा कि, पर्दा प्रथा का यह अथ नही है कि मस्तिष्क और आत्मा पर भी पर्दा डाल दिया जाए। उन्होने अन्त म कहा कि, 'रूढिवादिता के पिंजडे को तोड डालो—भारत की आत्मा तभी मुक्त हो पाएगी जब नारी मुक्त हो जाएगी।'

वह बार बार एकता के सूत्र पर लौट आती थी। 13 अक्तूबर, 1917 को पटना म छात्रो को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा 'अध्यक्ष महोदय तथा हिन्दू और मुसलमान भाइयो! आज मैं ऐसे विशिष्ट दायित्व बोध से अभिभूत हू जैसा मैंने इससे पहले कभी महसूस नही किया। इसका कारण

यह कि मैं आज एक ऐसे विषय की चर्चा आपके सामने करू गी जो मरी जीवन डोर के साथ इतनी घनिष्ठतापूवक जुडा हुआ है कि मैं इस अवसर के लिए उपयुक्त और बुद्धिमत्तापूण शब्द नही टटोल पा रही हू । " आगे उन्होने भावनापूण शब्दो म गगा से प्रेरणा की विनती की तथा एक भविष्य वक्ता की तरह यह आशा प्रकट की कि वतमान राजनीतिक गतिविधि दोना सम्प्रदायो के बीच दरार नही डालगी ।"

एकता का प्रयोजन उनको इतना अधिक प्रिय था कि वह पग पग पर अभिव्यक्त हो उठता था। गाखले के साथ उनकी उस बातचीत का यहा दोबारा उल्लेख किया जा सकता है । जब गोखले के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कि "तुरत सामन जो समय आ रहा है उसके बारे मे तुम क्या कल्पना करती हो ?" उन्होने उत्तर दिया था कि, "पाच वप स भी कम समय म हिंदू-मुस्लिम एकता ।' इस पर गोखले ने कहा था कि "तुम बहुत अधिक आशावादी हो । तुम्हारे या मेरे जीवनकाल म यह नही हो पाएगा ।

सरोजिनी गोखले के इस दष्टिकोण स निरुत्साह नही हुइ तथा अपन अनुरूप एक आत्मीय और जुझारू व्यक्तित्व की तलाश म लगी रही । वह व्यक्तित्व उ ह 1913 म युवा और क्रियाशील मुहम्मद अली जिन्ना मे दिखाई पडा । उस समय के महानतम जीवित भारतीय नेता गोखले से आशीर्वाद लेकर एक मुस्लिम तरुण और एक ब्राह्मण तरुणी ने एक श्रेष्ठतम प्रयोजन की सिद्धि के लिए साथ साथ एक एसी यात्रा आरम्भ की जो यद्यपि आगे जाकर दिशाओ मे मुड गई तथापि उसने उन दानो का पथक किंतु सर्वोच्च शिखरो पर पहुचा दिया ।

जहा चार पुरुषो ने सरोजिनी के जीवन को आकार दिया वही चार प्रभावा ने उनके सम्पूण धम निरपेक्ष लौकिकतावादी दष्टिकोण का रूप निर्धारित किया । वे चार प्रभाव है लौकिकतापरायण मानवतावादी विद्वान पिता, सही अर्थो मे हिंदू मुस्लिम नगर हैदराबाद, अवसानो मुख वरिष्ठ उदारवादी नेता गोखले तथा भविष्योन्मुख उदारवादी तरुण जिन्ना । सम्भवत गोखले ने सरोजिनी पर सबसे अधिक प्रभाव डाला, इसका कारण यह रहा होगा कि वह अपने जीवन के निर्माण काल म ही गोखले क सम्पक म

आ गई थी किंतु सम्पक के काफी समय बाद सरोजिनी ने उन्हें अपना राज नीतिक गुरु मानना शुरू किया था।

1915 म गोखले के देहावसान पर उन्हान 'स्मति म' शीषक से एक कविता अंग्रेजी म लिखी थी जिसम उन्होने अपनी श्रद्धा उडेल दी

"हे शूरमना,
हमारे युग के अन्तिम आशा पुरुष
मुहताज कहा तुम
हमारी प्रेम प्रशसा के ?
देखो,
उन शोकाकुल कोटि कोटि जनो को
कर रहे जो परिक्रमा तुम्हारी चिता को
कर लेने दो प्रज्वलित उन्ह
अपनी आत्माओ की उस होमाग्नि से
जल उठी है जो तुम्हारे हाथ से गिरी—
बहादुर मशाल से
कि जिससे हो सके
हमारे वज्राहत राष्ट्र का
पोषण-सरक्षण,
और रहे उन्नत
उसकी एकता का मन्दिर
उस नित्योपासना मे
सिखाई है जो तुमने।"

सरोजिनी अपन मित्रो के प्रति बहुत वफादार रहती थी इसका सबसे बड प्रमाण जिन्ना के प्रति उनका आजीवन आदरभाव है। वह जिन्ना के साथ मत्रीपूर्ण सम्बध तो बनाये नही रख सकी लेकिन यह आदरभाव कभी

कम नही हुआ । वह उनके साथ अनेक बार सावजनिक मच पर गई लेकिन उनके बीच व्यक्तिगत सम्ब धो का निर्माण उस समय हुआ जब उ होने ल दन म जि ना के साथ छात्रो के बीच काम किया । उस समय से ही उ होने जि ना की गतिविधि को प्रोत्साहन दिया तथा यद्यपि हिंदू मुस्लिम एकता के सम्मिलित स्वप्न की दुखातकारी विफलता ने उनकी राहो को सदा के लिए पृथक कर दिया फिर भी उ हाने आलोचको से जि ना की रक्षा की । उनकी जीवनीकार पद्मिनी सेन गुप्त ने एक आकपक सस्मरण म लिखा है कि, '1946 मे एक बार मैं श्रीमती नायडू के पास गई और मैंने उ ह बताया कि मैंने कुछ महान नेताओ पर एक पुस्तक लिखी है । उ होने मुझस पूछा कि क्या तुमन उसमे जि ना को सम्मिलित किया है । मैंने ना म सिर हिलाया तो वह मुझसे नाराज हो गइ और तुर त बोली "लकिन जि ना तो महान व्यक्ति हैं । तुम्हे उनको अपनी पुस्तक म सम्मिलित करना चाहिए था ।"

सरोजिनी ने गद्य और पद्य दोनो म जि ना के प्रति अपना आदरभाव प्रकट किया है । 1915 के काग्रेस अधिवेशन मे उ होने जि ना के सम्मान मे 'जागो' (अवेक) शीषक स कविता पाठ किया था ।

उनके एक अ य मुस्लिम मित्र उमर सोभानी थे । वह बम्बई के एक प्रमुख और सम्प न व्यवसायी थे । वह उन लोगो मे से थे जि होने गाधीजी का आरम्भ मे सहायता दी और उनके यज्ञ काय म अपनी समूची सम्पत्ति को होम कर दिया और अ तत अपने जीवन की भी बलि दे दी । 1926 मे उनके आकस्मिक देहावसान से श्रीमती नायडू को गहरा आघात लगा और उ होने उस अवसर पर एक अत्य त मार्मिक कविता लिखी

न तुम मेरे जातिब धु थे, न धमब धु
हे सम्राट हृदय ! फिर भी तुम रहे समीपतर
कोमल भ्रातृत्व के गरिमामय ब धन मे बधकर
उनकी अपेक्षा जो ज मे और फूले
मेरे पिता के बीज से ।
हाय, कसा कठोर नियति का विधान

कि मैं जो शांत कर सकती थी
तुम्हारे स्वाभिमानी उदास एकांत पर—
व्यग्र करने वाली विरह, अंध विपदग्रस्त व्यथा के समूह को
चली गई दूर तुम्हारी घोर और अंतिम
आवश्यकता के क्षणों में !
खड़ी होकर तुम्हारी सकरी सी कब्र के पास
बार बार पुकारती हूं तुम्हें
पर तुम उत्तर नहीं देते,
क्या माटी तुम्हारे चेहरे पर बहुत बोझिल हो गई है,
या तुम्हारी एक बार पनपन्त दीर्घ निद्रा का मौन
इतना प्रिय, इतना पवित्र और इतना गहरा हो गया है
कि उसे मित्रता, क्षमादान, व्यथा अथवा स्मृति की खातिर भी
तोड़ा नहीं जा सकता !

सरोजिनी एक सच्ची भारतीय थी तथा अपने अनेक साथियों से भिन्न उन्होंने कभी सचेष्ट होकर हिंदू मुस्लिम एकता के लिए काम नहीं किया। उनके भीतर दोनों धर्मों के श्रेष्ठतम तत्व मूर्तिमान हो उठे थे तथा उनका आचरण सदा सहज स्वाभाविक होता था।

1942 ई० में जब वह रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पश्चात पी० ई० एन० की अध्यक्षा बनी तब बम्बई विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने उनके बारे में कहा था कि, 'हमारी दृष्टि में दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं आता जिसने एक प्रतिभासंपन्न कवि भारतीय संस्कृति के प्रख्यात प्रतिपादक एवं उत्कट देशभक्त, उग्र सुधारक तथा अंतत इस देश के चिंतन के सुसंस्कृत नेता के रूप में भारत को उनसे अधिक महत्ता प्रदान की हो। इसके अतिरिक्त हमें ऐसा भी कोई अन्य व्यक्ति नजर नहीं आता जिसने इस देश में सांप्रदायिक समन्वय के लिए सरोजिनी नायडू के समान महान कार्य किया हो। क्या वह इस देश के युवावर्ग के समक्ष हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक के रूप में नहीं खड़ी है ?"

सरोजिनी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रगाढ मित्रता बहुत स्वाभाविक मानी जा सकती है। वह जब कभी बगाल जाती तो उनसे अवश्य मिलती थी जिस समय रवीन्द्रनाथ ठाकुर का नोबल पुरस्कार जयी काव्य गीताजलि प्रकाशित हुआ था उस समय वह इग्लैड म ही थी। सरोजिनी ने गीताजलि के बारे म कहा था कि उसने "पाश्चात्य जीवन के क्षितिज पर उनकी ख्याति इन्द्रधनुष की भाति फैला दी है।" यह सही है कि वह बगला भाषा पढ नही सकती थी, लेकिन उन्ह रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीत बहुत पसद थे। वह उन्हे अक्सर सुनती थी। समय जैसे जसे बीतता गया वे दोना समीपतर आते चले गए। 1933 ई० म बबई मे रवीन्द्र नाथ ठाकुर सप्ताह का आयोजन उन्होने ही किया था। बाद म उन्ह शान्ति निकेतन स्थित रवीन्द्रनाथ के विश्वविद्यालय विश्वभारती का आचाय नियुक्त किया गया। वह इस सम्मान की सवथा पात्र थी।

टैगोर ने उस वष उनको एक पत्र म लिखा था, "तुम महान हो। तुमने मुझे इतनी सहायता पहुचाई है जितनी कोई दूसरा नही पहुचा सकता था, लेकिन मेरे लिए इससे भी अधिक महत्वपूण बात यह है कि मैं तुम्हे जान सका। तुम्हारी आतरिक उपलब्धिया आश्चयजनक है जिनके कारण मुझे तुमसे ईर्ष्या हो सकती थी, लेकिन मैं तुमसे स्नेह करता हू और स्नेह ने मुझे तुमसे ईर्ष्या से बचा लिया है। मुझे भय है कि मेरा यह कथन तुम्हे बहुत भावुकतापूण लगेगा, लेकिन मुझे उसकी चिंता नही है। मैं अपने आपको तुम्हारे मनोरजन परिहास का भोजन बना रहा हू क्याकि मुझे मालूम है कि यह मेरे प्रति कठोर नही हो सकता।"

उत्तर मे सरोजिनी ने उन्ह विविध सम्मोहनो के स्वामी कहकर सबोधित किया और आगे कहा कि आपने जिन सवाधिक सम्मोहनकारी वस्तुओ का सजन किया है उनमे वह गरिमामय और कोमल पत्र भी है जो आपने मुझे उस 'मनोरजन परिहास' के लिए ही नही जिसका कि आपने उल्लेख किया है वरन् आनन्द के आसू गिराने के लिए भी उद्वेलित कर दिया। उसके बाद वह अधिक गम्भीर स्वर म महान शब्द की परिभाषा देती हैं और कहती है, "किन्तु आप सरीखे दाशनिक को यह भी बोध होता होगा कि यह महानता कोई आत्मगत अथवा व्यक्तिगत महानता मात्र नहीं है वरन् यह तो समष्टिगत

, अनुभव तथा ज्ञान है जिस मैं माय सपप को महासागर जसी गहराइयां तक बार-बार उतरकर उज्जवल भाप के समान निकाल हूं।

अपने पिता के प्रति सरोजिनी की प्रीति और निष्ठा कितनी भी प्रबल रही हात्मा गाधी के प्रभाव म आने के बाद उनक प्रति सरोजिनी की भक्ति और निर्णायक बन गई। गाधीजी तब विख्यात नही हुए थ और राज लक्ष्यों की सिद्धि के लिए निष्क्रिय प्रतिरोध की अपनी नवीनतम विधि रण सबकी जस मान जात थ। वह दक्षिण अफ्रीका छोडकर 6 अगस्त, 4 को इग्लड पहुच। उनके साथ उनकी धमपत्नी थी। वह रल के तीसर र यात्रा करते हुए मवा और फला का भोजन करते थे। उनके इस र के भोजन की बाद मे सरोजिनी न अनेक बार भत्सना की। किन्तु चाहे जी के विचार कितने ही विचित्र रह हो उनका सत्याग्रह सघप राशत सफल रहा था तथा गोखले एव दूसर लोग चाहते थे कि वह ा को अपना कायक्षेत्र बनाए। अत लदन की भारतीय बस्ती ने उनका क स्वागत किया तथा वहा पहुचने क दो दिन बाद एक स्वागत समारोह य लोगा के साथ ही सरोजिनी न भी दक्षिणी अफ्रीका म उनकी ाता की सराहना की।

एक अन्य सभा मे गाधीजी ने यह मत व्यक्त किया कि भारतीयों को युद्ध ो म सहायता करनी चाहिए। उन्होंने स्वयसेवकों का आवाहन किया यद्यपि इस काय के लिए उनकी आलोचना की गयी तथापि उसकी अच्छी क्रिया हुई। उनके मन म एक भारतीय स्वयसेवक टुकडी की कल्पना थी सरोजिनी एव लगभग पचास अन्य भारतीयो न उस पत्र पर हस्ताक्षर जो गाधीजी ने भारत अवरसचिव के नाम लिखा था। उसमे ा था कि हमम से बहुतों न यह सोचा कि साम्राज्य आज जिस ट मे फस गया है उसके दौरान जबकि बहुत से अग्रेज अपने सामान्य न धन्धों को तिलाजलि देकर सम्राट के आवाहन पर आगे आ रहे हैं इटड किंगडम म रहने वाले भारतीयों म से जिनके लिए यह तनिक भी व हो वे बिना शत के अपनी सेवाए अधिकारियों को समर्पित कर दें।' के अन्त म कहा गया था कि "हम आदरपूवक इस बात पर बल देना

चाहग कि हमारी मूल प्रेरणा इस कल्पना मे से उदय हुई है कि यदि हम इस महान साम्राज्य की सुविधाओ मे भागीदार होना चाहते है तो हमार मन मे इसकी सदस्यता से सबधित दायित्वा मे हिस्सा वटाने की भी उत्कट कामना होनी चाहिए तथा उसके प्रमाणस्वरूप हम साम्राज्य को अपनी क्षमता भर तथा नम्रतापूवक सहायता पहुचानी चाहिए।"

सरोजिनी ने इस पत्र की भावना से ही प्रेरित होकर 'दा गिफ्ट ऑफ इण्डिया' नामक कविता लिखी होगी। कविता के आरम्भ को पक्ति इस प्रकार है क्या तुम्ह चाहिए वह कुछ जो मेरे हाथो मे है। भारतीय सेनाओ द्वारा युद्ध म निभायी गयी भूमिका और उसके वलिदाना का स्पष्ट विवरण देने के बाद वह कविता इस प्रकार समाप्त होती है।

"जब द्वेष का आतक और हिंसक विस्फोट जाएगे चुक
और जीवन नव रूप धरेगा नए शाति की निहाई पर,
तुम्हरा प्रेम प्रकट करेगा ध यवाद स्मृतियो मे—
उन सगियो की जो लडे तुम्हारो निर्भीक पांतो मे,
और तुम सम्मानित करोगे शौय को अमृत पुत्रो के
उस समय रखना याद रक्त मेरे बलिदानी बेटो का।"

कैसी विडवना है कि कवि की आशा पूरी न हो सकी। जीवन के लिए नए परिवेश प्राप्त करने की खातिर सरोजिनी को अनेक प्राथनाए करनी होगी और स्वय बहुत सी कुरवानिया देनी हागी। और, तव भी जीवन का रूप अशत ही वदल पाएगा उनकी कामना के अनुरूप पूणत नही।

सौभाग्य मे गाधीजी और सरोजिनी दानों ने अपनी प्रथम भेंट का विवरण लिखा है। युद्ध प्रयासा मे सहायता दन का निणय करन के बाद सरोजिनी ने अपनी सारी शक्ति घायला के लिए कपडे तैयार करन, पट्टिया के वडल वनाने तथा माज, जरसी आदि अ य ऊनी वस्त्र बुनने मे लगा दी। गाधीजो ने लिखा है कि "उनके (सरोजिनी के) साथ मेरी पहलो भेंट यह थी कि उ होन मरे सामन व्योंने हुए कपडो का ढेर लगा दिया और कहा कि इन्हें सिलवाकर मुझे लौटा दीजिएगा। मैंन उनकी माग का स्वागत किया

तथा प्राथमिक उपचार के अपने प्रशिक्षण के दौरान मित्रों की सहायता से मैं जितने कपड़े सिलवा सकता था उतने सिलवाता गया।[1]

सरोजिनी ने उस अवसर का जो विवरण दिया है वह अपेक्षा के अनुसार ही अधिक सतरंगी है और कुछ-कुछ भिन्न भी। उन्होंने लिखा है कि, "महात्मा गांधी के साथ मेरी पहली भेंट एक विस्मयकारी वातावरण में 1914 ई० को यूरोपीय महायुद्ध शुरू होने से ठीक पहले लंदन में हुई। यह उस समय की बात है जब वह दक्षिण अफ्रीका में अपनी सफलताओं के उपरांत लंदन आए ही थे। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने सत्याग्रह के सिद्धांतों का पहली बार प्रयोग किया था तथा अपने देशवासियों के लिए जो उस समय मुख्यतया गिरमिटिया (करार बद्ध कुली) थे। दृढ़ प्रशासक जनरल स्मट्स पर विजय प्राप्त की थी। मैं उनके लंदन आगमन के समय जहाज पर नहीं पहुंच सकी थी, लेकिन अगले दिन तीसरे पहर केंसिंगटन के एक अनजाने हिस्से में उनके निवास की तलाश करती करती एक पुराने ढंग के मकान की सीधी खड़ी सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंची तो मेरे सामने खुले द्वार की चौखट एक घुटे सिर छोटे से आदमी के सजीव चित्र पर फ्रेम की तरह मढ़ी हुई सी लग रही थी, जो जेल का काला कंबल फर्श पर बिछाए बैठा था और जेल के लकड़ी के कटोरे में से मथे हुए टमाटरों और जैतून के तेल का एक घोल मट्ठा सा भोजन कर रहा था। एक प्रख्यात नेता के इस अनपेक्षित दर्शन पर मेरे मुंह से अनायास हंसी फूट पड़ी। उन्होंने आंखें उठायीं और यह कहते हुए मुझ पर हंसने लगे कि, 'अच्छा, तुम निश्चय ही श्रीमती नायडू हो इतना अवनाशील होने का साहस और कौन कर सकता है। आओ मेरे साथ खाना खाओ।" मैंने नाक से सूंघते हुए उत्तर दिया 'कितना घिनौना घोल मट्ठा है यह।' इस प्रकार और उसी क्षण हमारी मित्रता का सूत्रपात हो गया जो वास्तविक सहकर्म में पुष्पित पल्लवित तथा एक दीर्घ निष्ठापूर्ण शिष्यत्व में फलित हुई और जो भारत की स्वाधीनता के संघर्ष में साथ मिलकर कार्य करने की तीस वर्षों से भी अधिक की अवधि में कभी एक घंटे के लिए भी खंडित नहीं हुई।[2]

---

1 गांधीजी की आत्मकथा द स्टोरी आफ माई एक्सपेरीमेंट विद ट्रुथ

2 महात्मा गांधी सरोजिनी नायडू द्वारा लिखित भूमिका सहित, ओल्डहाम्स प्रेस लि० लंदन

"पिछले अनेक वर्षों से मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मैं तरुण पीढी के साथ तद्रूप रही हू । भारत के प्राय प्रत्येक महान नगर से मैं उन तरुणा के आनद दायी और घनिष्ठ सम्पक म आयी हू जो कल के भारत के इतिहास का निमाण करेंगे । भारत के विभिन्न नगरा मे मैं उस नयी भारतीय भावना के भी निकट सपक म आयी हू जिसको प्राय भारतीय पुनर्जागरण कहा जाता है ।"[1]

लेकिन उनकी दृष्टि मे पुनर्जागरण बुद्धिवादी वग तक ही सीमित न था । एक अन्य अवसर पर पुरस्कार वितरण करते हुए उन्होने कहा था कि मुझे "उन लोगो को पुरस्कार देते हुए प्रसन्नता हा रही है जो अपने हाथा स काम करना और शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा का महत्व सीख रहे हैं । शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा को विद्वत्ता की प्रतिष्ठा के समान ही स्थान मिलना चाहिए ।" उन्हाने आगे कहा कि, 'जब मैं यह बात कहती हू तो इसको महत्वपूण माना जाना चाहिए क्योकि मेरे पीछे विद्वत्ता की परपरा है, और क्याकि इसका अथ यह है कि जो लोग अतीत म ऐसा मानते थे कि आत्माभिव्यक्ति पर बुद्धिवादी महारथियो का ही एकाधिकार है वे अब यह महसूस करने लगे है कि आत्माभिव्यक्ति के अन्य तथा विविध प्रकार हैं । अधिकाधिक युवा यह महसूस करते जा रहे है कि भारत की प्रतिष्ठा आक्सफोड और कैम्ब्रिज की डिग्रिया प्राप्त करन अथवा वकील, डाक्टर या सरकारी कमचारी बनने मात्र म निहित नही है वरन वह कलाओ विज्ञान तथा उद्योगा से सबधित उनके ज्ञान पर भी अवलबित है क्याकि उसी के आधार पर भारत को मानव सभ्यता म उसका केंद्रीय स्थान फिर से प्राप्त हो सकता है । उन्होन ऐसी बुद्धिमत्तापूण बातें कही जो उनके वर्षों बाद तक विहित रही । वह यह जानती थी कि युवावग के पास सही आदश और दढ विचार होने चाहिएँ, तथा युवा श्रोताआ के समक्ष अपने भाषणा म वह अपनी भावनाआ को इस प्रकार समेटती थी 'यदि भाग्य की कोई देवी अप्सरा मुझसे यह पूछे कि मुझे इस जगत मे किस वस्तु की कामना है ता मैं कहूगी कि मुझे युवा पीढी के मस्तिष्क को ढालने की शक्ति दो ।"

श्रीमती नायडू न भारत के लोगो को उदासीनता और निष्क्रियता के

1 भेंटवार्ता, मृणालिनी चट्टोपाध्याय—हैदराबाद 1968

दुष्चक्र से उभारने की बार बार चेष्टा की। गुटूर म उन्होंने कहा

"समूचे भारत म एक नयी भावना का जागरण हो रहा है जा युवापीढी के हृदय को इस छोर से उस छोर—उत्तर से दक्षिण और पूव स पश्चिम तक रोमाचित कर रही है। वह भावना पुनर्जागरण क नाम स पुकारी जाती है। वह कोई नयी भावना नही है उसका केवल पुनज म और पुनर्जीवन मिला है। अतीत म ठीक ऐसे ही विचार और आदश विद्यमान थे जो उपदेश और आचरण के माध्यम स उन्ही सिद्धाता का प्रतिपादन करत थे जि हे हम अपन जीवन मे अपन देश की सेवा के लिए सिद्ध कर लेना चाहते है। चाह आप बगाल जाए और वहा आदर्शो की उत्कट भावना से अभिप्रेरित युवका से बात करें अथवा महाराष्ट्र जाए तथा उन बुद्धिवादी युवका स मिलें जो बलिदान की भावना स ओतप्रोत है तथा उसके लिए सन्नद्ध भी, अथवा दक्षिण भारत जाए, सवत्र आपको युवा भावना एक समान ही दिखाई देगी, यद्यपि यह सही है कि वह भावना विभिन्न भारतीय भाषाओं म व्यक्त होती है।"[1]

1915 से 1917 का काल तो प्राय पूरा का पूरा एनी बीसेंट और सी० पी० रामास्वामी अय्यर के साथ यात्राए करन और भाषण दन म ही व्यतीत हो गया। एनी बीसेंट भी समान रूप से ओजस्वी वक्ता थी। सरोजिनी न अब अपनी वाक्शक्ति का पूरी तरह पहचान लिया था तथा उ होने उस शक्ति को देशसेवा के लिए प्रयोग करने का कोई भी अवसर हाथ म नहीं खोया। एनी बीसेंट एक ब्रिटिश सुधारक और उत्कट थियोसाफिस्ट थी। वह उस समय अपने जीवन के चरमोत्कष पर पहुच गई थी। उन्होने 1916 म भारत म होमरूल लीग (स्वराज्य सघ) की स्थापना की तथा भारत को ब्रिटिश दासता स मुक्त कराने के काय मे समर्पित हो गयी। वह इग्लड के उन विरले मानवतावादियो म से थी जिनम इंडियन नेशनल काग्रेस के सस्थापक ह्यूम और एक अन्य समाजसेवी दीनबधु सी० एफ० एण्ड्रयूज की गणना की जा सकती है। इन दोना नेताओ ने अपने देशवासियो द्वारा लगभग दो

---

1 अ० अमीर अली की डायरी, विश्वभारती न्यूज 1945

शताब्दियों तक शासित और शोषित भारत भूमि की स्वतंत्रता के प्रति अपने आपको संपूर्ण हृदय और आत्मा से समर्पित कर दिया था।

अन्य किसी भी राष्ट्रीय नेता की अपेक्षा सरोजिनी इस बात को अच्छी तरह समझती थी कि जब तक समूचे भारत के नागरिक भारतीयों की तरह साथ काम करने और साथ रहने को तैयार न हो तब तक न भारत राष्ट्र बन सकता है और न स्वतंत्र ही हो सकता है। एनी बीसेंट तब तक एक स्वातंत्र्य सेनानी के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। वह एक अनथक कार्यकर्ता थी, उन्होंने न्यू इंडिया नामक दैनिक समाचारपत्र और 'कामनवल्थ' नामक साप्ताहिक की नींव डाली। इन पत्रिकाओं तथा सरोजिनी और सी० पी० रामास्वामी अय्यर के भाषणों के साथ साथ स्वतंत्रता के लिए एनीबीसेंट की सिंहगर्जना लोकमान्य तिलक की होमरूल लीग और उनके उस राजनीतिक संघर्ष के पीछे पीछे दृढतापूर्वक गूंज उठी जिसके परिणामस्वरूप तिलक को लंबी जेल की सजाएं भुगतनी पडीं और उन्हें राष्ट्रनायक का सम्मान प्राप्त हुआ। गांधीजी जो दक्षिणी अफ्रीका में सफल सत्याग्रह के बाद अब भारत में थे किन्हीं कारणों से गोखले को यह वचन दे चुके थे कि वे इंग्लैंड से लौटने पर राजनीति में प्रवेश नहीं करेंगे। शायद गोखले यह बात समझ गए थे कि गांधीजी अपनी धुन के पक्के है और उस मामले में किसी प्रकार का समझौता नहीं करेंगे अतः उनके राजनीति में प्रवेश करने से भारत ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भद्र मुठभेड की उदारवादी नीति का परित्याग करके सीधे सीधे स्वतंत्रता की मांग पर उतारू हो जाएगा। ऐसा ही हुआ।

किंतु गोखले 1916 में दिवंगत हो गए। भारत मे नयी हवाएं बह रही थी। इस समय तक सरोजिनी भाषणों के एक अखिल भारतीय अभियान में पूरी तरह जुट चुकी थी। वह बहुत बार युवाओं और महिलाओं की सभाओं में भाषण करती तथा उन्हें सामाजिक बुराइयों को दूर करने एवं स्वाधीनता संघर्ष में हाथ बटाने की प्रेरणा देती थी।

1916 की लखनऊ कांग्रेस में सरोजिनी को एक वक्ता तथा प्रथम कोटि के राष्ट्रीय नेता के रूप में मान्यता प्राप्त हो गई। वहां उन्हें भारत के लिए स्वशासन की मांग से संबंधित प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए कहा गया।

सघष के कारण उनकी सराहना करते थे, किन्तु वह हमम म अनक युवाओं को बहुत दूर के बहुत भिन्न और अराजनीतिक पुरुष प्रतीत होते थ। उस समय वह काग्रेस अथवा राष्ट्र की राजनीति म भाग लेने से इकार करते थ और अपन आपको दक्षिण अफ्रीका के भारतीयो की समस्याओं तक ही सीमित रखते थे। लेकिन उसके बाद शीघ्र ही चपारन म निलहे गोरो क विरुद्ध उनके साहसिक सघष और उनकी विजय ने हम सब म उत्साह भर दिया। हमने देखा कि वह अपनी रीतियो का प्रयोग भारत म भी करने के लिए तैयार हो गय है और उनको सफलता की आशा दिखाई देती है।"

सरोजिनी न बहुत बार दक्षिण अफ्रीका फिजी तथा अन्य देशो म भारतीय गिरमिटिया श्रमिको क प्रति किए जान वाल दासो जैसे व्यवहार के विरोध मे गोखले के दृष्टिकोण और काय का समथन किया था। लखनऊ काग्रेस म गिरमिटिया श्रमिको के बार म उन्होने कहा

> 'हमारी महिलाओ न विदेशो म जो कष्ट भोग हैं उसकी लज्जा को अपने हृदय के रक्त से धो डालो। आज रात आपन जो शब्द यहा सुन हैं उन्होन आपके भीतर दावानल सुलगा दी होगी। हे भारत के पुरुषो उस दावानल का गिरमिटिया प्रथा की चिता बना डालो। आज रात मैं सोऊगी नही हालाकि मैं एक स्त्री हू और यद्यपि अपनी माताओ और बहिनो के अपमान को आप महसूस कर रहे होंगे तथापि अपन प्रति हुए अपमान को मैं नारी जाति का अपमान समझती हू।'

चपारन म गाधीजी न सत्याग्रह के द्वारा नील की खेती करने वाले श्रमिको की दशा सुधारने के लिए पुरानी तिनकठिया प्रणाली समाप्त करके जो प्रयास किया उसकी सरोजिनी म तत्काल प्रतिक्रिया हुई। तिनकठिया प्रणाली के अनुसार प्रत्येक किसान को अपनी भूमि के पद्रह प्रतिशत क्षेत्रफल म नील की अनिवाय खेती करनी होती थी। गाधीजी की सत्याग्रह पद्धति सरोजिनी की चेतना पर हावी हो गइ। इसका कारण केवल यह नही था कि सत्याग्रह की पद्धति सवथा नयी थी और वह उस उच्च नतिकता पर आधारित थी जिसके अनुशीलन के लिए अडिग नैतिक साहस और मनोबल की आवश्यकता होती है वरन शायद एक कारण यह भी था कि वह पद्धति सफल हुई थी। चपारन कृषि अधिनियम मानव क शोषण के विरुद्ध सत्याग्रह के सिद्धात की सभवत

प्रथम परिपूण सफलता का प्रतीक है, तथा गाधीजी की राजनीति ने इस सफलता के माध्यम से स्वतन्नता के सघष मे एक नई ज्ञातिकारी विधि को प्रभावशाली ढग से प्रविष्ट करा दिया।

1916 के लखनऊ काग्रेस अधिवेशन मे जवाहरलाल नेहरू सराजिनी नायडू से भी पहली बार मिले। जवाहरलाल एक आदशवादी और जुझार व्यक्ति थे। इस साहसिक युवती ने अपनी स्पष्ट वक्तता सवेदनशील मानवतावाद और आग्नेय व्यक्तित्व के द्वारा उनकी चेतना को स्पश किया। नेहरूजी न आत्मकथा मे लिखा है 'मुझे याद है उन दिना सरोजिनी नायडू के जनक वक्ततापूण भाषणा का भी मुझपर गहरा प्रभाव पडा। उनके भाषण राष्ट्रीयता और देशभक्ति स ओतप्रोत होते थे, और मै एक शुद्ध राष्ट्रवादी था। अपने अध्ययनकाल मे मरे मस्तिष्क म जो अस्पष्ट से समाजवादी विचार बन गये थे वे अब गौण हो गए।"

यद्यपि 1916 म तिलक और एनी बीसेंट दोनो ने अपनी-अपनी और प्राय प्रतिद्वद्वी होमरूल लीग बना ली थी और दोना सराजिनी के सहयोग की माग करते थे, लेकिन चपारन की सफलता के कारण सराजिनी न अपने राजनीतिक अस्तित्व को निर्णायक तौर पर गाधीजी के प्रति समर्पित कर दिया। यद्यपि वे अत्यधिक व्यक्तिवादी होने के कारण पूण अनुचरी अथवा अवनिष्ठावान शिष्या तो नही बन सकती थी तथापि यह सच है कि उन्हान गाँधीजी का वरण गुरु के रूप मे कर लिया था।

वह इग्लैंड से कवि की अपक्षा अधिक मात्रा मे राजनीतिज्ञ बनकर लौटी थी। अब उनका गद्य श्रोताओ को सम्माहित करता था तथा उन्हे भाषणो के लिए निरतर बुलाया जाता था। यद्यपि आग जाकर तो उन्हान अनेक हिता का समथन किया तथापि उस समय काग्रेस ही उनका मच था और यह स्थिति तो उनके जीवनभर बनी रही। उनकी वक्तत्वशक्ति और उनके व्यक्तित्व न जवाहरलाल नेहरू को रोमाचित कर दिया और उसी समय से दोनो के बीच एक ऐसा सबध विकसित हुआ जिसे केवल मत्यु ही विलग कर सकी। उनके लिए वह सहज ही भाई" बन गये थ और सराजिनी स्वय 'कामरड" बन गई थी। उनका सारा परिवार सरोजिनी का परिवार बन गया।

कांग्रेस के इस अधिवेशन में सरोजिनी नायडू एक ऐसे विषय पर बोलीं जिसे एक महिला के लिए थोड़ा विलक्षण माना जा सकता है। जब कांग्रेस अध्यक्ष ने उनसे शस्त्र अधिनियम पर एक प्रस्ताव रखने के लिए कहा तो उन्होंने श्रोताओं के समक्ष एक भाषण दिया। सभा में लेफ्टिनेन्ट गवर्नर जेम्स मेस्टन और श्रीमती मेस्टन भी उपस्थित थे। सरोजिनी ने श्रोताओं को 'भारत के निहत्थे नागरिको' कहकर सम्बोधित किया। उन्होंने आगे कहा कि, "यह एक प्रकार का विरोधाभास सा ही प्रतीत होता है कि मैं एक महिला हूं फिर भी मुझसे कहा गया है कि मैं देश के अधिकार वंचित पुरुषवर्ग की ओर से आवाज उठाऊं किंतु यह नितांत उपयुक्त है कि मैं पुत्रों की माताओं की प्रतिनिधि के नाते भारत की भावी माताओं की ओर से यह मांग करने के लिए आवाज बुलंद करूं कि उनके पुत्रों को उनका जन्मसिद्ध अधिकार लौटाया जाए जिससे कि भविष्य का भारत एक बार फिर से अपने अतीत का योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध हो सके।* माताएं चाहती हैं कि उनके बेटे निस्तेज और यंत्रवत बनने के बजाय सच्चे अर्थों में पुरुष बनें आपके लिए एक महिला के सिवाय और कौन आवाज ऊंची कर सकता है क्योंकि आप इस समस्त अवधि में अपने लिए स्वयं प्रभावशाली रीति से आवाज नहीं उठा सके? मुसलमान राजपूत और सिख गर्वपूर्वक शस्त्र धारण करने का अधिकार विरासत में प्राप्त करते थे इस अधिकार से वंचित हो जाना उनके लिये अपमान की बात है। अपने इस भाषण के अंत में उन्होंने अपनी उस कविता का निम्न अंश सुनाया जो उन्होंने युद्ध की समाप्ति पर फ्लैंडर्स, गलीपोली और मेसोपोटामिया में रक्त गिराने वाले भारतीय सैनिकों की प्रशंसा में लिखी थी। उन्होंने गर्जना की स्मरण करो अपने बलिदानी बेटों का, स्मरण करो भारत की सेनाओं का और उसे लौटा दो उसका खोया पौरुष!

यह अधिवेशन भारत के राजनीतिक जीवन में एक काल विभाजक रेखा बन गया। इसके थोड़े ही समय बाद सरोजिनी ने अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के एक महत्वपूर्ण अधिवेशन में भाग लिया। वह अधिवेशन भी लखनऊ में ही हुआ। एक बार फिर उन्होंने एक ऐसे समूह में एक प्रमुख भूमिका अदा

*सरोजिनी नायडू—पद्मिनी सेनगुप्त

की जो पूणतया पुरुष-समूह था और जिसमे उनके अपने धम के लोग न थे, किंतु जिस समय 'इस्लाम की युवा पीढी" न स्वराज्य—प्राप्ति के लिये हिंदुओ और मुसलमाना को एक दूसरे के समीप आन का ऐतिहासिक प्रस्ताव पास किया उस समय सराजिनी न उस समूह को पिछले काग्रेस अधिवेशन का स्मरण कराया। उस प्रस्ताव का समथन करते हुए उन्हाने कहा आज मुझे अपने मित्र और आपके महान नेता मुहम्मद अली जिन्ना का अभाव तीव्रता और गहराई के साथ महसूस हा रहा है।" और, मुहम्मद अली जिन्ना का समथन करते हुए उन्हाने कहा कि 'सम्माननीय जिन्ना के रूप मे आपको एक ऐसा अध्यक्ष मिला है जो हिंदुओ और मुसलमानो के बीच केंद्रबिंदु की तरह खडा है और इसका कारण यह है कि उन्ह मुस्लिम लीग का सदस्य बनने के लिए मुहम्मद अली न तैयार किया था।'

यह तथ्य बहुत महत्वपूण है कि उस समय तक जिन्ना काग्रस के सदस्य और एक उत्कट राष्ट्रवादी नेता थे। उस अनठे रूप से महत्वपूण वष की यह एक और निर्णायक घटना थी कि उन्ह मुस्लिम लीग का नतत्व करने के लिए तैयार कर लिया गया था। इण्डियन नशनल काग्रेस भारत के लिए स्वतत्रता प्राप्त कर सकती थी लेकिन महान नेताआ का अनेक दुखद भूलो तथा काल चयन और निणयो की अनेक चूको ने राष्ट्रवादी जिन्ना का ऐसा रूपातरण कर दिया कि उन्हाने दो राष्ट्रा के सिद्धात का प्रतिपादन किया वह इस कटु निष्कष पर पहुच गये कि हिंदू और मुसलमान कभी साथ नही रह सकते और उन्होने अत मे पाकिस्तान के एक पथक् राज्य का निर्माण किया।

1917 मे श्रीमती नायडू का तीसरा काव्य सग्रह 'दा ब्रोकेन विंग" (भग्न पख) प्रकाशित हुआ। यह सग्रह पहल के सग्रहा की अपक्षा अधिक परिपक्व प्रतीत होता है। यह परिपक्वता सहज ही एक ऐस परिपक्व कवि से अपेक्षित होती है जो महान व्यक्तियो स मिल चुका हो, महान घटनाआ के बीच से गुजर चुका हो तथा उनम भाग ले चुका हो और जिसकी अवस्था अडतालीस वष की हो गई हो। इस सग्रह से हताश और व्यथा की अभिव्यक्ति हुई है स्वय शीषक मे ही य परिलक्षित होती है। एसा प्रतीत होता है कि उनकी अस्वस्थता कार्याधिक्य तथा कुछ व्यक्तिगत कष्टो न उनकी तेजस्वी आत्मा का कुछ सीमा तक कुण्ठित कर दिया था। कुछ कविताआ मे सवगात्मक

निराशा के अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं, जैसे 'दा मारी आव लव' तथा 'दा सायलेंस आव लव', एवं 'मीनेस आव लव' शीर्षक कविता में तो कुण्ठा मुखर हो उठी है

'तुम्हारे अपने उन्मत्त हृदय की बेचैन कांक्षा
संधान करेगी तुम पर
वांछाओं के सशक्त और उनिवकारी शरों का,
तुम्हारी धमनियों में भरी हुई सूक्ष्म बुभुक्षा
गड़ा देगी तुममें तीव्र और अमंद अग्निदंश।
यौवन और वसंत और उद्दाम उत्कटता
छोड़ देंगे संग तुम्हारा
और हंसेंगे पराजय का संग लेकर
तुम्हारे अहम्मन्य विद्रोह पर,
ईश्वर ही जाने, हे प्रेम!
मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी या हत्या
उस दिन जब तुम पड़े होगे मेरे पावों पर
चुके हुए और मग्न।"

कारण चाहे कुछ भी हो अथवा कोई भी हो और नाम गिनाने वालों की भी कोई कमी न थी इस संग्रह से सरोजिनी के जीवन के काव्य चरण का समाहार हो गया। यद्यपि वह अपने-आपको "गीता की गायिका' बताती रहीं तथापि वस्तुतः वह इसके बाद से 'शब्दों की बुनकर' बन गयीं।

20 अगस्त, 1917 को उन्होंने हैदराबाद से महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को एक पत्र में इस प्रकार संबोधित किया

प्रिय विश्वकवि,

आपको मिली समूचे विश्व के प्रेम और समादर की भेंट की तुलना में मेरा छोटा सा गीत संग्रह भग्नपंख पक्षी के गीतों का संग्रह मेरी व्यक्तिगत भेंट के रूप में आपके लिए बहुत तुच्छ उपहार है।

"इन कविताओ मे मैंने अपनी कला की अपेक्षा अपने अतराल को अधिक उडेला है तथा यदि आपकी अभिरुचि सहज वृत्ति और जीवन के अनुभव न इन तुच्छ गीतो को सराहा तो मुझे ऐसा लगेगा कि मेरा भी अभिषेक हो गया है और वह भी विश्व के द्वारा नही वरन उस व्यक्ति के द्वारा जिसका समूचे विश्व ने अभिषेक किया है।
कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने तुरत उत्तर भेजा

प्रिय श्रीमती नायडू

क्या आप मुझे अपने मन का भेद खोलने की अनुमति देंगी ? आपके अतिम सग्रह म आपकी कविताओ को पढते समय अग्रेजी काव्य के पराये गगन म उडान भरने के लिए अपने भग्नपख की चेतना मेरे मन मे पुन प्रबल हो उठी। आपकी सहज गेयता और उन विदेशी शब्दो के बीच, जो आपके लिए मित्रवत हो गए है आपके चिंतन के प्रत्यक्ष चरण की गरिमा के प्रति मेरे मन मे ईर्ष्या उत्पन्न होती है। तथापि, यह जानकर मेरा हृदय स्वाभिमान से भर उठा है कि आपने अपने निजी अधिकार के बूते पश्चिम के प्रसिद्ध साहित्यकारो के बीच अपना स्थान बना लिया है और इस प्रकार हमारी मातृभूमि पर छायी हुई अपमान की काली घटा को छिन्न-भिन्न कर डाला है।

ब्रोकेन विंग (भग्न पख) मे आपकी कविताए जुलाई की शाम के उन बादलो की तरह जो सूर्यास्त की धु धली लालिमा से चमक उठते है, आँसुओ और आग स निर्मित प्रतीत होती है।"

1917 म काव्य के जीवन से राजनीतिक जीवन के कठोर यथाथ म मक्रमण के बावजूद सभवत वह प्रारम्भिक युग की प्रणयशीलता और भावप्रवणता से चिपकी रही। अपरिहायत उनका अतिम काव्यसग्रह उस व्यथा का प्रतीक बन गया है जो इस प्रकार के भावुक व्यक्ति को सहन करनी ही पडती है। बडौदा म अपने एक मित्र को उन्होने लिखा

'हम सबके लिए ही जीवन कभी दूभर होता है कभी सौन्दय और भद्रता स सस्पर्शित और कभी निराशा से। किंतु दुख का स्रोत और उसके जन्म की परिस्थिति चाहे कुछ भी हो उसे देवी और प्रेरक बनाया जा

सकता है। विश्व की सवा उत्तमतर रीति से तथा मधुर निष्ठा और सहानुभूतिपूर्वक करते रहने के लिए व्यक्ति अपने निजी कष्टों को जिस प्रकार स्वीकार करता है उनका जिस प्रकार उपयोग करता है और उन्हें जिस प्रकार पावित्र्य का अधिष्ठान प्रदान करता है वह उसकी आत्मा की श्रेष्ठता अथवा भद्रता की सर्वोच्च कसौटी है।

सरोजिनी नायडू सर्वोच्च मानवीयता से संपन्न थी। उन्होंने यह "मधुर निष्ठा और सहानुभूति' अपने समस्त मित्रों पर बरसाई और इसने उन्हें जीवन का सामना करने की शक्ति दी। इसने उन्हें कोमलता तथा करुणा की गहनता और अपने प्रियजनों के प्रति चिंतनशीलता भी प्रदान की जो अंतस्तल की गहराइयों से फूटकर बहती थी।

यह वह युग था जब गांधीजी और कांग्रेस के अन्य नेता दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों के प्रति किए जाने वाले अमानवीय व्यवहार के कारण बहुत क्षुब्ध थे। गांधीजी उनकी ओर से सत्याग्रह कर चुके थे और उन्हें उनकी स्थिति का सही बोध था। श्रीमती नायडू की रुचि और उनका रोष इस विषय में तब जागृत हुए जब उन्होंने भारत सरकार की एक रिपोर्ट में यह पढ़ा कि 'इस देश में यह माना जाता है तथा यह संभवतः निराधार नहीं है कि महिला उत्प्रवासियों को प्रायः अनैतिक जीवन जीना पड़ता है जिसमें उनका शरीर मुक्त रूप से सह उत्प्रवासियों तथा निम्नश्रेणी के प्रबंध-कर्मचारियों के उपभोग के लिए इस्तेमाल होता है।

इस बारे में जांच शुरू हुई तथा 12 अप्रैल, 1917 को भारतीय महिलाओं का एक शिष्टमंडल वायसराय से भेंट करने गया जिसके परिणामस्वरूप यह घोषणा की गई कि भारत सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत एक विशेष युद्ध व्यवस्था के तौर पर भारतीय गिरमिटिया श्रमिकों की भरती रोक दी गई है। श्रीमती नायडू ने इस विषय पर अनेक भाषण दिए। उन्होंने पुरुषों की एक सभा में बोलते हुए कहा, 'सज्जनो! मैं आज रात आप तक पहुंचने के लिए बहुत दूर चलकर केवल इसलिए यहां आई हूं कि मैं पुरुषों के लिए नहीं महिलाओं के लिए अपनी आवाज उठा सकूं उन महिलाओं के लिए जिनकी गौरवशाली परंपरा यह रही है कि सीता अपने सतीत्व को दी गई चुनौती सहन नहीं कर पाई और उन्होंने धरती माता से विनती की कि मुझे अपने भीतर समोकर मेरी प्रामाणिकता सिद्ध करो।'

इस समय सरोजिनी अपनी शक्ति के चरम शिखर पर थी और देशभर मे उनकी माग निरतर बनी हुई थी। 1917 के बाद से उनका जीवन सतत राजनीतिक गतिविधि मे फसा रहा। उ हे विश्राम तभी मिलता था जब विदेशी सरकार उन्हे जेल म डाल देती थी। अगले कई साल तक वह निरतर यात्राए करती रही। उनकी वक्तता म सहज ही समस्त विषयो का समावेश रहता था। अक्तूबर म वह पटना म थी। वहा उन्होन एकता के अपन प्रिय विषय पर एक भाषण दिया तथा अपने श्राताओ को अपन ज्ञान के विस्तत क्षितिजा और इतिहास प्रेम का परिचय दिया। उन्होन कहा कि, शताब्दियो पहले जब पहली मुसलमान सेना भारत आई तो उसन अपने खेमे पवित्र गगा के तट पर गाडे और उसके पवित्र जल मे अपनी तलवारा को बुझाया। गगा के जलाभिषेक न उन मुसलमान आक्रमणकारियो का प्रथम स्वागत किया जा कालातर म भारत की सतान बन गए।[1]

इन शब्दो के द्वारा वास्तव म वे हिंदुओ से यह कह रही थी कि वे इस तथ्य को पहचाने कि सभी आक्रमणकारी कालातर मे धरती की सतान' बन जाते है तथा मुसलमानो क प्रारभिक आक्रमण और मूर्तिभजन की वत्ति अतत मानवीय बधुत्व और समान इतिहास म परिणत हो गई है।

इसके कुछ समय बाद ही वह बीजापुर मे आयोजित बबई प्रदेश सम्मेलन मे सम्मिलित हुइ और वहा उन्होने महिला मताधिकार सम्बन्धी प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

दिसबर 1917 म उन्होने मद्रास विद्यार्थी सम्मेलन म भाषण दिया और कुछ दिनो बाद तरुण मुस्लिम सघ की सभा म। अगले दिन वह शिक्षक महाविद्यालय सईदपेट मे बोली और उसी दिन 'भविष्य की आशा विषय पर विद्यार्थियो के सम्मुख भी। वह वष समाप्त होते-होते उन्होने मद्रास-विशेष प्रादेशिक सम्मेलन म "काग्रेस लीग याजना तथा मद्रास प्रेसीडेंसी एसोसियेशन के समक्ष 'सप्रदाया के बीच सहयाग' के बारे म चर्चाए की और मद्रास विधि महाविद्यालय के विद्यार्थिया को भी सबोधित किया।

माच 1918 म वह जालधर म 'महिलाओ की स्वतत्रता' के बारे म

1 सरोजिनी नायडू—पद्मिनी सनगुप्त

बोली तथा अगले दिन "भारत की भावी महिलाओं की कल्पना" विषय पर। अप्रैल में उन्होंने लाहौर में "महिलाओं की राष्ट्रीय शिक्षा" के बारे में भाषण दिया। पुरुषों को सबोधित करते हुए उन्होंने पूरी शक्ति के साथ कहा, 'आप भारतीय नारीत्व की चर्चा करते है आप उस साहस और भक्ति की चर्चा करते है जिसके आधार पर सावित्री अपने पति की आत्मा वापस प्राप्त करने के लिए मृत्यु के साम्राज्य तक गई तथापि आप आधुनिक सावित्रियों को उस शक्ति से वंचित रखते हैं जिसके द्वारा वे राष्ट्रीय जीवन को मृत्यु के गर्त से उबार सकती है।"

मई में श्रीमती नायडू दक्षिण भारत लौट गयी जहां उन्होंने कांचीपुरम में मद्रास प्रांतीय सम्मेलन की अध्यक्षता की। जुलाई में वह मद्रास के मायलापुर में राष्ट्रीय बालिका विद्यालय के अवसर पर बोली। सितंबर में उन्होंने कांग्रेस की एक विशेष सभा में "स्त्री पुरुषों के बीच समान योग्यता' नामक प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव इस प्रकार था 'योजना के किसी भी अंग में पुरुषों के लिए जो योग्यताएं निर्धारित की गई है उन योग्यताओं से संपन्न महिलाओं को लिंग के आधार पर अयोग्य घोषित नहीं किया जायेगा।' बीजापुर के प्रादेशिक सम्मेलन में उन्होंने महिला मताधिकार" संबंधी प्रस्ताव पेश किया। इसके बाद वे दिसंबर में पुनः उत्तर भारत को लौटी और उन्होंने अखिल भारतीय सामाजिक सम्मेलन में भाषण दिया।

कांचीपुरम में सरोजिनी द्वारा मद्रास प्रांतीय सम्मेलन की अध्यक्षता का वर्णन बाद में भारत की महान अंग्रेज मित्र श्रीमती कजिन्स ने इन शब्दों में किया "उन्होंने स्वयं को और उस सभा में अपने उच्च पद को आदर्शवादिता के एक उन्नत स्तर पर प्रतिष्ठित कर लिया था तथा छोटी छोटी बातों पर ध्यान देने के बजाय उन्होंने सम्मेलन में उसी आदर्शवादिता के बल पर न्याय और माधुर्यपूर्वक संतुलन बनाये रखा। मुझे उनके बारे में ऐसा लगा कि वह शुद्धतम स्वर्ण से भली प्रकार गला-तपाकर बनाई गई एक जड़ाऊ क्लिप है जिसने भारत माता की देशभक्ति के विभाजित सिरों को साथ मिलाकर पकड़ रखा है।'

वह सचमुच अनेक संस्कृतियों और युगों के बीच एक पुल की भांति थी। "भारत की आत्मा नामक अपने भाषण में उन्होंने विभिन्न ऐतिहासिक युगों

में पिरोये हुए सातत्य के सूत्र की चर्चा की। उन्होंने घोषणा की कि भारत का स्थान ऐतिहासिक अस्तित्व के आश्चर्यों के मध्य सर्वोच्च और ऐतिहासिक स्वर्ग के चमत्कारों के बीच अनूठा है। अकबर के मानवतावादी शासन पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि 'अकबर ने अत्यंत भिन्न नस्लों, धर्मों और जातियों के लोगों के बीच एकता स्थापित की।' आगे उन्होंने कहा कि अंग्रेज "एक साहसिक और शक्तिशाली प्रजाति हैं। वे एक शानदार साहित्य और स्वतंत्रता की एक शानदार विरासत के स्वामी हैं लेकिन भारत में उन्होंने राष्ट्रीय संस्कृति के अधःपतन का लाभ उठाया। किंतु भारत फिर से उठेगा तथा वैयक्तिक और राष्ट्रीय स्वाधीनता के अपने जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करेगा क्योंकि ये जीवन श्वास हैं। जब धरती के जिज्ञासु राष्ट्र अतीत की भांति जीवन की लब्धि के दिव्यतम सुमन अर्थात् कालातीत शांति के लिए सार्वभौमिक प्रार्थनाओं में भागीदार होने के लिए भारत की यात्रा करेंगे तब भारत की आत्मदीप्त और विजयी आत्मा पुनः मानवतावाद का एक चमत्कारी उदाहरण बन जाएगी।'

उक्त भाषण में जो उत्कट देशभक्ति गूंजती थी उसके बावजूद सरोजिनी हृदय से एक उदारवादी महिला थीं। वह सच्चे अर्थ में मानवतावादी थीं और उनके मन में इंग्लैंड तथा उन मूल्यों के प्रति गहरा प्रेम था जो अंग्रेजों की परंपराओं और अंग्रेजी साहित्य में अभिव्यक्त हुआ था। दुर्भाग्यवश अंग्रेजों की राजनीतिक हठधर्मिता ने उन्हें हमेशा के लिए अपनी ओर से विमुख कर दिया। 1917 में ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटिश साम्राज्य के एक अभिन्न अंग के रूप में भारत में उत्तरदायी शासन की उत्तरोत्तर प्राप्ति कराने की दृष्टि से स्वशासी संस्थाओं की स्थापना करके राजनीतिक सुधारों की एक नयी योजना के निर्माण का इरादा प्रकट किया। इस वक्तव्य को क्रियान्वित करने की दृष्टि से तत्कालीन भारतमंत्री एडविन मान्टेग्यू भारत की स्थिति का स्वयं पता लगाने के लिए एक छोटा-सा शिष्टमंडल लेकर भारत आए जिसमें अधिकारी विशिष्ट सदस्य शामिल थे। उधर भारत में कुछ समय पूर्व ही होमरूल लीग की संस्थापिका श्रीमती एनी बीसेंट को गिरफ्तार कर लिया गया था। इससे उनके मन में आक्रोश आ गया। लेकिन उन्हें शीघ्र ही रिहा कर दिया गया और उसके फौरन बाद कलकत्ता में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षा बना। इस प्रकार [illegible] का गौरव भी मिला जो [illegible]

कि देश महिलाओं को राष्ट्रीय नेता के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हो चुका था। जिस समय एनी बीसेंट अध्यक्ष की कुरसी पर बठी तो सरोजिनी को उनके दाहिनी ओर बिठाया गया। सभवत यह एक पूवसकत था। 1925 म वह स्वय अध्यक्ष की कुरसी पर बैठी।

वस्तुत महिलाए अपनी आवाज म शक्ति पैदा करन की चेष्टा कर रही थी और शीघ्र ही वे इसम सफल हो गयी। 15 दिसबर 1917 को सरोजिनी के नतृत्व मे महिला सगठनो की चौदह प्रतिनिधि महिलाए माटेग्यू और वायसराय से एक शिष्टमडल के रूप म मिली और प्रथा के अनुसार उन्होने उन्हे एक ज्ञापन दिया। ज्ञापन म स्वशासन की माग की गई थी और इस बात पर बल दिया गया था कि महिलाओ को नागरिक के रूप म मान्यता मिलनी चाहिए एव लिंग पर आधारित भेदभाव समाप्त किया जाना चाहिए। किंतु उन्हे अततोगत्वा निराशा ही मिली क्योकि कालातर म जो सुधार-योजना सामने आई उसम महिला मताधिकार की सिफारिश नही थी। उसम कहा गया था कि 'जब तक महिलाओ को परदे म रखने की प्रथा मे ढिलाई नही आती तब तक महिला मताधिकार से कोई वास्तविक लाभ नही होगा।" 1919 मे एक अन्य महिला शिष्टमडल ने मताधिकार सुधार स सबधित साउथबरो कमीशन से भेट की लेकिन उसका भी कोई अधिक अच्छा परिणाम नही निकला। माटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारो म महिलाओ का उल्लेख तक नही किया गया।

भारत की महिला नेता सभवत यह बात पूरी तरह नही समझ पायी कि ब्रिटेन मे महिलाओ ने मताधिकार प्राप्त करने के लिए जो उग्र आदोलन किया था उसकी वहा गहरी प्रतिक्रिया हुई थी। यह बात और है कि दबाव के कारण महिलाओ को मताधिकार दे दिया गया लेकिन वस्तुत इग्लैड और पश्चिमी जगत म मताधिकार के लिए महिलाओ के सघर्ष के कारण पुरुषवग म उनके प्रति विरोधभाव उत्पन्न हो गया था। भारत म पुरुषो की दुनिया और उनकी उच्चतम परिषदो म सरोजिनी को जो समान हैसियत प्राप्त थी उसने तथा स्वतत्रता सग्राम मे सहसा महिलाओ के पदार्पण ने सावजनिक जीवन के भीतर भारतीय महिलाओ की समान साझेदारी के सुगम सक्रमण म महत्वपूर्ण योगदान किया। भारत मे स्त्री पुरुष स्पर्धा अथवा ईर्ष्या कभी

प्रतिनिधि की हैसियत स केवल इसलिए खडी हो सकी हू क्योकि राष्ट्र की स्त्रीशक्ति आज आपके साथ खडी है और आपको यह प्रमाणित करने क लिय कि आप उत्तरदायी और पूण स्वशासन क अधिकारी है इसस बढकर और काई अधिक उपयुक्त तथा अधिक तकसगत प्रमाण खोजने की आवश्यकता नही है कि आपन भारत की नारी के स्वर का मुखरित होने का अवसर दिया है तथा उस भारतीय पुरुषवग की कल्पना माँग उसके प्रयास तथा उसकी आकाक्षाओ की पुष्टि करने का अवसर दकर सहज और मौलिक याय भावना का परिचय दिया है। याद रखिय कि प्रस्ताव का ब्योरा चाहे कुछ भी हो तथा अपनी धारणा के अनुसार व्यावहारिक राजनीति के तथ्य और तत्व चाहे जो भी हा उनकी स्थायी प्ररणा उस भावना म निहित है जिसक आधार पर आज इन मागा और आकाक्षाआ की कल्पना उदय हुई है तथा जो आज चरम शिखर पर जा पहुची है। हम क्या माग रह है ? कुछ भी नया नही कुछ भी चौंकान वाला नही। हम केवल एक ऐसी वस्तु माग रह है जो जीवन और मानवीय चेतना जितनी ही सनातन है तथा जो ससार म प्रत्यक आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है। याद रखिये कि अपने प्रात म अपने क्षत्रा म आपको सजीव अवसर मिलने चाहिए तथा आपको अपने ही देश म अपनी विरासत स वचित होकर देश निकाले की स्थिति म गूगे बहरो की तरह जीन के लिए विवश नही किया जाना चाहिए जिनका उपभोग दूसर राष्ट्र कर रह है। वह समय अब बीत गया है जब हम बौद्धिक और राजनीतिक बेडिया स जकडे हुए दासता म सतुष्ट थ क्योकि फूट के दिन समाप्त हो गए है। आज इस महान देश म कोई भी जाति दूसरी जाति स अलग नही रखी जा सकती। अब यह हिंदुओ या मुसलमानो का भारत नही रहा है यह एक सयुक्त भारत बन गया है।'

इस बात पर जार देना कि साप्रदायिक एकता के बिना राजनीतिक स्वतत्रता अथहीन है उनका स्वभाव बन गया था। उनक शब्दा और उदबोधनो पर ध्यान दिया गया हाता तो निश्चय ही आज हमारा इतिहास कुछ और होता।

सराजिनी न जब यह कहा कि एक महिला सयुक्त भारत की प्रतिनिधि चुनी गई है तब अनजाने ही उन्हाने इस बात का सकेत दे दिया कि वह स्वय

उस समय अपने राजनीतिक जीवन के शीप पर पहुच गई थी। 1917 स 1919 के बीच उन्होने माटेग्यू चेम्सफोड सुधार, खिलाफ्त के प्रश्न देश म सविनय अवज्ञा को ज म देन वाले रोलट विल के विरुद्ध छिडे आदोलन, सावरमती सधि तथा आदोलन को अतिम रूप प्रदान करने वाले सत्याग्रह-प्रतिनापत्न का प्रारूप तैयार करन सरीखे प्रत्येक महत्वपूण राजनीतिक काय मे भाग ही नहीं लिया वरन अनुपम क्षमता और सक्ल्प के साथ देश का दौरा किया एव युवका महिलाओ तथा सब प्रकार के कायकर्ताओ को अपनी चमत्कारी वक्तता के द्वारा स्वतन्त्रता सग्राम म भाग लेने के लिए आदोलित और प्रेरित किया।

इस क्षेत्र म उ होने जो भूमिका निवाही उसको मापने के लिए किसी भी नात मानदड का उपयोग नही किया जा सकता। चमकदार साडी और आभूषणा मे नाट कद की किंतु साहसिक सरोजिनी भारत के पौराणिक अतीत से चमत्कारपूवक अवतरित होने वाले शब्दो और सवेगा के द्वारा जनता के विराट समूहो को प्रभावित करती थीं, और देश के असख्य सरल मनोवलहीन और सकल्पशून्य लोग उन्ह देखकर ऐसा अनुभव करते थे मानो कोई देवी अचानक उनके बीच अवतरित हो गई है। श्रोताओ पर उनका जो प्रभाव पडता था उसकी व्याख्या और किस प्रकार की जा सकती है ? वार-वार ऐस उदाहरण सामन आते थे जब वह असयत, उत्तेजित अशात और कभी कभी बेकाबू भीड पर पूरी तरह नियन्त्रण कर लेती थी। एक वार कलकत्ता म उन्हान अपने युवा श्रोताओ को डाटकर कहा, 'खामोश हो जाओ, मैं तब तक नही वालूगी जब तक पूरी तरह शाति नही होगी।' सभागार म इसके वाद एक भी आवाज सुनाई नही दी और उ होने अपना भाषण जारी रखा। ववई मे प्रथम सत्याग्रह आदोलन के दौरान तथा 1932 म अनेक अवसरो पर उन्होंने अनियन्त्रित भीडो को शात कर दिया। उस वप जिन्ना—सभागार में आयोजित एक सभा मे किसी साप्रदायिक प्रश्न पर कुछ मुसलमान चाकुओ स लस होकर आए। सरोजिनी जवाहरलाल नेहरू और एम० सी० छागला हत्या के खतर की सवथा उपेक्षा करके सभा म आए। इसका परिणाम यह हुआ कि भीड शात हो गई और किसी प्रकार का रक्तपात नही हुआ।

माटेग्यू चेम्पसफोड सुधार प्रकाशित कर दिय गए और उनका दिसबर 1919 के भारत सरकार के एक अधिनियम द्वारा विधि का रूप दे दिया गया।

अत्याचार से पीडित भारत के शस्त्रागार म एक ही उपयुक्त शस्त्र बचा है जो मशीनगन और तलवारो का शस्त्र नही वरन सपूण आध्यात्मिक विद्रोह और उस आध्यात्मिक शक्ति का बुनियादी और अपराजेय अस्त्र है जो भौतिक अस्त्र और अय राष्ट्रो की भौतिक शक्ति के विरुद्ध है उसी क्षण हमने अपने जीवन और व्यक्तिगत स्वतत्रता के रूप म अपने समस्त जीवन मूल्यो एव जागतिक मानदडो क अनुसार अपने निजी सुखो को समर्पित कर दिया।

सहज ही अपेक्षित था कि सत्याग्रह आदोलन का विरोध उठ खडा हो। देश म ऐसे बहुत से लोग निकल आए जिन्होने गाधीजी के सत्याग्रह आदोलन का कडा विरोध किया क्योकि उनकी दृष्टि म वह रचनात्मक होने के बजाय विनाशकारी अधिक था। इस सदभ म भारत सरकार के गृह विभाग (राजनीतिक), शिमला का 6 नवबर, 1920 का प्रस्ताव दिलचस्प है। उसपर सरकार के सचिव मैक्फसन के हस्ताक्षर हैं और जिसे उसी समय जारी कर दिया गया था

"हाल की घटनाओ को देखते हुए सपरिषद गवनर जनरल स्थानीय सरकारो और प्रशासन के मागदशन की दष्टि स ही नही वरन् भारत की जनता की सूचना के लिए भी असहयोग आदोलन के प्रति भारत सरकार के रवैये और उसकी नीति की घोषणा कर देना आवश्यक समझते है। पहली बात तो यह कि भारत सरकार ऐसे समय म जबकि भारत साम्राज्य के भीतर स्वशासन के आदश की प्राप्ति की ओर महान प्रगति की ड्योढी पर खडा है तथा पहले आम चुनाव निगाह के सामने है, भाषण और प्रशासन की स्वतत्रता मे हस्तक्षेप नही करना चाहती। दूसरी बात यह कि सरकार उन व्यक्तियो के विरुद्ध कायवाही करने से सदा हिचकिचाती रही है जिनम से कुछ प्रामाणिकतापूवक किंतु पथभ्रष्ट प्रयोजनो स प्रेरित होकर काय कर रहे हैं। तीसरी और मुख्य बात यह है कि भारत सरकार को भारत की साधारण सूझबूझ पर आस्था है और उसको विश्वास है कि भारत के विशिष्ट और आम लोग स्वस्थ मस्तिष्क से काम लेंगे तथा असहयोग को एक महज काल्पनिक और अवास्तविक योजना मानकर अस्वीकार कर देंगे क्योकि यदि वह सफल होती है तो उसका परिणाम व्यापक, अव्यवस्था राजनीतिक अराजकता

तथा उन सब लोगो के सवनाश क रूप म सामने आएगा जिनके कोई भी वास्तविक हित देश के भीतर दाव पर लगे हैं। इस आस्था और विश्वास ने भारत सरकार की नीति को प्रभावित किया है। असहयोग, द्वेष और अज्ञान पर अवलबित है और उसका सिद्धात रचनात्मक प्रतिभा से रहित है। भारत को असहयोग की पूववर्ती सत्याग्रह परपरा का कटु अनुभव है, तथा सपरिषद गवनर जनरल को अभी तक आशा है कि भारत प्रत्यक्ष घटित शोकपूण चेतावनी से पाठ ग्रहण करेगा और असहयोग के उससे भी कही बडे खतरे को स्वीकार करने से इकार कर देगा। इसके प्रतिपादको ने अतिम रूप से यह प्रतिज्ञा कर ली है कि वे वतमान शासन का नष्ट करेंगे, ब्रिटिश शासन की जडें खोद देंगे, और उन्होने अपने अनुयाईयो को यह आशा दिलाई है कि यदि उनके मत्र को आम तौर पर स्वीकार कर लिया गया तो भारत एक वप मे स्वशासी और स्वतत्र हो जाएगा। भारत सरकार की आस्था इस तथ्य से बहुत बडी सीमा तक सही सिद्ध हो गई है कि भारत के सवश्रेष्ठ मस्तिष्को ने असहयोग की मूखता की एक स्वर से निंदा की है। शिक्षित लोकमत के सबसे अधिक महत्वपूण अश ने इस नये सिद्धात को भारत के लिए अत्यधिक दुस्सभावनायुक्त मानकर अस्वीकार कर दिया है। इस आदोलन के नेता शिक्षित भारत से मनोनुकूल निणय प्राप्त करने म असफल हो जाने पर जनसाधारण को उग्र भाषा द्वारा भडकाने तथा असहयोग के झडे के नीचे स्कूलो और कालेजो के अपरिपक्व छात्रो की सहानुभूति और सहायता प्राप्त करने की कोशिश के लिए विवश हो गए है। यह स्थिति भारत के लिए बहुत खतरनाक है। इस कारण ही भारत सरकार सारे मामले को देश के सामने खुले-आम पेश करने के लिए विवश हुई है। असहयोग आदोलन न हाल म ही जा दो नए रूप ग्रहण किये है उनम असदिग्ध रूप से सबसे अधिक अनैतिक देश के नवयुवको पर किया जाने वाला आक्रमण है, उन्हें राजनीतिक आदोलन की वेदी पर वलिदान करने की योजना बनाई गई है। आदोलन के नेताओ को इस बात की तनिक भी परवाह नही है कि उनके कार्यों से पारिवारिक जीवन की नीव उखड जाएगी, वच्चे अपने माता पिता की अवज्ञा करेंगे, साथ ही अशिक्षित लोगो का आवाहन भी गभीर खतरो स भरा हुआ है। उसका एक निंदनीय परिणाम तो सामने आ ही गया है और यह निश्चित है कि एक नगर स दूसरे नगर तक भाग-दौड करके उत्तेजनात्मक भाषणो तथा निरतर खडन के बावजूद

गलत वक्तव्यों की पुनरावृत्ति के द्वारा जनसाधारण में उत्तेजना पैदा करने वाले नेताओं की अथक गतिविधि गंभीर विप्लव और अव्यवस्था को जन्म दे सकती है। सरकार यह महसूस करती है कि भारत जिस संकट में फंस गया है उसको दूर करने के लिए उसे शिक्षित लोकमत पर मुख्य रूप से विश्वास रखना चाहिए। यही वह लोकमत है जिस पर भारत का राजनीतिक भविष्य निर्भर करेगा। इसी आस्था के कारण सरकार के लिए सार्वजनिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जहां तक संभव था उसने दमनकारी कदम नहीं उठाये। सरकार समझती है कि यह कदम अंतिम उपाय के रूप में तभी उठाया जाना चाहिए जबकि वैसा न करना जनता के प्रति अपराधपूर्ण विश्वासघात हो जाए। आदेश दिया जाता है कि यह प्रस्ताव भारत के गजट में प्रकाशित किया जाये तथा समस्त स्थानीय सरकारों को भेजा जाये।'

भारत की जनता मूलतः कानून का पालन करने वाली है, कानून की अवज्ञा को एक गुण अथवा पुण्य के स्तर तक उठा देने वाला सिद्धांत उसके लिए बहुत नया और दुरूह था। शंकालुओं की शंका का निवारण करते हुए सरोजिनी ने स्पष्ट किया कि 'तर्क अथवा विधि (कानून) किसी राष्ट्र के आध्यात्मिक विकास का अंतिम मानदंड नहीं है। व्यक्तियों की भांति ही राष्ट्रों के इतिहास में भी ऐसे काल आते हैं जब तात्कालिक आवश्यकताओं की प्रेरणा प्रवृत्ति और अंतःप्रेरणा के सामने वैधानिक सत्ता के प्रति सम्मान, सावधानीपूर्ण आचरण तथा शांति बनाये रखने का पक्ष लेने वाले प्रथागत नियमों को विफल हो जाना पड़ता है। सज्जनो! यदि तर्क केवल तर्क विवाद और तार्किक परिणति तक ले जाने वाली शास्त्रीय चर्चाएं ही उपलब्धियों का सर्वश्रेष्ठ माध्यम होती तो क्या फ्रांसीसी राष्ट्र सफलता प्राप्त कर सकता था?' उन्होंने आगे कहा, "रौलट विधेयक ऐसा कानून है जिसे सारे संसार में ईश्वर की समस्त विधियों और मनुष्य के समस्त मानवीय अधिकारों के प्रति द्रोहमूलक माना जा सकता है।

मद्रास से सरोजिनी नायडू अहमदाबाद गई जहां उन्होंने अपना भाषण इस प्रकार आरंभ किया

'मैं अस्वस्थ हूं फिर भी मैं आपके सामने क्यों खड़ी हूं? हमारे हृदय क्यों आंदोलित हो गए ... मौन व ... इसका कारण

यह है कि हम एक बीभत्स दुष्कल्पना के आमने सामने खडे है और यदि इस नष्ट नही किया गया तो हम सदा के लिए समाप्त हो जायेंगे। काग्रेस लीग योजना का क्या हुआ ? वे माटेग्यू चेम्सफोड प्रस्ताव कहा गय जिनकी बहुत डीग हाकी जा रही थी ? आज माटेग्यू चेम्सफोड प्रस्ताव ताक पर रख दिए गए हैं और उनके बदले रौलट कानून हम पर थोप जा रहे है।"

इसक आग उन्होने भावुकतापूण स्वर म रोटी के बदले विष का प्याला दिय जाने की उपमा देते हुए कहा 'विष अर्थात बलप्रयोग के विरुद्ध एक ही उपचार बचा है और वह है सत्याग्रह।' उन्होने श्रोताओ स गाधीजी के नेतत्व का समर्थन करने के लिए पुन प्राथना की। पाच दिन बाद 30 माच, 1919 का गाधीजी न दशव्यापी हडताल स अपना आदोलन शुरू किया। विभिन्न कारणा स उसे 6 अप्रैल के लिए स्थगित कर दिया गया तथा सभी जातियो के लोगो ने हडताल म भाग लिया। आदोलन के स्थगन के बारे म सरोजिनी नायडू की बडी बेटी पद्मजा न एक दिलचस्प कारण बताया। गाधीजी सविनय अवज्ञा आदोलन 30 माच को शुरू करना चाहते थे। अस्वस्थता के बावजूद वह सत्याग्रह के बारे म एक सावजनिक सभा मे भाषण करने के लिए मद्रास गए। सरोजिनी भी अस्वस्थ थी, यह बात अहमदाबाद के उनके भाषण से स्पष्ट हो गई थी। वह गाधीजी के साथ नही जा सकी। ऐसा लगता है कि गाधीजी न तब तक सत्याग्रह आरभ करन से इकार कर दिया जब तक कि सरोजिनी, शकरलाल बकर उमर सोभानी और जमनादास द्वारकादास खादी का सिद्धातत स्वीकार करने और उनके साथ आदोलन आरभ करने के लिए तयार न हो। जब व लोग बबई पहुचे तो उन्ह मालूम हुआ कि दिल्ली म 30 माच को हडताल हुई और वहा आदोलन शुरू हो गया है। स्वामी श्रद्धानद न जामा मस्जिद म एक विराट जनसमूह के समक्ष भाषण दिया और सरकार ने सभा का बलपूवक भग करन का निश्चय कर लिया। गोलीबारी मे कुछ लोग मार गए जिसके कारण चारा ओर उत्तेजना फल गई। 6 अप्रैल को गाधीजी न जो सदा की भाति इस बार भी विट्ठलभाई जवरी के घर पर ठहर हुए थे (बबई का मणिभवन जो अब गाधी सग्रहालय के रूप मे राष्ट्र का समर्पित कर दिया गया है) एक प्याला बकरी का दूध पिया, चरखा चलाया और प्राथना की। उनके साथ उनके साथी थे जिन्होने खादी पहनन

का व्रत लिया क्योंकि खादी ब्रिटिश शोषण के माध्यम से चल रहे औद्योगीकरण के दमनचक्र से मुक्ति की ही प्रतीक नही थी वरन जैसा कि गाधीजी द्वारा खादी के प्रयोजन को समझने के बाद एनीबीसेट ने कहा था वह 'चक्र के प्रत्येक प्रवतन मे भारत के निधन एकाकी और खोय हुए लोगो का स्मरण भी कराती है।

निश्चित समय पर ये थोडे से लोग चौपाटी जा पहुचे। वहा उन्होने एक विराट सभा म भाषण दिये। वहा से व पायधोनी गए जहा सरोजिनी ने एक मस्जिद मे एक मार्मिक भाषण दिया। यह भाषण दिल्ली की जामा मस्जिद म हुए पुलिस के दमन के बाद दिया गया था अत उन्होने सत्याग्रह के माध्यम से एकता की स्थापना के लिए विभिन्न सप्रदायो के लोगा का जो आवाहन किया उसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। उन्होन सत्याग्रहियो के जुलूस का "राष्ट्रीय हीनता का प्रतीक' बताते हुए कहा कि 'सब दूर तक फैले हुए प्रदशो से भेजी गई सयुक्त प्राथनाए ईश्वर तक पहुचेंगी और उससे विनती करेंगी कि ईश्वर उन्हे जीवनघाती काले कानूनो और इन कानूनो द्वारा स्वतत्रता को दी गई चुनौतियो के खतरे से मुक्त करे।'

सरोजिनी फिर से भीड को सबोधित करने के लिए कार मे खडी हो गयी। यह बात महत्वपूण है कि गाधीजी के नए सत्याग्रह आदोलन के प्रथम चरण मे सरोजिनी उनके साथ भाषण दती थी। वह इस प्रयाग मे उनकी सर्वाधिक विश्वसनीय सगी थी। यह बात इस कारण और भी अधिक महत्वपूण मानी जा सकती है कि बाद मे जब गाधीजी ने आदोलन वापस ले लिया तब उन्होने सत्याग्रह का सचालन उन लोगो को ही सौंपा जो पर्याप्त मात्रा म विकसित और उसके उपयोग की दृष्टि से उच्चमना थे तथा यह कहा कि दोषपूण नेतत्व को सत्याग्रह क दुरुपयोग का अधिकार नही है क्योकि वह भीड को हिंसा के लिए उत्तेजित कर देता है।

दुर्भाग्यवश 6 अप्रैल का आदोलन जो इतनी गरिमा के साथ आरभ हुआ था शीघ्र ही भयकर रक्तपात म बदल गया जिसकी शुरुआत पहले पहल अमृतसर म हुई। सरोजिनी न पुलिस की सतकता और दमन के बावजूद गाधीजी की दो पुस्तकें हिंद स्वराज्य और सर्वोदय (रस्किन की पुस्तक अन्टू दिस लास्ट का गुजराती रूपातर) बेचन का काम हाथ म लकर आदोलन

को गति प्रदान की। ये पुस्तकें सरकार द्वारा जब्त कर ली गई थी। गाधीजी अमतसर जाने के लिए निकले कि उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया जिसके कारण हिंसा, दगे और यूरोपीय नागरिका की हत्या का दौर शुरू हो गया। फलत जलियावाला बाग का भीषण नरमेध हुआ। जलियावाला बाग मे आने जाने का एक ही रास्ता था और उसकी दीवारे ऊची थी। 13 अप्रैल को उसके भीतर बीस हजार लोग सभा के लिए एकत्र हुए। सभाओ पर सरकार न प्रतिबध लगा दिया था, किंतु घटना-चक्र इतनी तेजी से चल रहा था कि अधिकाश लोगा को उस प्रतिबध के बारे मे कुछ मालूम न था। कानून और व्यवस्था के भग हो जाने, अग्रेज महिलाओ पर आक्रमण और यूरोपीय नागरिका की हत्याओ ने जनरल डायर को मानसिक रूप स असतुलित कर दिया और उ हान भीड पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। जनरल डायर ने स्वय यह स्वीकार किया कि पचास सैनिका न 1605 गोलिया चलाइ और वे तब तक गोली चलाते रहे जब तक कि उनकी गोलिया समाप्त नही हो गइ। सारे देश की चेतना को इससे गहरा आघात लगा मानो प्रत्येक नागरिक के सीने को जलियावाला बाग मे चली गोलियो ने बेध डाला हो। उस समय तक राजनीतिक खेल प्राय भद्रपुरुषों के नियमो के अनुसार खेला जाता रहा था। जनरल डायर के इस काय ने देश के अत करण को उस कठोर यथाथ का पहला आघात पहुचाया जिसने देश को यह तथ्य स्वीकार करन के लिए बाध्य कर दिया कि स्वतत्रता और स्वाधीनता सौदेबाज़ी की चीजें नही है, उनके लिए प्राणा का उत्सग करना पडता है।

गाधीजी ने जब यह देखा कि शातिपूण हडताल की उनकी धारणा का यह परिणाम निकला तो पहले वह घबरा गए। शाति की स्थापना के लिए उ होने सत्याग्रह वापस ले लिया, अपन अनुयायिया द्वारा की गई हिंसा का सारा दायित्व अपन ऊपर ले लिया, अपन कार्यो को 'हिमालय सरीखी भूल" कहा तथा प्रायश्चित्त के तौर पर तीन दिन का उपवास किया। गाधीजी को लगा कि अहिंसा की आध्यात्मिक शक्ति जिसका मूल प्रयोजन हिंसा का निराकरण करना था विफल हो गई है। सत्याग्रह म सत्याग्रही से यह अपेक्षित था कि वह हिंसा पर क्रुद्ध होने के बजाय मरने के लिए तयार रहेगा, किंतु वैसा हुआ नही। इस कठोर काल म सरोजिनी गाधीजी के लिए शक्ति का स्रोत बन गयी, और 18 अप्रैल को जब गाधीजी की आस्था किसी सीमा तक

प्रकार अनुशासित करता रहूगा कि मेरे जीवन मे सहनशीलता का यह शाश्वत नियम अभिव्यक्त होता रहे और दूसरे जो भी लोग इसे सीखना चाहे उनके सामने मैं यह आदश पेश कर सकू ।'

एनी बीसेंट के होमरूल लीग आदोलन और उसके घोषित लक्ष्या के प्रति सदा निष्ठावान बने रहनेवाले जमनादास द्वारकादास ने लिखा है कि 1919 मे जब गाधीजी का सत्याग्रह देश को होमरूल की सावैधानिक रीतिया से दूर प्रत्यक्ष क्राति के माग पर ले जान लगा तब बबई म एक महत्वपूर्ण घटना हुई । सरोजिनी और सी० पी० रामास्वामी अय्यर ने जमनादास से एक एसे वक्तव्य पर हस्ताक्षर करन के लिए कहा जिसम कहा गया था कि स्वतत्रता प्राप्ति के मामले मे एनी बीसेंट का दृष्टिकोण गलत था । सरोजिनी ताजमहल होटल मे ठहरी थी । गाधीजी उनस मिलने वहा पहुचे और बोले कि जमनादास को उस वक्त य पर हस्ताक्षर करने के बजाय अपना दाहिना हाथ काट डालना चाहिए । यह बात बहुत महत्वपूण है कि गाधीजी के लिए अपने अनुयायिया के प्रभाव अथवा अपन राजनीतिक लक्ष्यो की अपक्षा निर्धारित आदर्शों के प्रति आस्था का महत्व अधिक था, और इससे यह सकत भी मिलता है कि उनकी अतर्वाणी" उस समय तक अपने-आपको सही होने के बारे मे पूरी तरह आश्वस्त नही थी । गाधीजी ने प्रथम सत्याग्रह आदोलन को "हिमालय सरीखी भूल माना था । यह सभव है कि इस मूल्याकन के पीछे एनी बीसेंट की इस आस्था का प्रभाव रहा हो कि उन्होने जिन सावैधानिक रीतियो का आश्रय लिया था व सही हैं । जहा तक इतिहास का सबध है 1919 राष्ट्र की नियति म अगली काल-विभाजक रेखा का प्रतीक है । एनी बीसेंट पृष्ठभूमि म चली गयी तथा गाधीजी भारतीय क्राति के सवसम्मान्य नेता के रूप म उभर कर सामन आ गये ।

जुलाई 1919 म सरोजिनी अखिल भारतीय होमरूल लीग की सदस्या के रूप म इग्लड गइ । उन्हे ऐसा लगा कि यदि प्रभावशाली रीति म प्रचार न किया गया तो माटेग्यू चेम्सफोर्ड प्रस्ताव जो उस समय विचाराधीन थे महिला मताधिकार क प्रश्न की पूणतया उपेक्षा ही कर देंगे । इग्लड पहुचकर उन्होंने समस्त विभिन्न भारतीय राजनीतिक सगठनो को एकजुट करके भारतीय महिलाओ के लिए मताधिकार की माग करने के लिए एक सयुक्त शिष्टमडल

पुनर्स्थापित हो गई तो उन्होंने बंबई में स्वयंसेवकों की एक बैठक बुलाई तथा विशेष रूप से विश्वसनीय कार्यकर्ताओं को अहिंसक असहयोग का कार्य चालू रखने के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रह का दायित्व सौंपा।

1907 में ही एनी बीसेंट ने शायद भावी को पढ़ लिया था और आग्रह किया था कि स्वराज्य सांविधानिक रीतियों से ही प्राप्त किया जाना चाहिए। वह स्वराज्य प्राप्ति के लिए एक साधन के रूप में सत्याग्रह के विरुद्ध तो न थीं किंतु उन्हें यह विश्वास था कि अशिक्षित लोगों की भीड़ को उत्तेजित करने से भीड़ की हिंसा जन्म लेगी।

गांधीजी द्वारा 4 मई 1918 को वायसराय के नाम लिखे गये पत्र के अलावा शायद दूसरा कोई भी अभिलेख सरोजिनी के मस्तिष्क पर उनके सिद्धांतों के प्रभाव को इतनी भली प्रकार व्यक्त नहीं कर पाता। उस पत्र में गांधीजी ने लिखा था

जनता को इस बात पर विश्वास करने का अधिकार है कि आपने अपने भाषण में जिन संभावित सुधारों का परोक्ष रीति से उल्लेख किया है उनमें कांग्रेस-लीग योजना के प्रमुख सामान्य सिद्धांतों का समावेश किया जायेगा। यहां मैं एक बात का उल्लेख करना चाहता हूं। आपने हमसे अपील की है कि हम आपसी मतभेदों को भुलायें। यदि इस अपील का अर्थ यह है कि हम अधिकारियों द्वारा किये जाने वाले दमन और गलत कार्यों को सहन करते जाएं तब तो मैं इस अपील को स्वीकार करने में असमर्थ हूं। मैं संगठित दमन का प्रतिरोध समूची शक्ति लगाकर करूंगा। चंपारन में एक युग पुराने दमन का प्रतिरोध करके मैंने ब्रिटिश न्याय की चरम प्रभुता का प्रदर्शन किया है। कैटरा में जो जनता सरकार को कोस रही थी वही अब यह महसूस करती है कि शक्ति उसके अपने भीतर है सरकार में नहीं, लेकिन यह तभी हो सका है जब वह उस सत्य के लिए कष्ट सहने को तैयार हुई जिसका प्रतिनिधित्व वह स्वयं करती है।

यदि मैं पाशविक शक्ति के स्थान पर आध्यात्मिक शक्ति को—जो प्रेमशक्ति का ही दूसरा नाम है—लोकप्रिय बना सका तो मुझे विश्वास है कि मैं आपके समक्ष एक ऐसा भारत पेश कर सकूंगा जो आत्म विनाश पर उतारू समूचे संसार का सामना कर सकेगा। अतः मैं सदा सर्वदा अपने-आपको इस

प्रकार अनुशासित करता रहूगा कि मरे जीवन म सहनशीलता का यह शाश्वत नियम अभिव्यक्त होता रहे और दूसरे जा भी लोग इसे सीखना चाहे उनके सामन मैं यह आदश पश कर सकू ।'

एनी बीसेंट के होमरूल लीग आदोलन और उसके घोषित लक्ष्या क प्रति सदा निष्ठावान बने रहनवाले जमनादास द्वारकादास ने लिखा है कि 1919 म जब गाधीजी का सत्याग्रह देश का होमरूल की सावैधानिक रीतिया से दूर प्रत्यक्ष क्राति के माग पर ल जान लगा तब बबई म एक महत्वपूण घटना हुई। सरोजिनी और सी० पी० रामास्वामी अय्यर ने जमनादास से एक एसे वक्तव्य पर हस्ताक्षर करन के लिए कहा जिसम कहा गया था कि स्वतत्रता प्राप्ति के मामले म एनी बीसेंट का दृष्टिकोण गलत था। सरोजिनी ताजमहल हाटल म ठहरी थी। गाधीजी उनम मिलन वहा पहुच और बाले कि जमनादास को उस वक्तव्य पर हस्ताक्षर करन के बजाय अपना दाहिना हाथ काट डालना चाहिए। यह बात बहुत महत्वपूण है कि गाधीजी क लिए अपने अनुयायिया के प्रभाव अथवा अपन राजनीतिक लक्ष्यो की अपक्षा निर्धारित आदर्शों के प्रति आस्था का महत्व अधिक था और इसस यह सकत भी मिलता है कि उनकी अतर्वाणी' उस समय तक अपने-आपको सही हान क बारे मे पूरी तरह आश्वस्त नही थी। गाधीजी न प्रथम सत्याग्रह आदोलन को 'हिमालय सरीखी भूल' माना था। यह सभव है कि इस मूल्याकन के पीछे एनी बीसेंट की इस आस्था का प्रभाव रहा हो कि उन्होंने जिन सावैधानिक रीतिया का आश्रय लिया था व सही हैं। जहा तक इतिहास का सबध है 1919 राष्ट्र की नियति म अगली बार-विभाजक रखा का प्रतीक है। एनी बीसेंट पष्ठभूमि म चली गयी तथा गाधीजी भारतीय क्राति क सवसम्मान्य नता के रूप म उभर कर सामन आ गय।

जुलाई 1919 म सरोजिनी अखिल भारतीय होमरूल लीग की सदस्या क रूप म इग्लड गइ। उन्हे एसा लगा कि यदि प्रभावशाली रीति म प्रचार न किया गया ता माटग्यू चम्सफाड प्रस्ताव जो उस समय विचाराधीन थ महिला मताधिकार क प्रश्न की पूणतया उपक्षा ही कर देंगे। इग्लड पहुचकर उन्होंने समस्त विभिन्न भारतीय राजनीतिक सगठनो को एकजुट करके भारतीय महिलाओ के लिए मताधिकार की माग करने के लिए एक सयुक्त शिष्टमडल

रही हू, लेकिन अग्रेज पुरुषो और महिलाओ । आज मैं अपने देश मे नरमेध करने वालो के रक्तरजित अपराधो के कारण आप सबको न्यायालय के कटघरे मे खडा करके आपसे बात कर रही हू । मैं उन अकल्पनीय अत्याचारो के ब्यौरे मे नही जाना चाहती जो मेरे देश पर किये गए हैं और जो इतने अमानवीय हैं कि सहसा विश्वास नही होता कि ऐसा भी किया जा सकता है । मेरे मित्रो—श्री पटेल और श्री हार्नमन ने उस भयकर, अत्यत भयकर तिगुने भयकर जुल्म की प्रकृति मोटे तौर पर और सार रूप मे आपके सामने रखी है जो ब्रिटिश न्याय के नाम पर ढाया गया है । किंतु मैं आपके सामने एक महिला के रूप मे उस अन्याय के बारे मे चर्चा करना चाहती हू जो मेरी बहिनो के प्रति किया गया है । अग्रेज पुरुषो ! आप जो अपनी वीरता पर गर्व करते हैं और अपनी स्त्रियो की प्रतिष्ठा और उनके सतीत्व को शाही खजाने से भी ज्यादा बेशकीमती समझते हैं क्या आप शात बैठे रहेगे और घूघट मे लिपटी पजाब की कुलवधुओ की प्रतिष्ठा उनके अपमान तथा उनपर ढाये गये जुल्मो का बदला लेने के लिए कुछ नही करेगे ?

पजाब मे अग्रजो द्वारा किए गए अत्याचारो के इस रहस्योदघाटन से ब्रिटेन के उदारवादी लोकमत को गहरा आघात पहुचा । वहा उसके अत्याचार विस्तारपूर्वक प्रकाशित किए गए लोकसभा मे चर्चाए हुई तथा बात यहा तक बढी कि भारतमत्री श्री माटेग्यू ने श्रीमती नायडू के आरोपो को लिखित चुनौती दी । लेकिन जिन तथ्यो का उदघाटन उन्होने किया था उनसे कोई इकार नही कर सकता था ।

हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने कई वर्ष बाद अपनी बहिन के बारे मे एक लेख मे लिखा था

'सरोजिनी को बुलबुल ए हिंद (भारत कोकिला) कहा जाता था । मुझे पक्का विश्वास है कि यह पदवी उन्हे उनकी कविता के कारण नही वरन उनकी उस असाधारण वक्तता के कारण दी गई थी जो उनके भीतर से सगीत की धारा सी फूटकर बहती थी स्वर्णमडित रजत धारा सी जो विशुद्ध प्रेरणा के शिखरो से प्रपात सी झरती थी । सरोजिनी के भाषण राष्ट्रीय जीवन पर जादू और प्रभाव दोनो डालते थे और यद्यपि वे स्वभाव से तथा काव्य अथवा

भाषण दोनो विधाओ म अभिव्यक्ति के मामल म गीतकार थी तथापि वे हमेशा ही गयात्मकता के कोमल बिंदु पर नही थमी रहती थी। एसे भी अवसर आए जब उनक पछी का स्वर दावानल के चीत्कार म रूपातरित हो जाता था और उनकी मतरगी वक्तता उस तीखी तलवार का रूप ले लती थी जिसम निश्चय ही घातक प्रहार की क्षमता होती थी। 1920 मे लज्जाजनक अमतसर नरसहार के पश्चात मैंने सरोजिनी को खचाखच भरे लदन के अल्बट सभागार (लदन म) मे बोलते हुए सुना था। वह घणापूवक बोली, वह प्रतिशोध की भावना स अभिभूत होकर बोली वह पूणतया प्रामाणिकता से बोली। उस अपराहत समूचे श्रोतामडल पर यह बात स्पष्ट रूप स प्रकट हो गई कि वह पूण तथा प्रामाणिक है वह बातो को घुमाफिराकर नही कह रही थी, और वह किसी तरह क समझौते के लिए भी तैयार न थी। उनके भीतर और बाहर भारत बिजली की तरह कौध रहा था। वह बिजली उन लोगो को अधा किए डाल रही थी जो सरोजिनी क देशवासियो का नरमेध करने वालो के अपने थे। भारत उनके माध्यम से मुखर हो उठा था भारत, टूटा फूटा भारत जिसकी काया से रक्त रिस रहा था और जिसका भारी अपमान हुआ था। और जिस समय दीर्घा म वह झुड उठकर खडा हुआ जिसे विशेष तौर पर सभा म व्यवधान डालने के लिए वहा तैनात किया गया था और उसने सरोजिनी पर व्यग्य करने की कोशिश की तो वह चीख उठी "जुबान बद करो', और परिणाम यह हुआ कि सभागार म पूण शाति छा गई बबर मुह ऐस खामोश हो गए मानो किसी अपराजेय वीरागना के हाथ के वज्र ने उन्ह मूक कर दिया हो।'

15 जुलाई, 1920 को सरोजिनी न गाधीजी को लिखा

'मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब है, तथापि पजाब और खिलाफत के जुडवा प्रश्न पर मेरी सारी शक्ति और भक्ति लगी हुई है। किंतु उस प्रजाति से न्याय की अपेक्षा रखना व्यथ है जो सत्ता के अहकार से अधी और मदहोश हो गई है, जो जाति, धम और रग के आधार पर कटु भेदभाव से ग्रस्त है तथा जो भारतीय परिस्थितियो, मतो भावनाओ और आकाक्षाओ के विषय मे इतने घोर अज्ञान से पीडित है। गत सप्ताह लोकसभा मे पजाब को लेकर होने वाली चर्चा से भारत के नए दृष्टिकोण

क प्रति ब्रिटेन की ओर स याय और सम्भावना क बारे म मेरी आशा और आस्था क अतिम अवशेष भी नि शेष हो गए हैं। सदन की चर्चा सदजनक और वस्तुत लाभदाई थी। उस चर्चा क समय मित्रा ने अपन अपान का परिचय दिया और शत्रुआ ने अपन दभ का तथा दोना का सयाग भयकर और निराशाजनक सिद्ध हुआ।' अधिक व्यक्तिगत विषया की चर्चा करत हुए उन्हान आग लिखा

विशेषज्ञ ऐसा मानते है कि मेरा हृदरोग बहुत बढ़ गया है और खतरनाक स्थिति म पहुच गया है लेकिन मैं तो तब तक विश्राम नही कर सकती जब तक कि बलिदानी भारत की त्रासदी पर विश्व क हृदय म पश्चाताप का मथन उत्पन्न न कर दू।

गाधीजी ने 'यग इडिया म लिखा मेरे विचार स श्रीमती सरोजिनी नायडू की जितनी भी प्रशसा की जाए उस अधिक नही माना जा सकता। उनम शालीनता का अद्भुत आकर्षण है और वे अपने कर्तव्या के पालन म अथक रूप स जुटी रहती हैं। "मैंने उनकी तुलना मीराबाई स की है। उनम ऐसी मानसिक शक्ति और मातृभूमि क प्रति ऐसा प्रेम है कि जब कभी अवसर की माग होती है व उस पूरा करती हैं। ईश्वर ही जाने कि उन्ह यह शक्ति कहा स मिलती है।'

सरोजिनी स्वीडन और स्विटजरलैंड का दौरा करके एव फ्रास म भव्य स्वागत और सम्मान पाकर 1921 म इग्लैंड स भारत लौटी। उनकी अनुपस्थिति म भारत म बहुत कुछ हो चुका था। नए राजनीतिक सुधारो ने काग्रेस की पक्तिया म फूट बो दी थी। गाधीजी अपने इस मत पर डटे थे कि सुधार बहुत सीमित हैं और उन्ह स्वीकार नही किया जा सकता और उन्होने विधानसभाओ न्यायालयो, विदेशी वस्त्र तथा सरकारी विद्यालयो के बहिष्कार पर आधारित असहयोग आदोलन का एक प्रस्ताव तयार किया था। बगाल के सर्वमान्य नेता चित्तरजन दास के नेतृत्व म काग्रेस का एक शक्तिशाली वर्ग इस प्रस्ताव का विरोध कर रहा था। सितबर 1920 म कलकत्ता काग्रेस अधिवेशन म दोनो पक्षो क बीच मुठभेड हुई और गाधीजी की नीति बहुत थोडे से बहुमत से स्वीकार कर ली गई। जिस समय श्रीमती नायडू भारत लौटी तब तक आदोलन व्यापक रूप ले चुका था और उसने उन्ह उद्बोधन

करने के अनेक अवसर प्रदान किए। उन्होने युवको के एक समूह को सबोधित करते हुए कहा कि, 'अधिकारियो के साथ सहयोग मत करो भीतर ही रुके रहो, इसके सिवाय कुछ मत करो।" तदुपरात जब्त साहित्य की ओर सकेत करते हुए उन्होने कहा 'यदि तुम इन पुस्तको को खरीदो या बचोगे तो तुम्हे गिरफ्तार किया जा सकता है। इसका परिणाम यह हुआ कि श्रोताओ ने तत्काल इस चुनौती को स्वीकार कर लिया और उनसे पुस्तके खरीद ली।

सरोजिनी अग्रेजो की ओर स इस सीमा तक निराश हो चुकी थी कि जब उनके श्रद्धेय मित्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सर की उपाधि लौटाई तो उन्होने भी कैसर ए हिंद का वह सोने का तमगा लौटा दिया जो सरकार ने उन्हे 1908 मे हैदराबाद नगर के जीवन को अस्त व्यस्त करने वाली बाढ के दौरान सेवाकार्य के लिए प्रदान किया था।

4 अक्तूबर 1921 को गाधीजी, सरोजिनी तथा अन्य नेताओ ने राष्ट्र के नाम एक घोषणापत्र जारी किया जिसमे उन्होने असहयोग के प्रयोजन और अनुसरण के लिए कार्यक्रम की ओर सकेत किया था। यह भारत म गाधीवादी युग का वास्तविक सूत्रपात था। यह घोषणापत्र भारत की जनता ने इतने महान उत्साह के साथ अपनाया कि जब 17 नवबर को प्रिंस ऑव वेल्स (ब्रिटेन के महाराजकुमार) भारत आए तो उपद्रव हो गए। उस समय अनेक प्रेक्षको ने लार्ड कनिंग के ये दूरदर्शितापूर्ण शब्द याद किए 'नीले और शान भारतीय गगन के नीचे मनुष्य के अगूठे जितना बादल क्षितिज पर प्रकट हो सकता है, किंतु वह किसी भी समय ऐसे आयाम ग्रहण कर सकता है जिनकी किसी को कल्पना भी न रही हो, और कोई भी यह नही कह सकता कि उसका कहा विस्फोट हो जाएगा।" इस बार अपूर्व हिंसा और रक्तपात हुआ। भीडो को शात करने के लिए सरोजिनी तत्काल उपद्रव स्थलो पर जा पहुची, और गाधीजी को उस हिंसा से इतना गहरा आघात पहुचा कि उन्होने कहा कि, "स्वराज्य की दुर्गंध मेरे नथुनो मे भरी जा रही है और उन्होने प्रायश्चित्त के लिए पाच दिन का उपवास शुरू किया। किंतु दगे तत्काल नही रुके। सरोजिनी ने उन दिनो जिस प्रकार कार्य किया उसका वर्णन उनके एक साथी ने इन शब्दो मे किया है

'श्रीमती सरोजिनी नायडू के साहस के बारे मे मैं क्या कहू? वह

बार बार विभिन्न उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में उन्द्रवियों के बीच जाती और हर बार वहाँ से लौटकर उपयुक्त हावभाव तथा मुखमुद्राओं द्वारा अपने निजी कार्यों का विवरण गांधीजी को सुनाती। दूसरे लोग उन अवसरों पर जो कायरता दिखाते उसका भी नाटकीय शब्दचित्र खींचने में वह कभी नहीं चूकती थी। इस प्रकार उस सब व्यथा और चिंता के बीच भी उन सबमें अकेली वही ऐसी थी जो महात्माजी के ओठों पर स्मितरेखा खींच देती थी।"

उसके बाद से बंबई ही सरोजिनी का असली घर बन गया। वह गांधीजी के आन्दोलन में प्रधानतः उनके असामान्य व्यक्तित्व और चरित्र से प्रभावित होकर आई थी किंतु उन्होंने उनके विचारों को बिना सोचे समझे यों ही स्वीकार नहीं कर लिया। वह गांधीजी से कहा करती थी 'मैं बहुत मूर्ख हूँ कि आप जैसे प्रतिकूल वृद्ध आदमी का अनुसरण करती हूँ।" किंतु उन्होंने गांधीजी का अनुसरण जीवनभर पूर्ण हार्दिक निष्ठा के साथ किया।

गांधीजी के इस आवाहन की बहुत आलोचना हुई कि विद्यार्थी सरकारी विद्यालय छोड़ दें। यह स्वाभाविक ही था, किंतु सरोजिनी ने उनकी नीति के औचित्य में शंका प्रकट नहीं की। उन्होंने पूर्ण अलंकार और विवेकयुक्त भाषा में उनके आवाहन का अनुमोदन किया। दिसंबर 1921 में उन्होंने अहमदाबाद में एक विद्यार्थी सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि 1914 के महायुद्ध में सहसा ब्रिटिश विद्यार्थी विश्वविद्यालय छोड़कर अपने देश के लिए युद्ध करने गए। यह सचमुच उत्सर्ग है कि वे अपने आपको उस ज्ञान से वंचित कर लेते हैं जिसकी आवश्यकता उन्हें भविष्य में पड़ेगी किंतु स्वतंत्रता है ही इतने बहुमूल्य उत्सर्ग की भी पात्र है' उन्होंने उनका उद्बोधन करते हुए कहा, 'तुम नए सैनिक हो आओ, मेरे साथ स्वतंत्रता के मंदिर तक कूच में शामिल हो जाओ। मैं झंडा अपने हाथों में उठाए हूँ। साथियो! मेरे साथ तब तक कदम से कदम मिलाकर बढ़ते रहो जब तक कि हम लक्ष्य तक न पहुँच जाएँ।'

इस प्रकार के भावनापूर्ण आवाहन की कौन उपेक्षा कर सकता था वह लोगों के अस्तित्व के प्रत्येक तंतु को स्पर्श कर लेता था। सहस्रों युवकों ने अपने आपको गिरफ्तारी के लिए पेश कर दिया और वे जेल गए। इस काल में नेहरू परिवार के लोगों सहित 39,000 लोग जेलों में गए। गांधीजी ने

समस्त सरकारी कानूनो और सविधानो के प्रति सविनय अवज्ञा का आवाहन किया। विद्यार्थियो स कहा गया कि आप शिक्षा और कॅरियर का बलिदान कर दे। बाद म सरदार वल्लभभाई पटेल न चुनौती को स्वीकार करके बारदोली मे "करवदी आदोलन चलाया। उधर सरोजिनी और सी० एफ० ए ड्र यूज ने मद्रास प्रेसीडेसी खिलाफत समिति द्वारा आयोजित एक जनसभा म भाषण दिया।

1922 मे अखिल भारतीय काग्रेस महासमिति की 37वी बठक मे गया म सरोजिनी ने यह प्रस्ताव पेश किया

"कमाल पाशा और तुर्की राष्ट्र को उनकी हाल की सफलताओ पर काग्रेस बधाई देती है तथा भारत की जनता के इस सकल्प की घोषणा करती है कि जब तक ब्रिटिश सरकार तुर्की राष्ट्र को मुक्त और स्वतन्त्र स्तर प्रदान करने तथा अबाध राष्ट्रीय जीवन एव हर प्रकार के गैर मुस्लिम नियत्रण म मुक्त इस्लाम के प्रभावशाली सरक्षत्व की अनिवाय दशाओ के निर्माण के लिए अपनी शक्तिभर प्रयास नहो करती तथा उन बाधाओ का निवारण नही करती जो उसने इस काय म स्वय डाली है तब तक हम सघष करत रहगे।"

प्रस्ताव पश करने क बाद उन्होने अपने भाषण म कहा कि 'इस विराट श्रोता मडली मे मैं अपने सहधर्मी हिंदुओ अपन अकाली भाइयो तथा इसी तरह आयसमाज और सनातन धम के अपने बधुओ स यह कहना चाहती हू कि हम भारत के हिंदूजन इस्लाम की प्रतिष्ठा बनाए रखन के लिए दोहर मूल म बधे हैं क्योकि हमार देश म हमारे मुसलमान भाई अल्पसख्या म हैं और क्योकि वीरता और प्रेम दोनो की यह माग है कि प्रत्यक हिंदू नर और नारी यह प्रतिज्ञा ले कि जब तक मुस्तफा कमाल पाशा की तलवार ऊची न हो जाए और जब तक ईसाई राष्ट्रो की चुनौती उसक सामन म समाप्त न हो जाए तब तक वह इस्लाम की स्वतत्रता क लक्ष्य के प्रति समर्पित रहगा। मैं अपने बीच उपस्थित मुसलमानो को चाहे वे शिया हो या सुन्नी अथवा वे लोग जिनके लिए खलीफा ही सवस्व है, यह आश्वासन दती हू कि जब तक इस्लाम की स्वतत्रता के हेतु मरन का एक भी हिंदू जीवित है तब तक इस्लाम की मत्यु नही होगी, और यदि इस्लाम की स्वतत्रता के लिए रक्त

की नदी का बहना ही आवश्यक हुआ तो उसम हिंदुआ और मुसलमाना के रक्त का समान रूप स सगम होगा।

1922 के आरभ म तो य परिस्थितिया थी किंतु फरवरी म आदोलन फिर काबू स बाहर हो गया। चौरीचौरा म एक भीषण दुघटना हुई और गाधी जी न निराश होकर एक बार पुन आदोलन स्थगित कर दिया। उन्हान भारत के लोगा से कहा कि अब आप आदोलन के बजाय चरखा चलाय नशीली चीजा का परित्याग कर हिंदू मुस्लिम एकता के लिए काय करे और अपनी शक्ति सामाजिक सुधार एव शिक्षा क प्रसार पर केद्रित करें। फरवरी 1922 में गाधीजी क साथी काग्रसजना न आदोलन वापस लेन पर गाधी जी की कडी आलोचना की और सरकार न इस अवसर का लाभ उठाकर उन्ह गिरफ्तार कर लिया। माच म अपनी गिरफ्तारी स पहले दिन उन्हान अपन पत्र यग इडिया म लिखा था यदि मुझे गिरफ्तार कर लिया गया तो सरकार द्वारा बहाई गई रक्त की नदिया भी मुझे डरा नही पाएगी किंतु यदि जनता ने मरे लिए अथवा मरे नाम पर सरकार का एक गाली भी दी तो मुझ गहरी व्यथा होगी। यद्यपि उनकी गिरफ्तारी यग इडिया' म उनक राजद्रोहात्मक लेखो क नाम पर हुई थी तथापि उन्होने जो कुछ लिखा था उसका ही स्वर अहमदाबाद म 18 माच, 1922 को उनके महान मुकदमे की सुनवाई क समय व्याप्त रहा। जिस समय सैशन्स न्यायाधीश श्री न्यायमूर्ति ब्रूमफील्ड के न्यायालय म मुकदम की कायवाही आरम्भ हुई उस समय श्रीमती नायडू न्यायालय म मौजूद थी। उन्ह वहा देखकर गाधी जी ने उनस कहा, ' अच्छा तो तुम इसलिए मरे पास आकर बठ गयी जिसस कि यदि मेरा मनोबल टूट जाए तो तुम मुझ सहारा दे सको। यह न्यायालय की अपेक्षा पारिवारिक सम्मिलन प्रतीत होता है। श्रीमती नायडू वहा अभिनीत नाटक स बहुत आदोलित थी और दा बाबे क्रानिकल म उन्होने अपनी भावनाओ को इस प्रकार व्यक्त किया

कानून की दष्टि म व एक बदी और अपराधी थे तथापि जिस समय महात्मा गाधी अपनी दुबली पतली गभीर अपराजेय काया लिए मोटी घुटनो तक की धोती पहने अपने निष्ठावान शिष्यो और साथी बदी शकरलाल बकर के साथ न्यायालय म घुस तो समूचा न्यायालय

उनके प्रति अनायास सम्मान प्रकट करने के लिए खडा हो गया। जिस समय न्यायाधीश अपनी कुरसी पर बठे तो वहा उपस्थित भीड आशका, स्वाभिमान और आशा की मिश्रित भावना स रोमाचित हो उठी। एक प्रशसनीय न्यायाधीश जो अपनी साहसपूण और दढ कतव्य भावना अपने अचूक सौजन्य, एक अनुपम अवसर की अपनी प्रतीति और एक अनूठे व्यक्तित्व के प्रति अपने उत्तम समादरपूण शब्दो के लिए समान रूप से हमारी प्रशसा के पात्र है। वह विलक्षण मुकदमा आगे बढा और जसे ही मैंने अपने प्रिय गुरु के होठो से ममीहाई उ मेष स उद्दीप्त अमर शब्द सुने त्योही मेरे विचार शताब्दियो पार एक भिन्न देश और एक भिन्न काल तक दौड गए। जब ठीक ऐसा ही नाटक अभिनीत हुआ था तथा एक अन्य दवी और भद्र गुरु को समान साहसपूवक समान सदश फलाने के कारण श्रास पर लटकाया गया था। मैंने उस समय यह अनुभव किया कि नाद के पालने म पले नजारथ के निम्नवशी इसा ही इतिहास म एकमात्र ऐसे महापुरुष हुए हैं जिनकी तुलना भारतीय स्वतत्रता के इस अपराजेय मसीहा स की जा सकती है जो निस्सीम करुणा के साथ मानवता को प्यार करता था और उनके ही सुन्दर शब्दो म कहा जाए तो 'गरीब बनकर ही गरीबो तक पहुचता था।'

सरोजिनी ने अग्रज न्यायाधीश की जो सराहना की थी वह उसके पात्र थे। मुकदमे की निष्पक्ष कायवाही के पश्चात न्यायमूर्ति ब्रूमफील्ड ने एक गरिमामय निणय के द्वारा गाधीजी को छह वष का कठोर कारावास का दड दिया। सरोजिनी से विदा लेते समय गाधीजी ने कहा, "मैं भारत का भाग्य तुम्हारे हाथो मे सौंपता हू।"

सरोजिनी का समूचा चिंतन और कम गाधीजी के चारो ओर केंद्रित हो गया था उनकी गिरफ्तारी स सरोजिनी के जीवन मे एक प्रकार की पराकाष्ठा उत्पन्न हो गई। लेकिन उसी समय मलाबार म उपद्रव खडा हो गया और उसने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। एक छोटा-सा मुस्लिम सप्रदाय—मोपला अनेक कारणो से उत्तेजित हो गया और उसने अपने हिंदू पडोसियो के विरुद्ध हिंसात्मक काय किए। उससे एक गभीर परिस्थिति उत्पन्न हो गई और सरकारी अधिकारियो ने उस उपद्रव का घोर दमनपूवक

दबा दिया। सरोजिनी इस स्थिति से विचलित हो गयी और उन्होंने सैनिक कार्यवाही का विरोध करने के लिए कालीकट की एक सभा में अधिकारियों की निंदा की। उन्होंने मलाबार पर टूटे भीषण प्रकोप, आतंक और दुर्भाग्य को अपनी आंखों से देखा था। वह उन्माद, प्रतिशोध और सैनिक शासन के उन निम्नस्तरीय अधिकारियों द्वारा की गई अकूत बर्बरता की साक्षी थीं जिन्होंने न तो स्त्रियों के सतीत्व की चिंता की न बच्चों के भोलेपन की। मलाबार में उन्होंने एक युवती के शरीर पर किरच के नौ हरे घाव अपनी आंखों से देखे थे तथा एक छोटे से बच्चे का चित्र देखा था जिसके साथ सैनिकों ने बर्बर व्यवहार किया था, उसकी बांह काट डाली गई थी और गर्दन पर खरोंचें थीं। और इस विभीषिका से भागकर मापला केंद्र में जो शरणार्थी एकत्र हुए थे उनमें ऐसी अनेक महिलाएं थीं जो अपने ऊपर किए गए अत्याचारों की लज्जा और उसके परिणामों का सामना करने में असमर्थ थीं।

सरोजिनी ने व्यंग्यपूर्वक उस 'पितृवत सरकार" की कठोर आलोचना की जिसने कानून और सुव्यवस्था के नाम पर मापला लोगों पर ये बर्बर अत्याचार किए थे और सरकार के विरुद्ध क्रोध के आवेश में वह यह कहना नहीं भूलीं कि कानून और व्यवस्था को उस नैतिक बल के द्वारा लागू नहीं किया जाता जिसका उपदेश गांधीजी देते हैं वरन् 'उस पाशविक बल के द्वारा लागू किया जाता है जिसके पास अपने द्वारा उत्पन्न उत्पीड़न के प्रति लेशमात्र भी करुणा या संवेदना नहीं है।"

मद्रास सरकार सरोजिनी द्वारा उदघाटित तथ्यों से बहुत अप्रसन्न हुई और उसने एक आदेश जारी किया कि यदि सरोजिनी ने क्षमा न मांगी तो उन्हें सजा दी जाएगी लेकिन केरल कांग्रेस कमेटी की सहायता से उन्होंने अपने आरोपों के पक्ष में पूरी तरह प्रमाण प्रस्तुत कर दिए और अपनी ओर से सरकार को चुनौती दी कि या तो वह अपना आदेश वापस ले ले अन्यथा धमकी के अनुसार कार्य करे। इस पर गांधीजी ने एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की

'मेरे विचार से यह श्रीमती सरोजिनी नायडू का सौभाग्य है कि उन्हें सजा की धमकी दी गई है क्योंकि इससे उन्हें यह अवसर मिलेगा

कि सरकार उनके वक्तव्य का खडन करे। आशा है कि यह बात स्मरण रखी जाएगी कि सैनिक शासन के दौरान सरकारी कुकृत्यो के आरोपो का खडन श्री माटेग्यू ने किया था। उस समय भी सरोजिनी न उस चुनौती को स्वीकार किया था और आरोपो को प्रमाणित करन के लिए काग्रेस जाच समिति के प्रतिवदन से अध्याय के अध्याय पेश किए गए थे। यदि प्रमाण गलत रहे हो तो यह तो काग्रेस के जाच-आयुक्तो का दोष माना जाएगा जिन्होने इस मामले म उनका गलत मार्गदर्शन किया। उन्होने यह प्रमाणित कर दिया कि भारत कार्यालय उस प्रतिवेदन से पूरी तरह परिचित तक न था। इस अवसर पर मद्रास सरकार न वस्तुत सजा की धमकी दी है। मेरी इच्छा है कि वह अपने प्रयास को परा करे। तब भारत को अपनी एक असुरक्षित कवयित्री का वक्तव्य सुनने का अवसर मिलेगा—परिणाम यह होगा कि न्यायालयो म असहयोग के सिद्धातो को सुनने के लिए इतनी भीड उमड पडेगी कि या तो मुकदमा खुले मदान म चलाया जाएगा (यह कोई बुरी बात नही है), या फिर जेल की चहारदीवारी के भीतर। सारे भारत म एक भी सभागार इतना बडा नही है जिसमे वह भीड समा सके जो ब्रिटिश पिजडे म बद बुलबुल का दशन करने को आतुर हो जाएगी।

'मुझे इस बात की खुशी है कि उन्होने आरोपो का दोहराने मे देर नही की। बहादुर केशव मेनन और दूसरे लोग उनके वक्तव्य का समथन करन के लिए आगे आ गए। श्री प्रकाशम ने उस लडके की तस्वीर प्रकाशित की है जिसकी बाह ववरतापूवक काट डाली गई थी। सरोजिनी ने सरकार स कहा है कि वह उन पर मुकदमा चलाये अथवा बिना शत क्षमा मागे, अथवा वैसा करने स पहले आरोपो की जाच के लिए गैर सरकारी लोगो का एक निष्पक्ष जाच आयोग नियुक्त करे। मुझे इस बात पर आश्चय है कि लाड विलिंगडन ने श्रीमती नायडू को निजी तौर पर यह तक नही लिखा कि क्या आपने ये आरोप आवेश के क्षणो म लगा दिये हैं और यदि ऐसा नही है तो क्या आप उन्ह सिद्ध करन म सरकार की सहायता कर सकेंगी। क्या अग्रेज भद्र पुरुष क्रोध के आवेश म वीरता की अपनी परपराओ को भूल गए है? क्या उन्ह भारत की योग्यतम बेटियो म से एक का केवल इसलिए अपमान करना

चाहिए कि उसने एक सार्वजनिक हित का प्रश्न उठाने का साहस दिखाया है ? मुझे आशा है कि लार्ड विलिंगडन सम्मानपूर्वक और खूबसूरत तरीके से अब भी अपनी भूल सुधार लेंगे। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि इस प्रकार के गरिमामय कार्य से वे सरकार की उसकी खोई हुई प्रतिष्ठा का एक अंश पुनः प्राप्त करा सकेंगे। इससे संघर्ष पर तो कोई अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव पड़ने वाला नहीं है लेकिन सरकार का एक गरिमामय कदम तपी हुई धरती पर वर्षा की एक बूंद की तरह काम कर सकता है।'

सरोजिनी को विश्राम की बहुत अधिक आवश्यकता थी अतः उन्होंने राजनीतिक गतिविधि के विराम का लाभ उठाने का निश्चय किया और वह श्रीलंका चली गई किंतु वहां भी उनको विश्राम नहीं मिल सका और कोलंबो गाल जाफना तथा अन्य केंद्रों से भाषणों की मांग को अस्वीकार करना उनके लिए असंभव हो गया।

इधर भारत में गांधीजी का संयमकारी हाथ अनुपस्थित होने के कारण कांग्रेस संगठन में सुधारों को क्रियान्वित करने के प्रश्न पर मतभेदों का दो गुटों में ध्रुवीकरण हो गया। गांधी जी के अनुयायियों ने सुधारों की पूर्ण अस्वीकृति के पक्ष का समर्थन किया और कहा कि हम असहयोग आंदोलन फिर से शुरू करना चाहिए। इसके विरोधी लोगों का कहना था कि हम विधान सभाओं में जाना चाहिए जिससे सुधारों का राजनीतिक लाभ उठाया जा सके। सरोजिनी विशुद्ध गांधीवादी असहयोग के पक्ष में और परिषदों में जाने के विरुद्ध थीं। उनका विचार था कि परिषदों में किसी भी प्रकार से प्रवेश करना सरकार की सफलता और हमारी विफलता का प्रमाण होगा। नवंबर में अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति की कलकत्ता की सभा में उन्होंने परिषद प्रवेश संबंधी प्रस्ताव का विरोध किया और बलपूर्वक कहा कि मैं उस विभक्त बहुमत में शामिल होने के बजाय जो अपनी बौद्धिक और नैतिक आस्थाओं के बारे में ही आश्वस्त नहीं है उस अपराजेय अल्पमत में रह जाना पसंद नहीं करूंगी जो इतिहास का निर्माण करता है। उन्होंने कहा "इंडियन नेशनल कांग्रेस का प्रयोजन स्वराज्य की सिद्धि अर्थात भारत की जनता द्वारा वैधानिक और शांतिपूर्ण उपायों द्वारा पूर्ण स्वाधीनता की प्राप्ति है।' सरोजिनी ने आगे कहा

'मित्रो ! मैं जब कभी स्वतत्रता के लिए किसी दास की करुण और सत्रस्त चीख पुकार सुनती हू तो मुझे विश्व के इतिहास मे अपनी दासता की गहराई का बोध होने लगता है। स्वराज्य क्या है ? स्वराज्य का अभिप्राय पूर्ण राष्ट्रीय एकता म से समुत्प न वह शक्ति और साहस है जिसके बल पर हम शेष ससार के साथ समानता के स्तर पर स्वतत्रता के दायित्व की सहकारिता म भागीदार होने की तैयारी प्रकट कर सकते हैं। लेकिन आप और मैं प्रतिदिन और प्रति वर्ष आपस मे सघर्ष करत जाते है एक दूसर पर शका करते है, द्वेष करते हैं और कटुता उत्पन्न कर लेत है। क्या ऐसी स्थिति मे हम उस स्वतत्रता की चर्चा कर सक्त है जो केवल एक अनुशासित राष्ट्रीय एकता का परिणाम होती है तथा जो व्यक्तिगत वर्गीय अथवा साप्रदायिक हितो और लाभो और लाभो को सर्वनिष्ठ हितो के अधीन रखना चाहती है। आइय, हम उस महत्तर आदर्श की सिद्धि करें जो विभाजित लोगो की आतरिक दासता को सदा के लिए समाप्त कर देता है और तब वे सयुक्त होकर शेष जगत स कहते है हम सर्वनिष्ठ मानवीय दायित्वो के उस स्वतत्र राष्ट्रकुल म आपके साथ सम्मिलित हो गए हैं जिसमे सयुक्त भारत आपके साथ खडा होने का साहस कर रहा है वह एकाकी नही है उसके चारो ओर वत्त नही खिचा है, वह उस स्वतत्रता के कारण आपसे पृथक नही हो गया है जिसकी आड कमजोर लोग लेते है वरन् वह उस सर्वनिष्ठ स्वप्न म आपके साथ भागीदार है जो मानवजाति की प्रगति की सर्वनिष्ठ देन द्वारा साकार हो सकता है।'

गाधीवादी गुट नो चेंजस के नाम म प्रसिद्ध हुआ तथा दूसरा गुट जो काउसिल प्रवेश का समर्थक था तथा जिसके नेता चित्तरजन दास थे 'प्राचेंजस' कहलाया। 1922 के गया काग्रेस अधिवेशन के अवसर पर जब चित्तरजनदास ने काग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर स्वराज्य पार्टी का गठन किया तब यह मतभेद खुलकर सामने आ गया। सरोजिनी जैसा कि अपेक्षित था, 'नो चेंजस' गुट की सक्रिय सदस्य थी किंतु उनका वक्तृत्व कौशल एव चित्तरजनदास पर उनका व्यक्तिगत प्रभाव उस खाई का पाट नही पाया।

कठोर प्रयास के पश्चात आखिरकार समझौता हो गया और 1923 म दोनो गुट काकीनाडा के काग्रेस-अधिवेशन म शामिल हुए।

कांग्रेस की अध्यक्षा

1923 म सरोजिनी की गतिविधि मे एक नया मोड आया। अफ्रीका म बसने वाले भारतीयो के प्रश्न ने पुन व्यापक रूप से ध्यान आकर्षित किया। श्रीमती नायडू को कीनिया इडियन काग्रेस के अधिवशन म भारत का प्रतिनिधित्व करन के लिए भेजा गया। वह दक्षिणी और पूर्वी अफ्रीका के भारतीयो की समस्याआ म 1917 स ही रुचि ले रही थी और उनके मन मे उनके लिए कुछ ठास काय करन का प्रबल कामना थी। भारतीया को गोरो से अलग रखने और उनको साधारण मानवीय अधिकारा म वचित करने के लिए कठोर कानून बनाए गए थे। इस अयाय ने उनका उत्साह पूरी तरह जगा दिया।

जनवरी 1924 म सरोजिनी दक्षिण अफ्रीका म महात्मा गाधी की दूत बनकर पूर्वी अफ्रीकी भारतीय काग्रेस' की अध्यक्षता करन क लिए माम्बासा गई। वह जहा कही भी गइ उनक स्वागत म भारी भीड उमड पडी और ऐसा उत्साह प्रदर्शित किया गया कि मोम्बासा, जोहान्सबग, ट्रासवाल, डरबन, नेटाल और रोडेशिया की उनकी तीन महीने की यात्रा ने राजसी धूमधाम का रूप ले लिया।

मोम्बासा म जब वह बोलन के लिए खडी हुइ तो सभागार तालियो की गडगडाहट से गूज उठा। उन्होने कहा

'किसी देश मे किसी व्यक्ति का हित न पमान स नापा जा सकता है न फीते स। प्रत्यक भारतीय का वास्तविक हित उसकी प्रतिष्ठा

है भारतीय राष्ट्र का वह आत्मसम्मान जिसे कीनिया के गोरे उपनिवेशवादियो ने चुनौती दी है । समूची बसी हुई धरती पर एक भी ऐसा भारतीय नही है जिसके बारे मे यह कहा जा सके कि उसका कुछ भी दाव पर नही लगा है । कोई भी व्यक्ति चाहे अमीर हो या गरीब, शिक्षित हो या अशिक्षित जब अपने देश से बाहर जाता है तो वह अपने देश के हितो का दूत और सरक्षक होता है ।"*

जोहासबग म स्वागत के पश्चात् उन्हे एक जुलूस के साथ ट्रासवाल भारतीय सघ की सभा मे ले जाया गया । रास्ते की सडक पर लोगो की भारी भीड लगी थी और बहुत से लोग भारत के इस विशिष्ट दूत का दशन करने के लिए छज्जा पर खडे थे और खिडकिया मे से झाक रहे थे । जब उन्होने महात्मा गाधी के अडिग साहस का उल्लेख किया तो बहुत जोर से ताली बजी । अपने भाषण म वह 'प्रजाति क्षेत्र अधिनियम' के प्रश्न पर दढता से डटी रही और उन्होने प्रजातीय आधारो पर पथक बस्तिया बनान और सामाजिक सचार पर रोक लगाने तथा भारतीया और काले अफ्रीकिया के प्रति अमानवीय व्यवहार की घोर निंदा की ।**

एक के बाद दूसरी विराट सभा मे बोलते हुए उन्होने बार बार यह बात दोहराई कि मैं भारत की स्थिति को भली प्रकार स्पष्ट करने के लिए यहा आई हू । लेकिन, उससे भी अधिक उन्होने मानवता और न्याय की अपील की ।

एक भेंट मे उन्हान बताया कि मैं 18 दिन बाद अगाला और मसोपोटामिया जाने वाले शिष्टमडला का नेतत्व करन के लिए जाऊगी (किन्ही कारणा से ये शिष्टमडल वहा नही जा सके) । उन्हाने कहा

"हम लाग कलकित लागा की तरह नही जी सकत । मैं भारत क लिए दक्षिण अफ्रीका की सहानुभूति प्राप्त करना और आपके सामन एक भिन्न दष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहती हू ।"

---

* इडियन रिव्यू 1924, पृष्ठ 196

** 'नटाल विटनस' के कमचारियो द्वारा श्रीमती नायडू को भेंट किया गया सजिल्द प्रेस रिपोट सग्रह ।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के हितों के प्रख्यात हिमायती एल० डब्ल्यू० रिच ने 'स्टार ऑफ जोहान्सबर्ग' नामक पत्र में लिखा कि समाचारपत्रों में सरोजिनी की यात्रा के बारे में द्वेषपूर्ण और असत्य विवरण छापे गए हैं, और आगे उन्होंने प्रश्न किया कि, "क्या आपके संवाददाता को मालूम है कि 1885 में एशियाई मूल के लोग कानून द्वारा उन बस्तियों और बाजारों में रहने तथा व्यवसाय करने के लिए विवश कर दिए गए हैं जो उनके लिए अलग से निर्धारित की गई हैं, जैसे मलय बस्ती। इतना ही नहीं जेप्प और फोर्ड्सबर्ग जैसी निजी बस्तियों में जमीनों के पट्टों में यह शर्त लिख दी गई है कि उनपर एशियाई अथवा अश्वेत अफ्रीकी लोग नहीं बस सकेंगे।" एल० डब्ल्यू० रिच ने आगे लिखा कि "यह आश्चर्य की बात है कि अच्छी सड़कों और रहने के अच्छे मकानों के बिना हर प्रकार के स्तर और शक्ति से वंचित, प्रत्येक अवसर पर अपमानित और अछूत तथा अवांछनीय माने जाने पर भी "उनमें स्वाभिमान की चिनगारी विद्यमान है।" इसके बाद वे कहते हैं "श्रीमती नायडू की यात्रा का प्रयोजन हमारे दृष्टिकोण को व्यापकता प्रदान करना है कि हम अपने भारत और साम्राज्य के बीच उत्पन्न इस समस्या को उस भीषण द्वेषमूलक स्तर से ऊपर उठाएं जिस पर कि वह इस समय अधिष्ठित है। उन्होंने हमें यह समझने में मदद देने की चेष्टा की है कि दुनिया धीरे धीरे किस तरह सोचने लगी है कि मानवजाति एक संयुक्त इकाई है, कि इसके अंग यद्यपि स्वतन्त्र हैं तथापि कोई भी अंग जब किसी दूसरे अंग को हानि पहुंचाता है तो मानवजाति के दूसरे समस्त अंगों को हानि पहुंचती है।"*

जोहान्सबर्ग में सरोजिनी ने कहा "मैं इस समय यहां आपके सामने भारत राष्ट्र का एक संदेश लेकर आई हूं, वह एक ऐसा राष्ट्र है जो अब न सुषुप्त है न विभक्त तथा अपनी सीमाओं के भीतर और समुद्र पार अपनी नियति के बारे में न शंकित है न किंकर्तव्यविमूढ़। अपने राष्ट्र की ओर से मैं आपके लिए यह आश्वासन लाई हूं कि कोई भी राष्ट्र अथवा सरकार, कोई भी सत्ता, चाहे वह कितनी भी सशक्त क्यों न हो समान स्तर प्राप्त करने के आपके जन्मसिद्ध अधिकार को

---

*कुमारी पद्मजा नायडू के पास संगृहीत समाचारपत्रों की कतरनें।

कुचलने का साहस करेगा तो वह उसके परिणामो से बचकर नही निकलने पाएगा।"

डरबन नगर के टाउन हाल मे चार हजार से अधिक लोगो की सभा को सबोधित करते हुए उ होने कहा कि जो भारतीय पीढी-दर पीढी भूमि जोतने और अफ्रीका म बसने आए थे उनके साथ यहा दासो सरीखा व्यवहार किया जाता है और वे अछूतो और कोढियो की तरह रहत है। उनके इस भाषण पर वहा के स्थानीय गोरे समाचारपत्रो ने प्रतिरोध का तूफान उठा डाला। वहा बसने वाले प्रथम भारतीय गरीब गिरमिटिया श्रमिक थे जो ग न के खेतो मे मजदूरी करने के लिए वहा ले जाए गऐ थे और जि होने उन दस्तावजो पर अगूठे लगा दिए थे जिनके आधार पर उ हे वस्तुत गोरी जाति की दासता भोगनी पडी।

14 माच को उ होंने नेटाल के अलेक्जाडर सभागार मे जो भाषण दिया था उसकी टीका करते हुए केपटाउन के एक समाचारपत्र न एक सपादकीय लेख प्रकाशित किया जिसमे कहा गया था कि शातिपूवक तक देने के बजाय सरोजिनी 'दास, गुलाम, कोढी और अछूत" जैसे शब्दो के प्रयोग द्वारा लोगा की भावनाआ को उत्तेजित कर रही है। सपादकीय मे उनके भाषणो की तुलना उन श्रमिक नताओ के भाषणा के साथ की गई जो अपन श्रोताआ को भडकाना चाहत हैं। एक अ य सवाददाता न लिखा है कि उनके भीतर सशक्त भावावेग और आश्चयजनक आत्मसयम तथा अनुभवज य धैय का सगम हुआ है। वैसे उनसे यह अपेक्षा नही की जा सकती कि वह मूर्खो की बातो को प्रस नतापूवक गले उतार सकती है।" उ हाने वहा जो छाप छोडी वह प्रमुखतया शक्ति शाति और आत्मविश्वासयुक्त शक्ति की छाप थी।

टाइम्स नामक पत्रिका के केपटाउन-सवाददाता ने शिकायत के स्वर म लिखा "यह दावा तो नही किया जा सकता कि श्रीमती नायडू ने दक्षिण अफ्रीकी लोकमत पर कोई स्थायी प्रभाव छोडा है किंतु अपनी प्रवृत्तिमूलक भूलो के बावजूद उ होन कम से-कम यह तो प्रदर्शित कर ही दिया है कि वह लोकमत न उतना कठोर है और न मैत्रीपूण एव मानवीय अपील के प्रति उतना असवेदनशील नही है जितना कि कुछ लोग उस मान बैठे हैं।"

18 माच के रैंड डेली मेल ने लिखा कि श्रीमती नायडू के समद की

दीर्घा म पहुचने के समय ही 'प्रजातीय क्षेत्र विधेयक' की चर्चा के लिए सातवें के बजाय पहले स्थान पर ले लिया गया, और वे ऐसा समझते हैं कि सरकार ने इस प्रकार श्रीमती नायडू को एशियाई प्रश्न पर अपने विचार मत्रिमडल के समक्ष रखने का अवसर प्रदान किया।

मई 1924 म श्रीमती नायडू जनरल स्मट्स से मिली तथा उन्होंने उनके साथ उन नैतिक और वैधानिक कठिनाइयो की चर्चा की जिनका सामना दक्षिण अफ्रीका के भारतीयो को करना पड रहा था। गाधीजी के नाम एक पत्र मे सरोजिनी न अपनी यात्रा का विस्तत विवरण दिया। वह पत्र 'यग इडिया म प्रकाशित हुआ। उसम कहा गया था

'मुझे बताया गया है कि यहा पर मेरे काय की प्रगति के बारे म आपको सक्षिप्त प्रेस तारो (समुद्री तारो) द्वारा जानकारी दी जाती रही है। मैंने अपनी क्षमता और अवसर के अनुसार अपनी ओर स पूरी चेष्टा की है और एक प्रतिकूल प्रेस तथा विधायको के अनान के बावजूद मैं भारतीय हितो के पक्ष म दक्षिण अफ्रीकी जातियो के प्रत्यक वग और श्रेणी के सकडो नही वरन् हजारो लोगो की मित्रता प्राप्त करन मे सफल रही हू। मैंन जब यह कहा कि दक्षिणी अफ्रीका उत्पीडन का विश्वविद्यालय है तो गोरी जातियो को क्सा बुरा लगा! तथापि, यह वास्तव म गर यूरोपीय जातिया की आत्मा को अनुशासित और पूण बनाने वाला उत्पीडन का विद्यालय ही है। साम्राज्य के सबल पुरुष (जनरल स्मटस) के साथ मेरी भेंट बहुत दिलचस्प रही। वह अपन प्रसिद्ध आकषण और सुवक्तव स भरपूर और साथ ही बाहर स सरल और मधुर थे। किंतु उस माधुय और सरलता के पीछे म कितनी गहरी सूक्ष्म दष्टि और कूटनीति छिपी है! उनके बारे म मुझपर यह छाप पडी कि प्रकृति न उनकी रचना ससार के महानतम पुरुषा के बीच रहन के लिए की थी किंतु दक्षिणी अफ्रीका म सत्ता की भूमिका स्वीकार करके उन्हान अपन-आपको एक मामूली बौना बना लिया है। जो व्यक्ति अपने पूव नियत आध्यात्मिक स्तर की पूरी ऊचाई तक नही उठ पाता उसके सग ऐसी ही त्रासदी घटित होती है।"

जनरल स्मट्स के साथ अपनी चर्चा के दौरान उन्होंने उनस कहा कि दमनकारी विधान स किसी समस्या का समाधान नही होता, तथा उन्होंने उन्ह

दष्टि और विवक सपन्न पुरुष मानकर उनसे प्राथना की कि आप 'भारतीय प्रश्न पर सम्मलन और सहचर्चा का सिद्धात लागू करें तथा इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए भारतीय ससद के नेताओ तथा स्थानीय भारतीय नताओ को लेकर एक गोलमेज सम्मलन बुलाए और उसम मुख्यतया ऐसा सूत्र खोजन की दष्टि स विचार विमश करें जो सबको स्वीकाय हो।'

डरबन म सरोजिनी की उपस्थिति की खुशी म असाधारण स्थानीय प्रदशन हुए। भारतीय समाज क उल्लास को एक स्थानीय पत्र न 'नायडू-उल्लास श्रमण' कहकर सबोधित किया। इसका कारण यह था कि पूरी तरह सजी हुई मोटर बसो मे सवार होकर भारतीय कपडे के झडे लहरात हुए मस्ती से घूमत फिरते थे मानो व समूचे ससार को अपन उल्लास समारोह म सम्मिलित होन के लिए आमत्रित कर रहे हो। सपादकीय म विलक्षण रीति से यह टिप्पणी की थी कि स्थानीय फल और सब्जी विक्रेता अपना काम धधा छोडकर इन उल्लास-श्रमणो म सम्मिलित हुए और शराब के नश म इतनी बुरी तरह धुत्त हो गए कि उससे समस्त 'भद्र' नागरिको को परशानी हुई।

केपटाउन स उनकी विदाई एक और दिग्विजय थी। स्टशन पर भारी भीड थी स्टशन को वदनवारो और झडो स सजाया गया था गाडी क इजिन को रगीन वदनवारो स ढक दिया गया था और नागरिको ने अपन वस्त्रो मे फूल सजा रखे थ। जस ही विशेष रलगाडी स्टेशन स बाहर निकली स्टेशन पर खडे लोगो को सरोजिनी का छोटा सा शाही और फूलमालाओ से लदा हुआ शरीर विदा देन के लिए आयी भीड की ओर हाथ हिलाता हुआ दिखाई दिया।

12 अप्रल को सरोजिनी न लदन म पूर्वी लदन के ब्रिटिश इडियन-ऐसोसियेशन के समक्ष दक्षिणी अफ्रीका के बारे म एक भाषण दिया और यह उल्लख किया कि दक्षिण अफ्रीका की वास्तविक समस्या वहा के एक लाख साठ हजार भारतीय नहीं वरन वहा के साठ लाख मूल अफ्रीकी निवासी है।

सरोजिनी दक्षिण अफ्रीकी भारतीय सम्मेलन के चौथे अधिवेशन की अध्यक्षा चुनी गयी। सम्मेलन नेटाल के नगर सभागार म हुआ जिसमे नटाल केपटाउन और ट्रासवाल स प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। अपन अध्यक्षीय भाषण मे सरोजिनी ने अपन देशवासियो को उद्बोधन करत हुए कहा कि आप श्वत

जाति और काली जातियो क बीच "स्वण शृखला' बनें। इसके आग उन्होंने उह बुद्धिमत्ता पूण परामश दिया कि

> भारतवासियो को अफ्रीका की आर इस दष्टि म नही देखना चाहिए कि अफ्रीका उनके लिए क्या कर सकता है वरन इस दष्टि से देखना चाहिए कि व अफ्रीका के लिए क्या कर सकत हैं।'*

12 जून 1924 का बवई लौटन पर उनका जा भव्य स्वागत किया गया वह भी उनकी दिग्विजय का प्रतीक था। उस महान सम्मान का स्वीकार करत हुए उन्होन कहा

> दक्षिणी अफ्रीका कीनिया, उगाडा तथा अन्य ब्रिटिश उपनिवशो म भारतीयो क विरुद्ध पक्षपात की भावनाए वस्तुत इतनी गहरी नही हैं कि सहानुभूति रखन वाल लाग मुक्त चर्चा के माध्यम स उनका निवारण न कर सक। अपन जीवन का दक्षिण अफ्रीका का अभिन्न अग बनाना भारतीयो का मुख्य काय हाना चाहिए। **

उन्हे ऐसा भी महसूस हुआ कि व्यापारियो का सहारा देन क लिए शिक्षित भारतीयो को अधिक सख्या म दक्षिण अफ्रीका भेजा जाए, क्योकि यद्यपि व व्यापारी वहा जाकर बसन वाल पहले लाग हैं तथापि उन्होन वहा भी विलक्षण भारतीय पथकतावाद का प्रदशन किया है। भारतीय अपने आप मे अलग बन रह और उन्होन अपनी विशेष जीवन पद्धति को बनाय रखा है। व अपने बेटो का विवाह भारत मे अपन गाव और अपनी जाति के लागो की लडकियो से करके उन्हे अफ्रीका ले जात है, तथा वहा के स्थानीय जीवन मे आम तौर पर कोई भाग नही लेत। अत म उन्होने कहा

> 'पहली बात तो यह है कि हम भारत म उत्प्रवास को लोकमत के दबाव के द्वारा नियमित तथा नियत्रित करें। मैं भारत को यह बताना चाहती हू कि हम जिस प्रकार के व्यापारियो को दक्षिण अफ्रीका भेज रह है उनकी बडी सख्या म वहा भेजना हमार हित के लिए पूणतया घातक हागा।"

कई वष पश्चात् सरकार न भारतीयो के उत्प्रवास के बार म इसी नीति को अपनाया।

---

* इडियन रिव्यू।

** वही।

जिन दिना सरोजिनी दक्षिण अफ्रीका म थी उन्ही दिना लदन से 10 माच, 1924 का भारतमत्री न वायसराय के नाम एक विचित्र तार भेजा *

'सख्या 800 राजद्रोह। सदभ डी० आइ० जी० का साप्ताहिक रिपाट का दूसरा पराग्राफ तारीख 30 जनवरी। श्रीमती नायडू का उन स्वयमेवका से सबध जा अहिसा म नही बधे है। दो स्वतत्र स्राता स यहा सूचना आयी है कि इस सदभ म गभीर स्थिति होने की सम्भावना है। आई० पी० आई० न अधिकृत सूत्र के आधार पर सूचना दी है कि चटटो [सरोजिनी के क्रातिकारी भाई वीरन्द्र चटटापाध्याय] को श्रीमती नायडू का एक पत्र मिला है जिसमे उनसे पूछा गया है कि क्या आप भारत म नियमित रूप से शस्त्रो को चोरी छिपे लाने की व्यवस्था कर सकते है। उन्होने यह पूछताछ कुछ महत्वपूण क्रातिकारी नताओ की विशेष प्राथना पर की बतात है जिन्ह यह विश्वास हो गया है कि भारत म आयरिश स्वतत्रता सघष मरीखी चालें इस्तेमाल करन का समय आ गया है। चटटा अपने मित्रा स परामश कर रहा है और कहता है कि 15 लाख शस्त्रा की आवश्यकता होगी।"

ऐसा प्रतीत हाता है कि इस जाच का कोई परिणाम नही निकला न किसी आयरिश ढग की क्राति के साथ सराजिनी के सबध के बारे म अन्य कोई सदभ ही सुनने म आया।

जिस समय सरोजिनी विदेशा म अपने देश के लिए महान काय कर रही थी उस समय जेल मे गाधीजी का उण्डुक शोथ (अपेंडिसाइटिस) का आपरेशन हुआ। फरवरी 1924 म स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उन्ह जेल म छाड दिया गया। लेकिन गाधीजी के स्वास्थ्य लाभ से पहले ही गभीर साम्प्रदायिक दगे फूट पडे और भग्नहृदय गाधीजी ने उस समय तक का सबसे लबा अर्थात् 21 दिन का अनशन शुरू कर दिया। सराजिनी उस समय भारत वापस आ गयी थी।

उन दिना राजनीतिक कायवाही अस्थिर और अनियमित रूप स चल रही थी। सविनय अवज्ञा आदोलना की बात अलग है, उनके दौरान या तो गतिविधि तीव्र हो जाती थी अथवा लोग जेला म निष्क्रिय पडे रहते थे अन्यथा राजनीति अधिकाशत समय समय पर सम्मेलना तक सीमित रहती थी जिनके बीच राज

---

* गृह विभाग मिसिल—महाराष्ट्र सरकार।

नीतिज्ञ थोडी बहुत मात्रा म अपना सामान्य जीवन और व्यवसाय जस वकालत आदि चलात रहत थे। सम्मलनो के बीच महात्मा गाधी भी अपन आश्रम की व्यवस्था अपने पत्र के सम्पादन तथा हरिजनोत्थान कताई और खादी सरीखे सामाजिक और आर्थिक कार्यों म लग जात थे। आजकल की तरह पूरा समय देन वाले राजनीतिज्ञ उन दिनो बहुत कम और कोई राइ ही होत थे।

सराजिनी का सशक्त व्यक्तित्व सामती हैदराबाद के दमघाटू वातावरण और गृहस्वामिनी की परिसीमनकारी भूमिका स शीघ्र ही ऊब गया। यह उनस सहज अपेक्षित था और उनके लिए अपरिहार्य भी, बम्बई की सक्रिय सामाजिक सास्कृतिक और राजनीतिक जिन्दगी ने उनको एक अनुकूल भूमिका प्रदान की तथा वह शीघ्र ही इस सार्वभौमिक नगर म बस गइ। उन्हाने अपन जीवन का सर्वाधिक सक्रिय और उपयोगी काल यही बिताया। यहा वह केवल एक नागरिक नही वरन एक सस्था बन गइ तथा ताजमहल होटल क उनके कमरे की तुलना गत शताब्दी के फ्रासीसी अभिजात सदन स की जा सकती है।

लन्दन क दिनो स ही उनके पुराने सहकर्मी श्री जिन्ना भी उस समय बम्बई म अपन आपको एक प्रमुख बैरिस्टर के रूप म जमा रह थे। उस समय तक राजनीतिक दृष्टिकोण दृढ नही हुआ था तथा वह दिग्विजय क लिए एक राजनीतिक जगत की तलाश म थे। उस समय काग्रेस और मुस्लिम लीग अथवा काग्रेस और हिन्दू महासभा की सदस्यता एकसाथ ग्रहण करना सभव था। श्री जिन्ना स यह आशा थी कि वह हिन्दू मुस्लिम एकता के सदेशवाहक बनगे, किंतु उन्होंने मुस्लिम राजनीति म दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया। काल न यह सिद्ध किया कि हिन्दू मुस्लिम एकता क सदेशवाहक जिन्ना नही थे वरन सरोजिनी स्वय ही थी।

इस काय म श्री जिन्ना को उस जमान के प्रतिष्ठित राजनीतिक नेताओ का समर्थन प्राप्त था, तथा बबई म सरोजिनी की गतिविधि के बारे म प्रारभिक सूचनाओ म से एक सूचना यह भी है कि 31 दिसबर 1916 का तिलक गाधीजी और श्रीमती बीसेंट के साथ उन्हान मुस्लिम लीग की एक सभा म भाग लिया जिसकी अध्यक्षता श्री जिन्ना न की। इस बारे म यह उल्लेख मिलता है कि उन लोगो का स्वागत दीर्घ करतलध्वनि के साथ किया गया था।

ऐसा प्रतीत हाता है कि वे निरतर गाधी के साथ रहन लगी थी। 5 मई 1918 को जब सरोजिनी नायडू दलितजाति मिशन म भाग लेने बीजापुर गइ ता वहाँ एक दिलचस्प घटना हुइ। सम्मेलन म तय हुआ कि एक प्रस्ताव गाधीजी

पेश करेंगे, लेकिन गाधीजी ने प्रस्ताव रखने स पहले यह पूछा कि पडाल मे दलित जाति के कितने लाग हैं। जब यह मालूम हुआ कि वहा तो दलित जाति का एक भी व्यक्ति नही है तो गाधीजी ने अपने स्वभाव के अनुसार यह प्रस्ताव पेश करने से मना कर दिया।

सरोजिनी पर आरभ से ही पुलिस ने निगरानी शुरू करती थी अत उनकी गतिविधि के बार मे बहुत सी जानकारी पुलिस की रिपोर्टों स प्राप्त की जा सकती है। इन रिपोर्टों की बहुत सी सामग्री भारत मे स्वतन्त्रता आदोलन का इतिहास" के ततीय खड म उद्धत की गयी है। उस स्रोत से यह पता चलता है कि फरवरी 1919 मे सरोजिनी एक शिष्टमडल लेकर गाधीजी से मिलने अहमदाबाद गइ और वहा उन्हाने गाधीजी का ध्यान रोलट बिल के कुछ प्रावधानो की ओर दिलाया। वहा से वाइसराय क नाम एक तार दिया गया कि यदि सरकार विधेयक को पास करन की कायवाही करेगी तो अहिंसात्मक प्रतिराध किया जाएगा।

तृतीय खड क पृष्ठ 141 पर सराजिनी म गाधीजी के विश्वास की अनायास ही अभिव्यक्ति हो गयी है

'गाधीजी ने जोर देकर कहा कि मैं 1 जुलाई का हर कीमत पर सत्याग्रह शुरू कर दूगा। उन्होने घोषणा की कि मैंने बहुत सारा समय जिन्ना और सरोजिनी के साथ व्यतीत किया है जो कि इग्लड जा रह हैं और मन उन्ह कुछ हिदायतें दी है। पुलिस न सूचना दी है कि गाधीजी न चार पत्र लिखकर सरोजिनी को दिए है जा वह इग्लड म उनकी ओर से वितरित करेंगी।'

सराजिनी अखिल भारतीय होमरूल लीग के एक शिष्टमडल मे सम्मिलित होकर इग्लड गई थी। इस बारे मे पीछे उल्लेख किया जा चुका है। वहा उन्होने महिलाओ के अधिकारा का समथन किया। भारतीय सविधानिक सुधारा से सबधित सयुक्त समिति इस विषय में प्रधानतया उनके ही विचारा स प्रभावित हुई थी। उनकी भारत वापसी तथा सत्याग्रह शुरू होने के बाद की पुलिस की रिपोट मे उल्लेख है कि गाधीजी और सरोजिनी न सूरत और उसके निकटवर्ती क्षेत्र की सभाओ मे भाषण दिए।

पुलिस की रिपोट म सत्याग्रह आदालन के तजी म जोर पकडन के बारे म बहुत सजीव चित्रण मिलता है। 25 अप्रैल स गाधीजी और सराजिनी न सूरत

जिले का दौरा किया। रिपोर्ट म कहा गया है कि वह जहा कही गइ विशाल जनसमूहो ने उनका स्वागत किया तथा उन दोनो न बहुत से भाषण दिए जिनम हिन्दू-मुस्लिम एकता खादी के प्रयोग तथा चरखा चलाने और विदेशी वस्त्रो तथा शराब के बहिष्कार पर जोर दिया गया था। उसके बाद वह महाराष्ट्र प्रातीय सम्मेलन म सम्मिलित होन के लिए बबई गए और उसके तुरत बाद इलाहाबाद के लिए रवाना हो गए।

22 जून को बबई के बाहरी क्षेत्र म घाटकपर मे एक विराट जनसभा हुई। उसम गाधीजी सरोजिनी अली बधु और विट्ठलभाई पटेल न भाषण दिए। उन सबने आदोलन के समर्थन तथा तिलक स्वराज्य कोष म धन देने की अपील की। उसके बाद वह मगलादास कपडा बाजार गए जहा तिलक कोष के लिए पच्चीस हजार रुपय की थैली भेट की गई। यह भी उल्लेख मिलता है कि मौलाना शौकत अली न एक रुपय का एक नोट नीलाम किया जिसे एक मुसलमान व्यापारी ने एक हजार एक रुपय म खरीदा।

आदोलन जोर पकडता गया और सभाओ म उपस्थिति बढती चली गई। 8 अगस्त को ओमर सोभानी की एलिफिन्स्टन मिल्स के अहाते मे विदशी वस्त्रो के एक विशाल ढेर म एक लाख लोगो की भीड के सामने आग लगाई गई। स्वय गाधीजी न सिल्क की साडिया, कीमखाब तथा अन्य प्रकार के कीमती कपडा के उस ढेर म पलीता लगाया।

जैसा कि अपेक्षित ही था यह सब सरकार की सहनशक्ति स बाहर हो गया और गाधीजी को शीघ्र ही पकड लिया गया। सरोजिनी उनस जेल म मिली। इस बारे म पुलिस के अभिलेख म ईमानदारी के साथ उल्लेख है कि, 'उससे पहल सरोजिनी कभी जेल क भीतर नही गई थी फिर भी उनको लगा कि उन्ह स्वय भी जेल म रहन म कोई आपत्ति नही होगी लकिन तभी जब उन्हे यह विश्वास हो जाए कि उन्ह प्रतिदिन स्नान की सुविधा मिल जाएगी।

1924 तक उनके नेतत्व को इतनी पर्याप्त और व्यापक मात्रा म मान्यता प्राप्त हो गई थी कि बेलगाम काग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए उनका नाम रखा गया। यद्यपि अत म उस अधिवेशन की अध्यक्षता क लिए गाधीजी को तैयार कर लिया गया था तथापि उन्होन यग इडिया' के 17 जुलाई के अक म सरोजिनी के बार म अपने विचार प्रकट किए। उनके निबध का शीर्षक था "सरोजिनी द सिंगर' (कोकिला सरोजिनी)। उन्होंने लिखा

'यद्यपि मुझे यह विश्वास है कि मैं हिंदू मुस्लिम एकता की अभिवद्धि मे अपना नम्र योगदान कर सकता हू तथापि अनेक दष्टियो से सरोजिनी यह काय मुझसे भी अधिक अच्छी तरह कर सकती हैं। वह मुसलमानो को मेरी अपक्षा कही अधिक घनिष्टतापूवक जानती हैं। वह उनके घरो मे आती जाती है। मैं यह दावा नही कर सकता। इन योग्यताओ क साथ साथ वह एक नारी है। यह उनकी सबसे बडी योग्यता है जिसम कोई भी पुरुष उनकी समता नही कर सकता।"

बेलगाव कांग्रेस म सामजस्य स्थापित करन की उनकी प्रतिभा को खुलकर प्रकाश म आन का अवसर मिल सकता था। जसा कि पीछे उल्लेख किया जा चुका है कांग्रेस के भीतर स्वराज्य की परिभाषा को लेकर वरिष्ठ नताओ मे मतभेद उत्पन्न हो गए थे। यद्यपि काकीनाडा अधिवशन उनको सुलझाने म सफल हो गया था तथापि मतभेद पूरी तरह नही मिट पाए थे। इसी कारण यह महसूस किया गया कि यह काय तभी सम्पन्न हो सकता है जब गाधी जी अधिवेशन की अध्यक्षता कर, अत वह अध्यक्ष निर्वाचित हो गए और उन्होने 1924 म वेलगाम अधिवशन की अध्यक्षता की। पूर्वी और दक्षिण अफ्रीका के भारतीयो की दशा का वणन करते हुए गाधीजी ने सरोजिनी द्वारा उन देशो म किए गए महान काय की ओर जानबूझकर श्रोताओ का ध्यान दिलाया। कांग्रेस पहले ही उनकी उपलब्धियो स अवगत थी तथा उस गभीर अवसर पर गाधीजी के माग दशन की आवश्यकता के कारण ही वह अध्यक्षा नही चुनी गइ।

वस्तुत जब वह दक्षिण अफ्रीका मे थी तब गाधीजी ने स्वय घनश्यामदास बिडला को लिखे अपने 20 जुलाई, 1924 के पत्र मे यह इच्छा प्रकट की थी। उन्होने उस पत्र मे लिखा था कि मेरे तीन तात्कालिक उद्देश्य हैं 'प्रथम, स्वराज्य पार्टी को इस आरोप स मुक्त करना कि उसने पद प्राप्त करने के लिए षडयत्र किया, द्वितीय सुहरावर्दी को प्रमाणपत्र देना, और ततीय सरोजिनी के लिए कांग्रेस का अध्यक्ष पद प्राप्त करना। तुम सरोजिनी के बारे म अनावश्यक रूप से चिंतित हो। उन्होने भारत की भली प्रकार सेवा की है और वह अब भी सेवा कर रही हैं जबकि मैंने उनके अध्यक्षपद के लिए कोई भी विशेष प्रयास नही किया है। मेरे मन म पक्का विश्वास है कि अब तक जिन लोगो ने इस पद को ग्रहण किया है यदि व उसके लिए उपयुक्त थे तो सरोजिनी भी उनके लिए उपयुक्त हैं। उनके उत्साह स सब चमत्कृत हैं। मैंने उनम कोई दोष नही देखा, लेकिन

इससे तुम यह निष्कर्ष मत निकाल लेना कि वह या दूसर लाग जा भी काय करते हैं मैं उन सबका समथन करता हू । '*

यद्यपि सरोजिनी गाधीजी के इस विश्वास के याग्य पात्र थीं, लेकिन अतिम पक्ति और स्वय यह तथ्य कि गाधीजी को वह पत्र लिखना पडा यह सकेत करता है कि सरोजिनी की अनौपचारिकता और उनका अतर्राष्ट्रीय आचार काग्रेस के अधिक सौम्य और रूढिवादी तत्वा को पूरी तरह स्वीकार्य न था तथा उनके साहसिकतापूण और आवेगमूलक उदगार कभी-कभी गाधीजी को उसी प्रकार परेशानी म डाल देते थे जिस प्रकार इमसे पहले उनक कारण गोखल को परेशानी होती थी ।

यद्यपि उन्ह सर्वोच्च नता के रूप म मान्यता प्राप्त करने के लिए एक वष तक प्रतीक्षा करनी पडी तथापि जिस समय नववर म सवदलीय सम्मलन ने बबइ म स्वराज्य की योजना तैयार करने और हिंदू मुस्लिम प्रश्न के समाधान की दष्टि से काग्रेस के दोनो गुटो के बीच एकता स्थापित करन के लिए एक समिति नियुक्त की तो सरोजिनी का उसकी सदस्यता के लिए अपरिहाय माना गया । सरोजिनी के अतिरिक्त उसम गाधीजी, जिन्ना सप्रू और मोहम्मद अली भी थे ।

अप्रैल 1925 म उनको राष्ट्रीय सप्ताह के आयोजन का दायित्व सौंपा गया । यह एक एसा प्रथम वार्षिक आयोजन था जो उसके बाद उन्ह बबई प्रदेश काग्रेस समिति के अध्यक्षपद के अपन अनेक वर्षों के कायकाल मे अनेक बार आयोजित करना पडा । राष्ट्रीय सप्ताह के वार्षिक-आयोजनो के कायक्रम बहुत भिन्न नही हो सकते थे । बाद के वर्षों म राष्ट्रीय सप्ताह के लिए उन्होने जा कायक्रम तैयार किया था उससे उन पर आ पडी जिम्मेदारी के बोझ का भान होता है

सप्ताह भर का कायक्रम

द्वार द्वार जाकर बहिष्कार के प्रतिज्ञापत्रा का सग्रह
झडाभिवादन समारोह
धरना

6 अप्रल का कायक्रम

विदेशी कपडे के विरुद्ध प्रचार तथा प्रदशन (विशेषत जापान स आने

---

*इन द शैडो आफ द महात्मा—घनश्यामदास बिडला पष्ठ 7

वाली नकली खादी का विरोध)

विदेशी कपड़े की होली जलाना

प्रभात फेरियां निकालना और बहिष्कार के नारे लगाना

7 अप्रल

खादी की फेरी द्वारा बिक्री

कताई और तकली प्रतियोगिताएं

8 अप्रल

चीनी (मिलों में बनी शक्कर) विरोधी दिवस

व्याख्या भारत प्रतिवर्ष 11 करोड़ रुपये की विदेशी चीनी की खपत करता है और सरकार उस पर आयात शुल्क के रूप में 10 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष कमाती है। नागरिकों को चाहिए कि वे सरकार को इस राजस्व से वंचित कर दें। इसके लिए होटलों, चाय की दुकानों और हलवाइयों पर विशेष ध्यान दिया जाए, तथा थोक व्यापारियों से प्रतिज्ञापत्र भरवाए जाएं।

9 अप्रल

पट्रोल और मिट्टी का तेल विरोधी दिवस

व्याख्या यद्यपि इन वस्तुओं का संपूर्ण बहिष्कार असंभव है तथापि इनका प्रयोग कम कर देने से सरकार का राजस्व काफी कम हो जाएगा।

10 अप्रल

विदेशी औषधि विरोधी दिवस

व्याख्या आयात का परिमाण घटाओ। डाक्टरों, कैमिस्टों, अस्पतालों आदि में प्रचार हो और उन पर दबाव डाला जाए।

11 अप्रल

विलासिता विरोधी दिवस

व्याख्या व्यक्तिगत सजावट चाय, काफी, सौंदर्य प्रसाधनों आदि का प्रयोग कम कर दिया जाए तथा स्वदेशी उपभोक्ता वस्तुओं के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया जाए।

12 अप्रल

महिला और बाल दिवस

व्याख्या केसरिया साडिया और वस्त्र पहन कर महिलाए और बच्चे प्रतिज्ञापत्र भरवाए, दुकानो पर धरना दें जुलूस निकाले।

13 अप्रल

जलियावाला बाग दिवस

व्याख्या आम हडताल, जुलूस, सभाए, झडा फहराना और शहीदा की स्मृति मे दो मिनट का मौन।

बेलगाम काग्रेस अधिवेशन के समाप्त होते ही सभी के द्वारा यह महसूस किया जाने लगा कि अगले अधिवेशन के लिए अध्यक्षता का सम्मान सरोजिनी नायडू को दिया जाना चाहिए। अत कानपुर मे स्वय गाधीजी न उनके नाम का प्रस्ताव रखा। उनके निर्वाचन का आखा देखा हाल एलीनर मोटन ने अपनी पुस्तक "वोमेन बीहाइड महात्मा" (गाधीजी के जीवन मे महिलाए) मे दिया है। जिस समय सरोजिनी गाधीजी के साथ पडाल म प्रविष्ट हुई तो समूचा श्रोता-मडल उठकर खडा हो गया। 'किसी जमाने म दुबली पतली काया अब चौडी हृष्ट पुष्ट हो गई थी तथापि वह सुदर लग रही थी, सम्राज्ञी जैसी। उनकी आखो मे चमक थी, उनकी त्वचा कोमल और बाल घने काले थे। उनके साथ उनकी सबसे बडी बेटी थी जो गाधीजी के साथ सरोजिनी के सभी दौरो म रहती थी। यद्यपि उनके पति डा० नायडू उनके हृदयरोग के बारे म चिंतित थे, तथापि उनके चेहरे स अस्वस्थता का कोई लक्षण नही झलकता था।'

सरोजिनी को काग्रेस की अध्यक्षा मनोनीत किया गया तथा स्वागत समिति क अध्यक्ष के भाषण के बाद दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि मडल के नता ने भाषण देने की अनुमति मागी। सरोजिनी को उनका एक चित्र भेंट करते हुए उसने कहा 'दक्षिण अफ्रीकी भारतीया ने भारत को ससार का महानतम जीवित व्यक्ति दिया है। महात्माजी हमारे हैं। सरोजिनी नायडू भी हमारी हैं। आपको हमे कम से-कम एक अथवा दो नेता देने हाग जा दक्षिण अफ्रीका जाए और हमार सघष म भाग ले। यदि हम भारत की महान महिला को ले जाए तो हम उनके पीछे उनका चित्र छोड जाएग जिसम कि आप उसको देखकर सताप कर सकें। हम यह चित्र अपनी मा और मौसी को दक्षिण अफ्रीकी भारतीया के प्रेम के प्रतीक के रूप म भेंट करते हैं।

उसके पश्चात सरोजिनी मच पर पहुची तथा हमेशा की भाति निरायास

और बिना किसी लिखित टिप्पणी का सहारा लिए उनकी वक्तता प्रवाहित हो उठी

"मित्रो ! एक महान् पद का भार और उच्च दायित्व आपने मेरे अकुशल हाथो मे सौंपकर मुझे जो असाधारण सम्मान प्रदान किया है उसके लिए आपके प्रति आभार प्रकट करते समय मेरे मन मे जो गहन और सश्लिष्ट भावना उमड रही है उसकी अभिव्यक्ति के लिए यदि मैं मनुष्य की भाषा के समस्त कोश का टटोल डालू तब भी मुझे आशका है कि मैं पर्याप्त समथ और सुदर शब्द नही खोज पाऊगी । मुझे इस बात की पूरी चेतना है कि आपने मुझे अपना सर्वाधिक बहुमूल्य उपहार केवल उस सामान्य सेवा के बदले म ही नही जिसका सौभाग्य मुझे स्वदेश और विदेश म मिला है वरन् भारतीय नारी व के प्रति उदारतापूण सम्मान और राष्ट्र की लौकिक और आध्यात्मिक परिषदा म उसके विहित स्थान की निष्ठा पूण मान्यता क प्रतीक के रूप म भी भेंट किया है । आपने एक प्राचीन परपरा का अनुसरण किया है और भारतीय नारी को उसका वह सनातन पद पुन प्रदान किया है जो उसे हमारे देश की गाथा के एक सुखदतर युग मे कभी प्राप्त था वह अपने देश की पाकशाला की अग्नि, यज्ञशाला की अग्नि और और मार्गदशक ज्योति की अग्नि की प्रतीक और सरक्षिका थी । मुझे विश्वास है कि आपने मुझे जो महान् दायित्व सौपा है उसकी पूर्ति के सिलसिले म मैं भी उस अमर आस्था की एक ज्योतिमय चिंगारी सुलगा सकूगी जिसने निर्वासित सीता की तपस्या का पथ प्रशस्त किया और जिसने सावित्री के अडिग चरणो को मृत्यु दुग के द्वार तक जाने की शक्ति प्रदान की ।' 'मैंने एक भारतीय मा के नाते पालना झुलाया है और कोमल लोरिया गाई है, वही मैं अब स्वतन्त्रता की ज्योति जगाऊगी । "

उसके बाद उन्होने अपनी नीति की घोषणा की

'मेरा कायक्रम एक स्त्रियोचित अत्यत मध्यम कोटि का घरेलू कायक्रम है। उसका प्रयोजन केवल यह है कि भारत मा को उसका सही पद प्राप्त हो अर्थात वह अपने घर की सर्वोच्च स्वामिनी, अपने विराट ससाधनो की एकमात्र सरक्षिका तथा अपनी सत्कार भावना की एकमात्र वितरक बने । अत भारतमाता की एक आस्थावान बेटी के नाते मैं आने वाले वर्ष मे

अपनी मा के घर का व्यवस्थित करने, विभिन्न सप्रदायों और धर्मों से निर्मित उसके सयुक्त पारिवारिक जीवन को चुनौती देने वाले त्रासदायी झगडों को निपटाने, तथा उसकी दीनतम तथा समथतम सतान, और पोषित सतान, अतिथियो एव उसके आगन मे आने वाले अपरिचितो के लिए समान रूप से उपयुक्त स्थान तथा प्रयोजन और मान्यता प्राप्त करने का नम्र किंतु कठिन काय पूरा करने की चेष्टा करूगी।"

अहिंसा, असहयोग, ग्रामीण पुनर्निर्माण, शिक्षा, राष्ट्रीय सेना, दक्षिण अफ्रीका आदि विषयो की चर्चा के उपरात वे हिंदू-मुस्लिम एकता के उस विषय पर आयी जो उनको सबसे अधिक प्रिय था। उन्होंने कहा

" और अब मैं अत्यत झिझक तथा खेदपूवक उस समस्या पर आती हू जो हमारी समस्याओ मे सबसे अधिक चिंताजनक और त्रासदायी है। मैंने अपना जीवन हिंदू-मुस्लिम एकता के स्वप्न की पूर्ति के निमित्त समर्पित कर दिया है अत मै भारत के लोगा के बीच फूट और विभाजन की कल्पना पर खून के आसू गिराए बिना नहीं रह सकती। यह मेरी आशा के मूलतत्व को ही भग कर डालती है।

"यद्यपि मेरे मन म इस बात का पक्का विश्वास है कि साप्रदायिक प्रतिनिधित्व का सिद्धात चाहे सयुक्त निर्वाचको के माध्यम से लागू किया जाए अथवा पृथक निर्वाचको के माध्यम स, वह राष्ट्रीय एकता की सकलपना को कुठित करगा, तथापि मैं यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हू कि आज हम बढते हुए साप्रदायिक द्वेष, शका अविश्वास भय, और घृणा के कारण जिस अत्यत तनावपूण, अधकारमय और कटु वातावरण म जी रहे हैं उसमे कोई सतोपजनक अथवा स्थायी सामजस्य तब तक सभव नही है जबतक कि सशयातीत देशभक्ति से सपन्न उन हिंदू और मुस्लिम राजनीतिज्ञो के बीच उत्कटतम एव धैयपूण सहयाग उत्पन्न न हो जिन पर कि इस विनाशकारी रोग का रामबाण इलाज खोजने की नाजुक और कठिन जिम्मेदारी है।"

"मैं अपने हिंदू भाइयो से प्रार्थना करती हू कि वे अपनी उस परपरागत सहिष्णुता के उन्नत स्तर तक उठें जो हमारे वैदिक धम की मूलभूत गरिमा है और यह समझने की चेष्टा करें कि इस्लाम का बधुत्व कितना सघन और दूरगामी यथाथ है जा सात करोड भारतीय मुसलमानों को एक सूत्र

राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास' में किया है। उन्होंने लिखा है "सरोजिनी नायडू ने थोड़े से चुने हुए शब्दों के साथ अपने पद का कार्यभार ग्रहण किया। उनका अध्यक्षीय भाषण संभवतः कांग्रेस के मंच से दिया गया सबसे छोटा भाषण था, लेकिन वस्तुतः वह सबसे अधिक मधुर भाषण था। उन्होंने एकता पर बल दिया—दलों के बीच एकता, तथा भारत और प्रवासी भारतीयों के बीच एकता। उन्होंने विधानसभा के मंच से रखी गयी राष्ट्रीय मांग का उल्लेख किया, तथा भय का परित्याग करने की प्रार्थना की। "स्वतंत्रता के संग्राम में भय अक्षम्य द्रोह है और निराशा अक्षम्य पाप।" इस प्रकार उनका भाषण साहस और आशा की अभिव्यक्ति था। कानपुर कांग्रेस में अनुशासन बनाए रखने का काम उस व्यक्ति के कोमल हाथों में था जो कोमल भी था और सहनशील भी तथा वह अधिवेशन शांतिपूर्ण रीति से संपन्न हो गया, केवल कुछ प्रदर्शन हुए जिनमें से कुछ तो श्रमिकों ने किए और कुछ अधिवेशन में आए प्रतिनिधियों ने किंतु जवाहरलाल जैसे चुस्त लोगों ने उन्हें शान्त कर दिया।"

सहज ही उनके भाषणों की ओर समूचे विश्व का ध्यान गया। न्यूयार्क टाइम्स की दृष्टि में सरोजिनी 'जोन आफ आर्क' बन गई थीं 'जिसका उदय भारत को प्रेरित करने के लिए हुआ" था। इंग्लैंड के अखबारों में भी समान रूप से प्रशंसा का स्वर उभरा। किंतु भारत में उनके शब्दों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया, उनके प्रयास व्यर्थ हो गए।

हजारों प्रतिनिधियों और दर्शकों ने जिस उत्साह के साथ सरोजिनी की अध्यक्षता को अपना समर्थन प्रदान किया सरकार पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। इस सम्बन्ध में पुलिस की रिपोर्ट में कटुतापूर्वक लिखा गया 'साम्यवादियों के अतिरिक्त अन्य लोगों ने श्रीमती नायडू में बहुत कम दिलचस्पी ली उसका भी कारण यह था कि वह साम्राज्यवादी विचारों की हैं तथा यह भी कि लाला लाजपतराय के साथ दुर्व्यवहार हुआ था। वस्तुतः योजना तो यह थी कि जब वह आएं तो उनका बहिष्कार किया जाए लेकिन ऐसा किया नहीं गया। अध्यक्ष के रूप में सरोजिनी नायडू को पूरी तरह सफल नहीं कहा जा सकता। उनकी ओर न तो लोगों ने ध्यान दिया और न उनका सम्मान ही किया। गांधीजी ने होशियारी के साथ अपने-आपको पीछे रखा जिसके कारण वह अपनी स्थिति को बनाए रख सकें।"

अध्यक्षपद के कार्यकाल को सरोजिनी का एक वर्ष सरकार विरोधी

गतिविधि से मुक्त रहा। अत उन्होंने अपनी शक्ति सगठनात्मक काय मे लगाई।[1] जुलाई 1925 म जब उनके मित्र और सहयोगी जे० एम० सेन गुप्ता कलकत्ता के महापौर चुन गए उस समय व कलकत्ता म थी। वे बगाल प्रातीय काग्रेस क अध्यक्ष भी थे। 1926 के प्रारभ म वह प्रात के दौरे पर गइ मई म प्रातीय काग्रेस ने अपना वार्षिक सम्मेलन कृष्णनगर मे किया। वहा जब सभा अनियत्रित होने लगी तो सरोजिनी की उपस्थिति और उनके प्रभाव ने काय किया। उनकी उपस्थिति से प्रसन्न होकर कृष्णनगर नगरपालिका न उनका अभिनन्दन किया।

उनके अध्यक्षपद के कायकाल मे एक गभीर परिस्थिति का उदय हुआ जिसे उन्होंने कुशलतापूवक हल कर लिया। अप्रल 1926 म साबरमती म हुए एक सम्मेलन म केन्द्रीय और प्रातीय विधानसभाआ के भीतर काग्रसजना द्वारा अपनायी जाने वाली नीति सबधी मागदशक सिद्धाता के बार म एक समझौता हो गया था तथापि मई म उस समझौते की विस्तत व्याख्या को लकर दो दलो म मतभेद उत्पन्न हो गए, इनम स एक दल का नेतृत्व मोतीलाल नेहरू और सरोजिनी कर रह थे और दूसरे का, जो अपने-आपको अनुक्रियावादी कहता था, एम० आर० जयकर, एन० सी० केलकर और डा० मुजे कर रह थे। यह मतभेद इतना उग्र हो गया कि प्रत्युत्तरवादी (रस्पासिव सहयोग) न अहमदाबाद म अखिल भारतीय काग्रस महासमिति की बैठक का बहिष्कार कर दिया, तथा तूफानी अधिवेशन के बाद प्रत्युत्तरवादियो के समथक काग्रस से अलग हो गए।

उन्हे सगठन के भीतर जिस प्रकार वैयक्तिक पडयत्रो और सघर्षों का समाधान करना पडता था उसके कारण उत्पन्न होने वाले मानसिक तनावो ने उन्ह थका दिया। वह जब कभी मानसिक दष्टि से परेशान होती तो अपन प्रिय मित्रो से शक्ति ग्रहण करती थी। जवाहरलाल नेहरू तब यूरोप म थ। सरोजिनी न कुछ गुबार उन पर उतारा। उन्होंन जवाहरलाल को लिखा 'मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है कि तुम्हें भारतीय जीवन की शीतोष्ण कटिबधीय विभीषिका से एक लबा अवकाश मिल गया। आह काश मैं भी सागर पार होती मुझे यहा दौरे करन और झगडे सुलझाने म बहुत कठिन समय बिताना पडा है । शुभरात्रि, प्रिय जवाहर। मुझे यहा इस बात की प्रसन्नता है कि

---

1 पद्मिनी सनगुप्त कृत सरोजिनी नायडू, एशिया 1966, पष्ठ 9
2 महाराष्ट्र सरकार की गोपनीय फाइलें

प्रश्न पर केंद्रित थी । कार्यसमिति के प्रस्ताव महासमिति के सामने रखे गए और उन्हें सामान्यत स्वीकार कर लिया गया । निष्कर्षत सरोजिनी को यह काम सौंपा गया कि वह दिसबर के अत म मद्रास म होने वाले काग्रेस अधिवेशन म हिंदू मुस्लिम एकता के प्रश्न पर एक प्रस्ताव पश कर ।

'प्रस्ताव क्या कहता ह ?' उ होने प्रश्न उठाते हुए सबोधन किया । 'हिंदुओ और मुसलमानो ! यह आपसे अर्थात उन लोगो स जो लज्जा जनक और दुर्भाग्यपूर्ण सघर्ष म लगे है तथा कटुता पर कटुता दगा, और शर्म पर शर्म का ढेर लगाते चले जा रहे हैं अपनी स्थिति पर विचार करने के लिए कहता है । मैं तो उन लोगो म स हू जिनके मन म साम्प्रदायिक भावना की छाया भी ढूढन म न मिलेगी । मेरी सपूर्ण मानसिक सरचना मे एसी भावनाओ क लिए कोई स्थान ही नही है । अपमान की इस घडी म भी मुझे यह कहने म गर्व होता है कि मैं एस लोगो म स हू । मुझे मालूम नही कि मैं भारतीय के अतिरिक्त और क्या हू । मेरा धर्म, मेरी आस्था समस्त सिद्धातो, जातियो और प्रजातियो स परे हैं, और मेरी आस्था यह है कि भारत क लिए एकमात्र धर्म दासता स मुक्ति का धर्म है । क्या हम उस गौरवशाली अर्थ म हिंदू और मुसलमान बनेंगे जिस अर्थ म हमारी प्राचीन सस्कृतियो की कल्पना हुई और वे चरम शिखर पर पहुची ? जब तक हम उस स्थिति को स्वीकार नही करते तब तक हम दासो के सिवाय और कुछ नही है और हम अपने आपको और भी गहरी दासता की ओर ले जा रहे है, एव अपनी इस चेतना म परिबद्ध होकर कि हम हिंदू और मुसलमान है तथा अपने लिए ऐसे अधिकारो की माग द्वारा जिनस हमारे अन्य साथी सप्रदायो को हानि पहुचती हो और उनका हनन होता हो हम अपने-आपको दासता की और भी अधिक मजबूत रस्सियो से जकडते जा रहे हैं ।'

सरोजिनी के पुराने मित्रो के अनेक सस्मरणो स यह बात स्पष्ट होती है कि उनके भीतर का 'राजनीतिज्ञ' केवल सतही था तथा उसके बहुत समीप एक उत्कृष्ट मानव हृदय धडकता था । 1928 म कलकत्ता म सर्वदलीय सम्मेलन म एक साहसी तरुण अपनी आटोग्राफ बुक (हस्ताक्षर पुस्तिका) लेकर मोतीलाल नेहरू के पास पहुचा । सरोजिनी ने जब यह देखा कि उस नवयुवक को बिना कुछ पूछे ताछे ही टाल दिया गया है तो उनका हृदय द्रवित हो गया और

तुम भारत स बाहर हो तथा तुम्हारी आत्मा को अपने यौवन और अपनी गरिमा के पुनर्जागरण तथा शाश्वत सौदय के दशन का अवसर मिल गया है*।

कानपुर काग्रस अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण म सरोजिनी ने काग्रेस के महिला विभाग की स्थापना का सुझाव रखा था। महिलाओ के प्रति उनके इस उद्बोधन स प्रभावित होकर कि महिलाओ को राष्ट्रीय गतिविधि म पूरा भाग लेना चाहिए अक्तूबर 1926 म अनक महिला सगठनो ने मिलकर अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना कर ली। यद्यपि सम्मेलन न राजनीति से अलग रहना तय किया तथापि उसने महिलाओ को स्वतत्रता, बालकल्याण, शिक्षा तथा उन समस्त कार्यों म रुचि लेनी शुरू की जो राष्ट्र के एक अभिन्न अग क रूप म महिलाओ के स्तर को ऊचा उठा सकते थे। भारतीय नारीत्व के इस पुनर्जागरण म सरोजिनी के योगदान के बारे म जितना भी कहा जाए थोडा है।

1927 क दौरान हिंदू मुस्लिम प्रश्न पर निरतर चर्चाए चलती रहीं। इसी समय बबई प्रेसीडसी से सिंध क पथक्करण की माग का विवादास्पद प्रश्न उठ खडा हुआ। यह माग मुस्लिम नता कर रहे थे तथा लाला लाजपतराय सरीखे आयसमाजी नताओ क मागदशन म हिंदू इस माग का विरोध कर रहे थ। इस प्रकार क साप्रदायिक सघष म सरोजिनी किस प्रकार निष्पक्ष रहती थी इसका प्रमाण पजाब प्रातीय मुस्लिम लीग की उस बठक की कायवाही स मिलता है जो लाहौर म पहली मई का हुई थी। उस बठक की अध्यक्षता मुहम्मद शफी न की थी। एक रिपोट क अनुसार उन्होंन बताया कि दिल्ली म मुस्लिम नताओ क इस प्रस्ताव को एक भी हिंदू समाचारपत्र न स्वीकार नही किया था। उन्होंन यह भी कहा कि सरोजिनी द्वारा प्रयत्न किय जान क बावजूद (गाधी जी) दिल्ली म स्वीकार किए गए इस निश्चित प्रस्ताव पर अपना मत प्रकट करने स बचते तथा अस्पष्ट वक्तव्य दते रहे है जिनस हिंदू लोकमत का कोई निश्चित मागदशन प्राप्त नही हुआ।

लेकिन, सरोजिनी निरुत्साहित नही हुइ और अपने सबस अधिक प्रिय लक्ष्य की पूर्ति क लिए काय करती रही। 16 मई 1927 को बबई के ताजमहल होटल क उनके कमरे म काग्रेस कायसमिति की बठक हुई। चर्चा हिंदू मुस्लिम

---

*इडियन क्वाटरली रिव्यू महाराष्ट्र खण्ड III 1927

प्रश्न पर केंद्रित थी। कायसमिति के प्रस्ताव महासमिति के सामने रखे गए और उन्हें सामान्यत स्वीकार कर लिया गया। निष्कपत सरोजिनी को यह काम सौंपा गया कि वह दिसबर के अत मे मद्रास म होने वाले काग्रेस अधिवशन मे हिंदू मुस्लिम एकता के प्रश्न पर एक प्रस्ताव पेश करे।

'प्रस्ताव क्या कहता ह ?' उ होने प्रश्न उठाते हुए सबोधन किया। 'हिंदुओ और मुसलमानो ! यह आपसे अर्थात उन लोगो स जो लज्जा जनक और दुर्भाग्यपूण सघप म लगे हैं तथा कटुता पर कटुता दगो, और शम पर शम का ढेर लगात चले जा रह है अपनी स्थिति पर विचार करन के लिए कहता है। मैं ता उन लोगा मे से हू जिनके मन मे साप्रदायिक भावना की छाया भी ढूढने से न मिलेगी। मेरी सपूण मानसिक सरचना मे ऐसी भावनाओ के लिए कोई स्थान ही नही है। अपमान की इस घडी म भी मुझे यह कहने म गव होता है कि मैं एस लोगो म स हू। मुझे मालूम नही कि मैं भारतीय के अतिरिक्त और क्या हू। मेरा धम, मेरी आस्था समस्त सिद्धाता, जातिया आर प्रजातिया स परे है, और मरी आस्था यह है कि भारत क लिए एकमात्र धम दासता से मुक्ति का धम है। क्या हम उस गौरवशाली अथ म हिंदू और मुसलमान बनेंगे जिस अथ मे हमारी प्राचीन सस्कृतिया की सकल्पना हुई और वे चरम शिखर पर पहुची ? जब तक हम उस स्थिति को स्वीकार नही करते तब तक हम दासा क सिवाय और कुछ नही है और हम अपने आपको और भी गहरी दासता की ओर ले जा रह है एव अपनी इस चेतना मे परिबद्ध होकर कि हम हिंदू और मुसलमान है, तथा अपने लिए एसे अधिकारा की माग द्वारा जिनस हमारे अन्य साथी सप्रदाया को हानि पहुचती हो और उनका हनन होता हो हम अपने-आपको दासता की ओर भी अधिक मजबूत रस्सिया स जकडत जा रह है।'

सरोजिनी के पुराने मित्रा के अनक सस्मरणा स यह बात स्पष्ट हाती है कि उनके भीतर का 'राजनीतिज्ञ' केवल सतही था तथा उसके बहुत समीप एक उत्कट मानव हृदय धडकता था। 1928 म कलकत्ता मे सवदलीय सम्मेलन म एक साहसी तरुण अपनी आटाग्राफ बुक (हस्ताक्षर पुस्तिका) लेकर मातीलाल नेहरू के पास पहुचा। सरोजिनी न जब यह देखा कि उस नवयुवक का बिना कुछ पूछे-ताछे ही टाल दिया गया है तो उनका हृदय द्रवित हो गया और

उन्होंने तुरंत हस्तक्षेप किया। वह मोतीलाल से बोलीं, 'आप एक नवयुवक को निराश नहीं कर सकते।' मोतीलाल के कानों में ज्यों ही ये शब्द पड़े त्यों ही उन्होंने चुपचाप हस्ताक्षर कर दिए। एक अन्य अवसर पर सरोजिनी नायडू गांधीजी के साथ रेलगाड़ी में यात्रा कर रही थीं उस समय उन्हें एनी बीसेंट की मृत्यु का समाचार मिला। उन्हें यह बात मालूम थी कि जमनादास द्वारकादास जीवन भर ऐनी बीसेंट के भक्त रहे हैं अतः उन्होंने गांधीजी से कहा कि यह समाचार उन्हें मैं स्वयं उनके पास जाकर दूंगी। तीन मंजिल तक सीढ़ियां चढ़कर वह ऊपर पहुंचीं और जमनादास को वहां पाकर उनसे कोमल स्वर में बोलीं जमनी, तुम्हें समाचार मिल गया।

जीवन की भली वस्तुओं के प्रति उनका प्रेम सर्वविदित है। मोटा खद्दर पहनना उनके लिए एक कठिन परीक्षा बन गया था। बाहर के समाज की तरह आश्रम में भी खूब ईर्ष्या-द्वेष था। एक बार अवंतीबाई गोखले ने गांधीजी से कहा कि सरोजिनी शुद्ध खादी नहीं पहनतीं। जमनादास ने उस घटना का वर्णन करते हुए लिखा है कि गांधीजी ने तुरंत उत्तर दिया 'सरोजिनी जो कुछ भी पहनती है वह उस वस्तु की अपेक्षा अधिक शुद्ध है जो तुम पहनती हो।' इस प्रकार गांधीजी के प्रति गहरी निष्ठा के बावजूद वह पुनः सिल्क पहनने लगीं उन्होंने स्वयं कहा है कि 'खादी के वस्त्रों में मुझे ऐसा लगता था कि मैं ठीक से कपड़े नहीं पहने हूं।' ऐसी छोटी छोटी बातों में ही वह अपने साथियों की अपेक्षा कहीं अधिक ऊंची सिद्ध होती हैं। वह कभी दास मनोवृत्ति से ग्रस्त नहीं हुईं। वह सदा मूलतः आत्मचेता रहीं। वह अपने लिए स्वयं अपना नियम थीं और आलोचनाओं से ऊपर रहीं।

प्रायः उनका तीखा व्यंग्य और हास्य कठिन अथवा खेदजनक परिस्थितियों को भी इतना हलका कर देता था कि उन्हें हंसकर टाला जा सकता था। मोटर कार दुर्घटनाएं भी उनकी असाधारण स्फूर्ति को नहीं दबा पाती थीं। एक बार एक दुर्घटना में उनको बुरी तरह चोट आ गयी लेकिन उस अवसर के बारे में भी उन्होंने यह टिप्पणी की 'यदि उस समय प्लास्टिक सर्जरी का प्रचलन होता तो मैं इतनी कुरूप न रह जाती।

1928 में एक उनको नया काम सौंपा गया। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन ने उनको अखिल प्रशांत क्षेत्रीय महिला सम्मेलन में अपनी प्रतिनिधि चुनकर होनोलूलू भेजा। सम्मेलन में भाग लेने के लिए वह अमरीका के लिए

रवाना हुई। उससे थोडा ही पहले मिस मेयो की भारत विरोधी पुस्तक 'मदर इडिया' की चारो ओर व्यापक रूप से चर्चा हुई थी अत गाधीजी ने सरोजिनी से कहा कि तुम अमरीका और कनाडा भी जाना तथा वहा इस पुस्तक के कारण भारत के बारे में जो गलत धारणाए बनी हैं उनको दूर करने की कोशिश करना। उन्होने अमरीका का प्रवास विलक्षण रीति से आरभ किया ज्यो ही वह जहाज से नीचे उतरी उनसे पहला प्रश्न यह पूछा गया कि कैथरीन मेयो के बारे मे आपके क्या विचार है? सरोजिनी ने प्रतिप्रश्न किया, 'वह कौन है?'' उसके बाद से उनकी यात्रा दिग्विजय यात्रा बन गई। उनके विनोदी स्वभाव वक्तृत्व तथा व्यक्तित्व ने पत्रकारो को सम्मोहित कर लिया तथा उनकी यात्रा और भाषणो की रिपोर्ट व्यापक तौर पर एव पूरी तरह प्रकाशित हुई। प्रभावशाली पत्र 'न्यूयार्क टाइम्स' ने टिप्पणी की, "श्रीमती नायडू व्यक्तिगत गुणो का विलक्षण मिश्रण है। राजनीतिज्ञ के रूप मे व कठोर तथा कुशल व्यवहार हो सकती हैं, ब्रिटिश शासको के नाम अतिमेत्थम जारी कर सकती हैं और अपने देशवासियो के लिए स्वराज्य की माग कर सकती हैं तथा समान मताधिकार के लिए महिलाओ के शिष्टमडलो का नतृत्व कर सकती हैं। दूसरी ओर उनके गीतो तथा उनकी कविताओ मे प्रकृति और मानवता के सौदर्य की अभिव्यक्ति हुई है। सरोजिनी नायडू घोषणा करती हैं कि अब वह समय आ गया है जब भारतीय नारी जाति के विचार उस आकाश पर आग्नेय अक्षरो मे उभरेंगे जिनकी लपटो को कोई बुझाएगा नही।" यह पौर्वात्य महिला-स्वातत्र्यवादी कहती है "हम यह बात समझ लेनी चाहिए कि यदि वस्तुओ का उच्चतर स्तर हमारी सच्ची प्रसन्नता के साथ असगत हो जाए तो हम उनके निम्नतर स्तर को स्वीकार करने के लिए तयार रहना चाहिए। पुरुष अथवा नारी का मूल्याकन उनमे से प्रत्येक अथवा दोनो द्वारा सयुक्त रूप से सजित वस्तुओ की मात्रा के आधार पर नही वरन उस सदभावना और सहानुभूति के आधार पर ही किया जा सकता है जिसके द्वारा वे उन वस्तुओ को मानवीय स्वरूप प्रदान कर सकते हैं।

इस "अमरीका यात्रा" की व्यस्तता के दौरान उन्होने नियमित रूप से अपनी बेटी को जो पत्र लिखे थे उनमे वह पूर्णतया एक मा के रूप मे प्रकट हुई है। उन पत्रो मे उन्होने उन लोगो के बारे मे स्नेहपूर्ण और मानवतापूर्ण विवरण प्रस्तुत किया है जिनसे वे यात्रा मे मिलती थी। उनमे न्यूयार्क के उस वाय भोज का उल्लेख है जिसमे वह सम्मानित अतिथि के रूप मे सम्मिलित हुई थी

वह उनको नियमित रूप से लिखती थी और गाधीजी उनके पत्रो को उतनी ही नियमितता से यग इडिया मे सराहनापूण टिप्पणियो के साथ प्रकाशित कर देते थे। उनके इन शब्दा ने कि मेरा मिशन "उस यायावर चारण जैसा है जो 'मायावी कतवारे' के सदश की व्याख्या करता फिरता है" महात्मा जी को भी निश्चय ही स्पश किया होगा। अमरीका के बुद्धिवादियो और प्रबुद्धजनो ने सरोजिनी की ओर विशेष ध्यान दिया तथापि उन्होने अमरीकी जनता के प्रत्यक स्तर तक पहुचने की कोशिश की। उन्होने विद्वानो, लेखको, राजनीतिज्ञो, उप देशको तथा विशेषत मानवजाति की सेवा करने वाले लोगो की खोज की तथा उनसे मिली। जब वे 'टाम काका की कुटिया' की लेखिका हैरियट बीचर स्टो के समकालीना के वशजो से मिली तो रोमाचित हो उठी, तथा जेन एडम्स से बात करके बहुत आह्लादित हुइ। वह शिकागो की गदी बस्तियो के बीच रुकी और उन्होने लिखा निस्सहाय, निराश मूक और धयवान शिक्षित नीग्रो लोगो की कटुता और मानसिक यातना को देखकर मेरा हृदय फटा जाता है। वह अत्यत सुसस्कृत प्रतिभाशाली उनम स कुछ अत्यत सु दर तथा सबके सब जीवन के आधुनिक विचारो के प्रामाणिक तत्वो के प्रति हार्दिक और सवेदनायुक्त सराहना की भावना स ओत-प्रोत है तथापि उनके माग मे एक जघ य अवरोध खडा कर दिया गया है। सामाजिक और आध्यात्मिक दष्टि से वह अमरीका की बहिष्कृत सतान हैं।

अमरीका की अपनी दिग्विजय यात्रा म उ होंने जो कुछ देखा उसके अधिकाश ने उनको प्रभावित किया किंतु उनकी भावना का स्पश कदाचित ही हो पाया। ऐसे ही एक विरल अवसर का वणन उन्होन न्यूयाक से अपनी बेटी पद्मजा के नाम लिखे 1 जनवरी 1929 के पत्र मे किया है

"गत रात्रि को मैं एक अदभुत नाटक—विग्स ओवर यूरोप (यूरोप पर मडराते पख)—देखकर आयी जिसने मेरे हृदय की गहरायी मे किसी तार को छेड दिया। यह एक युवा प्रतिभा की कहानी है जिसने ससार को बचाने का नुस्खा खोज लिया है और जो पुरानी पीढी के उन आत्मसतुष्ट राजनीतिज्ञो से लोहा ले रहा ह जो विश्व के हितो के विरुद्ध केवल अपन और अपन देश की सुरक्षा, सत्ता और प्रतिष्ठा की चिंता म निमग्न है और एक शक्तिशाली पडोसी के भाग्य की दिशा निर्धारित करने मे जुटे है अतत वे उसे इस आशा से गोली मार देते है कि उसकी युवा काया के

तथा जिन घटनाओ का केंद्रबिंदु वह स्वय थी उनके बारे म उ्होने छोटी बडी सभी बातें और उनक प्रति अपनी अतरग प्रतिक्रियाओ का उल्लेख किया है। एक पत्र के अत म उ्होने लिखा मरी प्यारी बच्ची मैं तुम्हें अपने हृदय का सपूण स्नेह भेजती हू जिसकी समद्धता की कल्पना भी तुम नही कर पाओगी।'

आम तौर पर लागा के मन म भारतीय नारी का जा बिब था सरोजिनी उससे बहुत भिन्न थी जिसके कारण उनके व्यक्तित्व ने उनके श्रोताओ को सम्मोहित और अभिप्ररित कर दिया। वह पूर्वी तट स पश्चिमी तट तक गइ। वह भारतीय नारी, भारतीय पुनर्जागरण तथा भारत के आध्यात्मिक चितन जसे विषयो पर ही नही बोली वरन उ्होन चुने हुए श्रोताआ क सम्मुख अपनी कविताआ का पाठ भी किया। वह जहा भी गयी वहा उनके सम्मान म भोज दिए गए। प्रख्यात यूयाक इटरनेशनल हाउस म भी वह एक सभा म बोली। वहा उनके भाषण का विषय था प्राचीन विश्व के भारत और नवीन विश्व क अमरीका के मध्य उत्तमतर सदभावना। उ्होने अपने श्रोताओ स कहा

आपके गणराज्य के सस्थापको की भाति ही आज के तरुण भारत ने ससार के सामने स्वतत्रता क घोषणापत्र का ऐलान किया है। स्वतत्रता से उनका अभिप्राय विदेशी शासन स अपने देश की राजनीतिक मुक्ति मात्र नही है वरन सामाजिक, धार्मिक सास्कृतिक तथा मनुष्य की आत्माभिव्यक्ति क लिए आवश्यक नतिक स्वतत्रता भी है। इस प्रयोजन की पूर्ति क लिए आज का भारत त्याग और अहिंसा के प्राचीन धम को पुन जगा रहा है। क्षीण काय होते हुए भी आध्यात्मिक दष्टि स हमारे युग म इस धम के महानतम जीवित प्रतीक महात्मा गाधी हैं।

इन समस्त इतर प्रवत्तिया और नए अनुभवा के बावजूद उनका मन भारत मे ही बना रहा। 1929 के नववष दिवस पर उ्होने अपनी बेटी को लिखा "इस पूर सप्ताह भर मरा मन कलकत्ता म रहा है मैं हर घडी यह जानन के लिए व्यग्र रही हू कि इतने हाथा द्वारा समुद्र मथन म से क्या निकलेगा काश मैं उस आदश सघष म सहायता देने के लिए वहा होती लेकिन खैर वह बौना आदमी वहा है और वह सब कही पर्याप्त है।

वस्तुत वह 'बौना आदमी' निरतर उनके मस्तिष्क म बसा हुआ था।

वह उनको नियमित रूप से लिखती थी और गांधीजी उनके पत्रों को उतनी ही नियमितता से यंग इंडिया में सराहनापूर्ण टिप्पणियों के साथ प्रकाशित कर देते थे। उनके इन शब्दों ने कि मेरा मिशन 'उस यायावर चारण जैसा है जो 'मायावी करतार' के संदेश की व्याख्या करता फिरता है" महात्मा जी को भी निश्चय ही स्पर्श किया होगा। अमरीका के बुद्धिवादियों और प्रबुद्धजनों ने सरोजिनी की ओर विशेष ध्यान दिया तथापि उन्होंने अमरीकी जनता के प्रत्येक स्तर तक पहुंचने की कोशिश की। उन्होंने विद्वानों, लेखकों, राजनीतिज्ञों उपदेशकों तथा विशेषतः मानवजाति की सेवा करने वाले लोगों की खोज की तथा उनसे मिलीं। जब वे 'टाम काका की कुटिया' की लेखिका हैरियट बीचर स्टो के समकालीनों के वंशजों से मिलीं तो रोमांचित हो उठीं तथा जेन एडम्स से बात करके बहुत आह्लादित हुईं। वह शिकागो की गंदी बस्तियों के बीच रुकीं और उन्होंने लिखा "निस्सहाय, निराश, मूक और धैर्यवान शिक्षित नीग्रो लोगों की कटुता और मानसिक यातना को देखकर मेरा हृदय फटा जाता है। ... वह अत्यंत सुसंस्कृत, प्रतिभाशाली, उनमें से कुछ अत्यंत सुंदर तथा सबके सब जीवन के आधुनिक विचारों के प्रामाणिक तत्वों के प्रति हार्दिक और संवेदनायुक्त सराहना की भावना से ओत प्रोत हैं तथापि उनके मार्ग में एक जघन्य अवरोध खड़ा कर दिया गया है। सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से वह अमरीका की बहिष्कृत संतान है।

अमरीका की अपनी दिग्विजय यात्रा में उन्होंने जो कुछ देखा उसके अधिकांश ने उनको प्रभावित किया किंतु उनकी भावना का स्पर्श कदाचित ही हो पाया। ऐसे ही एक विरल अवसर का वर्णन उन्होंने न्यूयार्क से अपनी बेटी पद्मजा के नाम लिखे 1 जनवरी, 1929 के पत्र में किया है

गत रात्रि को मैं एक अदभुत नाटक—विंग्स ओवर यूरोप (यूरोप पर मंडराते पंख)—देखकर आयी जिसने मेरे हृदय की गहराई में किसी तार को छेड़ दिया। यह एक युवा प्रतिभा की कहानी है जिसने संसार को बचाने का नुस्खा खोज लिया है और जो पुरानी पीढ़ी के उन आत्मसंतुष्ट राजनीतिज्ञों से लोहा ले रहा है जो विश्व के हितों के विरुद्ध केवल अपने और अपने देश की सुरक्षा, सत्ता और प्रतिष्ठा की चिंता में निमग्न हैं और एक शक्तिशाली पड़ोसी के भाग्य की दिशा निर्धारित करने में जुटे हैं अंततः वे उसे इस आशा से गोली मार देते हैं कि उसकी युवा काया के

साथ ही उसके युवा विचार और आदर्श भी मर जाएंगे। किंतु व्यर्थ। युवा मस्तिष्क की उन कल्पनाओं और उसके उस शौर्य की हत्या नहीं की जा सकती जिसमें समूचे विश्व को बचा लेने की शक्ति है। डाउनिंग स्ट्रीट (इंग्लैंड) में राजनीतिज्ञों को संबोधित करते हुए वह युवा कहता है 'मैं मानवजाति को ऊपर उठाऊंगा भले ही वह सलीब की ऊंचाई हो। मैं मानवजाति के सिर पर मुकुट रखूंगा भले ही वह मुकुट कांटों का हो।'

अगले दिन जब मुझे अमरीका में हिंदुस्तान एसोसिएशन द्वारा दिए गए भोज के अवसर पर भाषण देना पड़ा तो मैंने इन शब्दों को ही उसका मूल आधार बनाया।

दलित और गरीब दरिद्र लोगों के बाद उनका स्नेह बच्चों पर बरसता था। वह विद्यालयों में जाने और बालकों के समूहों से बातचीत करने का कोई अवसर नहीं चूकती थी। एक बार वह एक विद्यालय में गयी, उनकी वापसी के बाद प्रधानाध्यापिका ने डायरी में लिखा "क्योंकि वह अपने वास्तविक स्वरूप में थी और उनके हाथ राख के नीचे छिपे जलते हुए अंगारों को पहचानने के लिए पर्याप्त संवेदनशील थे अतः उन्होंने अंगारों पर से अनावश्यक और अनुपयुक्त आवरण को फूंक मारकर उड़ा दिया और उन (लड़कियों) में से प्रत्येक पर उनकी उपस्थिति की गरिमामंडित प्रेरणा की अनुक्रिया हुई। सरोजिनी नायडू के भाषण के पश्चात मुझसे एक एक लड़की ने कहा है 'अब मुझे गांधी यथार्थ प्रतीत होता है और मुझे यह मालूम है कि वह क्या करने की चेष्टा कर रहा है।' सरोजिनी नायडू ने इन नन्हे बच्चों के समक्ष अपने वास्तविक भाषण द्वारा भारत और महात्मा गांधी को तो सजीव कर ही दिया वह इतनी शालीन और इतनी आकर्षक थी और हमारे विद्यालय के जीवन में इतनी दिलचस्पी ले रही थी कि वह जहां भी गईं लोग उनसे मिलकर प्रसन्न हुए और चहक उठे।"

किंतु वह केवल रोमांचित ही नहीं करती थी, आघात भी पहुंचा सकती थी। एक ऐसा अवसर 'शांति के लिए मैत्री' के हेतु एक सम्मेलन के दौरान सत्तर राष्ट्रों को दिया गया भोज था। जब उन्हें पूर्व की ओर से अभिनंदन करने के लिए बुलाया गया तो उन्होंने पूछा कि भारत का झंडा कहां है? यह सुनकर श्रोता चौंक गए और लज्जित हो गए। उन्होंने आगे कहा कि जब मानव जाति

का पाचवा भाग दासता म पडा हो तब विश्वशान्ति का उपयोग ही क्या है। पराधीन भारत विश्व शान्ति के लिए खतरा सिद्ध होगा और नि शस्त्रीकरण की चर्चा मजाक मानी जाएगी। अन्त म उन्होने अलकारपूर्ण भाषा म कहा कि ' विश्व मे तब तक सच्ची शान्ति स्थापित नही हो सकती जब तक कि भारत की आशा के लाल रग, उसके साहस के हरे रग और उसकी आस्था के श्वेत रग म रगा हुआ भारत का झडा ससार के अन्य स्वातन्त्र्य प्रतीको के बीच नही फहराया जाता।

न्यूयार्क से लिखे एक अन्य पत्र स यह बात स्पष्ट रूप म ज्ञात होती है कि उन्ह किस गति स जीना पडता था

"वाशिंगटन म उच्च कूटनीतिक क्षेत्रो से अलग हटने स पहले मुझे अगले 36 घटो म असह्य गभीर और विनोदपूर्ण कार्यक्रमो की भीड म से होकर गुजरना होगा। उनम म एक लिडडा बेटटी द्वारा आयोजित समारोह है एक प्रख्यात विचारक हालिद एदिब का भाषण है एक रूमानियाई राज कुमारी सावा गोइन द्वारा दिया जाने वाला रात्रिभोज है एक खलील जिब्रान द्वारा अपने नए नाटक का पाठ है, और उसके बाद समूचे दल को उसके एकदम विपरीत रात्रिक्लब म जाना है एक चार सौ लोगो का मध्याह्न भोज है जिसम मैं प्रमुख अतिथि हू, और एक कार्यक्रम एक सघीय न्यायाधीश क घर पर दिया गया एट होम है और फिर इसी तरह एक के बाद दूसरा कार्यक्रम। यह सब 36 घटो के भीतर।"

हालिद एदिब कमाल अतातुर्क की समकालीन थी और वह सरोजिनी की प्रशसक न थी। शकर लाल और डा० अंसारी का मत है कि सरोजिनी भी हालिद से प्रभावित न थी। कुछ वर्ष बाद हालिद एदिब ने मिस्र म एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमे उन्होने श्रीमती नायडू को कट मछली अर्थात् राजनीतिक दृष्टि से महत्त्वहीन बताया और कहा कि "यदि बडी मछलियो को अकेले छोड दिया जाए तो वे मर जाती है लेकिन उनके बीच कोई कट मछली हो तो उसकी उत्तेजना से वे जीवित रह जाती हैं।'

किंतु सरोजिनी का मन कभी क्षुद्र नही रहा वह सयुक्त राज्य अमरीका की अपनी यात्रा के दौरान हालिद एदिब का भाषण सुनने गयी।

1929 मे जब वह भारत लौटी तो शारीरिक और मानसिक दृष्टि से थकी हुई थी। उनके लौटने के बाद गाधीजी ने लिखा, "पश्चिमी जगत म अनेक

विजय प्राप्त करने के पश्चात यायावर चारण घर लौट आई हैं। यह तो काल ही बताएगा कि उन्होंने वहां जो प्रभाव डाला है वह कितना स्थायी है, तथापि यदि व्यक्तिगत अमरीकी सूत्रों से आने वाली सूचनाओं को उसकी कसौटी मान लें तो यह कहा जा सकता है कि सरोजिनी देवी के काव्य ने अमरीकी मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव अंकित किया है। अपनी दिग्विजय से वह ठीक उस समय लौटी हैं जब उन्हें देश की असंख्य एवं जटिल समस्याओं के समाधान में योग देना है। ईश्वर करे कि जो सम्मोहिनी वह अमरीकियों पर सदा सफलतापूर्वक डाल सकी वह हम पर डालने में भी सफल रहें।

भारत में उनको विश्राम नहीं मिल सका। विदेश यात्रा से लौटकर उन्होंने अपना सामान मुश्किल से खोला ही था कि उनकी यात्राएं फिर से आरंभ हो गई और नवंबर 1929 में अपनी बड़ी बेटी पद्मजा को साथ लेकर वह पूर्वी अफ्रीकी भारतीय कांग्रेस की अध्यक्षता के लिए रवाना हो गईं। किंतु इस बार उन्हें अधिक समय तक बाहर नहीं रहना पड़ा और वह दिसंबर में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के लिए समय पर स्वदेश लौट आईं। उन्हें तत्काल कांग्रेस की कार्यसमिति का सदस्य बना दिया गया और वह यह देखकर बहुत प्रसन्न हुईं कि जवाहरलाल को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। उस समय वह चालीस वर्ष के थे तथा तब तक के कांग्रेस अध्यक्षों में सबसे कम उम्र के थे। उन्होंने तुरंत लिखा

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे लगता है कि कल समूचे भारत में तुम्हारे पिता का हृदय सबसे अधिक गर्वीला और तुम्हारा हृदय सबसे अधिक भारी रहा होगा। मैं अपने उन शब्दों के बारे में सोचती हुई रात काफी देर तक जगती रही जो मैंने तुम्हारे बारे में प्रायः कहे हैं कि 'एक शानदार बलिदान तुम्हारी नियति है।' मैंने तुम्हारा चेहरा देखा तो मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं अपनी आंखों से राज्याभिषेक और बलिदान दोनों एक साथ देख रही हूं। तुम्हारे इस विराट और भीषण दायित्व के निवहन में मेरी ओर से जिस प्रकार भी तुम्हारी सहायता या सेवा संभव हो उसके लिए बस तुम्हारे कहने भर की देर होगी यह तुम जानते हो। यदि मैं कोई ठोस सहायता न भी दे पाई तो मैं तुम्हें पूर्ण सद्भावना और स्नेह तो दे ही सकती हूं और यद्यपि खलील जिब्रान ने कहा है कि 'एक व्यक्ति की कल्पनाएं दूसरे व्यक्ति को पंख नहीं प्रदान कर सकती,' तथापि मुझे यह विश्वास है कि एक व्यक्ति

को आत्मा की अजेय आस्था दूसरी आत्मा के भीतर वह उज्ज्वल ज्योति जगा सकती है जिससे सारे ससार को प्रकाश मिले ।

तुम्हारी स्नेहिल मित्र और बहिन।

इसी समय सरोजिनी अखिल भारतीय महिला शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्षा चुनी गयी और 1 माच 1930 को उन्होने एक वक्तव्य द्वारा भारत की महिलाओ को इस प्रकार सबोधित किया

"मुझे आशा है कि भारत की महिलाए नारीजाति की एकता की आवश्यकता को महसूस करेंगी, क्योकि देश मे राष्ट्रीय प्रगति की सच्ची आधारशिला उसे ही बनना है। अब वह समय आ गया है जब धम, सप्रदाय पद और प्रजाति की सीमाओ को लाघकर भारत की समस्त महिलाओ को सवप्रथम और सबसे अधिक महत्वपूण मानकर समस्त सप्रदायो के बीच एकता की स्थापना द्वारा अपनी शक्ति और प्रतिभा भारत की सेवा म समर्पित करनी चाहिए।"

इस सम्मेलन क एक प्रस्ताव के अनुसार देश की महिलाओ म अशिक्षा कम करने की ओर ध्यान आकर्षित करने तथा उस दिशा मे प्रयास करने की दष्टि से महिला दिवस मनाया गया।

यह एक प्रखर सत्य है कि जब कभी साप्रदायिक समस्या के बारे म चर्चा हुई तब सरोजिनी की सलाह हमेशा मागी गयी। 21 माच, 1930 के अमृत बाजार पत्रिका म ऐसे ही एक अवसर का उल्लेख इस प्रकार किया गया है

"नेता सम्मेलन द्वारा नियुक्त की गयी साम्प्रदायिक समस्या समिति की पहली बठक कल ए०पी० पट्रो की अध्यक्षता म हुई। सरोजिनी नायडू विशेष आमत्रण पर उसम सम्मिलित हुइ। उन्होने बठक मे कहा भविष्य मे भारत सरकार चाह जो रूप ग्रहण करे, उसे औपनिवेशिक पद प्राप्त हो वह सघात्मक बने अथवा गणतत्रात्मक, मेरे विचार से भारतीय स्वाधीनता के घोषणा पत्र की प्रथम अनिवायता राष्ट्र के प्रत्यक अग की एकता है। यह एकता समस्त आवश्यक दावा और आश्वासनो के ऐसे समानतामूलक और उदार सामजस्य पर आधारित होनी चाहिए जिससे कि देश के अल्पसख्यक अपने-आपको सुरक्षित अनुभव करें। मेरा यह विश्वास चेकास्लोवाकिया सरीखे मध्य यूरोपीय देशा मे किये गए इस प्रकार के सामजस्या के हाल के ही अनुभवा से और भी अधिक पुष्ट हुआ है। यह महत्वपूण बात नही है

कि इस प्रकार के हल का यश देश म किन राजनीतिक दलो को प्राप्त होता है इडियन नेशनल काग्रेस की भूतपूव अध्यक्षा के नाते मैं यह बात जोर देकर कहती हू कि इस महान सेवा से काग्रेस के नेताओ और कायकर्ताओ को भारतीय समाज के किसी भी अय अग की अपेक्षा अधिक प्रसन्नता अथवा कृतज्ञता की अनुभूति होगी। इस काय क लिए मेरा सहयोग हमेशा और हर परिस्थिति मे उपलब्ध रहेगा क्योकि मेरी राजनीतिक आस्था की यह मूल मायता है कि भारत म राजनीतिक स्वतत्रता का एकमात्र अधिष्ठान और आश्वासन हिंदू मुस्लिम एकता म निहित है।'

1930 का काग्रेस अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता मे हुआ। वह बहुत घटनाप्रधान तो रहा ही उसे वस्तुत भारत के स्वाधीनता अभियान मे एक महत्वपूण मील का पत्थर माना जा सकता है। उस अवसर पर पहली बार पूण स्वराज्य को राष्ट्रीय लक्ष्य घोषित किया गया तथा उसकी प्राप्ति क लिए सविनय अवज्ञा और करबदी का निश्चय किया गया। उसके बाद गाधीजी आदोलन की योजना तयार करने के लिए साबरमती लौट गए। काग्रेस के समस्त नेता उनके चारो ओर एकत्र हो गए और जिस समय उहोन यह शका प्रकट की कि आन्दोलन म भाग लेने वाले लोगो ने अहिंसा क उनके सिद्धात को शायद न तो पूरी तरह स्वीकार किया है और न समझा ही है उस समय सरोजिनी उनके पास मौजूद थी।

उस समय बहुत हृदय मथन और विचार विमश हुआ और गाधीजी ने अतत उस नमक-कानून का उल्लघन करने का निश्चय किया जिसक अनुसार सरकारी अभिकरणो के अलावा दूसरे लोगो क नमक बनाने पर पाबदी थी। किंतु अपने स्वभाव के अनुसार उहाने अपन इरादा की सूचना पहले वायसराय को दी। उहोने लिखा प्रिय मित्र यद्यपि मैं ब्रिटिश शासन को अभिशाप मानता हू तथापि मैं एक भी अग्रेज अथवा भारत म किसी अग्रेज क विहित हितो को हानि नही पहुचाना चाहता।' आग जाकर उहोने कहा कि एक गरीब देश म नमक-कर साल भर म तीन दिन की आमदनी के बराबर बैठता है। उहोने वायसराय से अतिम प्राथना की कि वह ब्रिटिश शासन द्वारा किए गए अयाय का निराकरण करें और यह घोषणा कर दी कि यदि उनकी चेतावनी की उपेक्षा की गयी तो वह माच 1930 म अपना आदालन आरभ कर देंगे।

यद्यपि सराजिनी गाधीजी के उन निष्ठावान और उत्कट अनुयायियो म स

नही थी जो 12 मार्च को दाडी कूच के समय उनके साथ थे तथापि वह उस समय गाधीजी के साथ थी जब एक पूरी रात प्रार्थना मे बिताने के बाद 6 अप्रैल को गाधीजी समुद्रतट पर गए और उन्होने कुछ सूखा नमक उठाकर नमक कानून तोडा। देखने म यह काय बहुत महत्वहीन लगता था लेकिन वह इतना शक्तिशाली प्रतीक बन गया कि भावावेश मे सरोजिनी चीख उठी "मुक्तिदूत को प्रणाम"। इसके तत्काल बाद कुछ हजार स्त्री और पुरुष समुद्र म घुस गए और उन्होने गाधीजी का अनुकरण किया। सरकार सावधानी पूवक सारी स्थिति पर आख रखे हुए थी, अब वह आदोलनकारियो पर झपट पडी। पाच मई को गाधीजी गिरफ्तार कर लिए गए। उनके उत्तराधिकारी अब्बास तैयबजी का भी यही हाल हुआ तथा आदोलन का नेतृत्व सरोजिनी के कधा पर आ पडा। कुछ दिन बाद एक भेंट म उन्होने कहा कि, "अब वह समय आ गया है जब स्त्रिया स्त्रीत्व का बहाना लेकर आदोलन से अलग नही रह सकती। उन्ह देश के स्वाधीनता-सघष के खतरो और बलिदाना मे अपने पुरुष सहयोगियो के साथ बराबर का भाग लेना होगा।"

अनुमान किया जाता है कि उस समय तक नमक कानून तोडने के लिए वहा 25 हजार स्वय-सेवक इकट्ठे हो गए थे। सरोजिनी ने अस्वस्थता के बावजूद नतत्व की बागडोर सभाल ली। उन्होने स्वयसेवको से कहा कि चाहे किसी भी प्रकार की उत्तेजना हो आप शात रह तथा उनको लेकर समुद्रतट की ओर चल पडी। पुलिस ने उन्ह घरसाना नमक कारखाने के पास रोक दिया। उस अवसर का वणन उनके जीवनीकार ने इस प्रकार किया है *

"जब उन्होने यह देख लिया कि वे आगे नही बढ सकते तो वे रेतीली सडक पर बैठ गए। भरी गरमी का मौसम था और सूरज सिर पर तप रहा था। उनके चारो ओर पुलिस ने घेरा डाल रखा था और नमक के क्षेत्र के चारो ओर काटेदार तार की बाड लगा दी गयी थी। वे लोग वहा फस गए थे और न उनके पास खाना था न पानी। युवा स्वयसेवक तेज प्यास स पीडित हो रहे थे तथा उनको मानसिक यातना पहुचाने के लिए प्यासे स्वयसवको के बीच म स पानी की गाडी लायी ले जायी जा रही थी किंतु उनकी असह्य प्यास तृप्त करने के लिए एक भी बूद पानी नही दिया गया। उनके बीच सरोजिनी नायडू एक आराम-कुर्सी पर बैठी थी। वह निरतर मुस्कुराती

*सरोजिनी नायडू-ले० पद्मिनी सेनगुप्त पृष्ठ 232।

कि इस प्रकार के हल का यश देश म किन राजनीतिक दलो को प्राप्त होता है इडियन नेशनल काग्रेस की भूतपूव अध्यक्षा के नाते मैं यह बात जोर देकर कहती हू कि इस महान सेवा स काग्रेस के नेताओ और कायकर्ताओ को भारतीय समाज के किसी भी अ य अग की अपेक्षा अधिक प्रसन्नता अथवा कृतज्ञता की अनुभूति होगी। इस काय के लिए मेरा सहयोग हमेशा और हर परिस्थिति म उपलब्ध रहेगा क्योकि मेरी राजनीतिक आस्था की यह मूल मा यता है कि भारत म राजनीतिक स्वतत्रता का एकमात्र अधिष्ठान और आश्वासन हिंदू मुस्लिम एकता मे निहित है।'

1930 का काग्रेस अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता म हुआ। वह बहुत घटनाप्रधान तो रहा ही उसे वस्तुत भारत के स्वाधीनता अभियान मे एक महत्वपूण मील का पत्थर माना जा सकता है। उस अवसर पर पहली बार पूण स्वराज्य को राष्ट्रीय लक्ष्य घोषित किया गया तथा उसकी प्राप्ति के लिए सविनय अवज्ञा और करबदी का निश्चय किया गया। उसके बाद गाधीजी आदोलन की योजना तैयार करन के लिए साबरमती लौट गए। काग्रेस के समस्त नेता उनके चारो ओर एकत्र हो गए और जिस समय उ होने यह शका प्रकट की कि आदोलन म भाग लन वाले लोगो ने अहिंसा के उनके सिद्धात को शायद न तो पूरी तरह स्वीकार किया है और न समझा ही है, उस समय सरोजिनी उनके पास मौजूद थी।

उस समय बहुत हृदय मथन और विचार विमश हुआ और गाधीजी ने अतत उस नमक-कानून का उल्लघन करने का निश्चय किया जिसके अनुसार सरकारी अभिकरणो के अलावा दूसरे लोगो क नमक बनाने पर पाबदी थी। किंतु अपने स्वभाव के अनुसार उ होने अपने इरादे की सूचना पहले वायसराय को दी। उ होने लिखा प्रिय मित्र यद्यपि मैं ब्रिटिश शासन को अभिशाप मानता हू तथापि मैं एक भी अग्रेज अथवा भारत म किसी अग्रेज के विहित हितों को हानि नहीं पहुचाना चाहता। आगे जाकर उ होने कहा कि एक गरीब देश म नमक-कर साल भर म तीन दिन की आमदनी क बराबर बठता है। उ होने वायसराय स अतिम प्राथना की कि वह ब्रिटिश शासन द्वारा किए गए अ याय का निराकरण करें और यह घोषणा कर दी कि यदि उनकी चेतावनी की उपेक्षा की गयी तो यह माच 1930 म अपना आदोलन आरभ कर देंगे।

यद्यपि सरोजिनी गाधीजी के उन निष्ठावान और उत्कट अनुयायियो म स

नहीं थी जो 12 मार्च को दांडी कूच के समय उनके साथ थे तथापि वह उस समय गांधीजी के साथ थी जब एक पूरी रात प्रार्थना में बिताने के बाद 6 अप्रैल को गांधीजी समुद्रतट पर गए और उन्होंने कुछ सूखा नमक उठाकर नमक-कानून तोड़ा। देखने में यह काम बहुत महत्वहीन लगता था लेकिन वह इतना शक्तिशाली प्रतीक बन गया कि भावावेश में सरोजिनी चीख उठीं "मुक्तिदूत को प्रणाम"। इसके तत्काल बाद कुछ हज़ार स्त्री और पुरुष समुद्र में घुस गए और उन्होंने गांधीजी का अनुकरण किया। सरकार सावधानी पूर्वक सारी स्थिति पर आंख रखे हुए थी, अब वह आंदोलनकारियों पर झपट पड़ी। पांच मई को गांधीजी गिरफ्तार कर लिए गए। उनके उत्तराधिकारी अब्बास तैयबजी का भी यही हाल हुआ तथा आंदोलन का नेतृत्व सरोजिनी के कंधों पर आ पड़ा। कुछ दिन बाद एक भेंट में उन्होंने कहा कि, "अब वह समय आ गया है जब स्त्रियां स्त्रीत्व का बहाना लेकर आंदोलन से अलग नहीं रह सकतीं। उन्हें देश के स्वाधीनता-संघर्ष के खतरों और बलिदानों में अपने पुरुष सहयोगियों के साथ बराबर का भाग लेना होगा।"

अनुमान किया जाता है कि उस समय तक नमक-कानून तोड़ने के लिए वहां 25 हज़ार स्वयं-सेवक इकट्ठे हो गए थे। सरोजिनी ने अस्वस्थता के बावजूद नेतृत्व की बागडोर संभाल ली। उन्होंने स्वयंसेवकों से कहा कि चाहे किसी भी प्रकार की उत्तेजना हो आप शांत रहें तथा उनको लेकर समुद्रतट की ओर चल पड़ीं। पुलिस ने उन्हें धरसाना नमक कारखाने के पास रोक दिया। उस अवसर का वर्णन उनके जीवनीकार ने इस प्रकार किया है *

"जब उन्होंने यह देख लिया कि वे आगे नहीं बढ़ सकते तो वे रेतीली सड़क पर बैठ गए। भरी गरमी का मौसम था और सूरज सिर पर तप रहा था। उनके चारों ओर पुलिस ने घेरा डाल रखा था और नमक के क्षेत्र के चारों ओर कांटेदार तार की बाड़ लगा दी गयी थी। वे लोग वहां फंस गए थे और न उनके पास खाना था न पानी। युवा स्वयंसेवक तेज प्यास से पीड़ित हो रहे थे तथा उनको मानसिक यातना पहुंचाने के लिए प्यासे स्वयंसेवकों के बीच में से पानी की गाड़ी लायी ले जायी जा रही थी किंतु उनकी असह्य प्यास तृप्त करने के लिए एक भी बूंद पानी नहीं दिया गया। उनके बीच सरोजिनी नायडू एक आराम-कुर्सी पर बैठी थीं। वह निरंतर मुस्कुराती

*सरोजिनी नायडू—ले० पद्मिनी सेनगुप्त, पृष्ठ 232।

रही तथा अपनी सेना का उत्साह बढाती रहीं। स्वयसेवक उनके मुह से प्रसन्नतापूर्ण वार्तालाप और मजाक सुनकर चकित थे।"

अनेक विदेशी सवाददाताओ ने भी उस घटना का वर्णन किया है। एक अमरीकी पत्रकार ने लिखा था कि, "धूल भरी सडक राष्ट्रीयतावादी स्वयसेवको से भरी है जो एक महिला के चारो ओर बैठे है। वह महिला एक आरामकुर्सी मे बैठी कभी पत्र लिख रही है और कभी कात रही है। उसके और उसके अनुयायियो के सामने उतनी ही भारी सख्या म पुलिस है जो लाठियो और ब दूको से लस है।* एक अन्य सवाददाता ने लिखा प्रख्यात भारतीय कवयित्री भारी बदन की सावली, और तीखे नाक-नक्श वाली है तथा खुरदरे और गहरे रग के हाथ-बुने कपडे की ऊची साडी व चप्पल पहने है।' **

लेकिन सरोजिनी अपनी आरामकुर्सी मे बहुत देर तक नही बैठी रही। उन्होने स्वयसेवको को प्रार्थना के लिए इकट्ठा किया और उनसे कहा, "गाधीजी का शरीर जेल मे है किंतु उनकी आत्मा तुम्हारे साथ है। भारत की प्रतिष्ठा तुम्हारे हाथो म है। तुम्हे किसी भी परिस्थिति म हिंसा का प्रयोग नही करना चाहिए। तुम्हारी पिटाई की जाएगी लेकिन तुम्हें उसका प्रतिरोध नही करना चाहिए। तुम्हें घू सो स बचने के लिए हाथ तक नही उठाना चाहिए।'

सवाददाता ने आगे लिखा है कि, "उनके भाषण का स्वागत इन्कलाब जिदाबाद के नारे से हुआ तथा उनके नतृत्व म अहिंसक सेना नमक की क्यारियो की ओर बढ चली। अनेक बार जब मैं यह देखता कि पूर्णतया अप्रतिरोधी मनुष्यो को जानबूझकर कुचला और मसला जा रहा है तो मेरा मन घबरा उठता और मैं वहा म चल देता। पश्चिमी लोगो के लिए अप्रतिरोध की कल्पना को आत्मसात करना कठिन होता है। मेरे मन म लाठी चलाने वाली पुलिस के प्रति ही नही वरन् उन लोगो के प्रति भी निस्सहाय रोष और घृणा का भाव जाग उठता था जो बिना प्रतिरोध किए पिटाई के समक्ष आत्मसमर्पण किए जा रहे थे, या जब मैं भारत आया था मेरे मन म गाधीजी के प्रयोजनो के प्रति सहानुभूति थी।'

सवाददाता आगे कहता है, जिस समय हम आपस म बातें कर रहे थे उसी समय एक ब्रिटिश अधिकारी उनके (सरोजिनी के) पास पहुचा और उनकी बाह छूकर बोला 'सरोजिनी नायडू, आपको बदी बना लिया गया है।' वह

*वोमन बिहाइन्ड महात्मा पृष्ठ 58
*आई फाउंड नो पीस—ले० वैब मिलर

बूदा अथवा भूरे पीले रग के मधु के स्फटिक ताल का रूप ले लेती हैं।"

सरकार की अवज्ञा गाधीजी, सरोजिनी अथवा उनके अनुयायियो ने ही नही की। गाधीजी के नाटकीय कूच, प्रतीकात्मक काय तथा उनकी गिरफ्तारी स उत्तेजित होकर सार देश मे राष्ट्रीय विप्लव फूट पडा। हजारा लोग गिरफ्तारी के लिए सामने आ गए और शीघ्र ही जेलें ठसाठस भर गयी। मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरू अपने ही प्रात म जेल में डाल दिए गए और गाधीजी तथा सरोजिनी को पूना के समीप यरवदा में बद कर दिया गया।

जिस समय वह जेल में कष्ट पा रहे थे उसी समय महत्वपूण चर्चाए भी चल रही थी। मानवतावादी वायसराय इरविन निरतर गतिरोध समाप्त करने की चेष्टा कर रहे थे तथा उन्होन तेज बहादुर सप्रू और डा० एम० आर० जयकर का यह प्रस्ताव तुरत स्वीकार कर लिया कि काग्रेस और सरकार के बीच ऐसे समझौते की सभावनाए खोजी जाए जो दोनो को मान्य हो।

इन दोना मध्यस्थो ने यह पता लगान के बाद कि सरकार वहा तक जाने को तैयार है, यरवदा जेल म एक सम्मेलन बुलाया जिसमे गाधीजी, मोतीलाल जी, जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी तथा काग्रेस कायसमिति क एक या दो अन्य सदस्य शामिल हुए। सरोजिनी ने उस सम्मेलन के बारे म 16 अगस्त, 1930 को अपनी बेटी पद्मजा के नाम एक पत्र म अपनी विलक्षण शैली मे लिखा था

"और अब, निश्चय ही, तुम तात्कालिक समस्याओ और घटनाओ तथा व्यक्तित्वो के बार मे कुछ, सब कुछ जानना चाहोगी। शाति सम्मेलन की प्रारभिक बैठकें समाप्त हो गयी हैं। कौन जाने ये ही उसकी प्राय अतिम बैठकें सिद्ध हा। बहुत गरिमामय और सही रीति से पूरे सूट पहने हुए दोनो दूत जा चुके है तथा प्रख्यात अपराधियो और विद्रोहियो के खादीधारी झुड अपन स्थायी अथवा अस्थायी निवासो को वापस भेज दिए गए हैं। 'बौने आदमी (महात्मा गाधी) और उसके समस्त पुराने विशिष्ट साथियो के बीच असाधारण तनाव और घमासान चर्चा का विषम दौर चला। वह अब पहले से कही अधिक एक नन्ही सी विधवा सरीखा लगता है तथा अपनी चादर म सिर से पैर तक लिपटे रहते हैं जिसे मैं उनका ओपरा क्लोक (सगीत नाटिका के अवसर पर ओढा जानेवाला बुरका) कहा करती हू। वह प्रशात बुद्धिमत्ता और बालसुलभ चचलता के अपन सहज किंतु विरल मिश्रण से परिपूण थे

बूँदो अथवा भूरे पीले रग के मधु में स्फटिक लाल का रूप ले लेती हैं। "

सरकार की अवज्ञा गाधीजी, सरोजिनी अथवा उनके अनुयायियो ने ही नहीं की। गाधीजी के नाटकीय कूच, प्रतीकात्मक कार्य तथा उनकी गिरफ्तारी से उत्तेजित होकर सारे देश में राष्ट्रीय विप्लव फूट पडा। हजारो लोग गिरफ्तारी के लिए सामने आ गए और शीघ्र ही जेलें ठसाठस भर गयी। मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरू अपने ही प्रात में जेल में डाल दिए गए और गाधीजी तथा सरोजिनी को पूना के समीप यरवदा में बद कर दिया गया।

जिस समय वह जेल में कष्ट पा रहे थे उसी समय महत्वपूर्ण चर्चाए भी चल रही थी। मानवतावादी वायसराय इरविन निरतर गतिरोध समाप्त करने की चेष्टा कर रहे थे तथा उन्होने तेज बहादुर सप्रू और डा० एम० आर० जयकर का यह प्रस्ताव तुरत स्वीकार कर लिया कि काग्रेस और सरकार के बीच ऐसे समझौते की सभावनाए खोजी जाए जो दोनो को मान्य हो।

इन दोनो मध्यस्थो ने यह पता लगाने के बाद कि सरकार कहा तक जाने को तैयार है, यरवदा जेल मे एक सम्मेलन बुलाया जिसमे गाधीजी, मोतीलाल जी, जवाहरलाल नेहरू सरोजिनी तथा काग्रेस कार्यसमिति के एक या दो अन्य सदस्य शामिल हुए। सरोजिनी ने उस सम्मेलन के बारे मे 16 अगस्त, 1930 को अपनी बेटी पद्मजा के नाम एक पत्र मे अपनी विलक्षण शैली में लिखा था

'और अब निश्चय ही, तुम तात्कालिक समस्याओ और घटनाओ तथा व्यक्तित्वो के बारे मे कुछ, सब कुछ जानना चाहोगी। शाति सम्मेलन की प्रारभिक बैठकें समाप्त हो गयी हैं। कौन जाने ये ही उसकी प्राय अतिम बैठकें सिद्ध हो। बहुत गरिमामय और सही रीति से पूरे सूट पहने हुए दोनो दूत जा चुके है तथा प्रख्यात अपराधियो और विद्रोहियो के खादीधारी झुड अपने स्थायी अथवा अस्थायी निवासो को वापस भेज दिए गए हैं। 'बौने आदमी (महात्मा गाधी) और उसके समस्त पुराने विशिष्ट साथियो के बीच असाधारण तनाव और घमासान चर्चा का विषम दौर चला। वह अब पहले से कही अधिक एक नन्ही सी विधवा सरीखा लगता है तथा अपनी चादर में सिर से पैर तक लिपटे रहते हैं जिसे मैं उनका ऑपेरा क्लोक (सगीत नाटिका के अवसर पर ओढा जानेवाला बुरका) कहा करती हू। वह प्रशात बुद्धिमत्ता और बालसुलभ चचलता के अपने सहज किंतु विरल मिश्रण से परिपूर्ण थे

तथा लोगो के बारे मे समाचारपाकर बहुत प्रसन्न हुए (क्योकि उन्होने 'बा' तक से मिलना-जुलना बद कर दिया है)। वह तुम दोनो को ढेर सारा स्नेह भेजते है। उनके मन म मेरे लिए जो पक्षपातपूण भाव है उसी के कारण वह ऐसा मानते है कि मेरी गिरफ्तारी मारे आदोलन की सबसे अधिक महत्वपूण तथा अत्यधिक विश्वव्यापी महत्व की घटना है। उनकी इस भावना के कारण लोगो के मन म मुझमे बहुत ईर्ष्या होती है, किंतु इसका उनके मन मे कोई अफसोस नही है। (तुमने तो शायद कभी सोचा भी नही होगा कि तुम्हारी मा इतनी अदभुत है)।"

चर्चाए तीन दिन तक चलती रही तथा नेहरू पिता पुत्र को 16 अगस्त को नैनी जेल ले जाया गया। इसक शीघ्र बाद ही लाड इरविन ने एक गोल मेज सम्मेलन का सुझाव दिया तथा गाधीजी न दिल्ली आकर उसके बारे मे चर्चा करने का उनका निमत्रण स्वीकार कर लिया। किंतु गोलमेज सम्मेलन लदन मे 12 नवबर, 1930 को ही बुला लिया गया। उस समय तक गाधीजी और सरोजिनी जेल मे ही थे। उसम काग्रेस ने भाग नही लिया।

इसी बीच ब्रिटेन म सरकार बदल गयी तथा श्रमिक नेता श्री रेमजे मैकडॉनेल्ड प्रधानमन्त्री बने जिसके कारण ब्रिटिश सरकार की उग्रनीति म थोडी सी नरमी आ गयी। अस्वस्थता के कारण मोतीलाल नेहरू तो पहले ही जेल से छूट गए थे। जनवरी 1931 मे गाधीजी और सरोजिनी को भी रिहा कर दिया गया।

अब राजनीतिक गतिविधि के केन्द्र इलाहाबाद और दिल्ली बन गए। मोतीलाल नेहरू की मत्यु के कारण समस्त प्रमुख काग्रेस नेता उनके घर आनद भवन मे एकत्र हुए। वहा तथा दिल्ली मे ही 'दा नेकेड फकीर' के रचनाकार सर राबट बर्नेज ने सरोजिनी की कुछ मानवतापूण झाकिया देखी और उनका वणन किया है। उनकी विनोदप्रियता ने विशेप तौर पर बर्नेज का ध्यान आकर्षित किया, उ हान लिखा है "सौभाग्य की बात है कि अनेक भारतीयो म समूची गभीरता के बावजूद विनोदप्रियता भी है। मुझे एक ऐसे व्यक्ति से मिलने का अवसर मिला जिसमे यह गुण बहुत विकसित रूप मे है। ये भारतीय कवियत्री श्रीमती सरोजिनी नायडू है। हम लोगा की भेंट एक पुष्प प्रदर्शिनी म हुई जहा भारतीय और अग्रेज नस्ला के लोग अपनी भिन्नता की चेतना के बावजूद बेगोनिया के पौधा के चारा ओर बधुत्वपूवक हिलमिल रहे

बूदो अथवा भूरे पीले रंग के मधु के स्फटिक ताल का रूप ले लेती हैं।"

सरकार की अवज्ञा गाधीजी, सरोजिनी अथवा उनके अनुयायियो ने ही नही की। गाधीजी के नाटकीय कूच, प्रतीकात्मक काय तथा उनकी गिरफ्तारी से उत्तेजित होकर सारे देश मे राष्ट्रीय विप्लव फूट पडा। हजारो लोग गिरफ्तारी के लिए सामने आ गए और शीघ्र ही जेलें ठसाठस भर गयी। मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरू अपने ही प्रात मे जेल में डाल दिए गए और गाधीजी तथा सरोजिनी को पूना के समीप यरवदा में बद कर दिया गया।

जिस समय वह जेल में कष्ट पा रहे थे उसी समय महत्वपूण चर्चाए भी चल रही थी। मानवतावादी वायसराय इरविन निरतर गतिरोध समाप्त करने की चेष्टा कर रहे थे तथा उन्होने तेज बहादुर सप्रू और डा० एम० आर० जयकर का यह प्रस्ताव तुरत स्वीकार कर लिया कि काग्रेस और सरकार के बीच ऐसे समझौते की सभावनाए खोजी जाए जो दोनो को मान्य हो।

इन दोनो मध्यस्थो ने यह पता लगाने के बाद कि सरकार कहा तक जाने को तैयार है, यरवदा जेल मे एक सम्मेलन बुलाया जिसमे गाधीजी, मोतीलाल जी, जवाहरलाल नेहरू सरोजिनी तथा काग्रेस कायसमिति के एक या दो अन्य सदस्य शामिल हुए। सरोजिनी ने उस सम्मेलन के बारे म 16 अगस्त, 1930 को अपनी बेटी पद्मजा के नाम एक पत्र म अपनी विलक्षण शली मे लिखा था

"और अब, निश्चय ही, तुम तात्कालिक समस्याओ और घटनाओ तथा व्यक्तित्वो के बारे मे कुछ, सब कुछ जानना चाहोगी। शाति सम्मेलन की प्रारभिक बैठकें समाप्त हो गयी हैं। कौन जाने य ही उसकी प्राय अतिम बठकें सिद्ध हो। बहुत गरिमामय और सही रीति स पूरे सूट पहने हुए दोनो दूत जा चुके हैं तथा प्रख्यात अपराधियो और विद्रोहियो के खादीधारी झुड अपन स्थायी अथवा अस्थायी निवासो को वापस भेज दिए गए हैं। 'बौने आदमी (महात्मा गाधी) और उसके समस्त पुरान विशिष्ट साथियो के बीच असाधारण तनाव और घमासान चर्चा का विषम दौर चला। वह अब पहले से कही अधिक एक नन्ही सी विधवा सरीखा लगता है तथा अपनी चादर म सिर से पर तक लिपटे रहते हैं जिस मैं उनका ओपरा क्लोक (सगीत-नाटिका क अवसर पर ओढा जानेवाला बुरका) कहा करती हू। वह प्रशात बुद्धिमत्ता और बालसुलभ चचलता के अपने सहज किंतु विरल मिश्रण से परिपूण थे

तथा लोगो के बारे म समाचार पाकर बहुत प्रसन्न हुए (क्योकि उन्होने 'बा' तक से मिलना-जुलना बद कर दिया है)। वह तुम दोना को ढेर सारा स्नेह भेजते है। उनके मन मे मेरे लिए जो पक्षपातपूर्ण भाव है उसी के कारण वह ऐसा मानते है कि मेरी गिरफ्तारी मारे आदोलन की सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा अत्यधिक विश्वव्यापी महत्व की घटना है। उनकी इस भावना के कारण लोगो के मन म मुझसे बहुत ईर्ष्या होती है किंतु इसका उनके मन मे कोई अफसोस नही है। (तुमने तो शायद कभी सोचा भी नही होगा कि तुम्हारी मा इतनी अदभुत है)।

चर्चाए तीन दिन तक चलती रही तथा नेहरू पिता पुत्र को 16 अगस्त को नैनी जेल ले जाया गया। इसके शीघ्र बाद ही लाड इरविन ने एक गोल-मेज सम्मेलन का सुझाव दिया तथा गाधीजी ने दिल्ली आकर उसके बारे मे चर्चा करने का उनका निमत्रण स्वीकार कर लिया। किंतु गोलमेज सम्मेलन लदन मे 12 नवबर, 1930 को ही बुला लिया गया। उस समय तक गाधीजी और सरोजिनी जेल मे ही थे। उसमे काग्रेस ने भाग नही लिया।

इसी बीच ब्रिटेन मे सरकार बदल गयी तथा श्रमिक नेता श्री रेमज़े मक्डानेल्ड प्रधानमत्री बन जिसके कारण ब्रिटिश सरकार की उग्रनीति म थोडी सी नरमी आ गयी। अस्वस्थता के कारण मोतीलाल नहरू तो पहले ही जेल से छूट गए थे। जनवरी 1931 मे गाधीजी और सरोजिनी को भी रिहा कर दिया गया।

अब राजनीतिक गतिविधि के केन्द्र इलाहाबाद और दिल्ली बन गए। मोतीलाल नेहरू की मत्यु के कारण समस्त प्रमुख काग्रेस नेता उनके घर आनद भवन मे एकत्र हुए। वहा तथा दिल्ली मे ही 'दा नकेड फकीर' के रचनाकार सर राबट बर्नेज ने सरोजिनी की कुछ मानवतापूर्ण झाकिया देखी और उनका वणन किया है। उनकी विनोदप्रियता ने विशेष तौर पर बर्नेज का ध्यान आकर्षित किया, उन्होने लिखा है "सौभाग्य की बात है कि अनेक भारतीया म समूची गभीरता के बावजूद विनोदप्रियता भी है। मुझे एक ऐसे व्यक्ति से मिलने का अवसर मिला जिसम यह गुण बहुत विकसित रूप मे है। ये भारतीय कवियत्री श्रीमती सराजिनी नायडू है। हम लोगा की भेंट एक पुष्प प्रदर्शिनी म हुई जहा भारतीय और अग्रेज नस्लो के लोग अपनी भिन्नता की चेतना के बावजूद बेगोनिया के पौधा के चारो ओर बधुत्वपूर्वक हिलमिल रहे

थे। सरोजिनी नायडू तभी जेल से छूटी थी। मैंने उनसे उनके जेल के अनुभवों के बारे मे पूछा। उन्होंने कहा कि 'बहुत अच्छा' समय बीता, मैं तो छूटना ही नहीं चाहती थी, मैंने सुदर एरिथिमिस के कुछ पौधे लगाए थे और ठीक जिस समय वे फलने को हो रहे थे हमे जेल से छोड दिया गया। मैंने सिविल सर्जन से प्रार्थना की कि मुझे केवल एक दिन के लिए और रुकने की अनुमति दे दी जाए जिससे कि मैं अपने फूलो को निहार सकूं लेकिन उन्होने एकदम मना कर दिया और मुझे बाहर निकलना पडा। गाधी के बारे मे तुम्हारी क्या राय है? वह एक छोटे से भद्र व्यक्ति हैं न?' गाधीजी के बारे म ऐसे भीषण व्यग्या से उनके मित्रो का सबसे अधिक मनोविनोद होता था। वह इस बारे मे पूरी तरह परिचित थी कि महात्माजी बिडलाओ के यहा ठहरते हैं तथा एक ओर तो फटी हुई साडियो मे से आश्रमवासियो के लिए डोरी और पेटीकोट जैसी चीजें निकालने की किफायतशारी बरतते हैं दूसरी ओर बकरी के दूध से लेकर हरी पत्तियो की सब्जियो जसी सादगीपूर्ण चीजें खाते हैं जो प्राय अनुपलब्ध होती हैं अथवा बे मौसम। इसीलिए सरोजिनी ने एक बार कहा था कि गाधीजी को दरिद्र बनाए रखने के लिए एक करोडपति की आवश्यकता होती है।

दिल्ली म गाधी और इरविन के बीच चल रहा विचार विमर्श चरम बिंदु पर जा पहुचा। राबर्ट बर्नेज ने लिखा है कि सरोजिनी उसके बारे मे आशान्वित न थीं "उन्ह आशा नही है"। उन्होंने स्वय कहा 'मैंने वापस जेलयात्रा के लिए दातुन—ब्रुश पहले से ही सावधानी से लपेटकर रख छोडा है।" प्रथम गोलमेज सम्मेलन के सदस्यो के बारे म उनके कथन का बर्नेज ने इस प्रकार उल्लेख किया है। 'व लदन म महज समय काट रहे हैं, वे भारत म किसी का भी प्रतिनिधित्व नही करते। उनके प्रस्ताव अस्पष्ट और धुधले हैं। उनम स किसी के पीछे कोई अनुयायी नही है। वे लोग मधुर स्वभाव वाले शिक्षित भलेमानुस भर हैं।' बर्नेज किंचित तीखेपन स टिप्पणी करते हुए लिखते हैं "इसम कोई सदेह नही है कि सरोजिनी नायडू के इस कथन म आहत स्वाभिमान की सहज नारी-सुलभ झुझलाहट काफी मात्रा म है क्योकि जेल से लौटने पर गोलमज सम्मेलन के सदस्यो की ख्याति प्राप्त करते देखना अप्रिय तो लगता ही है, भले ही वह ख्याति कितनी भी क्षणिक क्यों न हो।"

लगभग इसी समय सरोजिनी ने इरविन और गाधी इन दोनों प्रधान नायको का वर्णन—दातविहीन महात्मा और भुजाविहीन महात्मा—इन शब्दो मे किया।

लंबी खिचने वाली उस चर्चा तथा उसके उतार-चढाव का विस्तृत विवरण यहा अपेक्षित नही है। इसके परिणामस्वरूप गाधी इरविन समझौता सामने आया तथा गाधी और सरोजिनी 29 अगस्त, 1931 को द्वितीय गोलमेज सम्मेलन मे भाग लेने के लिए जहाज द्वारा लदन को रवाना हुए। यात्रा शुरू करते समय गाधीजी ने कहा, 'मैं केवल ईश्वर के साथ लदन जा रहा हू जो मेरा एक मात्र मार्गदर्शक है। किन्तु उनके साथ साकार चल रही थी—सरोजिनी नायडू।

जैसी कि, आशा की जाती थी समुद्री यात्रा ने उनकी चमत्कारी लेखनी को पर्याप्त रगीन सामग्री प्रदान की। सदा की तरह इस बार भी उन्होने अपने बच्चो को पत्र लिखे। 'स्वेज खाडी' से "6 सितम्बर, 1931" को उन्होने एक पत्र मे लिखा

'मेरे प्यारे बच्चो ! द्वितीय श्रेणी तरुण जिज्ञासापूर्ण नेत्रो वाले छात्रो से भरी है। किंतु प्रथम श्रेणी मे प्रभाशकर पाटनी जैसे विख्यात और प्रतिभा शाली लोग हैं। वे अपनी सता जैसी धवल दाढी के पीछे काठियावाड के राज्यो मे अधिनायकवाद की आधी शताब्दी के संचित राजकौशलको छिपाए हैं। हिंदू सस्कृति, परपरा और आदर्शों के सजीव प्रतीक मनमोहक पडित मदनमोहन मालवीय है, मेधावी बहुमुखी प्रतिभा के धनी और असाधारण रूप से आकर्षक व्यक्तित्व के धनी पनिकर है गहन अनुभव और बौद्धिक गुणो से सुसपन्न उडीसा राज्यो के परामर्शदाता नियोगी है झगडालू प्रकृति के किन्तु मेधावी और असामान्य स्वाध्याय अचूक स्मृति तथा बौद्धिक शक्ति के स्वामी के०टी० शाह है घनश्यामदास बिडला है जो केसरिया रग का साफा बाधते हैं, उनकी बुद्धि तीव्र और पैनी है वित्तीय मामलो मे वह अपनी गहरी दूरदर्शिता, पूर्वानुमान और पैठ के लिए प्रख्यात हैं तथा उनमे यौवन, सपत्ति तथा सफलता का आकर्षण है। फिर शुऐब हैं जिनका व्यक्तित्व उदास किंचित त्रासमय और अधूरा रूमानी है, कठोर, गरिमाशाली, मिलनसार और चिकित्सक डाक्टर रहमान है, तथा इस तरह यह भले लोगो का समुदाय है।'

उन्होने आगे चलकर लिखा

"जो मुझे अपने ही उस व्यग्य का स्मरण दिलाता है जिसका आनद सबसे अधिक स्वय 'बौने दरिद्र नारायण' ने ही लिया। मैंने व्यग्य मे कहा था कि पडित मदनमोहन मालवीय तो हिंदू सस्कृति के प्रतीक का प्रतिनिधित्व करते

हैं और महात्माजी जिस सस्कृति (कल्चर) का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं वह केवल एग्रीकल्चर (खेती) ही सकती है।"

लदन से सरोजिनी बराबर पत्र लिखती रही उनके पत्र जहा विनोदपूर्ण होते, वहा गहन विचार से परिपूर्ण भी।

'मैं इस बौने आदमी की सनका और अस्थिर मानसिकताओ से ऊबकर सचमुच रो उठती हू। लगातार तीन मिनट तक भी वह किसी बात पर स्थिर नही रहते। बडी मुश्किल से मैंने एक ऐसा सुदर मकान तलाश कर लिया है जहा से हाइड पार्क का दृश्य दिखायी देता है और अधिकृत रूप स उन्हे वहा बसा दिया है जिससे कि वह वहा से लोगो को देख सकें लेकिन उनके मस्तिष्क म कुछ ऐसी गडबड है कि अपने प्रति अत्यत निष्ठावान मीराबहन सहित, सारे कार्यकर्ताओ की नितात नापसदगी और विद्रोह के बावजूद वह दरिद्र-बस्ती ईस्ट ऍड म चिपके हुए हैं। गाधी के प्रति जनता का दीवानापन अभी तक बना हुआ है और वह अप्रत्याशित क्षेत्रो म जाग उठता है। लेकिन कुल मिलाकर सारी व्यवस्था ऐसी कुशलता से नही की गयी है कि इस यात्रा से पूरा लाभ उठाया जा सके । मैं तो उन अधकचरे सता और प्रभावहीन देवदूतो से तग आ गयी हू जो सबके सब उनकी ओर से व्यवस्था करने की कोशिश करते हैं और विफल हो जाते हैं।"*

यद्यपि सरोजिनी नायडू इग्लैंड म सुपरिचित थी तथापि उनके व्यक्तित्व का प्रभाव कम महान न था। उसकी चर्चा मारगॅरेटा बार्न्स न अपनी पुस्तक 'इण्डिया टुडे एण्ड टुमारो मे की है। गालमेज सम्मेलन के सदस्यो का विश्लेषण करते हुए वह लिखती है कि उनमें से एक सरोजिनी नायडू है जो कवयित्री, राजनीतिज्ञ और सभी से सम्बद्ध मामलो का चलता फिरता विश्वकोश हैं तथा जिनमे उनकी अवस्था के अनुरूप बुद्धिकौशल के साथ ही एक युवती जसी जीवतता का सगम हुआ है। सरोजिनी नायडू में किसी भी अन्य भारतीय राजनीतिज्ञ की अपेक्षा वे गुण प्राय अधिक है जो अग्रेजो को रुचते हैं। जहा वह दूसरा के साथ मजाक कर सकती हैं (शैतानी से सर्वथा मुक्त नही) वही वे अपने प्रति व्यग्य करके भी श्रोताओ को लोटपोट कर सकती हैं। सरोजिनी नायडू मे हीनभाव के अस्तित्व का लेशमात्र भी सदेह नही होता तथा जब उन्हें अपने देशवासियो के

---

*पद्मजा नायडू को 23 सितम्बर, 1931 को लिखा गया पत्र

चरित्र म यह लक्षण दिखायी पड जाता है ता वह अधीर और बेकाबू हो जाती हैं। सम्मेलन की एक बैठक की समाप्ति पर वह मुडी और गाधीजी को खाजती हुई वोली, 'हमारा छोटा मिकी चूहा कहा गया ? अनायास कही गइ यह बात अविस्मरणीय है। एक अन्य अवसर पर एक प्रतिनिधि द्वितीय सदन के पक्ष म एक ही तर्क को बार-बार दोहराकर अपने साथिया का इतना ऊबाए दे रहे थे कि बात सहनशक्ति के बाहर जा रही थी। सरोजिनी नायडू ने उनसे पूछा कि "द्वितीय सदन की क्या आवश्यकता है?" और वह आगे वोली कि मैं ता "तीसरे सदन अर्थात कुछ राजनीतिज्ञा के लिए हत्यागार के पक्ष म हू ।'

सराजिनी की अपनी टिप्पणिया भी इतनी विनोदपूण रही थी।

"मुझे इससे पहले इतनी अधिक निराशाजनक और नीरस सभा म भाग लेने का कभी अवसर नही मिला। भारत मे हमने एक लम्बा "एकता और सवदलीय सम्मेलन किया था जिससे हमे बहुत ग्लानि हुई थी यह सभा उस सम्मलन की अपक्षा निकृष्ट ही सिद्ध हुई है। जो कुछ भी काम हुआ है वह निजी बातचीत के दौरान हुआ है जो काई निर्णायक रूप नही ले सकी है। यह 'बौना आदमी' हर जगह अपना प्रभाव छोडता है लेकिन यहा उसका उतना प्रभाव नही पडा जितनी कि आशा थी यदि वह अपना महान आध्यात्मिक सदेश देने के लिए निकलता तो उसने सारे विश्व पर धाक जमा ली होती लेकिन जब वह द्वितीय सदन वित्त और मताधिकार जसी बातो की चर्चा करता है तो वह हम अपने साथ पूरी तरह सहमत नही कर पाता तथा उसकी चर्चा का स्तर कानून और सविधान जानने वाले साधारणतर व्यक्ति के स्तर से भी नीचा रह जाता है।' *

लेकिन ऐसा नही है कि उन्हे वहा काम ही काम करना पडा हो और मनोरजन का अवसर न मिला हो। उन्होंने लिखा 'लेकिन इन सबके अलावा मुझे असख्य सावजनिक और व्यक्तिगत समारोहो मे भाग लेने का अवसर मिला है, जस भोजन, भाषण तथा आम उल्लासपूण मनोरजन। निश्चय ही तुम लागा ने दोना अभिनेताओ—चार्ली चपलिन और गाधीजी के चित्र देखे होंग।—चार्ली चैपलिन मुझे बहुत सरल या यो कहू कि लजीले और आकपक लगे। लेकिन सचमुच इस 'बौनेआदमी' ने उनके बारे म पहले

*पद्मजा नायडू का 23 सितम्बर, 1931 को लिखा गया पत्र

कभी कुछ नही सुना था।*

'फ्रेंड्स मीटिंग हाउस का समारोह अविस्मरणीय समारोहो मे से था। वहा उपस्थित लोगो म से एक ने लिखा है कि श्रीमती नायडू ' देशी सिल्क म शान के साथ लिपटी हुई, उन्नतग्रीवा, आचरण म गरिमामय, एक सशक्त और सुदर व्यक्तित्व नारीत्व का एक गौरवपूर्ण नमूना लग रही थी। जब वह सभागार म प्रविष्ट हुइ और अपने स्थान पर पहुची तथा अग्रेज पुरुषो और महिलाओ की खचाखच भीड से उन्होने सम्मोहक अभिनदन स्वीकार किया तब सहज ही एसा लगा कि हमारी दृष्टि के सामने कोई सम्राज्ञी खडी है। इन पक्तियो के लेखक डा० हेन्स होम्स आगे लिखते हैं कि गाधीजी के मित्रो और साथियो की सूची भारत की महानतम महिला सरोजिनी नायडू के नाम के उल्लेख के बिना अधूरी ही रह जाएगी। उनम मैं गाधीजी की उस शक्ति का पूर्ण स्वरूप देखता हू जिसके द्वारा वह मनुष्यो की आत्मा को वशीभूत कर लेते हैं तथा लोह के नहीं आत्मा के बन्धनो म बाध लेते हैं। "

हिंदू मुस्लिम एकता के प्रति उनकी उत्कट निष्ठा के कारण उस समय उनका हृदय टूट गया जब सम्मेलन की कार्यवाही के दौरान साम्प्रदायिकता का तत्व उभर कर धरातल पर आया। उस समय उन्होने कहा

' पिछला सप्ताह एक भयकर सप्ताह था उसके दौरान मैं हर घडी साप्रदायिक समस्या के हल की तलाश म चिंतातुर प्रयास करती रही जिससे कि दुनिया के सामने हमे शर्मिंदा न होना पडे। उस सप्ताह को झेलकर मैं जीवित बच गयी, यह मानव के बूते की बात नही थी मुझे लगता है कि या तो मैं अमानवीय हू अथवा देवी। लेकिन शम और दुख, सघर्ष और फूट निरतर हमारे भाग्य मे बधे है। आज की दुनिया मे इतना अधिक दुखी और भारी मन और किसी का नही हो सकता जितना कि इस प्रपीडित 'बौने आदमी' का भग्न हृदय है जिसे एक बार फिर हार खानी पडी है क्योकि उसके देश-वासी केवल दास होने योग्य ही है। दोषारोपण करने का लाभ ही क्या है जब सब दोषी हो ? परतु अतिम घडी मे विफल होने वाले मुसलमान नही थे वरन् हिंदुओ और सिखो के भय अविश्वास तथा स्वार्थ थ।' **

---

*पद्मजा नायडू को 23 सितम्बर, 1931 को लिखा गया पत्र

**पद्मजा नायडू को 8 अक्तूबर, 1931 को लिखा गया पत्र

ऐसी स्थिति मे यह आश्चर्य की बात नही मानी जाएगी कि सरोजिनी को ऐसा लगा कि उनके लिए सम्मेलन की मेज पर भाषण देने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण काय परोक्ष मे प्रमुख नायको के बीच अनौपचारिक बातचीत की व्यवस्था करना है। इस विषय मे उन्होने जो भूमिका निबाही उसकी पूरी जानकारी कभी नही मिल सकेगी। यह बात उन लोगो को ही भली प्रकार मालूम थी जो इस विषय से सबधित थे तथा वे उनकी भूमिका की भूरिभूरि सराहना भी करते थे लेकिन वे सब तो अब दिवगत हो चुके है और उस कहानी को पूरा करने के लिए हमारे पास लिखित रूप मे बहुत सामग्री नही है।

अत तक सरोजिनी खिन्न और मौन द्रष्टा बनी रही। व जिस बैठक मे बोलने के लिए खडी हुई उसे द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की अतिम बैठक ही कहा जा सकता है। यद्यपि वह स्वय अपने भाषण से पूरी तरह सतुष्ट नही थी तथापि वह हमेशा की तरह प्रभावशाली रहा।

"मुझे नही लगता कि वह भाषण कोई मेरे बहुत अच्छे भाषणो मे से था। उस वातावरण म बोला ही कैसे जा सकता था किंतु फिर भी कनल ट्रैंच बाहर आए और बोले कि 'एक भी आख सूखी नही रही जबकि हम लोगो को सुदढ व्यक्ति माना जाता है।' लाड चासलर और अटार्नी जनरल जान जोवेट, लाड लोथियन और दूसरे लोग काफी विचलित दिखाई देत थे लेकिन चालाक बूढे यहूदी लाड रीडिंग न आज मुझसे कहा 'वह एक अच्छा भाषण था, मुझे उसमे गहरी दिलचस्पी आधी लेकिन तुम मुझसे यह अपक्षा नही कर सकती कि मैं तुम्हारे समूचे भाषण से सहमत हो जाऊगा।' वस्तुत मुझे उनसे वैसी अपक्षा थी भी नही क्योंकि मैंने उनसे सत्ता के स्वैच्छिक परित्याग की उदारता प्रदर्शित करने की माग नही की थी।"*

सरोजिनी ने अपनी आवाज केवल भारत के लिए ही नही, भारत की महिलाओ के लिए भी बुलद की। आगामी राजनीतिक सुधारो मे निहित सभावनाओ को महिला सगठनो की नेताओ ने पूरी तरह पहचाना और अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, भारतीय महिला सघ और भारतीय राष्ट्रीय महिला परिषद ने अपनी आवाज को प्रभावशाली बनान का सकल्प करके एक सम्मिलित सम्मेलन बुलाया तथा तत्काल लिंग आदि के भेदभाव से मुक्त वयस्क मताधिकार

---

*पद्मजा नायडू को। दिसम्बर, 1931 को लिखा गया पत्र।

दिए जाने की मांग की। यह प्रस्ताव सभी संबंधित अधिकारियों के पास भेजा गया। सरोजिनी ने पिछले साल की जनवरी में बंबई में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए जोर देकर कहा था कि मैं नारी आंदोलनकारी नहीं हूं और मैं कभी भी वह भूमिका नहीं निबाहूंगी क्योंकि महिलाओं के लिए विशेष व्यवहार की मांग उनकी हीनता की स्वीकृति है। भारत में ऐसा कुछ रहा ही नहीं क्योंकि यहां तो महिलाएं हमेशा राजनीतिक परिषदों और रणक्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रही हैं।

गोलमेज सम्मेलन की समाप्ति होते ही उनको दक्षिण अफ्रीका जाने वाले प्रतिनिधिमंडल की सदस्या नियुक्त कर दिया गया और सरोजिनी वहां के लिए जहाज से रवाना हो गयीं।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की दुर्दशा ने ही पहले पहल गांधीजी के हृदय को इतना आलोड़ित कर दिया था कि उन्होंने अपने वकालत के दफ्तर के एकांत का परित्याग करके मानवजाति की सेवा के लिए आत्मसमर्पण कर दिया। दक्षिण अफ्रीका में ही उन्होंने पहले पहल सविनय अवज्ञा की पद्धति का मोटे तौर पर प्रयोग किया था जिसे वह भारतीय स्वाधीनता संग्राम में पूर्णता के शिखर तक ले गए।

उस सारी कहानी को यहां कहने की आवश्यकता नहीं है, इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आरंभ से ही दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने उस समझौते की भावना और शर्तों का उल्लंघन किया जिसके आधार पर अभागे भारतीय किसानों को गुमराह करके जोहांसबर्ग को सोने की उन खानों में मजदूरों की तरह काम करने के लिए ले जाया गया था जिनकी खोज उसी समय हुई थी।

भारतीय लोकमत इस प्रश्न पर पूरी तरह जागृत तथा उत्तेजित हो उठा था अतः लोकप्रियता प्राप्त करने की इच्छा से भारत सरकार ने 1927 में दक्षिण अफ्रीकी सरकार के साथ केपटाउन समझौता किया जिसके अनुसार यह तय हुआ था कि प्रवासी भारतीयों के हितों की रक्षा के लिए एक भारतीय एजेंट नियुक्त किया जाएगा। इस समझौते में यह योजना भी शामिल थी कि प्रवासी भारतीय यदि भारत लौटना चाहेंगे तो उन्हें यातायात में सहायता दी जाएगी और जो वहीं रहना पसंद करेंगे उनके सामाजिक सुधार की व्यवस्था की जाएगी। तथापि समझौता उन वर्जनाओं को दूर कराने में समर्थ सिद्ध नहीं हुआ जिनके कारण भारतीय मूल के लोग कुछ क्षेत्रों में न व्यापार कर सकते थे, न बस सकते

थे और न स्वामित्व प्राप्त कर सकते थे।

किंतु कुछ भारतीय उन प्रतिबंधों का उल्लंघन करने में सफल हो गए थे, जिसके परिणामस्वरूप दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने 1930 में ट्रांसवाल एशियाई भूमिस्वामित्व अधिनियम पारित कर दिया जिसमें यह व्यवस्था थी कि जिन भारतीयों ने जमीन पर गैर कानूनी कब्जा कर लिया है उन्हें पांच वर्षों के भीतर जगह खाली कर देनी होगी तथा अपने लिए निर्धारित क्षेत्रों में चला जाना होगा। इस अधिनियम का प्रभाव जिन भारतीयों पर पड़ रहा था वे अधिकांशतः व्यवसायी थे और यह बात जाहिर थी कि इस अधिनियम के फलस्वरूप उनके तत्कालीन व्यवसाय चौपट हो जाते और आगे भी वे लाभकारी व्यवसाय नहीं कर सकते थे क्योंकि उनके लिए पृथक् किए गए क्षेत्र व्यापार के प्रमुख केंद्रों से दूर थे।

1927 के केपटाउन समझौते विशेषतः उसकी उस धारा पर फिर से विचार करने के लिए जिसमें भारतीयों की भारत वापसी में सहायता का उल्लेख था तथा नए अधिनियम से उत्पन्न परिस्थिति का अध्ययन करने की दृष्टि से दोनों सरकारों ने यह तय किया कि द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के तत्काल बाद एक दूसरा सम्मेलन बुलाया जाए। भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व वायसराय की कार्यकारिणी परिषद के सदस्य सर फजले हुसैन ने किया। उसमें श्रीनिवास शास्त्री और सरोजिनी जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति, दो प्रमुख यूरोपियन और सचिव के रूप में गिरजाशंकर वाजपेयी थे।

इतनी महान और गंभीर संगति में भी सरोजिनी हमेशा की तरह दुर्दमनीय बनी रहीं। पहली ही बैठक में श्रीनिवास शास्त्री ने अविवेकपूर्वक यह कह दिया कि 'मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि सरोजिनी प्रतिनिधि मंडल में क्या है" यह सुनते ही सरोजिनी ने तत्काल उत्तर दिया, 'श्रीनीवास शास्त्री इस बात के लिए पछताएंगे कि उन्होंने इस बारे में सार्वजनिक तौर पर स्पष्टीकरण मांगा है। मैं यहां केवल इस कारण आयी हूं कि मेरे नेता (गांधीजी) को पौर्वात्य पुरुषों की बुद्धिमत्ता पर पूरा भरोसा नहीं था अतः उसने इस बात पर जोर दिया कि उसको पौर्वात्य महिलाओं की चिरंतन बुद्धिमत्ता से सुदृढ़ किया जाए।

प्रतिनिधिमंडल में उनकी भूमिका के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है। पत्र उन्होंने अवश्य लिखे होंगे मगर वे उपलब्ध नहीं है, समाचार पत्रों के संवादों में घटनाओं का उल्लेख मात्र है जैसे दक्षिणी अफ्रीका के प्रधानमंत्री

जनरल हटजोग द्वारा सरकारी स्वागत। प्रतिनिधिमडल ने सरकार को जो प्रतिवेदन दिया होगा वह आज तक प्रकाश म नही आया है। राष्ट्रीय अभिलेखागार म एक गोपनीय फाइल है। इसके पीछे शायद यह कारण रहा हो, जसा वतमान स्थिति से जाहिर ही है कि प्रतिनिधि मडल अधिक सफल नही रहा। किंतु उसकी यात्रा के कारण दूषित ट्रांसवाल अधिनियम कुछ सीमा तक सशोधित कर दिया गया था, अत वह कुछ तो फलीभूत रहा ही।

अध्याय 5

तूफान से पहले की खामोशी

सरोजिनी इन परिस्थितियो म दक्षिण अफ्रीका से लौटी। वे कांग्रेस काय समिति की एकमात्र सदस्या थी जो जेल स बाहर थी । अत उन्होने कांग्रेस की कायकारी अध्यक्षता का भार सभाल लिया तथा 3 माच, 1932 को जारी किए गए एक वक्तव्य मे आदोलन के लिए जनता का आह्वान किया ।

उन्होंने अपने वक्तव्य म सरकार से कडी टक्कर लेने के लिए कांग्रेस के कायकर्ताओ को बधाई दी और उन्ह बताया, "इरविन ने जसे अध्यादेश कई महीनो म जारी किए थे उनसे कही अधिक दमनकारी अध्यादेश विलिंगडन ने आदोलन के शुरू मे ही या यो कहे कि आदोलन शुरू होने के कई सप्ताह पहले ही हमारे सिर पर पटक दिए।"

उन्होने पूछा कि हमारे अहिंसक युद्ध के अढाई महीने बाद आज क्या स्थिति है ? लगभग साठ हजार महिलाए और बच्चे जेल जा चुके हैं और 1932 का विदेशी कपडे का आयात पहले की अपेक्षा भी कम हो गया। हम देख रहे हैं कि प्रदशन नियमित रूप से हो रहे है हडतालें नियमित तौर पर की जा रही है और अध्यादेशो का नियमित रूप मे उल्लघन हो रहा है। बबई पूणतया सगठित होकर युद्ध परिषद के आदेशो का परिपालन कर रहा है धमकियो और धरपकड के बावजूद एक बाजार भी ऐसा नही बचा है जिसमे हडताल होनी बद हो गई हो।

उसके पश्चात् उन्होने 6 अप्रैल से 13 अप्रैल, 1932 तक प्रदशनो और धरने

का राष्ट्रीय सप्ताह और 21 अप्रैल से 27 अप्रैल, 1932 तक डाकखानों का बहिष्कार करने के लिए डाक सप्ताह मनाने के आदेश जारी किए।

सरोजिनी का मस्तिष्क महत्वपूर्ण योजनाओं और कर्त्तव्य की भावना से भरा हुआ था, उन्होंने प्रांतीय कांग्रेस समितियों को लिखा कि वह अप्रैल के अंतिम सप्ताह में दिल्ली में कांग्रेस का अगला अधिवेशन करना चाहती हैं। अधिकांश प्रांतीय अध्यक्ष पकड़े जा चुके थे अतः आंदोलन के संचालन के लिए प्रत्येक प्रांत में अधिनायक नियुक्त कर दिए गए थे। सरोजिनी ने उनसे अनुरोध किया कि वे कांग्रेस अधिवेशन के लिए अपने प्रतिनिधियों को मनोनीत कर दें। उन्होंने यह भी सुझाव रखा कि अधिवेशन की कार्यवाही अध्यक्षीय भाषण और निम्न तीन प्रस्तावों तक ही सीमित रहेगी

1. कांग्रेस का लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य होगा।
2. कुछ विशेष परिस्थितियों में सविनय अवज्ञा को पुनर्जीवित करने से संबंधित कार्यकारिणी समिति की अंतिम बैठक के प्रस्ताव का अनुमोदन।
3. गांधीजी को कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि और प्रवक्ता के रूप में स्वीकार करना।

उनके आदेशों के अनुसार दिल्ली में एक स्वागत समिति गठित कर ली गई। सरकार ने तत्काल उसे गैर कानूनी घोषित कर दिया। दिल्ली और बंबई की सरकारों के बीच तार और पत्र भी आ गए। 4 अप्रैल, 1932 के पत्र में नई दिल्ली से लिखा गया

"सरोजिनी नायडू की गतिविधि के कारण उनको निकट भविष्य में ही किसी समय गिरफ्तार करना पड़ सकता है, इस संभावना की दृष्टि से बंबई सरकार वैसी कार्यवाही अपरिहार्य होने पर यह मान सकती है कि उसे भारत सरकार की सहमति प्राप्त है। "

बंबई के पुलिस कमिश्नर ने 8 अप्रैल, 1932 को गोपनीय अर्धसरकारी पत्र संख्या एस० डी० 2840 में लिखा

"मुझे यह निवेदन करना है कि गृहमंत्री रविवार को सवेरे होने वाले सम्मेलन में सरोजिनी नायडू की गिरफ्तारी के प्रश्न पर चर्चा करना चाहेंगे। मूलजी जेठा बाजार में स्वदेशी कक्ष के उद्घाटन के अवसर पर होने वाली कार्यवाही संभवतया उसके लिए पर्याप्त वैधानिक

आधार प्रस्तुत कर देगी। सरोजिनी नायडू को कार्यसमिति की सदस्या के नाते गिरफ्तार किया जा सकता है अथवा राष्ट्रीय सप्ताह कार्यक्रम के लिए उत्तरदायी होने के आधार पर, अथवा मूलजी जेठा बाजार के उद्घाटन के अवसर पर दिए जाने वाले भाषण के आधार पर। "

10 अप्रैल, 1932 के सम्मेलन की कार्यवाही से एक उद्धरण प्रस्तुत हैं

"इस बारे म सदेह है कि सरोजिनी नायडू पर क्रिमिनल लॉ अपराध कानून सशोधन अधिनियमके अतगत सफलतापूवक मुकदमा चलाने के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है अत यह निश्चय किया गया कि धारा 4 ई० टी० ओ० के अतर्गत उनके नाम 24 घटे के भीतर बबई छोडकर जाने का आदश जारी कर दिया जाए।"

17 अप्रैल, 1932 के सम्मेलन की कारवाई का उद्धरण

"यह निणय लिया गया कि इस महिला के विरुद्ध तब तक कारवाई न की जाए जब तक यह प्रमाणित अपराध की दोषी न पाई जाए। यह सम्भवत काग्रेस के अधिक नरम वग का प्रतिनिधित्व करती है और इसका जसा प्रभाव है उससे काग्रेस की अधिक आपत्तिजनक गतिविधियो पर अकुश लगेगा।

बबई के पुलिस कमिश्नर ने 19 अप्रैल, 1932 के पत्र मे लिखा

"ऐसा ज्ञात हुआ है कि श्रीमती सरोजिनी नायडू 22 अप्रैल को फ्रटियर मेल म दिल्ली के लिए रवाना होगी।"

समस्त प्रातीय सरकारो के नाम 19 अप्रैल, 1932 को निम्न तार भेजा गया

"सरोजिनी नायडू का इरादा आगामी 22 तारीख को बबई म दिल्ली के लिए रवाना हाने का है। भारत सरकार का विचार है कि राष्ट्रीय सप्ताह और काग्रेस के अधिवेशन के सिलसिले मे काग्रेस की कायकारी अध्यक्ष तथा कायसमिति की सदस्या की हैसियत से उनकी गतिविधि के आधार पर उनकी गिरफ्तारी और क्रिमिनल ला सशोधन अधिनियम के अतगत निश्चित आरोपो पर उनके विरुद्ध मुकदमा चलाया जाना पूरी तरह उचित हागा। इस कार्यवाही के न होने तक भारत सरकार का विचार है कि यह गिरफ्तारी आपातकालीन शक्ति अधिनियम की धारा तीन और चार के अतगत उचित होगी तथा इससे दिल्ली प्रशासन को राहत की सास मिलेगी, अथवा उनके

दिल्ली के लिए रवाना होन स पहल ही ववइ सरकार आवश्यक कायवाही कर सकती है तथा यदि वह ऐसा कर ता भारत सरकार कृतज्ञ होगी। भारत सरकार यह ठीक समझती है कि यदि सपरिषद गवनर भी उचित समझें तो उन पर किसी निश्चित आरोप क आधार पर मुकदमा चलाय जाने की स्थिति म शाही वकील को छह महीने स अधिक क दड की माग नही करनी चाहिए।'

उपयुक्त तार क सबध म ववई सरकार की फाइल म यह टिप्पणी अकित है

महामहिम को यह नात है कि सराजिनी नायडू क मामले म पुलिस कमिश्नर और मुख्य प्रेसीडसी मजिस्ट्रेट क साथ अनेक वार चर्चा हो चुकी है तथा वह इस निष्कप पर पहुच हैं कि ऐसा कोई प्रमाण नही है जिसक आधार पर यायालय श्रीमती नायडू को दडित कर सक। उहाने ववई म खुलआम जो कुछ किया और कहा है उसम स कुछ भी आपत्तिजनक नही है तथा हम बीच म ही पकड गए पत्रो की प्रामाणिकता सिद्ध नहा कर सकते और उन पर उनक हस्ताक्षर भी नही हैं। न उनको धारा 3 के अतगत कुछ दिना क लिए गिरफ्तार करने का ही कोई लाभ है क्योकि यदि उनको छोडा गया तथा पुन धारा 4 के अतगत उसके उल्लघन क आराप म पकडा गया तो व्यथ ही एक के स्थान पर दो उत्तेजनापूण खबरें समाचार पत्रो म प्रकाशित होगी। अत महामहिम का विचार है कि सही रास्ता यह है कि पुलिस कमिश्नर सरोजिनी नायडू को कल यह आदेश जारी कर दें कि वह ववई छोडकर वाहर न जाए। वह अपने कायक्रम की पहले ही घोपणा कर चुकी हैं अत वह निश्चित रूप से इस आदेश का उल्लघन करेंगी। इस स्थिति मे वे रेलगाडी म चढने के वाद ववई स अगले स्टेशन पर गाडी ठहरते ही गिरफ्तार कर ली जाएगी। इस उपाय स भारत सरकार और दिल्ली प्रशासन दोनो के प्रयोजन पूरी तरह सिद्ध हो जाएगे। दोनो यही चाहते हैं कि वे दिल्ली न पहुचने पाए।

इस निणय का समुचित रीति से पालन किया गया तथा सरोजिनी के पास शीघ्र ही निम्न पत्र पहुच गया

क्योकि मैं इस बारे मे आश्वस्त हू कि यह मानने के तकसगत कारण है कि आप सावजनिक सुरक्षा अथवा शाति के विरुद्ध काय करती रही हैं अथवा

करने वाली हैं, अत मैं, पैट्रिक कैली पुलिस कमिश्नर, बबई आपके पास यह आदेश भेजता हू कि आप सविनय अवज्ञा आदोलन को आगे बढाने से सबधित किसी कार्यवाही तथा किसी सार्वजनिक सभा मे भाग लेने स बाज आए और पुलिस कमिश्नर की अनुमति लिए बिना बबई नगर की सीमाओ को पार न करें।"

सरकार का जैसा अनुमान था सरोजिनी ने नियत्रण आदेश का उल्लघन किया। इसके बाद की घटनाओ का उल्लेख 23 अप्रैल, 1932 की एक पुलिस रिपोर्ट म इस प्रकार मिलता है

"एक छपे हुए पर्चे म जनता स कल अपील की गयी थी कि वह बबई से ट्रेन स्टेशन पर सरोजिनी नायडू को विदायी दे। उसके अनुसार 22 तारीख को शाम 6 बजे से ही लोग स्टेशन पर एकत्र होने लगे। लगभग पचास व्यक्ति प्लेटफाम पर मौजूद थे और कोई पचास ही प्लेटफाम के बाहर थे। सरोजिनी नायडू लगभग 7 बजे स्टेशन पहुची। उनको देखत ही हाल म एकत्र भीड ने इन्कलाब ज़िंदाबाद जस नारे लगाए। रेलवे पुलिस ने उन्ह शीघ्र ही खामोश कर दिया। श्रीमती नायडू सीधी अपने प्रथम श्रेणी के दो बर्थ वाले डिब्बे की ओर चली गयी तथा 7 बज कर 30 मिनट पर गाडी के छूटने तक मित्रो से बातचीत म व्यस्त रही। रवानगी के समय से थोडा पहले लाल कमीज पहने हुए काग्रेस के दो स्वय सेवक प्लेटफाम पर गए तथा काग्रेस के झडे हाथो मे लेकर उनके डिब्बे के सामने पहरे पर तैनात हो गये। जब गाडी रवाना हो गयी तो प्लेटफाम और हाल म एकत्र भीड ने सदा की तरह काग्रेस के नारे लगाए। दोनो स्वयसेवक प्लेटफाम से निकलते समय जुलूस का नेतृत्व कर रहे थ। रेलवे पुलिस ने उन्ह गिरफ्तार कर लिया।"

पूर्वनिश्चित योजना के अनुसार सरोजिनी को अगले स्टेशन बाद्रा पर गाडी रुकते ही गिरफ्तार कर लिया गया और आर्थर रोड जेल भेज दिया गया। किंतु सरकार भी उन्हें अत्यत असाधारण कैदी मानती थी। इस बारे म मीरा बहन ने लिखा है "मुझे यह मालूम ही न था कि अ श्रेणी की कैदी होने के नाते मुझे सब प्रकार की सुविधाए पाने का अधिकार था, लेकिन अब मेरी बैरक मे सरोजिनी देवी के लिए प्रथम श्रेणी का साज सामान आने लगा। इसमे एक पलग, श्रृगार की मेज जिस पर ब्रुश और कघा था, स्नान के लिए टब आदि

और परदे भी थे। मेट्रन बहुत उत्तेजित थी। उसके बाद अगले दिन सरोजिनी देवी आयी। जीवतता और वाक्पटुता उनमे से फूटकर बह रही थी। यह सच है कि वह जेल से बाहर जिस गहमा गहमी और उत्तेजनापूर्ण वातावरण मे से होकर गुजर रही थी उसने उन्हे थका दिया था लेकिन उनकी आयु के भार और उनकी व्यथा वेदना ने उन्हें कभी म्लान नही किया। *

उस जेल मे उनका निवास बहुत लबा नही रहा। शीघ्र ही उनका वहा से यरवदा की महिला-जेल मे स्थानातरित कर दिया गया जो उस पुरुष-जेल के ठीक सामने थी जिसमे गाधीजी नजरबद थे।

अभी वे दोनो यरवदा जेल मे ही थे कि 8 अगस्त 1932 को सरकार ने साप्रदायिक-निर्णय की घोषणा कर दी। यद्यपि गाधी जी ने एक पीडाजनक अनिवार्यता के तौर पर मुसलमानो के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र का सिद्धात स्वीकार कर लिया था तथापि जब इस सिद्धात को अछूतो अथवा हरिजनो पर भी लागू किया गया तो वे क्षुब्ध हो उठे। उन्होने तत्काल ब्रिटिश प्रधानमत्री को लिखा, "मुझे आपके निर्णय का प्रतिरोध अपना जीवन दाव पर लगाकर करना पड रहा है" और उन्होने प्रतिरोध स्वरूप आमरण शुरू कर दिया है।

यह ऐतिहासिक उपवास जेल मे एक सफेद पलग पर आम के पेड के नीचे शुरू हुआ। उस समय महादेव देसाई और सरदार पटेल उनके साथ थे। उपवास का आरभ प्रातकालीन प्रार्थना से हुआ। प्रार्थना के अत मे महात्मा गाधी की मधुर गायिका शिष्या रेहाना बहन तयबजी ने गाधी जी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन' गाया। दर्शनार्थियो की भीड जेल के आगन मे गाधीजी के समीप बैठने और उनके इस आत्मारोपित कष्ट मे उनके प्रति सवेदना प्रकट करने के लिए उमड पडी। सरोजिनी नायडू को तुरत जेल के महिला विभाग से वहा लाया गया तथा वहा उन्होने जो भूमिका अदा की उसका वर्णन गाधीजी के निष्ठावान सचिव प्यारेलाल ने इस प्रकार किया है

जब इन पक्तियो का लेखक 21 तारीख (21 8 32) को तीसरे पहर गाधी जी से मिलने गया तब उन्होने (सरोजिनी ने) स्वय उनके अगरक्षक के रूप मे काम करना शुरू कर दिया था। उपवास की पूरी अवधि भर वे मा की तरह उनको सभालती रही तथा सवेरे से शाम तक सतरी की

---

*दा स्पिरिटस पिलग्रिमेज—ले० मीरा बहन, पृष्ठ 161

तरह उन पर पहरा देती रही, एव मा और परिचारिका दोनो के अनुलघनीय अधिकार का उपयोग करके अपने प्रतिपाल्य (गाधीजी) तथा समूचे घर पर आतक जमाए रही। *

यह बात सर्वविदित है यद्यपि हरिजनो के सवमान्य नेता डा० अम्बेदकर ने उपवास को "एक राजनीतिक चकमा" कहा था तथापि गाधीजी की मृत्यु की आशका के कारण वे तथा कुछ हिन्दू नेता हरिजनो के राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए कोई नई योजना तयार करने का विवश हो गए थे। जब गाधीजी ने अपने क्षीण स्वर से उनके कान म फुसफुसाया, 'मेरा जीवन तुम्हारी जेब मे पडा है"** तब अम्बेदकर ने हथियार डाल दिए। यह योजना पूना पक्ट के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह दोनो पक्षो के लिए सतोषजनक थी अत ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने भी इसे स्वीकार कर लिया। जब उनका प्रयोजन सिद्ध हो गया तो गाधीजी ने कस्तूरबा, सरोजिनी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और कुछ अन्य साथियो की उपस्थिति मे थोडा सतरे का रस पीकर उपवास तोड दिया।

किन्तु सरोजिनी का दायित्व पूरा नही हो पाया था। गाधीजी उपवास के कारण बहुत दुबल हो गए थे तथा यह आवश्यक था कि मिलने के लिए आने वाले असख्य लोगो के आग्रह से उन्हे बचाया जाता। इन दर्शको म एक ईसाई मिशनरी भी था जिसने बाद म लिखा

"मैं महान कवयित्री और वक्ता सरोजिनी नायडू को देखकर अचरज म पड गया था। वह भीतर से ही घूर रही थी मानो कोई विशाल शिकारी पक्षी अपने छोटे बच्चो की रक्षा कर रहा हो। उनकी तुलना म जल के पहरेदार अधिक सौम्य प्रतीत होते थे।'

उपयुक्त पक्तियो का लेखक क्षण भर के लिए चकरा गया और यह नही समझ पाया कि पुरुषो की जेल मे सरोजिनी कैसे पहुच गई

"कुछ क्षणो तक ध्यान से देखने के बाद मुझे यह पता चला कि व सतरी को यह निणय करने म सहायता कर रही थी कि असख्य दशनार्थियो म स

*गाधी रीडर, पृष्ठ 283

**यरवदा जेल म दीघकालिक उपवास के दिनो मे जेल के अधीक्षक कनल भडारी से भेंट-वार्ता

किन को उनके वदी नेता के दशन के लिए बुलाया जा सकता है।'*

मई 1933 म गाधीजी ने फिर स घोपणा की कि वह छुआछूत के पाप के विरुद्ध आत्मशुद्धि के निमित्त 21 दिन का उपवास करेंगे। पुलिस के महानिरीक्षक कनल डायल के एक गोपनीय पत्र म इस बारे म कहा गया है

"प्रसगवशात लिख रहा हू कि आज सवेरे जब मैं सरोजिनी नायडू से मिला तो मुझे लगा कि वे इस बूढे की वदर घुडकिया स तग आ गयी हैं तथा यदि सरकार उन्हे गाधीजी स मिलने की अनुमति द द तो वह उनकी अच्छी तरह धुनाई करेंगी। मैंने उनस कहा कि आप भेंट के लिए प्राथनापत्र दे दीजिये। मेरा विचार है कि यदि वह उनस मिल लें तो अच्छा होगा क्योकि वह निश्चय ही उन पर सयतकारी प्रभाव डाल पाती हैं तथा उनकी एक विशेप भेंट ही उपवासो के प्रति उनक आकस्मिक उत्साह को अवरुद्ध कर देगी। (हस्ताक्षर) ई० ई० डायल।'

इसके बावजूद गाधीजी ने 8 मई 1933 को दोपहर के बारह बजे उपवास आरभ कर दिया। यह उपवास सरकार पर किसी प्रकार का दवाव डालने के लिए नही किया जा रहा था अत सरकार को लगा कि व्यथ ही गाधीजी की सभावित मृत्यु का दोप अपने सिर पर क्यो लिया जाए अत उसने उसी दिन शाम के समय उन्हे सरोजिनी सहित रिहा कर दिया और वे उनक कधे का सहारा लेकर जेल से बाहर आए जहा से उन्हे लेडी ठाकरसी के घर ले जाया गया। वहा कस्तूरबा और सरोजिनी ने निरतर उनकी सेवा की और उन्होने 21 दिन का उपवास पूरा कर लिया। कुछ सप्ताह रुककर जब गाधीजी म कुछ शक्ति आ गयी तो वह वर्धा के अपने आश्रम म चले गए तथा सरोजिनी न राजनीतिक काय फिर स शुरू करने के पहले कुछ समय अपने परिवार के साथ हैदराबाद म बिताया।

उन्हे उस विश्राम की बहुत आवश्यकता थी। उसके बाद सरोजिनी बबई जाकर फिर राजनीति म कूद पडी। कायसमिति की सदस्यता के साथ साथ वह अनेक वर्षों तक बबई प्रदेश काग्रेस समिति की अध्यक्षा भी रही थी। एक समय एस० के० पाटिल और आबिद अली उनके सचिव थे। स्वतत्र भारत की केंद्रीय सरकार म एस० के० पाटिल मत्रिमडल के सदस्य बने तथा आबिद अली कई

*बापू—ले० मेरी बार, पृष्ठ 24, 25 और 26

वर्षों तक भारतीय ससद म उल्लेखनीय सेवा करने के पश्चात अतर्राष्ट्रीय श्रम आदोलन मे सर्वोच्च पक्षा तक पहुचे, इसका कुछ श्रेय तो उनके मागदशक (सरोजिनी नायडू) को प्राप्त होता ही है।

गोलमेज सम्मेलन के विचार विमश के आधार पर ब्रिटिश सरकार ने 1935 का इडिया बिल तैयार किया और उसे ब्रिटिश ससद म पारित कराया। 1936 म आने वाले आम चुनावो ने महिला उम्मीदवारो के लिए क्षेत्र खोल दिया था तथा सरोजिनी ने भारत की महिलाओ को अपने से अपेक्षित नेतत्व प्रदान करने मे कभी कसर नही उठा रखी। जेल से छूटने तथा हैदराबाद मे विश्राम के लगभग तत्काल बाद ही उन्होने दिल्ली म लेडी इरविन कॉलेज की स्थापना म महत्वपूण भूमिका अदा की। अगस्त 1934 म वह महिला भारतीय सघ के समक्ष भाषण देने के लिए मद्रास गयी। तनिक सी भी ढील के लिए वह किसी को क्षमा नही कर सकती थी, उन्होने महिलाओ के सामने निम्न प्रश्न पेश करके उन्हे यथाथ का सामना करने के लिए विवश कर दिया

"क्या आपके लिए करने को कोई काम नही है ? क्या अनाथ बच्चे दया पूण सहायता के लिए नही चीख रहे हैं ? क्या शताब्दियो से विधवा का चीत्कार यह कहता हुआ काल के गलियारे के उस पार नही पहुच पाता —बीते हुए कल के गलियारे के पार ही नही, वरन आज के द्वार पर दस्तक देत हुए—कि 'हमारे साथ अन्याय हुआ है, आपकी पीढी हम हमारी दासता की स्थिति से मुक्त कराने के लिए आगे आए' ? क्या देश की अशिक्षित महिलाए मौन रूप म किंतु साथ ही स्वरापूवक आपको आवाज नही दे रही हैं ? क्या यहा गाव नही है जिन्हे अपनी स्थिति के सुधार और अपनी मात्र बुनियादी आवश्यक्ताओ की पूर्ति के लिए आपके परामश, आपके सहारे, आपके वात्सल्य और आपके मागदशन की आवश्यक्ता हो ?"

उसके बाद उन्होने अपने श्रोताओ को, जिनमे अधिक सख्या फशनेबुल महिलाओ की थी, कहा कि अब स्वदेशी आदोलन म सक्रिय भाग लेकर तथा प्रतिदिन थोडा कात कर और खादी बुनकर शब्दो से कम पर उतरना चाहिए।

"आपम से कितनो ने स्वदेशी के लालित्य और रमणीयता के बारे म सोचा है ? बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं कि स्वदेशी का अथ है अत्यत अप्रिय बुनावट और रग के कपडे पहनकर अपने आपको देखने मे पूर्णतया भोडा बना लेना, यानी वस्त्र जितना ही अधिक कुरूप हो स्वदेशी की भावना

उतनी ही ऊची मानी जाएगी । लेकिन स्वदेशी की मेरी परिभाषा इससे सवथा भिन्न है । मरे लिए स्वदशी भले ही गाधीजी क चरखे स शुरू होती है लेकिन वह वही समाप्त नही हो जाती । मेरे लिए उसका अथ है इस देश के प्रत्येक कला और कौशल को पुनर्जीवित करना जो आज मरणासन्न है । उसका अथ है प्रत्येक दस्तकार—रगरेज, कसीदाकार, सुनार, आभूपणा मे धागा बाधने वाले कलाबत्तूकार तथा घर की छोटीमोटी वस्तुए बनाने वाले—को फिर से आजीविका प्रदान करना । ये समस्त मरणासन्न उद्योग तुम्हारे हाथा के चमत्कार पूण सस्पश की राह देख रहे हैं जिससे कि उन सहस्रो लोगो को पुन आजीविका और जीवन का अवसर प्राप्त हो सके जो थोडे से अभिक्रम और थोडी सी सहायता के अभाव म आपके देश के बेरोजगार और हताश लोगो म शामिल हो गए हैं । मरे लिए यह हमारे समूचे साहित्य का पुनर्जागरण है हमारे सगीत का पुनरुद्धार है तथा स्थापत्य का एक नया दष्टिकोण है जो हमारे जीवन के आधुनिक चितन के अनुरूप है । यह मेरे लिए एक प्रकार के प्रयोग का प्रतीक बन गया है जो देश के भीतर प्रत्येक ससाधन की खोज और दोहन करगा । मेरे लिए उसका अथ है भारतीय राष्ट्रपन की आत्मा । मैं यहा राष्ट्रीयता शब्द का प्रयोग नही कर रही हू क्योकि उसमे से दूसरो से पथक होने की गध आती है, मुझे वह निहायत नापसद है । राष्ट्रवाद के आदश सजन म प्रत्येक महिला निर्मात्री है । मैं चाहती हू कि भारत की महिलाओ म इस महान और गतिमय राष्ट्रीय चेतना जागत हो जिसकी शक्तियो का सामान्य लोगो के हितो के लिए सग्रह किया जाना और उनम सामजस्य बिठलाया जाना है ।'

कुछ समय बाद सरोजिनी ने महिलाओ का पुन उदबोधन किया । कराची मे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के अधिवेशन मे बोलते हुए उन्होने पुन भारत की समस्त जातियो और ससार के समस्त राष्ट्रो क बीच एकता और सम वय के अपने सूत्र को आगे स्पष्ट किया

"भारत का आदश और उसकी प्रतिभा सदा सवसमावेशकारी रहे हैं अपवजनकारी नही, वे सावभौमिक सस्कृति और चितन पर आधारित रहे है। भारत के लोग जब विश्वगुरुओ द्वारा सिखाये गए मनुष्य की एकरूपता के मौलिक आदश को समझ जाएग तब वे ससार को युद्ध रोकने का आदेश भी दे सकेंगे । भले ही वे मदिर मे हो या मस्जिद मे गिरजाघर म या

अग्नि देवालय मे उन्हे उन बाधाओ को लाघना चाहिए जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है। लेकिन वे नारी को नारी से अलग नही कर सकते क्योकि वह स्वय सत्य का तत्व है जिस पर उसने मानवजाति की सभ्यता का निर्माण किया है ?'

उनकी उपस्थिति के लिए सवथा भिन्न क्षेत्रो से इतनी माग आती थी कि उनकी जीवनी को उनके भाषणो का सकलन बनन से रोकना एक दुष्कर काय था। उन्होने लाहौर के एक छात्र सम्मेलन मे शिक्षा के माध्यम के रूप मे अग्रेजी की पुरजोर वकालत की थी। वहा चर्चा का विषय विश्व विद्यालय सुधार के कतिपय पक्ष" था। उस चर्चा के दौरान सरोजिनी ने सकेत किया कि अग्रेजी भाषा का प्रवेश भारत की जनता के लिए वरदान सिद्ध हुआ है तथा मैकॉले ने अग्रेजी का प्रवेश कराकर भारत की महान सेवा की है। यदि हम उसका और कोई उपकार न मानें तो भी उसने कम स कम स्वतत्रता के सच्चे आदर्शों को हम तक पहुचाया है। एक सवसामान्य भाषा सभवत साप्रदायिक मतभेदा का महानतम हल है, और आज यदि भारत के लोग पेशावर से कन्याकुमारी तक एक सयुक्त स्वर मे अपनी शिकायतें पेश करने म समथ हुए है तो वह सामथ्य अग्रेजी के समान तत्व के कारण ही उत्पन्न हुई है।

विद्यार्थिया के बाद सगीतकारा की बारी आयी तथा 4 माच, 1935 को सरोजिनी ने दिल्ली मे अखिल भारतीय सगीत सम्मेलन की अध्यक्षता की। वहा उन्होंने घोषणा की, 'मैं न तो सगीतकार हू न नत्यकार। मैं तो उनकी गरीब मौसेरी बहिन हू—कवयित्री।" जीवन भर उन्हान वस्तुआ को राग अथवा चित्र, लय रग अथवा आकार मे ही ग्रहण किया था। उन्हान वहा कि मैंने उन्हे शब्दो के रूप म ग्रहण नही किया। अपन श्रोताआ का मन रजन के लिए शायद उन्होने बात को तूल देकर कहा कि शब्द सवदना के गौण माध्यम हैं। सगीत तथा नृत्य अविभाजित अथवा समग्र जीवन की चरम अभिव्यक्ति हैं। भाषा म अवरोध है तथा उसके लिए दुभाषिये की आवश्यकता हाती है लेकिन सगीत क लिए किसी की आवश्यकता नही होती।"

विद्यार्थिया और सगीतकारो के बाद कलाकारा की बारी थी। बबई म सावभौमिक कला चक्र (यूनिवसल आट सर्किल) का उद्घाटन करत हुए सराजिनी न भारतीय फिल्मा के एक विशिष्ट वग क उत्पादन की भत्सना की एव भारतीय सगीत और भारतीय स्थापत्य की उन धाराआ की निदा की जा केवल

पश्चिम की नकल करते है तथा देश के कलात्मक पक्षो को ससार की निगाहो म और स्वय भारतीयो की निगाह मे भी गिराते हैं। अभिव्यक्ति के समस्त रूपा की चरम सिद्धि सौदय है अत सौदय किसी राष्ट्र के जीवन और उसकी आत्मा का सर्वोच्च मानदड है। लेकिन उन्होने इस बात पर बल दिया कि सौदय मौलिक होना चाहिए अनुकरणात्मक नही। उन्होने यह स्वीकार किया कि सिनेमा का कला के क्षेत्र मे एक स्थान है किंतु उन्होने कहा कि जब कोई भारतीय फिल्म भगवान कृष्ण को गुलाबी गलिस पहने एक दीवान पर बैठा हुआ दिखाए जिस पर बडे बडे फूलो की छपाई वाला मोटा लिनेन बिछा हो तो उसस अधिक बेहूदापन और क्या हो सकता है ? इस भाडी नकल का ही दूसरा उदाहरण बबई की बडी बडी गोथिक इमारतें हैं।

वह वष सरोजिनी के लिए एक ऐतिहासिक काय के साथ समाप्त हुआ। इडियन नेशनल काग्रेस की स्थापना बबई म 1885 म हुई थी। 1935 म काग्रेस अपनी स्वण जयती मना रही थी। इस अवसर पर सरोजिनी ने बबई प्रातीय काग्रेस समिति की अध्यक्षा के नाते उस हाल के बाहर सगमरमर के एक स्मतिपट्ट का अनावरण किया जिसम उसकी सवप्रथम बैठक हुई थी। स्मतिपट्ट पर निम्न वाक्य खुदा हुआ था

इस हाल म 28 दिसबर, 1885 को वीर देशभक्तो के एक दस्ते न इडियन नेशनल काग्रेस की नीव डाली जो इन 50 वर्षों मे असख्य पुरुषो और महिलाओ की आस्था और भक्ति तथा उनके साहस और बलिदान के आधार पर इट दर इट और मजिल दर मजिल अपनी मातृभूमि भारत के लिए उसके वैधानिक जन्मसिद्ध अधिकार स्वराज्य की प्राप्ति के अजेय प्रयोजन के संकल्प और प्रतीक के रूप म निर्मित हुई है।"

यद्यपि 1935 का वष सरोजिनी के लिए निरतर प्रवास और भाषणो का वष रहा तथा उसने उनकी शारीरिक शक्ति का बहुत दोहन किया तथापि वह आगे आने वाले वर्षों की तुलना म मानसिक और भावनात्मक दृष्टि स बहुत शातिपूर्ण वष था। रक्त सबध का छोडकर अन्य सभी अर्थों म वह नेहरू परिवार की सदस्या बन गयी थी अत कमला नेहरू की अतिम बीमारी और 1936 के आरभ म उनके देहावसान से इनको गहरी व्यथा हुई। गोलमज सम्मेलन की चर्चाओ म स निष्पन्न नए भारत सरकार अधिनियम के कारण भी बहुत ही कठिन और मौलिक प्रकार क राजनीतिक निणयो की आवश्यकता उत्पन्न हो

का रास्ता मेरे रास्ते से मेल नहीं खाता । भूमि आदि के बारे में मुझे उनके आदर्श स्वीकार हैं लेकिन मुझे उनका प्राय कोई भी तरीका पसद नहीं है । मैं वगराघप को रोकने की पूरी कोशिश करूगा । जवाहरलाल ऐसा नहीं मानते कि उससे वचन का कोई मार्ग हो सकता है । मेरा मत है कि यदि मेरी रीति-नीति स्वीकार कर ली जाए तो यह पूर्णतया सभव है ।

दरबारी विदूषक सरोजिनी भी उन्हें इस मानसिक तनाव से नहीं उबार सकी । सरोजिनी नायडू ने जवाहरलाल नेहरू को लिखे अपने 13 नवम्बर, 1937 के पत्र में अपनी विफलता स्वीकार की है

'मेरे परम प्रिय जवाहर

यह पत्र मैं तुम्हें बेवेल की मीनार के आधुनिक संस्करण से लिख रही हूं । बौना आदमी' निरपेक्ष भाव से बैठा हुआ पालक और उबली हुई गाजर खा रहा है उधर जगत उसके इर्द गिर्द उतार चढ़ाव के साथ बहता जा रहा है तथा बगाली गुजराती अंग्रेजी और हिन्दी में फूट पड़ती है । विधान और उसके साथी उसके स्वास्थ्य के प्रति उसकी हठपूर्ण लापरवाही के कारण निराश है । वह सचमुच बीमार है उसकी भुरभुरी हड्डिया और पतले होते जाते रक्त में ही रोग नहीं है उसकी आत्मा का अतरतम भी अस्वस्थ है वह अपने युग का सबसे अधिक अकेला और त्रस्त व्यक्ति है भारत का भाग्य विधाता अपने ही नाश के कगार पर खड़ा है ।

तुम भारत के दूसरे भाग्य विधाता हो तुम्हें मैं जन्मदिन की बधाई भेज रही हूं आने वाले वर्ष में तुम्हारे लिए क्या कामना करूं ? सुख ? शांति ? विजय ? मनुष्यों को ये वस्तुएं अत्यधिक प्रिय होती हैं लेकिन तुम्हारे लिए इनका स्थान गौण है लगभग प्रासंगिक मेरे प्रिय मैं तुम्हारे लिए अटूट आस्था और तुम्हारे उस उत्पीड़न भरे मार्ग में उत्कट साहस की कामना करती हूं जिस मार्ग पर स्वतंत्रता का अनुसरण करने वाले सभी साधकों को अग्रसर होना पड़ता है और जिसे वे जीवन की अपेक्षा अधिक बहुमूल्य मानते हैं व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं वरन समूचे राष्ट्र की बंधन मुक्ति । उस दुर्गम और जोखिम भरे मार्ग पर सीना तानकर चलते चले जाओ । यदि तुम्हारे भाग्य में दर्द, अकेलापन और दुख बदे हो तो याद रखना कि

तुम्हारे समस्त बलिदानो की चरम परिणति स्वतन्नता मे होगी लेकिन तुम अपने आपको अकेला नही पाओगे ।

तुम्हारी
सरोजिनी"*

सरोजिनी की सामान्य व्यथा को एक और घटना ने बहुत बढा दिया। भले ही दूर क्षितिज पर स्वतन्नता के विहान के धु धले सकेत प्रकट हो रहे थे तथापि उन्हें लग रहा था कि हिंदू मुस्लिम एकता के उनके स्वप्न, उनकी आशाए और जीवन भर के प्रयास अतत विफलता की ओर बढ रहे हैं। नई संविधा निक योजना के अतगत मुस्लिम लीग न भी चुनावो म भाग लिया तथा जिन्ना ने विभाजन की पूर्वकल्पना के आधार पर समानता की माग की। उन्होने प्राता म काग्रेस मुस्लिमलीग मिश्रित सरकारो की स्थापना की माग की जिसे अति आत्मविश्वासी जवाहरलाल नहरू न अस्वीकार कर दिया। यहा से दोनो सम्प्रदायो के बीच की खाई इतनी चौडी होती चली गई कि उसे कभी पाटा ही नही जा सका। उनके मन पर सबसे वडा घाव यह था कि साम्प्रदायिक एकता के प्रयत्ना म उनके पुराने मित्र और उनके सहकर्मी जिन्ना ही उनके उन आदर्शों के घोरतम विरोधी बन गए थे जिनके लिए वह मैदान मे डटी रही तथा काम करती रही। लेकिन, अतिम क्षण तक न उन्होने आशा का परित्याग किया न प्रयास ही छोडा।

अतरतम तक मानवतावादी सरोजिनी नायडू यूरोप के आकाश पर उमडते युद्ध के बादलो को उदास चित्त से देखती रही। भारतीय लोकमत म्यूनिख सधि के उसी प्रकार विरुद्ध था जिस तरह काग्रेस के नेता अधिनायकवाद के सपूर्णत विरोधी थे। किन्तु सुभाषचन्द्र बोस इस सिद्धात म विश्वास करते थे कि मेरे शत्रु का शत्रु मेरा मित्र होता है अत वह गाधी जी के चारो ओर एकत्र मध्यम-मार्गियो और जवाहरलाल नहरू को नेता मानने वाले समाजवादियो के विरोधी बन गए।

यह सघर्ष मार्च 1939 मे त्रिपुरी के काग्रेस अधिवेशन म अध्यक्ष पद के मुद्दे पर उभरकर सामन आ गया। अधिवेशन की पूर्वसध्या मे गाधी जी के उपवास, सुभाषबाबू की बीमारी और उस सब घात प्रतिघात की गाथा काग्रेस

---

*ए बच ऑफ ओल्ड लैटस, पृष्ठ 225

के किसी भी इतिहास म मिल जाएगी जिसक परिणामस्वरूप सुभापवावू काग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित हो गए, अत यहा उसक विस्तत वणन की आवश्यकता नही है । किन्तु उसके वाद जो द्वन्द्व आरम्भ हुआ उसने सरोजिनी नायडू को तूफान के वीच म लाकर खडा कर दिया । सुभापवावू के निर्वाचन की घोपणा होते ही गाधीजी ने अप्रत्याशित रूप से यह घोपणा कर दी कि सुभाप के प्रतिद्वन्द्वी की पराजय मेरी ही पराजय है । उधर काग्रेस के खुले अधिवेशन म प्रतिनिधियो के वहुमत के समथन के वल पर सुभापवावू विजयी तो हो गए थे लेकिन अखिल भारतीय काग्रेस महासमिति म उनके समथक अल्पसख्या म थे । इन दोना परिस्थितियो ने अनिणय के वातावरण का निर्माण कर दिया । इसी समय गोविदवल्लभ पत और काग्रेस महासमिति के लगभग 160 सदस्या ने एक प्रस्ताव द्वारा गाधीजी के नेतत्व म आस्था प्रकट की तथा अध्यक्ष के नाते सुभापवावू स प्राथना की कि वह नई कायसमिति गाधीजी की इच्छा के अनुसार मनोनीत करें। इस प्रस्ताव को आम तौर पर सुभापवावू के प्रति अविश्वास का प्रतीक माना गया । परिणामत गतिरोध उत्पन्न हो गया और नई कायसमिति का मनोनयन नही हो सका । दूसरी महत्वपूण घटना अप्रैल 1939 म काग्रेस महासमिति के कलकत्ता अधिवेशन के समय हुई । सुभापवावू अस्वस्थ थ और उन्हें यह महसूस हो रहा था कि वह कागेस अध्यक्ष के रूप म काम नही कर पाएगे अत उन्होने त्यागपत्र देने की इच्छा प्रकट की किन्तु जवाहरलालनहरू नेएक समझौता प्रस्ताव तैयार किया जिसम सुभापवावू से कहा गया था कि वह अध्यक्ष के पद पर वन रहे तथा पुरानी कायसमिति को ही वनाए रखे ।

इस प्रस्ताव पर विचार करन के लिए जव अधिवेशन शुरू हुआ तो सुभाप वावू पहले ही त्यागपत्र दे चुके थे अत उन्होने अधिवशन की अध्यक्षता करन से इकार कर दिया । कलकत्ता म सुभाप वावू के समथक प्रवल थ अत इस गति-रोध का कोई हल नही निकल सका तथा सवेर का अधिवेशन अनिश्चय की स्थिति म समाप्त हो गया । लेकिन शाम के अधिवेशन म सरोजिनी वीच म कूद पडी और उन्होने अध्यक्ष की कुरसी सभाल ली । उन्होन उत्तेजित प्रतिनिधियो को दृढता और शाति के साथ नियत्रण म रखा और सुभापवावू स कहा कि आपको जो कुछ कहना है कहिए । सुभापवावू न कहा कि मैं सक्रियता क लिए एकता चाहता हू निष्क्रियता क लिए नही ।' उसक लिए एक सामजस्यपूर्ण और

समन्वित कार्यसमिति आवश्यक थी। यदि उन्हें मनपसंद कार्यसमिति की छूट न दी जाती तो वह अध्यक्षता की जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं।

तब सरोजिनी ने उनसे सीधे प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि "हम सब यह चाहते हैं कि सुभाषचन्द्र बोस अध्यक्ष बने रहें तथा कांग्रेस के भविष्य का मार्ग दर्शन करें। हम उनके साथ सहयोग करना चाहते हैं। हम अपने साथ उनके सहयोग की कामना करते हैं हम यह कहना चाहते हैं कि कांग्रेस का अध्यक्ष अस्तित्वहीन नहीं होता। वह कांग्रेस की नीति और प्रगति का सच्चा प्रवक्ता होता है। हम अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए सुभाषचन्द्र बोस को आवश्यक सहयोग देंगे। उसके बाद उन्होंने आशा व्यक्त की कि जवाहरलाल नेहरू का समझौता प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया जाएगा, और सुभाष बाबू को इस मामले पर विचार करने के लिए समय देने की दृष्टि से अधिवेशन को अगले दिन तक के लिए स्थगित कर दिया।

लेकिन, अगले दिन सवेरे सुभाषबाबू अपनी स्थिति पर डटे रहे। अतः महासमिति के सामने नए अध्यक्ष का चुनाव करने के सिवाय दूसरा कोई मार्ग नहीं बचा। उस समय यह मुद्दा उठाया गया कि महासमिति को अध्यक्ष के निर्वाचन का अधिकार नहीं है, लेकिन सरोजिनी इस प्रकार की कानूनी आपत्ति से डरने वाली न थी। उन्होंने घोषणा कर दी कि, "मेरा विचार है कि यह सदन इस वर्ष की शेष अवधि के लिए अपना अध्यक्ष निर्वाचित करने में वैधानिक दृष्टि से समर्थ है।" उनका यह स्वैच्छिक निर्णय यद्यपि सही मायने में सांवैधानिक नहीं था तथापि उसे आम स्वीकृति प्राप्त हो गई और डॉ० राजेन्द्रप्रसाद को नया अध्यक्ष चुन लिया गया।

अध्याय 6

स्वतन्त्रता और उसके पश्चात्

एक ओर तो काग्रेस के भीतर अनिश्चितता का वातावरण चल रहा था दूसरी ओर यूरोप म चल रहे युद्ध के कारण उपन नई परिस्थितिवश विभिन्न दिशाआ म तनाव उत्पन्न हो रहे थे। ऐसी स्थिति म सरोजिनी नायडू शाति स्थापना का काय करती रही। उनके लिए भारत स बाहर युद्ध और मानव-जाति का कष्ट तथा भारत की पीडा के बीच कोई अतर नही था। एसे समय पर न तो सरोजिनी और न गाधीजी ही स्वाथ की दष्टि से सोच सकते थे। राजनीतिक दष्टि स इस बारे म सदेह नही कि स्वतत्रता के सेनानी अपन हित के लिए उस इग्लड पर दबाव डाल सकते थ तथा उसक साथ सौदेबाजी कर सकते थे जिसको आगामी चार वर्षों म प्राय घुटने टेक देने की स्थिति का सामना करना था। वे दोना यह बात जानते थे कि सस्त सौदे सस्ती और अस्थायी विजय को ही जन्म देते हैं। अतत मानव जीवन म केवल सिद्धात पर्याप्त नही होते वरन उच्च सिद्धाता की आवश्यकता होती है यानी बुनियादी भलमन साहत की।

उत्तरी अरकाट जिला काग्रेस के सम्मेलन का उदघाटन करते हुए सराजिनी नायडू ने कहा 'इग्लड आज ससार स कट गया है लेकिन हम भारत क लोग उसके साथ जुडे हैं और हम उन इग्लैंडवासियो के साथ भी जुडे हैं जा स्वतत्रता के लिए युद्ध कर रहे हैं और भारत के खतरे ने इग्लड के

खतरे को दुगुना कर दिया है। यदि ब्रिटिश राजनीतिज्ञ ने इस बात को पहले ही समझ लिया होता तो इग्लैण्ड को नाजी आक्रमण के विरुद्ध युद्ध करने मे भारत का पूर्ण समर्थन प्राप्त होता। काग्रेस इस समय ऐसा कोई काम नही करना चाहती जिससे ब्रिटिश सरकार को परेशानी हो, वह केवल यह घोषणा चाहती है कि भारत को युद्ध के उपरात स्वतत्रता प्रदान कर दी जाएगी। यदि यह घोषणा अब तक कर दी गई होती तो ब्रिटेन की कठिनाइया बहुत बडी सीमा तक दूर हो गई होती क्योकि उस भारत का अधिकतम समर्थन प्राप्त हो जाता।'

1940 म काग्रेस कार्यसमिति की पूणे बैठक म दो प्रस्ताव पारित किए गए जिनमे स्वतत्रता-प्राप्ति के सही साधन के रूप म अहिंसा म आस्था को दोहराया गया तथा उस समय यूरोप मे नाजीवाद और लोकतत्र क बीच चल रहे युद्ध मे लोकतन्त्र के प्रति भारत का हार्दिक समर्थन व्यक्त किया गया। प्रस्ताव मे कहा गया कि यद्यपि भारत लोकतत्रात्मक देशो के युद्ध प्रयासो म तब तक भाग नही ले सकता जब तक कि वह उसम समानता और स्वतत्रता के आधार पर उनका साथी न बन जाए तथापि वह मित्रराष्ट्रो के युद्ध प्रयासो म किसी प्रकार की बाधा नही डालेगा। अबुल कलाम आजाद उस गुट का नेतृत्व कर रहे थे जो ऐसा मानता था कि भारत को युद्ध के प्रयास म पूरा समर्थन तथा मित्रराष्ट्रो का साथ देना चाहिए। लेकिन गाधीजी इस बात पर दृढतापूर्वक डटे रहे कि भारत अहिंसा स प्रतिबद्ध है अत वह युद्ध म भाग नही ल सकता। प्रथम विश्वयुद्ध म उन्होने एम्बुलेंस कोर म काम किया था और वे पट्टिया बनाया करते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध से उनकी आस्थाओ म कोई अतर आने वाला नही था।

इसके पश्चात काग्रेस न अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा का झडा ऊचा रखने के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू कर दिया जिसम कि एक ओर तो स्वतत्रता सबधी गाधीजी के सिद्धान्तो का अनुशीलन हो सके तथा दूसरी ओर युद्ध प्रयास म बाधा भी न पडे और मुश्किल के समय म ब्रिटिश अधिकारियो को परेशानी न हो। गाधीजी, जवाहरलाल तथा अन्य नेताओ के साथ अतत सरोजिनी को भी जेल म डाल दिया गया लेकिन 12 सितम्बर, 1940 को उन्होने पूने म सर्वो ठाकरसी के घर से पद्मजा को लिखा

'ज़रा देखो तो सही मुझे किस गरिमाहीन रीति स 'एकात के उद्यान' (यरवदा केद्रीय जेल) स केवल इसलिए निकाल दिया गया कि मरे स्वास्थ्य की आम स्थिति के बारे म दो पुराने कनल (चिकित्सक) आशकित हो गए थे कि कही मरे लगाए हुए फूलो के पौधा के बीच ही मरी मत्यु न हो जाए। कनल आडवाना ने मुझस कहा कि कृपया अब यरवदा न आये हम न खतरा लेंगे न जिम्मेदारी। मैं चुहिया जैसी सगिनी हसा (मेहता) के साथ बहुत आराम से बस गयी थी। मैंन स्वाध्याय के लिए अभी दो सौ पुस्तको की सूची बनाकर तयार की है। मेरी गहसज्जा परिपूर्ण और सुविधाजनक थी, मालूम नही अब बौना आदमी मुझस क्या काम लेगा। मैं कल वधा के लिए रवाना हो रही हू।

इतिहास म कोई बदी मुक्त होन क प्रति इतना उदासीन नही हुआ और सराजिनी ने तो अपन स्वभाव क अनुसार उन प्रतिकूल परिस्थितियो म भी एक घर बना लिया था और एक जीवनचर्या बना ली थी। सरोजिनी वहा भी फूलो के बीच रहती उनकी प्रिय बिरयानी तथा अ य स्वादिष्ट वस्तुए ल जाने वाले मित्रो का अभिनदन करती, बाहर की दुनिया की गप्पो को सुनती जिनम वह खोयी रहती थी और साथ ही जसा कि उहोन इस पत्र म लिखा है, ' इस विवश विश्राम स मर स्वास्थ्य को लाभ होता।

वह अपन बारे म स्वय कुछ भी निणय नही कर सकती थी। जेल के बाहर दुबल स्वास्थ्य लिए उहोन दो दिन बाद वर्धा स लिखा

मै अभी बौन-आदमी के पास स (कच्ची प्याज और पालक म हिस्सा बटाकर) अभी लौटी हू। मन ही मन मुस्कराते हुए वह बोल सचमुच, सरकार तुम्ह बहुत समय तक जेल म नही रख सकती थी। तुम्हारा स्वास्थ्य जेल जाने लायक ही नही था लेकिन मैं तुम्ह रोक भी कसे सकता था? अब वह कहते हैं कि मुझे और सत्याग्रह नही करना है क्योकि वैसा करना मेर लिए किसी भी सरकार क प्रति अयाय होगा। यहा तो मरे लिए ढेर सारा काम पडा है जो मुझे थका डालगा लकिन यदि मुझे यरवदा म रहने दिया गया होता तो मैं वहा आराम पा सकती थी वहा मुझे पूरा आराम था। मैं कल बबई प्रातीय काग्रेस समिति क किसी काम से बबई वापस जा रही हू तथा 20 अथवा 21 तारीख को मैं कुछ सप्ताहो के लिए घर

लौटूगी।"

उनके पत्र म आगे कहा गया है कि पपी (उनकी छोटी बेटी नीलामणि) 24 तारीख को अखिल भारतीय महिला सम्मेलन म भाग लेन के लिए बगलौर जाएगी जिसम सम्मिलित होने का एक आवश्यक निमत्रण सम्मेलन की तत्कालीन अध्यक्षा लक्ष्मी मनन न सरोजिनी को भेजा था। पद्मजा उस समय विजय लक्ष्मी पडित की हल्की जेल की सजा के कारण इलाहाबाद म उनके बच्चो के पास थी। सरोजिनी ने पत्र के अत म लिखा 'अब दुविधा की दीर्घ अवधि समाप्त हो गयी है अब मुझे आराम मिल पायेगा। अपना ध्यान रखना और जवाहर को मेरा स्नेह-सागर पहुचा देना।

लेकिन इस वप उनके भाग्य म विश्राम बदा ही न था। हैदराबाद म घर लौटने पर उन्ह अपन बेटे बाबा की पत्नी ईव की कसर स धीमी मत्यु के सताप का साक्षी होना पडा। वह कुछ नही खा पाती थी अत उसके लिए श्रीलका म सुनहरे नारियल मगाए जात थे जिनका पोषक जल मरणासन्न ईव को थोडी राहत देता था। लेकिन उस सबका साक्षी होना भयकर था और उस भयकरता का वणन उन्होन जवाहरलाल को लिखे एक पत्र म इस प्रकार किया है

'जेल स तुम्हारे सुन्दर पत्र और जेल स बाहर आन पर उसस भी सुन्दर वक्तव्य ने मेरी पीडित आत्मा को प्रेरणा दी और आराम पहुचाया। मेरा जीवन त्रासदियो के मामले म समृद्ध रहा है तथापि पिछले तीन महीने मेरे जीवन के अधिक सत्रास के दिन रहे हैं, किंतु व्यक्तिगत दुख और कष्ट आखिरकार व्यक्तिगत और निजी ही होते है।"

लेकिन राष्ट्र का काय व्यक्तिगत कष्ट के कारण रुका नही रह सकता था। सरोजिनी निकल पडी। 6 अप्रैल 1940 को हैदराबाद म राष्ट्रीय सप्ताह समारोह के सिलसिले म आयोजित एक सभा की अध्यक्षता करत हुए श्रीमती नायडू न कहा

"मुसलमान और इस्लाम के अनुयायी होन के कारण तुम्ह बहुसख्यको स भयभीत नही होना चाहिए न विद्रोह करन का विचार ही मन म लाना चाहिए। इसके विपरीत तुम्हें इस्लाम के उपदेशो के अनुसार आचरण करना चाहिए, वह हम शाति का सदेश देता है। तुम व्यापारी बनकर भारत आए थे किंतु अन्य विदेशियो स भिन्न तुम लोग भारत की भूमि पर

वस गए और तुमन इस अपना घर वना लिया। भारत की सत्कार भावना ने तुम्हे यहा समद्धिपूर्वक रहन का अवसर दिया और तुम और यही नही यही मरोगे भी। इतिहास ऐस अनक तथ्यो स भरा पडा है जिनकी उपेक्षा नही की जा सकती और जो यह सिद्ध करते हैं कि भारत क मुसलमाना न हिंदुआ की अनेक प्रथाआ का स्वीकार कर लिया है और व हिंदुआ क साथ घुलमिल गए हैं। इस महान देश म दोना सप्रदाया क बीच समान तौर पर एक नई भाषा भी विकसित हो गई है। कोई भी उनको अलग करने की बात नही कर सकता क्योकि उनका विकास इस प्रकार हुआ है कि वे एक दूसरे स पृथक हो ही नही सकते। हिंदू मुसलमान और अन्य सप्रदायो के लोग मिलकर भारत राष्ट्र का निर्माण करते हैं तथा उसको साप्रदायिक क्षेत्रो म विभाजित और खडित करन की बात मूर्खतापूर्ण है।'

शताब्दियो क बाद भारत की प्राचीन समुद्री महत्ता को पुनर्जीवित करने वाली सिंधिया शिपिंग कपनी का उद्घाटन जब राजेंद्र प्रसाद ने बबई म किया उस अवसर पर सराजिनी ने कहा

मैं उस दिन की राह देख रही हू जब हमारे देश म हमारे बनाए हुए कानून होगे हम अपनी विद्याओ के विकास के लिए स्वय उत्तरदयी होंगे, भारत म एक भी अशिक्षित व्यक्ति नही रहेगा शोषण का समस्त भय समाप्त हो जाएगा, अपनी ही भूमि पर हम सपत्तिहीन नही रहेंगे और पुनर्जीवित अथवा नए सिरे से स्थापित प्रत्येक उद्योग क लिए विकास का खुला क्षेत्र रहेगा।''

अत म उन्होने कहा था

हम आशा करनी चाहिए कि जहाज निर्माण का उद्योग अन्य महान उद्योगा का माग प्रशस्त करेगा। उस स्थिति म यह सबसे अधिक दूरगामी औद्योगिक और राजनीतिक उपलब्धि होगा 'इन याडों म जो जहाज बनेंगे उनको उस सब सामग्री को जो इनम लादी जाएगी उन सब मुसाफिरो को जो इन जहाजो म यात्रा करेंगे, और सबस अधिक उन राजदूतो को जो धरती के विभिन्न छोरो तक महान महात्मा का सदेश ले जाएगे, मेरा आशीर्वाद है।''

इस बीच यूरोप के युद्ध ने एशिया म एक दूसरा युद्ध भडका दिया। 1941 क बाद खतरनाक घटनाआ की एक श्रखला चालू हो गई जापान ने दक्षिण

जवाहरलाल मौलाना आजाद व अय लोगा को अहमदनगर किले मे। देश भर म गिरफ्तारिया हुइ और कोई चार हजार लाग जेला म डाल दिए गए। इस बार जला के नियम कठोर थे तथा बदिया का पत्र-व्यवहार की भी अनुमति न थी। तथापि गाधीजी न अपने जेलरा के साथ एक अनुपम कोटि का पत्र-व्यवहार बनाए रखा जिसने उहे रुला दिया। महाराष्ट्र सरकार की गापनीय फाइला म निहत्थ महात्मा की उस रीति नीति का अभिलख सुरक्षित है जो उहाने अपने बदीकर्ताओ को झुकान के लिए इस्तेमाल की थी। एक पीडामय पत्र म जेल-अधीक्षक ने अपने सहयोगी स इस बात के लिए स्पष्टीकरण मागा कि गाधीजी के एक पत्र का उत्तर तत्काल क्या नही दिया गया, क्याकि देरी का परिणाम भयकर हो सकता था।

8 अगस्त 1942 स मई 1944 तक जेल की लबी सजा स यह बात स्पष्ट थी कि ब्रिटिश सरकार न दृढतापूर्वक यह तय कर लिया था कि इस बार वह नही झुकगी। सरोजिनी म ही यह अनुपम योग्यता थी कि वह जेल की उस लबी अवधि को एक जीवन पद्धति म ढाल सकी जिसके दौरान दुघटनाए हुईं तथा महादेव देसाई और कस्तूरबा दोना की मत्यु हुई। इस सबका विवरण पद्मजा क नाम उनक स्नहपूर्ण पत्रो म हुआ है। 16 सितम्बर, 1942 के पत्र म उहाने लिखा

'प्रात काल ग्यारह बजे   चिडियाघर म यह खान का समय है। सबस पहल मुख्य पशु का खिलाना होता है, और सबस बडी मुसीबत यह है कि खाना परोसन क लिए तयार होकर खरगोशा का खाना परासा जाए। खैर मैं मुख्य रसाइया हू अत उस भाजन की सभ्य आदता म भ्रष्ट (दीक्षित) कर रही हू   नस्टरशियम सलाद, उबला हुआ सब शहद म मक्खन लगाया हुआ टोस्ट (उसक प्रिय पशु का मक्खन और मर पीछे क बरामदे म बनायी गयी पन पर सिकी हुइ राटी)। अच्छा तो मैं अपन काम पर जाती हू, मगर मैं अपन कमर स सटे हुए छाट कमर स अगले कमर म जान स पहल नूमा क रोयेंदार माथ पर चुबन धरे देती हू और तुम्हें अनत प्यार भेजती हू।'

एक अय पत्र म, जिस पर 14 अक्तूबर की तारीख है, उहान लिखा

' समाचार पत्रा की सुर्खिया और रडियो सदेश पारिवारिक समाचारा

खेस मेरे लिए भेज सको तो मैं आभार मानूंगी। मेरा पलंग इतना बड़ा है कि उस पर सारा परिवार आसानी से सो सकता है और मेरे पास ऐसी कोई चादर नहीं है जो उसके आधे से अधिक को ढक सके। कुछ छोटे मेजपोश भी यहां भेजने वाले सामान में शामिल कर लेना मगर यह ध्यान रखना कि वे चटकीले रंग के न हों।"

आर्थर साइमन्स ने उनके बचपन में उनके बारे में लिखा था कि वे 'अलग खड़ी होकर हमारे बारे में अपनी राय बनाती हैं।' उनके पत्र की अगली पंक्तियां इस कथन की पुष्टि करती हैं

"मेरा मानुमति का कुनबा तुम लोगों की कल्पना से कहीं अधिक असंबद्ध है। इस छोटे से घिरे हुए स्थान में बहुत थोड़े से लोग हैं लेकिन उनमें ही मैं समूची मानव जाति का अध्ययन कर सकती हूं और (विवश होकर या स्वेच्छा से) मानवीय मस्तिष्क और स्वभाव की असमानताओं और भावों तथा छोटे और बड़े मामलों में जिन रीतियों से वे अपनी अभिव्यक्ति करते हैं उन रीतियों के बारे में शोध कर सकती हूं।"

वह वस्तुतः अपने दैनिक जीवन की समस्त छोटी छोटी घटनाओं के बारे में लिखतीं अपनी हलकी फुलकी शैली में बंदियों के जीवन से परिपूर्ण जेल की तथा अपने कार्यकलाप की सही सही तस्वीर पेश करतीं एवं स्वयं जो पुस्तकें पढ़ती हैं उन पर टिप्पणियां करतीं। उनके समस्त पत्रों में दूरदराज के मित्रों के प्रति भेजे गए संदेशों और छोटी मोटी बधाइयों की झांकी मिलती है जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में काम कर रहे लोगों में रुचि लेने और उनकी चिंता करने की कितनी विराट क्षमता उनके भीतर थी।

28 अक्तूबर को उन्होंने लिखा

"इस समय घर में दोपहर के भोजन के बाद की शांति छायी हुई है। उन सबने अपनी अपनी विविध भोजन सामग्री खा ली है। बौना बूढ़ा ट्वीडिलडम (गांधीजी) हरी पत्तियों को अपनी बकरी खुराक के स्थान पर सूखे मेवे और ताजे फलों की गिलहरी खुराक का अभ्यास डाल रहा है। उधर अपनी हाल की ही बीमारी से उठने के बाद ट्वीडिलडी (कस्तूरबा) में भोजन के प्रति गहरी और उत्कट आसक्ति उत्पन्न हो गई है। उनकी

टूटी फूटी अंग्रेजी मे उनका भोजन बहुत बढ़िया, न फीका न मसाला' होना चाहिए। मुझे प्रतिदिन उनके लिए बहुत बढ़िया भाजन बनाने की दष्टि से अपने मस्तिष्क पर जार डालना पडता है। उन दोना का बहुत देरी से बदी जीवन म प्राप्त इस सुहागरात के दिना म देखना बहुत हृदय-स्पर्शी होता है। ट्वीडिलडम उसे पाठ दोहराना सिखाता है और ट्वी डिलडी उसको एक शक्तिशाली वद्धा पत्नी की तरह चकमा दे देती है। उन्हे पिछले साठ बरसो म लगातार इतने लबे समय गाधीजी के जीवन और चिंतन का केन्द्र बिंदु बनने का अवसर नही मिला था। मुझे नही मालूम कि तुम्हें पैटमैन की कविता 'टायज (खिलौने) याद है या नही। जब कभी मैं 'बौन आदमी' के कमरे मे होकर गुजरती हू और उसकी चीजें रखी हुई देखती हू (उर्दू प्राइमर अरबी अक्षरा की अभ्यास पुस्तिका, रामायण, मैडम क्यूरी की जीवनी आक्सफोड शब्दकोश चर्खा, गुलदस्ता शहद की बोतल, तेल तथा अन्य फुटकर एव एकदम अनावश्यक औषधिया) तब मुझे उस हृदयस्पर्शी कविता का ध्यान आ जाता है ये सब वस्तुए खिलौने हैं पलका पर अधसूखे आसू आसू नही रक्त के आसू है— अदश्य, और बहुत लाल हो गए है जो अतव्यथा से। खैर, यहा प्रत्येक व्यक्ति अपने आपमे एक पूरा खेल है और वह महान खेल का अपना ढग से खेल रहा है और बौने ट्वीडिलडम से अधिक बडा खेल और कौन हो सकता है।"

पद्मजा के जन्मदिन 17 नवबर पर उनकी मा ने उनको बधाई देने के लिए एक पत्र लिखा

"मेरी प्यारी बच्ची,

यदि स सर कार्यालय म वह भी हुआ जिसे तुम व्यग्य मे यातायात अवरोध (ट्रफिक जैम) कहती हा तो भी मुझे आशा और विश्वास है कि तुम्हारे लिए तुम्हारे परिमाप से कही अधिक स्नेह और तुम्हारी गणनाशक्ति से कही अधिक आशीर्वाद लेकर जाने वाले इस विशेष पत्र की मक्त और त्वरित यात्रा के लिए 'हरी झडी' दिखा दी जायगी। क्या पपी ने (यदि उसे मेरे आदेशा वाला पत्र मिल गया हा) मेरा वह काला सदूक खोलने की व्यवस्था की जिसम मैं एक छोटी सी भेंट रखकर छोड आई

थी जिससे कि मेरी अनुपस्थिति की स्थिति म उसका उपयोग हो सके, क्योकि मुझे यह पूर्वाभास हो गया था कि मैं इस समय घर पर नही रह पाऊगी। यदि पपी को मेरा पत्र न मिला हो तो तुम अपने आप साडी सदूक म से निकाल लेना। चाबियो के मेरे गुच्छे म दो पतली सी चाबिया एक साथ बधी हुई है यदि ताले की चाबी हाथ न लगे तो उन चाबियो म पल भर म ताला खुल जायेगा। कुछ देर के लिए अपने आपको काया और आत्म दोनो स उस साडी म लपेट लेना (उस दुबल और पीडित काया, तथा ज्वाला साहस और स्वाभिमान मे परिपूर्ण उस उज्ज्वल और अपराजेय आत्मा का) तथा उसके ताने बाने के प्रतीकात्मक सौन्य और अथ को हृदयगम करना उसम फूलो की कोमल सुरम्यता भरी है उसम दीप-शिखा का उज्ज्वल जादू है मेरी प्यारी बच्ची वह तुम्हारी प्रतीक है।"

जस जस वष बीतता गया उनके पत्रो स उन पशुओ क प्रति उत्कट भावना व्यक्त होने लगी जिनसे वह घिरी रहती थी। उन्होने लिखा कि काश घर स भेजे गए पासल म एक छोटा सा कुत्ता भी होता। वह आगे लिखती हैं कि धरती पर सत दूसर प्रकार क पशु म जूझन म अत्यत व्यस्त होते है तथा उनक हृदयो अथवा उनकी गोदी म प्यारे म छोटे गुलाबी जिह्वा वाले मन्द मद गुर्राते पिल्ले क लिए स्थान नही होता। 1942 के अतिम पत्र म वह लिखती हैं तुम सब प्रिय जनो क लिए बहुत बहुत सुखद वष की कामना करती हू और प्राथना करती हू कि हम सब पुन 1943 म मिल सक।

1943 के आरम्भ म पद्मजा पुन अस्वस्थ हो गइ और उनकी मा न उनको अपने पत्रो म धीमी गति से काम करने आराम करने और प्रवास पर न जाने का परामश दिया साथ ही खेदपूवक यह भी स्वीकार किया कि मुझे इस बात की चेतना है कि यह बात वैसी ही है जसी कि औरो को नसीहत खुद फजीहत लेकिन मुझे अपने अनुभव की कटुता यह लिखने को विवश करती है।'

इस समय सरोजिनी 63 वष की थी और गाधीजी तथा कस्तूरबा 73 वष के। जेल की निष्क्रियता बाहर के जगत के साथ सचार के अभाव तथा ब्रिटिश हठधर्मिता क वातावरण न जेल के सभी सदस्यो पर बहुत तनाव डाला क्योकि इस विचार स बचा नही जा सकता था कि इस बार जल जीवन की अवधि

वर्षों तम्बी होगी।

एक दिन जिस समय सरोजिनी भेंट के कमरे में जेल अधीक्षक कर्नल भंडारी से चर्चा कर रही थी महादेव देसाई ने बताया कि उनकी तबियत ठीक नहीं है। वह अपनी कोठरी में जाकर लेट गए और दिल के दौरे से उनका देहांत हो गया। गांधीजी ने तुरंत बागडोर संभाल ली। महादेव देसाई के शव को स्नानागार में लिटाकर उन्होंने दूसरों को उसके भीतर जाने की मनाही कर दी तथा शव पर चंदन का लेप करके वह तब तक उसके पास ही बैठे रहे जब तक कि जेल अधिकारियों ने बाहर के चौक में उनके दाहसंस्कार की व्यवस्था की।*

यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि उनके परिसीमित अस्तित्व के तंग दायरे के भीतर इन सब घटनाओं की भीषणता ने निराशा और अवसाद का वातावरण पैदा कर दिया था। मीराबहन ने उस समय का विवरण इस प्रकार लिखा है "सरोजिनी देवी का मनोबल अजेय था। आगाखां महल में एक साथ नजरबंदी के दौरान बापू भी अब तक सरोजिनी देवी के स्वभाव की गरिमा को नहीं समझ पाए थे। इस समय आकर जब हमें प्रत्यक्ष अनुभव हुआ तब हम उनके मातृ हृदय की विशालता और कष्ट तथा अवसाद के क्षणों में उनके चरित्र की सुदृढ़ता को समझ पाए।"

सरोजिनी ने जेल में जिस घर का निर्माण कर लिया था उसमें उनका कमरा और बरामदा ही था जिनमें क्रमश भोजनकक्ष और रसोईघर था जिसकी वह स्वामिनी थी और जिसमें एक पुराना सिल्क का ड्रेसिंग गाउन पहनकर कोयले की छोटी छोटी सिगड़िया पर वह अपने बरतन खड़काती रहती थी। एक पुलिस जमादार, और बगीचे तथा गांधीजी की बकरी की देखभाल के लिए तैनात दो सिपाहियों के अतिरिक्त उन्हें बाहर के किसी व्यक्ति की कोई सहायता उपलब्ध न थी। उनमें से एक सिपाही अपनी वरदी के भीतर सीधा सादा भारतीय युवक लगता था वह शीघ्र ही 'माताजी' का स्वैच्छिक अनुचर हो गया और खाना बनाने में उनकी सहायता करने लगा।

किंतु सबकी चिंता करने और रोगियों के लिए विशेष आहार तैयार करने के बावजूद यह छोटी सी टोली निराश होने लगी। कस्तूरबा ने बताइ बंद कर

*कर्नल भंडारी के साथ भेंट वार्ता

दी और 77 फरवरी म गाधीजी न अपन आपको जनता स सर्वथा अलग कर देन के प्रतिरोध म आत्मशुद्धि का उपवास करन की घोषणा कर दी तो सरोजिनी को विश्वास हो गया था कि वह नहीं बचेंगी और उन्होंन यह बात गाधी जी स कह दी थी वापू आपका उपवास वा को मार डालगा।'

उपवास आरम्भ होन स पहले वायसराय लाड लिनलिथगो न गाधीजी को लिखा था आपका यह बात निश्चित रूप स समझ लनी चाहिए कि काग्रेस क विरुद्ध लगाए गए आरोपो का कभी न कभी उत्तर देना ही होगा और उस समय आपको और आपक साथियो को अपनी सफाई दुनिया क सामन दन का अवसर मिलेगा यदि आप क्षमा कर सके और यदि इस बीच आप अपन आपही अपन किसी काय द्वारा जसा कि आप इस समय सोच रहे प्रतीत होत हैं उस अग्नि परीक्षा स निकल भागन की चेष्टा करत हैं तो निणय आपकी अनुपस्थिति म आपके विरुद्ध जाएगा। ब्रिटिश सरकार क अधिकारी गाधीजी क उपवासो को केवल चाल पट्टी (ब्लैकमेल) मानते थे। इस बार उन्होने गाधीजी की मत्यु के लिए तैयार रहन का निश्चय कर लिया था चाहे उसके परिणाम राष्ट्रीय स्तर पर कुछ भी होते तथा उनके दाह सस्कार के लिए सब तयारी कर ली गई थी जिसमे चिता के लिए चदन की लकडी का सग्रह भी था।

लेकिन इस तयारी का उपयोग बाद म कस्तूरबा के लिए हुआ। उपवास क दौरान उन्हें एक बार दिल का दौरा पडा लेकिन उसस वह उबर गईं।

उपवास 10 फरवरी 1943 को सदा की तरह प्राथना स आरम्भ हुआ और कस्तूरबा न अपन पति को पूर्ण उपवास से पूव अतिम चम्मच सतरे का रस पिलाया। इक्कीस दिन तक गाधीजी न सतरे का रस भी नहीं लिया। उपवास के तीसरे दिन गाधीजी मूर्छित हो गए। चिकित्सा विशेषज्ञ जनरल कैण्डी और कनल बगरशाह ने बाद म कहा था कि जहा तक मनुष्य की बुद्धि काम करती है वहा तक यही कहा जा सकता है कि गाधीजी की उस समय मत्यु हो जानी चाहिए थी। उनका बच जाना एक चमत्कार ही था और चिकित्सा विज्ञान उसकी व्याख्या नहीं कर सकता। इक्कीस फरवरी को उस समय सुशीला नायर गाधीजी के पास थी जिस समय वह जी मिचलाने और यूरेमिया क कारण शक्ति खोकर बेसुध होने लग थे। हताश म सुशीला ने गाधीजी को बूद बूद करके नीबू का रस पिलाना शुरू कर दिया और गाधीजी पर उसका असर हुआ तथा

धीमे-धीमे उनमे जीवन लौट आया।

इस सदभ म यह कहा जाता है कि एक ऐसा समय आया जब जनरल कडी को बुला लिया गया था और वह कमरे मे बाहर निकलते ही दौडे। वह अत्य त चिन्तातुर नजर आते थे और उसका चेहरा मुख हो गया था। वाहर उन्हें कनल बगेरशाह मिले और वे दोनो कमरे मे लौटे। वहा उन्होने गाधीजी को आखें खोले हुए पाया। गाधीजी ने उनसे गभीरतापूवक पूछा, "आप क्यो आए हैं?" ऐसा प्रतीत होता है कि जब कैंडी ने उससे पहले उनकी जाच की थी तो उन्हें यह विश्वास हो गया था कि गाधीजी की मत्यु हो गई है।*

पद्मजा के नाम 19 फरवरी के अपने पत्र म सरोजिनी ने उस अग्नि परीक्षा का वणन इस प्रकार किया है

"तुम स्वय ही सोच सकती हो कि मेरे पास समय की कितनी तगी है। मेरा चितन प्राय एक स्थान और एक व्यक्ति पर केंद्रित हो गया है। सरकारी और गैर सरकारी सभी चिकित्सक एकमन होकर उन पर ध्यान दे रहे है, उनकी चिंता कर रहे हैं तथा उनकी सेवा म लगे है। निश्चित रूप से वह बहुत कमजोर हो गये है और भारी कष्ट मे है, लेकिन इस स्थिति मे भी चचल परिहास उनमे से फूट पडता है और वह मेरे साथ सदा की तरह मजाक करते रहते हैं। म उनके पास बहुत कम जाती हू क्योंकि मुझे यहा की समूची व्यवस्था सभालने तथा लोगो के बीच सामजस्य बनाये रखने का सारा भार अकेले ही ढोना पडता है। व्यवस्था सभालना तो आसान काम है लेकिन मानसिक तनाव की वतमान स्थिति म लोगो के बीच सामजस्य बनाए रखना सबसे अधिक कठिन काय बन गया है।

"यह जानकर तुम्हारा मन बहुत भर आएगा कि कल शाम उपवास के नवें दिन वह बहुत ही अशक्त हो गए थे, लेकिन प्राथना के समय उन्हें एक मराठी भजन याद आ गया जो मुझे पसन्द है और उन्होने अपनी कमजोर आवाज मे आदेश दिया कि क्योंकि वह भजन मुझे पसन्द है इसलिए उसे गाया जाए। उनकी वास्तविक महानता इस बात म निहित है कि वह प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओ को अपना स्नेहपूण चितन प्रदान करते है तथा

---

*माता जी रैहाना तैयबजी के साथ भेंट वार्ता।

छोटे स छोटे व्यक्ति के प्रति भी उनक मन और हृदय म अचूक उदारता भरी रहती है।'

सराजिनी नायडू

और 3 साच का उन्होन लिखा

'प्रिय बेटी। आज तुम्हारा हृदय मत्यु की छाया की अधकारमय घाटी से बौने मायावी यात्री की सुरक्षित वापसी पर प्राथना क दीघ गान और प्रभु की प्रशसा स उत्फुल्ल हो उठा होगा। वापसी की यह यात्रा उन्हान किस तरह पूरी की इस बारे म चिकित्साशास्त्र का ज्ञान सवथा मौन है। यह तो सवत आस्था का चमत्कार है। लकिन वह भी कसा भयानक समय था जब हम आशा और भय स देखते रहते थे आशा से कही अधिक भय से। किंतु बौना बूढा आदमी वस्तुत अपन उपवास क बीसवें दिन और इक्कीसवें यानी अतिम दिन यानी कल विक्टर ह्युगा क '93' का अतिम अध्याय पढ रहा था उसने अपन पोते कनु की सगाई बिना किसी पूव कायक्रम के आश्रम की एक बगाली लडकी के साथ सपन्न की। कनु यहा अस्थायी परिचारक बनकर आया है। रस्म म दोना के हाथ मिलवाए गए और उन्हे मुह भरकर गुड खिलाया गया। मैंने उसको (गाधीजी का) भारत सरकार के एक भूतपूव सदस्य के साथ द हाउड आफ हैवेन की चर्चा करते सुना। वह बेचारा अग्रेजी भापा की कविता स सवथा अपरिचित था और उसन यह समझा कि यह काई नए किस्म का कुत्ता है जो कि स्वगजात सवा (हैवेन वान सर्विस) इडियन सिविल सर्विस के सदस्या क लिए उपयुक्त पालतू पशु माना गया है। आज का समाराह बहुत सादा तथा बहुत छोटा-सा था बाहर के लोगा म कवल चिकित्सक थ जा उपवास टूटने के समय गाधीजी का देखने आ गए थे। उन्हे यह मालूम नही था कि उपवास टूटने स पहले कुछ प्रारभिक काय हागे ये बहुत कुशलतापूवक सपन्न हुए उपनिषद की प्राथना और एक भजन तथा कुरान की कुछ आयतें। किंतु सवप्रथम कायक्रम सबके लिए आश्चयजनक रहा। विधान (डा० विधानचन्द्र राय, जो 15 फरवरी स गाधीजी क पास थ) फश पर बैठ गए और उन्हान समारोह का समारभ टगार की सुन्दर और अत्यत समयानुकूल कविता जहा मन मुक्त है, स किया। पारपरिक सतरे का रस पीन स पहल बौने आदमी न सौम्य-उदारतापूवक अपन चिकित्सका

के प्रति धन्यवाद का लघु भाषण आरभ किया किंतु वह अपना वाक्य पूरा करने स पहले ही भाव विह्वल हो गया। उसको सभलने तथा धन्यवाद के गरिमामय शब्दा को पूरा करने मे कुछ समय लगा। यह देखकर वहा सभी लोग भाव-विभोर हो गए। वह नवजात शिशु से भी अधिक कमजोर है और मेरे मन म आशका है कि वह अभी सकट से पार नही हुआ है। लेकिन जिस आस्था ने उसे छाया की घाटी मे जीवित रखा है वही आस्था उस सुनहली धूप मे भी जिंदा रखेगी।

इस प्रकार वह समय पूरा हो गया जो एक त्रासदी के अतिम कगार पर पहुचने वाला था। उसने (गाधीजी) ने चिकित्सका से कहा "ईश्वर न मुझे किसी प्रयोजन के लिए जीवित रखा है। मैं मत्यु और जीवन दोना के लिए तैयार था। उसकी (ईश्वर की) इच्छा ही मेरा मार्गदशन करेगी।

हमारी जेल के द्वार फिर से बद हो गए है। वे कब खुलेगे, यह मुझे मालूम नही है। इस बीच हम अपने नियमित कायक्रम की ओर लौट रहे हैं, लेकिन कुछ अतर के साथ।"

और सरोजिनी अपना पत्र अपनी विशिष्ट शैली म समाप्त करती है "अब विषम प्रकार की समस्त चिंताए दूर हो गई है अत मुझे आशा है कि प्यारी बच्ची तुम स्वस्थ होने की ओर ध्यान दोगी। मेरे बारे म चिंता मत करना।"

"बुद्धिमान" सरकार ने आवश्यकता का पूर्वानुमान करके चदन की लकडी तैयार रखी थी, और जेल के सभी बदी यह बात जानते थे। पूना के उस जजर महल म बदी मुट्ठी भर लोग अपने जेल-जीवन की अवधि के बारे म अनिश्चित थे, उनका स्वास्थ्य खराब था और वह नाडी दौबल्य मे पीडित थे। वह अपने आपको व्यस्त रखने के लिए हर प्रकार के प्रयास करते तथा यह जानकर दिन बिता रहे थे कि मनोबल बनाए रखना मेरु सरीखा है। ऐसी स्थिति मे सरोजिनी का अचानक मलेरियाग्रस्त हो जाना सचमुच परेशानी का कारण बन गया होगा।

भारत के नए वायसराय लॉर्ड वेवेल सेनापति रह चुके थे। भारत की बाग-डोर अब उनके हाथो म थी और गाधीजी के सहयोगिया म से कोई भी उनका

नही जानता था । गाधीजी इस अफ्वाह पर भी चितित थ कि भारत का विभाजन करने की योजना बनाई जा रही है । इन अफ्वाहा की सचाई का पता लगाने का कोई उपाय उनके पास नही था लेकिन ववेल के प्रति न्याय करना होगा और यह मानना होगा कि उन्होने भारत के विभाजन को रोकने की भरसक चेष्टा की । इस समय गाधीजी इतने हताश हो गए थ कि उन्ह यह लगने लगा कि अगले सात वष जेल म ही बिताने होंगे । सरोजिनी का बुखार बढता गया तथा चिकित्सक उनकी स्थिति के बारे म घबरा उठे । 21 माच को उन्हें बिना किसी पूवसूचना के स्ट्रेचर पर जेल स ले जाया गया । बबई सरकार के अभिलेख म इस बार म क्वल यह उल्लेख मिलता है "कैदी, सरोजिनी नायडू, बिना शत रिहा कर दी गइ ।' अगल पूरे एक वष गाधीजी और कस्तूरबा जेल मे रहे । जिस समय कस्तूरबा अपनी सशक्त आत्मा क बल पर कठोर और कष्टमय जीवन का झेलकर दिवगत हुइ उस समय उनकी अवस्था 74 वष थी । जो हृदय इतनी लबी अवधि तक इस विचित्र पुरुष के साथ एकता क स्वर म धडकता रहा वह एक दिन खामोश हो गया । साठ साल तक उन्होने असख्य बलिदान किए लेकिन,गाधीजी जीवन की पूणता तथा पूण आत्मसमपण स प्राप्त होन वाली हितकारी शक्ति की प्राप्ति की दृष्टि से उनस कभी सतुष्ट नही हुए । उन्होने अनेक बार 'बा' की कठोर परीक्षा ली लेकिन 'बा' की भक्ति निस्सीम थी । अब वह नही रही । उनकी मत्यु के तीन महीने बाद तक गाधीजी जेल म रहे। स्नेहसिक्त और निष्ठावान 'बा' के बिना उन महीनो म गाधीजी क अकेलेपन का अनुमान लगाया जा सकता है । यह उनकी अतिम जेल यात्रा थी ।

सरोजिनी ने भले ही आगा खा महल को स्ट्रेचर पर छोडा हो उन्होने अपने विलक्षण स्वभाव क अनुसार जेल से बाहर कायसमिति की एकमात्र सदस्या होने के नाते बीमारी म भी भारत छोडो आदोलन की बागडोर सभाल ली । 9 अगस्त 1943 को उन्होन प्रेस को निम्न वक्तव्य जारी किया

महात्मा गाधी और कायसमिति की गिरफ्तारी के बाद काग्रेस के कायकर्ताओ के बीच कुछ वैचारिक भ्राति तथा मत मतातर उत्पन्न हुए प्रतीत होते है । इसका कारण यह है कि वह एक निश्चित कायक्रम और मान्य नेतत्व से वचित हो गए हैं । इस बारे म जो सदेह लोगो के मन मे हो मैं उन्ह यह बताकर दूर करना चाहती हू कि कायसमिति अथवा अखिल

थे अत उन्होंन (सरकार ने) बीजापुर के लागा की बलि देकर बंगाई के उद्याग को चालू रखन का निश्चय किया। स्वय गवी कायकर्ता सचमुच बधाई के पात्र हैं कि बीजापुर अकाल म किसी की मत्यु नहीं हुई लकिन बगाल म अकाल म मरन वाला की सख्या बहुत अधिक है।

जनवरी 1944 म सराजिनी न एक जारदार भाषण म कहा कि यह कहना सरासर झूठ है कि भारत म हिंसा का विस्फाट काग्रस की याजनाआ के अनुसार हुआ ह या यह कि महात्मा गाधी जापान-समथक हैं। यह अफवाह इस कारण फली थी क्याकि बर्मा म सुभाषचन्द्र बास क नतत्व म आजाद हिंद फौज कायरत थी। सराजिनी नायडू न घाषणा की

यदि काई व्यक्ति यह कहते रहन का (कि गाधीजी जापान-समथक हैं) दुस्साहस करता है ता यह बहूदगी है, झूठ है। जल म बाहर कायसमिति की एकमात्र सदस्या हान क नात मैं आपका अधिकृत रूप से यह बताना चाहती हू कि जापान समथक हान का ता प्रश्न ही नहीं उठता हम निरतर किसी भी विदशी आक्रमण क विराधी रहे हैं भल ही उस पर काई भी लवल लगा हा। जा काई हमार ऊपर आक्रमण करगा हम उसका विराध करेंग। इस बार म हमार बीच किसी प्रकार का मतभद नहीं है।*

इसके कुछ समय पश्चात ही सराजिनी अपनी बहन गुनू स मिलन लाहौर गया **लकिन पजाब पहुचते ही उन्हे आदेश दिया गया कि व सावजनिक सभाआ म भाषण न दें जुलूसा अथवा सभाआ म भाग न ल तथा समाचारपत्रा के साथ सबध स्थापित न करें। जब उनस आदेश पर हस्ताक्षर करन का कहा गया ता उन्होने उसकी पीठ पर लिख दिया कि मुझ मर चिकित्सका न इस प्रकार का सावजनिक काय न करन का परामश दिया है अत यह आदश विहित नहीं है। लाहौर स वह कलकत्ता गयी उस समय फिर परिवार म कष्ट आ गया उनका प्यारा छोटा बटा रणधीर जिस वह प्यार स मीना कहकर पुकारती थी गभीर रूप से बीमार हा गया। इस पुस्तक की लखिका का एक पत्र म उन्होंन लिखा फरवरी के मध्य म जब मैं अपन लबे प्रवास स लौटी तो मैंन दखा कि मेरा

---

*इडियन रिव्यू खड 45, 1944

**हिस्ट्री आफ काग्रस—खड II पष्ठ 578 (अग्रजी)

छोटा बेटा एक ऑपरेशन के बाद गंभीर रूप से अस्वस्थ हो गया और अंतत उसके हृदय की गति रुक गई।" 16 मई के पत्र में उन्होंने मुझे लिखा "मैं तुम्हारी ओर से स्नेह और सांत्वना के शब्दों की आशा और प्रतीक्षा करती रही हूँ वे मुझे अभी मिले हैं। मुझे मालूम है कि तुम मुझे उतना ही स्नेह देती हो जितना मैं तुम्हें देती हूँ, और तुम मेरे अभाव और कष्ट में भागीदार हो इस विचार से मुझे सांत्वना प्राप्त होती है।"

"मीरा बहुत ही बहुमुखी प्रतिभा का धनी था वह कोई विख्यात व्यक्ति नहीं था लेकिन उसका व्यक्तित्व ऐसा था कि जो लोग उसे जानते थे उन्हें उससे रोशनी मिलती थी। वह मेधावी और रचनात्मक मस्तिष्क, एक ऐसी व्यापक संस्कृति जिसका उदय पुस्तकों में नहीं बल्कि जीवन में से होता है और एक ऐसे हृदय का स्वामी था जो इंद्रधनुष की तरह स्नेह, करुणा और सांत्वना की अपरिमित दृष्टि से सम्पन्न था। वह सूक्ष्मदृष्टा, उदार और साहसी था किंतु विधाता का विधान यही था कि वह असमय ही काल के कराल गाल में समा जाए।"

सरोजिनी जब पीड़ा के ऐसे समय से गुजर रही थी तो मई महीने की 6 तारीख को गांधीजी आगा खां महल से रिहा कर दिए गए और कई महीने तक पचगनी में हमारे पारिवारिक घर 'दिलखुश' में विश्राम करते रहे। लेकिन सरोजिनी ने अपने शोक को एक ओर रखकर 9 अप्रैल को कार्यसमिति की बैठक में भाग लिया। इस अवसर पर 100 महिला संगठनों की ओर से उनका अभिनंदन किया गया तथा उन्होंने बंगाल अकाल से बचाए गए बच्चों के लिए स्थापित किए गए 'बाल सुरक्षा कोष' की बैठक की अध्यक्षता की। इस संगठन ने आगे जाकर 'इंडियन काउंसिल फार चाइल्ड वैलफेयर' (भारतीय बाल कल्याण परिषद) का रूप ग्रहण कर लिया। उस वर्ष के अंत में कलकत्ता में अखिल भारतीय विद्यार्थी संघ की सभा में भाषण करते हुए उन्होंने ठीक ही कहा

'मेरे जीवन की लघु त्रासदियों में से एक यह है कि मेरे मन में इस बात की चेतना है कि हमारी युवा पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी की मूर्खताओं का भार भी ढोना पड़ रहा है। युवा के मन में शानदार सपने होते हैं उसकी सामर्थ्य और संभावनाएं निस्सीम होती हैं अतः उसे अपने सुनिश्चित लक्ष्य को निगाह में रखकर आगे की ओर बढ़ते रहना चाहिए। इसके बजाय इधर

उधर एक-दूसरे की ओर देखते रहकर उन्हें अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिए।"

उन्होंने आगे कहा

मुझे ऐसा लगता है कि मेरी पीढ़ी न ऐसी खराब मिसाल पेश की है, युवा पीढ़ी के लोगों के सामने ऐसी आत्मघाती मिसाल रखी है कि वे सिर से पैर तक झगड़ों में डूबे हुए हैं परस्परघाती संघर्ष और साम्प्रदायिक झगड़ों में उलझे हुए हैं। वे साम्प्र शब्दों पर झगड़ पड़ते हैं। आप अपने देश तथा विश्व की परिस्थिति की वास्तविकता क्यों नहीं स्वीकार कर लेते और स्वतंत्रता की ऐसी स्थिति का क्यों नहीं निर्माण कर लेते जिससे कि आपका देश आपके इस स्वप्न को साकार कर सके कि उस विश्व के अंतर्राष्ट्रीय संघ में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त हो। जिनके मन में यह विश्वास है कि भारत भारतीयों का है और भारतीयों के सिवाय और किसी का नहीं है वे भारत की मनीषा के साथ धोखा कर रहे हैं क्योंकि भारत की मनीषा सदा से सार्वभौम रही है।'

'आप नारा लगाते हैं कि कांग्रेस और लीग में एकता की स्थापना हो। शब्दों का गलत ढंग से मत इस्तेमाल कीजिये। एकता कैसे? आप पर्वत की चोटी पर से एकता नहीं उतार सकते। आप और मैं राजाओं के आपसी संबंधों में एक-दूसरे की संस्कृति की सराहना के द्वारा एकता स्थापित कर सकते हैं क्योंकि यह संस्कृति किसी जाति की आत्मा को अभिव्यक्त करती है। उस तत्व का निर्माण करके ही आप हिंदू मुस्लिम एकता की आशा कर सकते हैं। यह मत कहिए कि भारत के मानचित्र पर यह तो हिंदू भारत है और वह मुस्लिम भारत। नेतागण एकता का निर्माण नहीं कर सकते। सैकड़ों नेपोलियन भी तब तक विजय प्राप्त नहीं कर सकते जब तक कि सेना बहादुर और वफादार न हो। एकता एकपक्षीय नहीं हो सकती। उसे सर्वतोमुखी और व्यापक होना चाहिए। चाहे वह राजनीतिक एकता हो, सामाजिक या अन्य प्रकार की वह तभी संभव है जब कि हम न्याय और समता के अत्यंत निष्पक्ष मानदंडों के प्रति आस्थावान न हों जिनमें हम आगे जाकर अपनी शक्ति भर उदारता की अधिकतम मात्रा सम्मिलित कर सकते हैं। राजनीतिक एकता का यही

बुनियादी अथ है।"*

उनके अतिम वाक्य मे उनके श्रोताओ की पकड से कही अधिक दार्शनिक तथा मानवीय सभावनाए निहित है। किसी भी विवाद म समझौते के अतिम चरण मे उदारता ही इतिहास को युद्ध से शांति म बदल डालने की शक्ति प्रदान करती है। परिस्थितिया ऐसी आ गयी कि यह काल भारत के इतिहास का सबसे अधिक नाजुक काल बन गया और सरोजिनी नायडू एकता के बारे म बोलते समय हृदय उडेल देती थी। घटनाचक्र तेजी से चरम परिणति की ओर बढ रहा था।

इस दौरान मित्रराष्ट्र उत्तरी अफ्रीका और यूरोप पर हावी हो चुके थे तथा युद्धोत्तर समस्याओ के बारे मे चिंतन आवश्यक हो गया था। यह बात जाहिर थी कि युद्ध म ब्रिटेन बहुत कमजोर हो गया था अत वह शक्ति के बूते पर भारत को दास बनाकर नही रख सकता था अत केवल भारत और ब्रिटेन के बीच ही नही काग्रेस, मुस्लिम लीग और देशी राज्यो के बीच भी राजनीतिक हल तलाश किए जाने आवश्यक हो गए थे। स्थिति वहा पहुच गयी थी जहा दोनो राजनीतिक दलो के बीच किसी प्रकार का समझौता सभव नही रह गया था क्योकि मुस्लिम लीग पाकिस्तान की स्थापना का प्रस्ताव पास कर चुकी थी, लेकिन अग्रेजो को लगा कि युद्ध की समाप्ति तक के लिए एक अतरिम सरकार की स्थापना की जा सकती है तथा दोनो दलो के बीच अतिम समझौते को अभी टाला जा सकता है। प्रारभिक चर्चाओ से यह सकेत मिलता था कि अपने वामपक्षी विचारो के कारण क्रिप्स सबसे बडे दल काग्रेस का मध्यस्थ के रूप म सबसे अधिक स्वीकार होगे तथा मुस्लिम लीग उन्हे स्वीकार नही करेगी। लेकिन क्रिप्स मिशन विफल हो गया और क्रिप्स हठी वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो के साथ इग्लैड लौट गए। उनके स्थान पर फील्ड मार्शल वेवेल नए वायसराय बनकर और नए सिरे से प्रयास करने का सकल्प लेकर भारत आए।

जून 1945 म सभी नेताओ को जेल से रिहा कर दिया गया और प्रथम शिमला सम्मेलन समुद्रतल से 7,000 फुट की ऊचाई पर शुरू हुआ जिसने

*इडियन एनुअल रजिस्टर जुलाई दिसम्बर 1944

चर्चाओं के लिए शांत वातावरण जुटाने में कम मदद नहीं की हालांकि चर्चाएं सफलतापूर्वक समाप्त नहीं हुईं। इस समय आकर जिन्ना के मन में यह विश्वास पूरी तरह दृढ़ हो गया कि कांग्रेस का नेतृत्व विशेषत हिंदू नेतृत्व कभी भी निष्पक्ष नहीं हो सकता और मुसलमानों के लिए इस देश में अल्पसंख्यकों के रूप में सुखद भविष्य नहीं बन सकता। वह अपने द्विराष्ट्र सिद्धांत—हिंदू भारत और मुस्लिम पाकिस्तान—से टस से मस होने को तैयार न थे, उधर गांधीजी एक संयुक्त और लौकिक (धर्मनिरपेक्ष) भारत के सिवाय दूसरी किसी स्थिति को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे जिसमें कि केवल मुसलमान ही नहीं समस्त अल्पसंख्यक अपनी भूमिका अदा करने के लिए स्वतंत्र होते।

जिन्ना के साथ चर्चा के अंतिम दिन जवाहरलाल नेहरू को उन मित्रों के यहां ब्यालू करना था जिनके साथ सरोजिनी ठहरी थीं। वह पैदल चलकर ही पहाड़ी से नीचे आए और देर से पहुंचे। उनके मेजबानों ने बताया कि वह सिर झुकाए हुए और उदास मन से अहाते में घुसे और जब उन्होंने उनका अभिवादन किया तो बोले, 'वह आदमी एक ही विचार से पीड़ित है, वह एक दम एकोन्माद से ग्रस्त है। अब हम और कुछ भी नहीं कर सकते।'

राजनीतिक घटनाएं भारत के विभाजन की दिशा में बढ़ती चली गईं और उसे टाला नहीं जा सका। 15 अगस्त, 1947 को भारत विभाजित हो गया। जून 1945 में प्रथम शिमला सम्मेलन की विफलता से थोड़ा ही पहले ब्रिटेन में श्रमदल ने चुनाव जीत लिए थे। नए प्रधानमंत्री एटली ने लार्ड पथिक लारेंस को मंत्रिमंडल के दो अन्य सदस्यों के साथ द्वितीय शिमला सम्मेलन में नई योजना की चर्चा के लिए भारत भेजा। ब्रिटेन की संसद द्वारा भेजे गए शिष्टमंडल केबिनेट मिशन और लार्ड वेवेल के मन में अविभाजित भारत की कल्पना थी तथा जब प्रथम चर्चा विफल हो गई तो उन्होंने जिन्ना के सामने यह प्रस्ताव रखा कि भारत को संघ बनाया जाए जिसमें केंद्रीय सरकार के पास केवल प्रतिरक्षा, वैदेशिक संबंध और यातायात होगा तथा प्रांतीय सरकारें अन्य सभी विषयों के लिए जिम्मेदार होंगी एवं वे अपने समूह बना लेंगी जिनकी अपनी कार्यपालिका और विधानमंडल होंगे। मूल विचार यह था कि देश का प्रशासन चलाने के लिए एक पूर्णतया भारतीय अंतरिम सरकार की स्थापना की जाए। सोचा यह गया था कि यदि यह योजना प्रमुख पक्षों को स्वीकार्य होगी तो उनके

उनके जीवन से कही अधिक उनके आदश सकट म थे। वह केवल इतना कर सकते थे कि लोगा के बीच जाए उनके बीच रह और अपने उदाहरण से उनके बीच बधुत्व की भावना लौटाने की चेष्टा करें। लेकिन अब तो बहुत देर हो चुकी थी।

अतत एक अतरिम सरकार की स्थापना हो गई जिसमे मुस्लिम लीग भी शामिल हुई, लेकिन उसका प्रयोजन नए वायसराय लाड माउन्टबेटन की अध्यक्षता मे भारत के विभाजन की प्रक्रिया और कायक्रम तैयार करना था। 15 अगस्त, 1947 को दो नये राज्यो की स्थापना हुई और भारत म काग्रेस न सरकार बनाई तथा स्वतत्र भारत का सविधान बनाने के लिए एक सविधान सभा का गठन किया।

सविधान सभा म 11 दिसबर, 1946 की कायवाही के निम्न अश से यह पता चलता है कि सरोजिनी न सावजनिक जीवन म क्या भूमिका अदा की

सभापति (डा० सच्चिदानन्द सिन्हा) अब म बुलबुले हिन्द से प्राथना करूगा कि वह इस सदन को गद्य मे नही पद्य म सबोधित करें। (हसी और तालिया)

(उसके बाद सरोजिनी नायडू तालिया की गडगडाहट के बीच मच पर गइ)

सरोजिनी नायडू (बिहार आमसीट) श्री सभापति महोदय, आपने मुझे जिस प्रकार सम्बोधित किया है वह सवैधानिक नही है। (हसी)

सभापति (डॉ सच्चिदानन्द सिन्हा) शाति, शाति। कृपा करके सभापति के प्रतिकूल कुछ न कहें। (देर तक हसी)

श्रीमती सरोजिनी नायडू यहा मुझे कश्मीरी कवि की कुछ पक्तिया याद आ रही है

"बुलबुल को गुल मुबारक गुल को चमन मुबारक,
रगीन तबियता को रग सुखन मुबारक।'

और आज हम अपने महान नेता तथा साथी राजेन्द्रप्रसाद की प्रशस्ति म चल रह भाषणा की इन्द्रधनुषी छटा मे मज्जन कर रहे हैं। (तालिया) मेरी समझ म नही आता कि काव्यात्मक कल्पना भी इन्द्रधनुष को कोई और छटा कैसे प्रदान कर सकती है। अत म स्वय राजेन्द्रबाबू का अनुकरण करूगी और नम्रतापूवक एक महिला की तरह शुद्धत घरेलू मामला की

ही चर्चा करूगी। (हसी) हमारे महान दार्शनिक सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपनी महान वक्तता द्वारा सम्मोहित किया है वह अब दृश्य स्थल स गायब हो गए मालूम होते हैं। (हसी)

सर्वपल्ली राधाकृष्णन नही, नही। मैं यही हू। (दोबारा हसी)

सरोजिनी नायडू उन्होने हमें बहुत शक्तिशाली शब्दो में ज्ञान की बातें बताई है। अन्य वक्ताओ न भी जो भिन्न प्रान्तो, सप्रदायो, धर्मो तथा जातियो के प्रतिनिधि है, सुन्दर भाषण दिए।

"मैं इस सदन म कुछ रिक्त स्थान देख रही हू और मेरा हृदय अपने उन भाइयो की अनुपस्थिति पर दुखी है जो मेरे पुराने मित्र मोहम्मद अली जिन्ना के अनुयायी हैं। मुझे आशा है कि मेरे मित्र डा० अम्बेदकर शीघ्र ही इस सविधान सभा के प्रबल समथको म शामिल हो जाएगे और उनके करोडो अनुयायी अपने हितो को अधिक सुविधासपन्न वर्गो की भाति ही सुरक्षित पाएगे। मुझे आशा है कि जो लोग अपने आपको भारत का मूल स्वामी मानते हैं यानी जनजातियो के लोग वे यह महसूस करेंगे कि इस सविधान सभा म जाति, धम तथा प्राचीन या अर्वाचीन का भेद नही है। मुझे आशा है कि इस देश के छोटे स छोटे अल्पसख्यक समाज के लोग भी यह महसूस करेंगे कि उनके हितो का एक उत्साही, कठोर और प्रेमल सरक्षक है जो किसी भी महानतम शक्ति को इस देश मे समानता और समान अवसर के जन्मसिद्ध अधिकार का उल्लघन करने की अनुमति नही देगा।'

उस जमाने के सदभ म उनका अगला वाक्य बहुत महत्वपूर्ण है

"मुझे यह भी आशा है कि भारत के देशी नरेश जिनम मेरे अनेक मित्र हैं तथा जो बहुत चिन्तित, बहुत अनिश्चित और बहुत भयाक्रात है, यह महसूस करेंगे कि भारत का सविधान भारत के प्रत्येक मनुष्य की स्वतत्रता और मताधिकारपूर्ण नागरिकता का सविधान है, भले ही वह राजकुमार हो या किसान।'

'उनका यह भाषण अतिम था जिसके अत म उन्होने कहा

'इसम कोई सदह नही है कि मेरा भाषण अतिम भाषण है, इसका कारण यह नही है कि मैं एक महिला हू वरन् इसलिए क्योकि मैं आज काग्रेस की ओर स मेजबान की हैसियत म काम कर रही हू और मैंने उन सब लोगो का

उस संविधान के निर्माण में जो भारत की स्वाधीनता का अमर घोषणापत्र होगा हमारे साथ भाग लेने के लिए प्रसन्नतापूर्वक आमंत्रित किया है।'

67 वर्ष की अवस्था में सरोजिनी हमेशा की तरह सक्रिय थीं तथा उनमें साहस पूर्ण और प्रभावशाली भाषण देने की क्षमता थी लेकिन पहले की तरह अब उनके मन में एकता की निश्शक आस्था नहीं रही थी। जीवन के अनुभवों ने उन्हें कटु अन्तर्दृष्टि प्रदान की थी, उन्होंने कटु सत्यों का सामना किया और उन्हें कटुता पूर्ण अनुभव हुए जो अब इतिहास का अंग बन गए हैं। पी० ई० एन० (इंटरनेशनल एसोसियेशन आफ प्लेराइटस, एडीटर्स, एस्सेइस्टस एंड नॉवेलिस्टस नाटककारों, संपादकों, निबंध लेखकों तथा उपन्यासकारों का अंतर्राष्ट्रीय संघ) की अध्यक्षा सोफिया वाडिया पी० ई० एन० सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए जब ब्यूनिस आयरस की तीन महीने की यात्रा पर जाने लगीं तो उनको विदाई दी गयी समारोह में सरोजिनी ने कहा

'ऐसे सम्मेलन के लिए भारत को बहुत विशिष्ट संदेश भेजना चाहिए। भारत हमेशा शांति की शक्ति का समर्थक रहा है लेकिन जैसा कि गांधीजी ने कहा है वह शांति मौत की शांति नहीं न वह पत्थर की निष्क्रिय शांति है वह ऐसी शांति है जो प्रशिक्षित दृष्टिकोण से प्राप्त होती है वह उन श्रेष्ठ हृदयों की शांति है जो सुन्दरतम के साथ तादात्म्य के फलस्वरूप शुद्ध हो चुके हैं। विश्व के प्रति भारत का यही संदेश है सब प्राणियों की एकता। और हम चाहते हैं कि वे उन्हें बताएं कि उन समस्त साहित्यों का संपूर्ण प्रयोजन और अर्थ राष्ट्र की आत्मा को उन्नत करना रहा है और यह भी बताएं कि भारतीय साहित्य की सर्वोच्च और सुंदरतम अवस्था जो वाला तीत है और जो आने वाले कल के विहान जैसी ताजा और विश्व के सबसे पुराने सवेरे जैसी पुरानी है, अभी तक एक ही सुंदर शब्द में निहित है शांति शांति, शांति।'

उन्होंने अपने घरेलू और पारिवारिक जीवन की बलि देकर अपनी जिस दुनिया को अपना समूचा जीवन दे डाला था उसके प्रति अपनी निराशा उन्होंने इन शब्दों में व्यक्त की हम सबने सारे संसार में राजनीतिज्ञों की विफलता देखी है हम सबने वचन दिए जाने के समय ही उनके उल्लंघन की त्रासदी देखी है हम सबने राष्ट्र की विराट राजनीतिक सत्ता का उपयोग उसके द्वारा पहुंचाई गई क्षति की पूर्ति में नहीं

वरन् राजनीतिज्ञों द्वारा अपने कार्यों को सही सिद्ध करने में हारते देखा है।" अब उनके पास स्वप्नद्रष्टा और अध्यात्मद्रष्टा की उच्च दृष्टि ही बच गई थी, लेकिन वह इतनी यथार्थवादी थीं कि उन्होंने यह समझ लिया था कि वह उन आदर्शों को सत्ताधारियों के सामने केवल पेश ही करती रह सकती हैं उनके पास यह शक्ति नहीं कि वे राजनीतिज्ञों को संतों में बदल दें।

22 मार्च, 1947 को नई दिल्ली में एशियाई संबंध सम्मेलन (एशियन रिलेशन्स कॉन्फ्रेंस) की अध्यक्षता सरोजिनी नायडू के जीवन शिखर का शीर्ष था। उनकी पीठ के पीछे एशिया का एक महान मानचित्र टंगा था और उन समस्त देशों के सैकड़ों विशिष्ट व्यक्ति और प्रतिनिधि (जिनमें से अनेक तब तक साम्राज्यवादी शासन के अंतर्गत जी रहे थे) उनके सामने बैठे थे। सम्राज्ञी जैसी गरिमा और शालीनता के साथ अध्यक्षता करते हुए उन्होंने अपना अध्यक्षीय भाषण इस प्रकार आरम्भ किया

"एक मित्र ने मुझे याद दिलाया है कि बाइबिल में एक कथन है कि पूर्व के राष्ट्रों का एक विराट सम्मेलन होगा जो मानवजाति के इतिहास में एक नये युग के विहान का प्रतीक बनेगा। मेरे लिए यह कहना बहुत अहम्मन्यता-पूर्ण प्रतीत हो सकता है कि पूर्व के राष्ट्रों का यह सम्मेलन जो मैंने बुलाया है एक नये युग का प्रवर्तक होने वाला है। लेकिन फिर भी मुझे आशा है कि मैंने भारत की ओर से एशिया की जनता के प्रति जो मैत्री भाव प्रकट किया है उसमें महान परिणाम आएंगे। हमारा प्रयोजन क्या है? हमारा आदर्श क्या है? हमारा आदर्श एशिया में एक वृहत्तर प्रयोजन के लिए बुनियादी कदम उठाना है। वह प्रयोजन है मानवजाति की सेवा के महान उद्देश्य के लिये शांति, समन्वय और सहयोग। यहां हमारा संबंध आंतरिक विवादों अथवा संघर्षों से नहीं है, इस सम्मेलन का विषय आंतरिक राजनीति अथवा विवादास्पद अंतर्राष्ट्रीय राजनीति नहीं है, हमारा संबंध एशियाई देशों की प्रगति के सर्वनिष्ठ आदर्श से ही है। यह प्रगति सामाजिक और आर्थिक प्रगति है इसके ही आधार पर एक स्थायी राजनीतिक सफलता प्राप्त हो सकती है। हम एशिया के लोग संकटों से पराजित और किसी भी बात से निरुत्साहित हुए बिना एक साथ आगे बढ़ेंगे क्योंकि मुझे विश्वास है कि जो कुछ मंगलकारी है वह नष्ट नहीं हो सकता। मेरे पिता ने जो

इस संसार के एक महान पुरुष के अपनी मृत्यु के समय य अंतिम शब्द यह थे 'न जन्म होना है, न मृत्यु, केवल आत्मा है जो जीवन के उच्चतर और उच्चतम स्तरों म विश्राम खोज रही है।"

उनके पूर्वजों अर्थात भारत के ब्राह्मणों का यह दर्शन उनके जीवन के शेष तीन वर्षों म उनका सहारा बना।

3 अगस्त, 1947 को बाम्बे क्रॉनिकल ने नये औपनिवेशिक और प्रांतीय प्रमुखों की सरकारी घोषणा प्रकाशित की

'भारत और पाकिस्तान के महा-राज्यपालों (गवर्नर जनरलों) तथा भारत के पांच और पाकिस्तान के तीन प्रांतों के राज्यपालों (गवनरों) की नियुक्ति की घोषणा आज रात को की गई है।

रियर एडमिरल माउन्टबेटन ऑफ बर्मा (वर्तमान वायसराय) भारत उपनिवेश के गवनर जनरल होंगे, मुहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान उपनिवेश के गवर्नर जनरल।'

समाचार म आगे कहा गया था ऐसा विश्वास किया जाता है जब तक डा० विधानचन्द्र राय संयुक्तराज्य अमरीका से वापस नहीं आते तब तक के लिए सरोजिनी नायडू ने संयुक्त प्रांत की राज्यपाल बनना स्वीकार कर लिया है।'

सरोजिनी के प्रिय चिकित्सक डा० विधानचन्द्र राय एक भारी भरकम शरीर और व्यक्तित्व के धनी थे, उनकी आंखों म कुछ कष्ट था और वह चिकित्सा के लिए अमरीका गये हुए थे। वहीं जवाहरलाल नेहरू ने फोन पर इस चिकित्सक राजनीतिज्ञ से यह भार संभालने को कहा लेकिन उन्हें लगा कि यह काय उनके स्वभाव के अनुकूल नहीं है और कहा कि फिर भी यदि आप (जवाहरलाल जी) इसे आवश्यक ही समझते है तो मैं इस भार को अस्थायी तौर पर संभाल लूगा। सरोजिनी की प्रतिक्रिया भी यही थी। बॉम्बे क्रानिकल ने लिखा कि कार्यकारी राज्यपाल का पद संभालते समय उन्होंने प्रेस से कहा कि "आप जंगली चिड़िया को पिंजरे में बन्द कर रहे हैं।'

सरोजिनी ने जिस देश की क्रांतिकारी परिषदों म इतनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी और जो अब स्वतंत्र होने जा रहा था उसमे उनका एक कार्यकारी पद संभालना कुछ अर्थों मे विचित्र प्रतीत होता था। इसका मुख्य कारण यह रहा

होगा कि वह स्वय उसकी ओर से उदासीन थी क्योकि सभी नेताओ के लिए, विशेषत जवाहरलाल नेहरू के लिए जिनके कधो पर प्रमुख जिम्मेदारी आ गई थी, शासन और प्रशासन के कार्य एकदम नये थे ।

15 अगस्त को भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात भारत लौटने पर बिधान चन्द्र राय यह देखकर प्रसन्न हुए कि सरोजिनी नायडू अपनी नयी स्थिति मे पूरी तरह प्रसन्न थी और अपने कर्तव्य ठीक से निबाह रही थी।" पश्चिमी बगाल काग्रेस कमेटी के अभिलेखो से ऐसा आभास मिलता है कि डा० राय ने उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पद से त्यागपत्र देने का निश्चय कर लिया था। इस प्रकार अनायास ही सरोजिनी नायडू भारत के सबसे बडे राज्य की राज्यपाल बन गई। वह प्रथम महिला राज्यपाल थी ।

इतना ही नही अन्य कोई भी राज्य 15 अगस्त, 1947 को भारत की स्वाधीनता की *ऐसी कलात्मक घोषणा प्राप्त नही कर सकता था, और न उसे नये* राज्यपाल का ऐसा रगीन शपथग्रहण समारोह ही प्राप्त हो सकता था। उस समारोह म सरोजिनी ने यूरोपियन पाशाक पर पाबदी लगा दी थी। अत विविध भारतीय पाशाको और पगडियो टोपियो म वह दृश्य निजाम के पुराने दरबारो की याद ताजा करता होगा । दरबारी नतको नतकियो के स्थान पर देश के समस्त धर्मों के ग्रथो से पाठ हुए। उनके लिए यही उपयुक्त था क्योकि उनके लिए सब धम समान थे। नये राज्यपाल के शपथग्रहण के समय सिख, मुस्लिम, जैन, बौद्ध हिंदू तथा ईसाई प्राथनाए गाई गई।

यह भी एक विचित्र बात रही है कि हिंदी के सबसे अधिक समथक राज्य म प्रथम राज्यपाल ने 15 अगस्त 1947 को अग्रेजी म अपना हृदयस्पर्शी भाषण दिया। उस ऐतिहासिक दिवस पर जनता को सबोधित करते हुए उनकी गहरी भावनाओ को आसानी से समझा जा सकता है

"हे ससार के स्वतत्र देशो! अपनी स्वतन्त्रता के दिन आज हम भविष्य म तुम्हारी स्वतन्त्रता के लिए प्राथना करते है। हमारा सघष ऐतिहासिक रहा है वह अनेक वर्षों तक चला और उसम बहुत से प्राणो का बलिदान हुआ। *यह एक सघष रहा है एक नाटकीय सघष। यह वीरो का एक ऐसा सघष* रहा है जो अपने देश के कोटि कोटि जनो के बीच अनाम हैं। यह महिलाओ का सघष रहा है जो स्वय वह शक्ति बन गई थी जिसकी वे उपासना करती

हैं। यह युवा का सघर्ष रहा है जो अचानक शक्ति मे रूपातरित हो गया। यह युवको, वृद्धो, धनियो, निधनो, शिक्षितो, अशिक्षितो, रोगियो, अछूतो, कोढियो और सतो का सघर्ष रहा है।"

'हम अपने कष्टो की कुठाली मे से आज नये सिरे से जन्म लेकर उठे है। विश्व के राष्ट्रो! मैं भारत के नाम पर तुम्हारा अभिनदन करती हू, अपनी मा के नाम पर, अपनी उस मा के, जिसके घर पर हिम की छत है, जिसकी दीवारें सजीव समुद्रो की हैं, जिसके दरवाजे तुम्हारे लिए सदा खुले है। मैं इस भारत की स्वतत्रता समस्त ससार के लिए प्रदान करती हू यह अतीत मे कभी नही मरा, यह भविष्य म कभी नष्ट नही होगा और यह ससार को अतत शाति की दिशा मे ले जाएगा।"

सरोजिनी के सपनो के भारत—सशक्त, आश्रयदात्री सवेदनाशील मा का पुनर्जन्म हो गया किंतु मा के बच्चे अनुशासनहीन बने रहे, उन्होने अपना ध्यान राष्ट्रीयता के एक तत्व पर केंद्रित नही किया और वे आपस म बटे रहे। इस बात की चेतना उत्तर प्रदेश के उस राज्यपाल से अधिक और किसी के मन म न थी। वे उस राजभवन म अपनी तुलना पिंजर के पछी से करती थी, यह उपाधि उस उपाधि के सदर्भ म उपयुक्त ही प्रतीत होती है जो उन्ह महात्मा गाधी ने दी थी—भारत कोकिला! और जहा वे उस सुनहले पिंजरे की उत्कृष्टतम मेजबान (सत्कारिणी) थी तथा उन्होने एक सरकारी स्थान को एक सुदर घर मे बदल डाला था और एक सत्कार और स्वागतपूर्ण सरकारी निवास को महत्ता और गरिमा का केंद्र बना दिया था, वहीं उनके अनेक भाषण और पत्र यह सिद्ध करते हैं कि उनका हृदय देश की जनता के लिए व्यथित था।

उस सुव्यवस्थित भवन मे आने जाने वाले असख्य अतिथियो को इस व्यथा का बोध कभी नहीं हो पाता था। वे प्राय उन्ह विस्तृत बरामदे म धूप म बैठे जासूसी कहानिया पढते अथवा रगीन चाय समारोहो की अध्यक्षता करते और मित्रो तथा भेंटकर्ताओ का विनोद और परिहास मे परिपूर्ण कहानिया अथवा चुटकुले या सस्मरण सुनाकर उनका मनोरजन करते देखते थे। वे दिन असख्य मित्रो को अब भी याद आते हैं। वे उनकी सुदर मेज और शानदार भोजन, सज्जा की भारतीय शान शौकत तथा राजभवन के उन कर्मचारियो के बारे म चर्चा करते हैं जो उन्हें बहुत प्यार करते थे और राजभवन को उसी व्यवस्थित और गरिमामय

रीति मे सजाये रखते थे जिस तरह पूर्ववर्ती अग्रेज स्वामियो के लिए सजाते थे। यह बात सर्वविदित है कि जिन कर्मचारियो ने अग्रेजो की सेवा की थी उनकी मनोवृत्ति प्राय ऐसी दासतापूर्ण हो जाती थी कि वे भारतीय स्वामियो को निरादर की दृष्टि से देखने लगते थे, लेकिन सरोजिनी शासन ही नही कर सकती थी वह स्नेह भी उगा लेती थी। राज्यपाल के रूप म उनके स्वभाव के उस पक्ष की तुष्टि के लिए पर्याप्त विस्तृत क्षेत्र प्राप्त हो जाता था जिसके अतगत वह सौदय, सत्कार और मनोरजन करना पसद करती थी। कुछ लोग कहते है कि अपने अतिम दिनो म वह एकातप्रिय हो गई थी। इसके विपरीत कुछ लोग यह कहते है कि बचपन म वह अपने पिता के दरबार का मनोरजन किया करती थी और यद्यपि वह वैभव के मामले म निज़ाम का मात नही कर सकती थी तथापि वह अपने साम्राज्य के सत्कार को अपरिमित रूप म हार्दिक और राजसी बनाने म अधिक सफल रही। एक बात बहुत स्पष्ट है कि उन्होने अपने स्वभाव को बनाये रखा। जब जेल मे या झोपडी मे वह वहा की परिस्थिति को आत्मसात कर लेती थी और वहा जो कुछ उपलब्ध होता था उसी से काम चला लेती थी तब सम्राज्ञी की भूमिका पाने पर तो उनका सम्राज्ञी हो जाना स्वाभाविक ही था। मानव के रूप मे उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी और लचीली थी, लेकिन उनमे सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनका व्यक्तित्व उनका नितात अपना था।

केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड की बठका के दौरान मौलाना आज़ाद हुमायू कबिर और अन्य अनेक मित्र लखनऊ के राजभवन म ठहरते थे। सरोजिनी भाषा के प्रश्न पर बहुत चिंतित थी और वह यह भी जानती थी कि उनके शिक्षामत्री हिंदी के कितने बडे हिमायती थे और वे चाहते थे कि हिंदी को उर्दू और अग्रेज़ी दोनो का स्थान प्राप्त हो। उत्तर प्रदेश उर्दू का घर था और जहा तक मालूम होता है उसके भविष्य के बारे मे बहुत अनिश्चितता थी। भाषा वस्त्रो की तरह ही व्यक्ति की निजी चीज़ होती है। इससे भी अधिक बात यह कि मानव जीवन म भाषा सस्कृति और जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है। यही कारण है कि भाषा के प्रश्नो को लेकर चिन्ता और प्रतिरोध के बडे तूफान उमड पडते है। जहा उनके मत्री हिन्दी का समर्थन कर रहे थे वहा यह बात सरोजिनी नायडू की विशेषता ही मानी जायेगी कि जब शिक्षा बोर्ड का उद्घाटन करते हुए वह चालीस मिनट तक बोली तो उन्होने दृढतापूर्वक कहा कि "मैंने लोगो को यह

कहते सुना है कि उर्दू पाकिस्तान की भाषा है, लेकिन याद रहे कि वह सिंध मे नही भारत म जन्मी थी।"

बाद मे बोर्ड की बैठक के समय उर्दू को क्षेत्रीय भाषा का स्तर देने के प्रश्न पर श्री सम्पूर्णानन्द ने अपनी असहमति नोट कराई जिसका समर्थन मुख्य मन्त्री पंडित पंत ने किया। हिन्दी के दो इतने शक्तिशाली समर्थकों के बावजूद सरोजिनी नायडू के दृढ समर्थन और इनकी इस चिन्ता के कारण ही यथास्थिति बनी रही कि यदि मुसलमानो की भाषा की सरकारी मान्यता छिन गई तो उन की क्या दशा होगी।

9 दिसम्बर 1947 को लखनऊ विश्वविद्यालय के दीक्षांत भाषण मे उन्होंने पहले से भाषण तैयार न करने की अपनी सनातन असमर्थता को स्पष्ट करते हुए कहा

> 'मुझे तो भाषण देने के बाद ही पता चलता है कि मैंने क्या कहा है। यह एक बहुत ही अनिश्चित प्रक्रिया है जिसकी सिफारिश मैं हर किसी के लिए नही करती।"

आगे उन्होंने कहा

> "मैं आज उन लोगो से बात करने जा रही हू जिन्हें मैं इस धरती पर सबसे अधिक स्नेह करती हू व हैं नयी पीढी के लोग और मुझे आशा है कि वे मुझे इस बात के लिए क्षमा कर देंगे कि मेरे पास डिग्रिया, डिप्लोमा, सनद और अंगवस्त्र नही है, क्योंकि वे यह बात जानते है कि मैं उनकी मित्र, हिमायती और उनकी साथी हू।"

और ये कोई कोरे शब्द न थे वरन उनके सतत तारुण्य और इस बोध का अङ्ग थे कि उनकी लगभग सत्तर वर्ष की अवस्था उनकी उत्कट त्वरा और आदर्शवादिता को मद नही कर पाई थी। उनकी तो केवल एक ही समस्या थी कि जीवन का थोडा ही समय शेष रह गया है और यह चेतना कि अब आगे उनके पास समय नहीं बचा है अत युवा पीढी ही मशाल को अपने हाथो म सभाल सकती थी

> "हम अभी तक नये भारत के सृजन की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। हम अभी तक भारत के स्वतन्त्र ध्वज के पीछे सन्निहित तत्वों के प्रति अनुशासित और अभ्यस्त होने के दौर से गुजर रहे हैं। इस नये भारत का निर्माण कौन

करेगा ? इस नये भारत के विधायक कौन होंगे ? उस जादुई दुनिया का निर्माण कौन करेगा जिसमें समस्त समस्याओं का समाधान हो जाय, समस्त अन्याय समाप्त हो जाये, समस्त भेदभाव तिरोहित हो जायें, और जिसमें युवक और युवतियां कदम से कदम मिलाकर नये विश्व के उन मुक्त युवाओं में शामिल होने के लिए आगे आयें जो अपने झंडे और अपनी स्वतन्त्रता के पीछे निहित तत्वों के प्रति अभ्यस्त हो चुके हैं।

इसकी कम ही संभावना है कि उन्होंने उस दिन जो बहुत स्पष्ट बातें कही थीं उन्हें उनके किसी भी श्रोता ने पूरी तरह समझा हो, उनमें से एक बात यह थी

मानव जाति के लिए स्वतंत्रता सबसे बड़ा दायित्व है।"

उस काल की उन्नयनकारी हवा में जब स्वतंत्रता की मादकता ने बूढ़ों और जवानों को मदहोश कर रखा था ऐसे कम ही लोग थे जिनके मन में सरोजिनी की तरह इस बात का अहसास हो कि हमारी स्वतंत्रता भविष्योन्मुखी होने के बजाय अतीतोन्मुख है अतः उसके परिणाम कटु हो सकते हैं और यह भी कि हमारे देश की जनता निरंतर शासित रहने की अभ्यस्त होने के कारण महज प्रतिरोध और विद्रोह की स्वतंत्रता का उपयोग करना जानती है उसे न्याय सहिष्णुता और शासन करने के लिए आवश्यक बुद्धिमत्ता का बोध नहीं है। उन्होंने उस स्मरणीय दीक्षांत भाषण में आगे कहा

" प्रत्येक पीढ़ी का जीवन एक खाली मंदिर है जिसके भीतर ईश्वर की प्रतिमा स्थापित करने के लिए देवताओं की आवश्यकता होती है। आप लोग जिन्होंने आज डिग्रियां प्राप्त की हैं इस बात को समझें कि ज्ञान अपने आप में तब तक एक सूखी चीज है जब तक कि वह आपके चरित्र और दैनिक आचरण का अंग न बन जाये। और, जब तक आप उस प्रतिज्ञा को जो आज आपने दीक्षादान के समय ली है कि आप मानवजाति की प्रगति के लिए भरसक प्रयास करेंगे अपनी दैनिक प्रार्थना दैनिक संभाषण, दैनिक कर्म का अंग नहीं बना लेते तब तक आपका ज्ञान किसी काम का नहीं है। मानवजाति की सेवा का जो व्रत आपने लिया है उसके प्रति यह तो विश्वासघात होगा कि आप अपनी डिग्रियां और अपने डिप्लोमा का उपयोग महज अपने लाभ के लिए करें। मैं ऐसा महसूस करती हूं कि भारतीय

युवा के कतव्य का एक बडा भाग एक स्वाभिमानी अविभाजित भारत, एक प्रगतिशील भारत, एव अविभाजित भारत और एक सही दृष्टिकाण वाले भारत के इतिहास का नव निर्माण करना है।"

और, अत मे उन्हाने कहा

"मैंन जीवन भर आप पर प्यार बरसाया है और मैं जैसे-जैसे वृद्ध होती जाती हू वैसे वैसे मेरे मन म यह विश्वास दृढ होता जाता है कि ससार के युवा मेरे सपना को, मेरे अधूरे सपनो को पूरा करेंगे। हम विभाजन की नही एकता की वात करें, हम घृणा की नही प्रेम की वात करें, हम अधिकारो की नही साधीपन की वात करें, हम श्रेष्ठ और सुदर रीति से कत यो के परिपालन की वात करें।"

उस दीक्षात भाषण के केवल एक महीने वाद 30 जनवरी, 1948 को सरोजिनी के जीवन के प्रेरक, सहयोगी प्रिय गुरु और शिक्षक महात्मा गाधी को गोली मारकर हत्या कर दी गयी। उनकी मृत्यु से सार ससार को धक्का लगा क्योंकि उनकी मत्यु भी उतनी ही अथवती थी जितना साथक उनका जीवन था। उस दिन दिल्ली म जो नाटकीय घटना हुई वह मानवीय अस्तित्व का एक ऐतिहासिक नाटक वन गया जिसम जीवन, मत्यु श्रेय, दुजनता और अतिम बलिदान द्वारा सद की विजय, ये सभी तत्व उभरकर सामने आ गए। सरोजिनी ने उनके प्रति अपनी हृदयस्पर्शी श्रद्धाजलि मे दु ख प्रकट करने पर समय नष्ट नही किया। वह त्रासदी इतनी विराट थी कि उसम दु ख मनाना बहुत छोटी वात होती। वह उनकी शक्ति के बारे म बोली, उस व्यक्ति की शक्ति के बारे म जो इतना सत था, देहातीत था, इतना नम्र था, मरते समय जिसके पास कुछ न था, जो निहायत कमजोर था साथ ही जिसकी शक्ति अतुल-अपरिमेय थी और उसन जिस शक्ति का प्रयाग किया सम्राट भी उससे परिचत न थे। उन्होने बताया कि यह सब इस कारण था क्योंकि "वह प्रशसा की परवाह नही करते थे, वह निंदा की भी परवाह नही करते थे। वह केवल उन आदर्शों की परवाह करते थे जो उन्हान सिखाये और जिनपर उन्होंने आचरण किया। और हिंसा तथा मनुष्य के लोभ मे से उत्पन्न होने वाले अत्यत भयकर सकटा म भी, जब युद्धस्थल पर सूखी पत्तिया और मुरझाये फूलो की तरह मनुष्यो की लाशा के ढेर लग गये तब भी उनकी आस्था अहिंसा के अपने सिद्धात से तनिक नही डिगी। उनके मन म यह विश्वास था कि

भले ही सारा ससार आत्म हत्या कर डाले और सारे ससार का रक्त बह उठे, तब भी उनकी अहिंसा ससार की नयी सभ्यता की प्रामाणिक आधारशिला सिद्ध होगी और उनके मन म यह आस्था थी कि जो जीवन की खोज करेगा वह उसको खो बठेगा और जो जीवन को खो देगा वह उसे पा जायेगा।" ईसा मसीह की तरह उनके सामने प्रेम के सिद्धात का कोई विकल्प न था क्योंकि इस धरती पर मनुष्य का जीवन सीमित है, लेकिन उस अल्पकाल म भी प्रेम का पाठ सीखा जा सकता है। और, ईसा की ही तरह उनकी मृत्यु हिंसा से हुई जिसके कारण मानव-मात्र का हृदय चीत्कार कर उठा।

ऐतिहासिक दृष्टि से गाधीजी की मृत्यु कटुतापूर्ण घृणा के वातावरण म हुई। विभाजन न लोकमानस पर भीषण घाव छोडे थे। भारत और पाकिस्तान, दोनो नये राज्य दिग्भ्रात थे और उनपर जो दायित्व आ पडा था उसके लिए वे नये थे। ऐसी अनिश्चित परिस्थितियो म आशकाए और घृणा अतिशयता और अविवेक की सीमाओ को स्पश करने लगती है और जो लोग कभी भाई की तरह रहे होते हैं वे घृणा और अविश्वास से टूट जाते है तथा एक दूसरे के प्रति शत्रुओ जसी घणा से भी अधिक भयकर घृणा करने लगते हैं। गाधीजी की हत्या के आघात ने दोनो ओर बढती हुई घृणा के उस ज्वार को अवरुद्ध कर दिया।

राष्ट्र के नाम अपने सदेश म सरोजिनी ने 1 फरवरी, 1948 को कहा

उनका सवप्रथम उपवास जिसके साथ मैं भी जुडी थी 1924 मे हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए था, लेकिन उसके प्रति सारे राष्ट्र की सहानुभूति थी। उनका अतिम उपवास भी हिंदू मुस्लिम एकता के लिए था लेकिन उसके प्रति सारे राष्ट्र की सहानुभूति नही थी। राष्ट्र इतना विभाजित, इतना कटु घणा और सदेह से इतना परिपूण तथा देश के विविध धर्मों के सिद्धातो के प्रति इतना निष्ठाहीन हो गया था कि महात्मा को समझने वाले लोग मुट्ठी भर रह गये थे और इन्ही लोगो ने उस उपवास का सही अथ समझा। यह बात बहुत स्पष्ट है कि उस उपवास के मामले म उनके प्रति राष्ट्र की निष्ठा विभक्त थी। यह भी बहुत स्पष्ट है कि किसी अन्य सप्रदाय न नही वरन् उनके ही धम के लोगो न हिंसक रीति से उनका विरोध किया और अमानवीय रीति से अपना क्रोध और रोष प्रकट किया। हिंदू जाति के लिए यह खेद की बात है कि उसका सबसे महान हिंदू, हमारे युग का एकमात्र हिंदू

जो अत्यत पूर्णता और अकप आस्था के साथ हिंदू धर्म के सिद्धात, आदर्शों और दर्शन के प्रति सच्चा था एक हिंदू के हाथो मारा गया।"

उन्होंने कापती हुई आवाज म कहा

"यह सचमुच हिंदू आस्था की कब्र पर लगे पत्थर पर खुदा लेख है कि हिंदू अधिकारी और हिंदू जगत के नाम एक हिंदू के हाथ से सर्वश्रेष्ठ हिंदू का बलिदान हुआ। मगर कोई बात नहीं। हममे से बहुत से लोगो के लिए यह दिन प्रतिदिन और वर्ष प्रतिवर्ष महसूस होने वाली व्यथा और हानि की चेतना है क्योकि हमम से कुछ लोग तीस से भी अधिक वर्षों से उसके साथ समीप से जुड़े थे, हमारे जीवन और उसका जीवन एक दूसरे के अभिन्न अग बन गये थे हमारे पुट्ठे, धमनिया और शिराए हृदय और रक्त उसके जीवन के साथ गुथे बुने थे।

"लेकिन यह तो आस्थाहीन विश्वासघातियों जैसा कर्म होगा कि हम निराशा के सामने घुटने टेक दें। यदि हम यह सोचकर कि वह चले गये सचमुच यह मान लें कि उनकी मृत्यु हो गई और हम यह विश्वास कर लें कि सब कुछ खो गया है तो हमारे प्रेम और हमारी आस्था का क्या मूल्य रह जाता है ? क्या हम यहा उनके उत्तराधिकारी नहीं है, उनके आध्यात्मिक वशज उनके महान आदर्शों के रिक्तभागी (लीगेटीज), उनके महान कार्य के उत्तराधिकारी ? क्या उनके कार्य को पूरा करने सयुक्त प्रयास द्वारा उससे कहीं अधिक परिणाम प्राप्त करने के लिए हम नहीं है जितना कि वह अकेले कर सकते थे ? अत मैं कहती हू कि निजी दुख मनाने का समय बीत गया है।'

इस शक्तिशाली भाषण का समापन अपनी अतरात्मा की गहराई से निष्कृत स्पदनशील शब्दों से करते हुए वह ऊचे स्वर मे बोली

'मेरे पिता विश्राम मत करो। हमसे हमारी प्रतिज्ञा का पालन कराओ, हमे शक्ति दो कि हम अपने वचन को निभा सकें, हम जो कि तुम्हारे उत्तराधिकारी है तुम्हारे वशज हैं तुम्हारे गुमाश्ते हैं, तुम्हारे सपनो के सरक्षक हैं भारत की नियति के वाहक है। तुम्हारा जीवन अत्यत शक्तिशाली था, उसे अपने मरण म भी तुम उतना ही शक्तिशाली बना रहने दो। मरणधर्मिता से परे तुमने अपने सर्वप्रिय उद्देश्य के लिए सर्वोच्च कोटि का

बलिदान देकर मरणधर्मिता को लाघ लिया ।"

और जिस प्रयोजन से वह नाआखाली गये और पाकिस्तान की जनता के प्रति उदारता प्रदर्शित करने के लिए उन्होंने सर्वोच्च दड चुकाया उसे उनकी सहयोगिनी सरोजिनी ने अन्य लोगो की अपेक्षा सबसे अधिक हृदयगम किया। यह प्रयोजन था हिंदू मुस्लिम एकता का । उनके ही काल म और उनके प्रयासा के बावजूद भारत विभाजित हो गया और गाधीजी ने अतत पूण ज्ञान का मूल्य चुका दिया । भारत मे तब तक शाति नही होगी जब तक कि भाई के प्रति भाई का प्रम न हो और लोगो मे एक दूसरे का विश्वास पैदा हो । उन्हाने गाखले से बहुत आत्मविश्वासपूर्वक कहा था कि पाच वर्षों म हिंदू मुस्लिम एकता स्थापित हो जायेगी, उसके बाद की लबी शताब्दिया म उन्होंने यह बात दूसरा की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझ ली थी कि वह प्रयोजन उनके जीवनकाल म सिद्ध नही होगा।

गाधीजी सराजिनी के लिए 'मेरे गुरु, मेरे नेता, मेरे पिता' थे । उनकी मृत्यु मे सरोजिनी ने गाधीजी की विजय का पहचान लिया था । गाधीजी हमेशा यह मानत थे कि मनुष्य को मौत का सामना करने के लिए तयार रहना चाहिए । उनके बारे म कहा गया है "वह सम्राटा की तरह सत्ता के चरम शिखर पर पहुचकर दिवगत हुए । सरोजिनी का यह कथन बहुत सही है कि यह उपयुक्त ही था कि गाधीजी का देहावसान सम्राटा की नगरी दिल्ली म हुआ । जिस समय गाधीजी का शात शव फूला से ढका और हृदय म पिस्तौल की गाली छिपाय रखा हुआ था तब सरोजिनी न देखा कि कुछ महिलाए उस सत के पार्थिव अवशेष को घेरकर रुदन कर रही हैं। सराजिनी अचरज से बाली, 'यह क्रदन किस लिए हा रहा है ? क्या आप लाग यह चाहती थी कि वह बुढाप और अपच से मरते ? उनके लिए यही मृत्यु महान थी।" उनके इन शब्दो से सावभौम अदृष्ट का नाटक माफ तौर पर समझ म आता है। यह काई साधारण मत्यु या हत्या न थी। नाथूराम गाडसे मनुष्य के प्रति मनुष्य की दैवी अभिव्यक्ति का शाश्वत और नियति द्वारा प्रेरित साधन था।

इन सघातमक घटनाआ के कुछ दिनो बाद सरोजिनी को अपने सबसे पुरान मित्र नवाब निज़ामत जग का पत्र मिला जा कि उस समय 76 साल के थे। उनके कोमल दाशनिक पत्र उन्ह उन दीघ वर्षों की मधुर स्मतिया दिलात थे जा सरोजिनी के लिए अशात और सक्रियतापूण वप थे तथा स्वय उनके लिए पुरातन

हैदराबाद के शांत पानी में लंगर डालकर खड़े हुए थे। 1911 से वे दोनों एक-दूसरे को नियमित रूप से पत्र लिखते रहे थे। निज़ामत जंग के पत्र पुरानी स्मृतियों तथा घटनाओं के सच्चे अर्थों पर किये गये चिंतन से परिपूर्ण होते थे। गांधीजी के बारे में उन्होंने लिखा 'मैं उनकी सच्ची आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का सबसे अधिक प्रशंसक हूं, वह उनकी सहजात आत्मीयता की सहचारिणी थी। महान और स्थायी सत्यों के ज्ञान के आधार पर वह यह समझ गये थे कि सबसे अधिक निकृष्ट कोटि की दासता आत्मा की पराधीनता है और दास मनोवृत्ति वस्तुतः दोषपूर्ण प्रयोजनों की सिद्धि के लिए दुष्ट मनोवृत्ति के समक्ष समर्पण है। उनकी अपनी बुनियादी मान्यताओं ने इस केंद्रीय आस्था को सुदृढ़ बना दिया था कि दासता से मुक्ति केवल आत्म मुक्तिदायी आत्मा द्वारा अपने भीतर की सक्रियता के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

"एक ओर गांधी भारत की सर्वोच्च कोटि की संतान का प्रतीक है दूसरी ओर उनका हत्यारा भारत की भूमि में से जन्म लेने वाले दुष्टतम कोटि के अपराधी वर्ग का प्रतीक है। यह एक ऐसा वर्ग है जो आस्था से शून्य, हृदय में अनीश्वरवादी मानवता और सदाशयता के अर्थ को समझने में असमर्थ तथा इस सबसे कहीं अधिक कृतघ्न होता है।"

एक अन्य पत्र में वह कहते हैं

'तुम्हारे एक कोमल संवेदन के प्रति अशिष्ट प्रतीत होने का भय मेरे मन में न हो तो मैं यह कहने का साहस करूंगा कि आधुनिक राजनीतिज्ञ एक भोंडे दस्तकार की तरह दिखाई देने लगा है। वह हर उस उपकरण पर झपट पड़ने के लिए व्यग्र है जो उसके हाथ में आ जाये, भले ही उसे उसका उपयोग मालूम हो या न हो। क्या पेशेवर राजनीतिज्ञ में प्रभावशाली शब्दों को उपकरणों के रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति नहीं पनप रही है? जब कभी वह रचनात्मक होने का दावा करता है तब क्या वह खतरनाक रूप में विध्वंसात्मक नहीं हो जाता?" वह पुराने हैदराबाद के राजनीतिक मूल्यों की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि उनका 'प्रयोजन (जनता का) मानवीय सहानुभूति के द्वारा परस्पर एक-दूसरे के समीप लाना था वह बहुसंख्या और अल्पसंख्या के रूप में महज़ उनके सिर नहीं गिनते थे। तुम्हें और मुझे अपने हैदराबाद के सुनहले दिन याद हैं और हम व्यर्थ ही चारों ओर भटक

सम्प्रदायो, समुद्रों और पर्वतों को लाँघ जाती है और जो सम्राटों और सेनापतियों की अपेक्षा कहीं अधिक काल तक जिंदा रहता है। लेकिन उन्होंने उस सभा में पूछा "क्या हम भारत में अपने मिशन के प्रति सच्चे सिद्ध हुए हैं ? नेता होने की कोशिश में क्या हम शास्त्रीय चर्चाओं अथवा भारतीय जनता की पारस्परिक घृणा की मनोवृत्ति के कारणों की खोज में अतिव्यस्त नहीं रहे हैं ? यदि हम अपने ध्येय के प्रति सच्चे होते तो क्या हिंदुओं और मुसलमानों के बीच मतभेद इतने उग्र होते ?" उन्होंने अपना अलंकारपूर्ण भाषण इस कठोर चेतावनी के साथ समाप्त किया 'हम अपने अंधविश्वासों को भुलाकर लिखने में असमर्थ रहे हैं इसका परिणाम यह है कि आज हमारे बीच मृत्यु और फूट विद्यमान है। जो कुछ सर्वनिष्ठ नहीं है वह मानवीय नहीं है जो कुछ सार्वभौम नहीं है वह मानवीय नहीं है, जो जीवन नहीं है वह मानवीय नहीं है। आप किसी भी भाषा में लिखें, जो कुछ आप लिखें वह जीवन की सच्ची और यथार्थ अनुभूति होनी चाहिए, वह मानवीय मान्यताओं की व्याख्या और मानवीय चेतना के उन्नयन का पूरा निरूपण होना चाहिए। जो भी भाषा आपको पसंद है उसमें तभी तक निपुणता प्राप्त कीजिए जब तक कि वह मानवीय हृदय और आत्मा की भाषा बनी रहे। केवल साहित्य के माध्यम से ही सत्य और जीवन को सुरक्षित रखा जा सकता है। अतः यदि आप और मैं अपने ध्येय के प्रति सच्चे हैं तो हम आत्मा के रूप में जीवित रहेंगे। हम आने वाले युगों का अभिन्न अंग बन जाएँगे लेकिन तब जब हम विश्वप्रेम से ओतप्रोत होकर सौन्दर्य और सजीव सौन्दर्य का सृजन करें।

उनका जीवन सर्वतोमुखी हो गया था। अपने जीवन भर उन्होंने सत्य के प्रत्येक आयाम को साथ लेकर एक कवि की आँखों से देखे गये सत्य की दृष्टि से और अपने प्रिय नेता गाँधीजी की कर्मयोग की धारणा के अनुसार कार्य किया। गाँधीजी ने ही जनता के हृदय में उनका प्रवेश कराया और उनकी वक्तृता से जनता के हृदय को आलोडित कराया जिससे कि वह स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए कार्य करे। मनुष्य के इस दीर्घ अनुभव तथा क्रिया और प्रतिक्रिया के रहस्यों की चुनौतियों के पश्चात् वह पुनः लेखन की ओर झुकीं और उन्होंने अनुभव किया कि लिखित शब्द मानवजाति के हृदय को छूने का सबसे अधिक दीर्घजीवी साधन है। 1911 में उन्होंने निज़ामत जंग को एक लंबा पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने उनकी कविता का विश्लेपण किया

"आ मेरे मित्र ! तुम उस एकांत और सावधानीपूर्वक सुरक्षित कुंज (उनके अपने निजी अनुभव और ध्यान का कुंज) के बाहर के समस्त आंसुओं और हास्य से अनभिज्ञ प्रतीत होते हो। आओ, बाहर झांको राजमार्गों पर, जीवन के साधारण पथ की धूलि और तपन में। समस्त पुरुष और महिलाएं प्रतीक्षा कर रहे हैं कि तुम शायद दैवी प्रतिभा से संपन्न पुरुष अथवा महिला हो जो अकथ परासत्यों को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकते हो पीड़ा, सुख आशा भय आशंका, साहस, हताशा प्रेम, अभीप्सा सब, सब आवेगों का जिन्हें मानवीय आत्मा अनुभव करना तो जानती है लेकिन क्योंकि सब मनुष्य कवि नहीं होते अभिव्यक्त नहीं कर पाती। यदि तुम अपने दायित्वों और अपनी विशेष सुविधाओं के प्रति सच्चा होना चाहते हो तब केवल अपनी भावनाओं की ही नहीं समस्त मानवीय भावनाओं को स्वर प्रदान करो। मृत्यु के क्षणों में सुकरात की सी निष्कलंक और प्रशांत गरिमा तथा अंधेरे में भीत छोटी बच्ची के आंसुओं का यथार्थ निरूपण कवि के सिवाय और कौन कर सकता है।'

सरोजिनी हमेशा कल्पनाकार की महानतम आवश्यकता को पहचानती थी सपनों की सिद्धि को अपनी आंखों से देखना। और वह यह भी पूरी तरह जानती थी कि सपने चाहे उनके अपने हों या किसी अन्य व्यक्ति के आंशिक रूप में ही सिद्ध होते हैं और किसी न किसी मात्रा में ही उनमें परिवर्तन भी हो जाता है।

एक बार सरोजिनी ने मौलाना आजाद के बारे में कहा था

"भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक खोजने पर इतना दृढ़ देशभक्त, आदर्शों के प्रति अडिग आस्थावान पुरुष, इतना प्रकांड विद्वान स्वतंत्रता का इतना महान भक्त और हमारे देश की घातक साम्प्रदायिकता के भयावह और भीषण कीटाणुओं से सर्वथा मुक्त व्यक्ति मिल पाना कठिन है। वह (मौलाना आजाद) एशिया के महानतम विद्वानों और भारत के महान विचारकों में से थे।'

डा० राधाकृष्णन को संबोधित करते हुए उन्होंने पूछा

"क्या दार्शनिकों को प्रशंसा की आवश्यकता होती है ? कल ही हम आपके जादुई भाषण से सम्मोहित हो गये थे वह इतना गरिमामय भाषण था कि श्रोताओं में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं रह गया था जिसका हृदय उसके

प्रभाव से अछूता रह गया हो। आप ने बहुत प्रशंसा और विद्वता उपार्जित की है। मुझे इस बात पर बहुत गर्व है कि बौद्धिक प्रतिभा के अतिरिक्त आप में परिहास का आनंददायी और प्रियकर गुण भी विद्यमान है जिसके कारण आप दार्शनिक ही नहीं एक साथी सहयोगी और मित्र भी बन जाते हैं। क्या आप मुझे यह अनुमति देंगे कि मैं आपकी प्रतिभा की सराहना के प्रतीक के तौर पर कागज का यह टुकड़ा आपको भेंट करूं ?"

ये पंक्तियां ऐसी हैं मानो वह स्वयं अपने बारे में लिख रही हों।

उनके लिए यह बहुत ही उपयुक्त था कि अपनी मृत्यु से केवल एक महीना पहले लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति के नाते उसके रजत जयंती दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने भारत माता के कुछ प्रतिभावन पुत्रों बेटों को मानद उपाधियां प्रदान कीं। उनमें जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद गोविंदवल्लभ पंत, डा० राधाकृष्णन (जो बाद में भारत के राष्ट्रपति हुए) जैसे महान नेता और डा० राधाकुमुद मुखर्जी, मेघनाद साहा और होमी भाभा सरीखे बुद्धिवादी और वैज्ञानिक थे। सम्मानित व्यक्तियों की इस सूची में अंतिम व्यक्ति थे शेख मुहम्मद अब्दुल्ला।

अपने प्रिय जवाहर के लिए उनकी टिप्पणी संक्षिप्त और विलक्षण थी

'मैं तुम्हारे बारे में क्या कहूं ? योद्धा कवि, राजपुरुष स्वप्नदृष्टा, राजनीतिज्ञ और हमारे प्यारे महात्मा गांधी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी ! तुमने भारत के व्यक्तित्व को सितारों तक ऊंचा उठाया है। तुम निस्संदेह नेता हो, लेकिन हमारे खेल के साथी और मित्र, तथा मेरे भाई और मेरे बेटे भी हो। मुझे आशा है कि एक दिन ऐसा आयेगा जब तुम्हें एक और पुस्तक लिखने का अवकाश मिलेगा और उसमें तुम कहोगे, 'मैंने अपनी मंजिल प्राप्त कर ली है भारत ने अपनी मंजिल प्राप्त कर ली है।'

अपने शिक्षामंत्री डा० संपूर्णानंद को मानद उपाधि प्रदान करते समय उन्होंने प्रदेश के छात्रों के लिए उनके कार्य का उल्लेख किया

"किसी भी विद्यार्थी अथवा विद्यार्थियों को भड़काने वाले व्यक्तियों को ऐसा मानने का अधिकार नहीं है कि उनके मंत्री, विशेषत डा० संपूर्णानंदजी अपनी शक्ति भर कार्य नहीं कर रहे हैं। वह बुद्धिवादियों में भी बुद्धिवादी हैं।" यह सुनते ही हॉल में शोर मच गया। लेकिन सरोजिनी में अनुशासन

हीन भीड का नियंत्रित करने की शक्ति नष्ट नहीं हुई थी, वह कठोर स्वर म बोली "मेरे भाषण के बीच आप खामोश रहगे।" उनका यह स्वर शोर के बीच धस गया और हाल मे पूरी तरह शांति छा गई। उनके जीवन मे ऐसे अनक अवसर आए इससे ऐसा आभास होता है कि उनकी उपस्थिति और उनके स्वर के चु बकीय प्रभाव म कोई ऐसा विशेष गुण था जिसका श्रोताओ पर यह असाधारण असर होता था।

विज्ञानी प्रो० के० एम० कृष्णन को मानद उपाधि प्रदान करते हुए उन्होंने जो विचित्र टिप्पणी की शायद वैसी टिप्पणी अन्य किसी व्यक्ति के बारे मे कभी नही की गयी। उन्होंने कहा

'आपके काय की विद्वत्तापूर्ण बारीकियो का समझ पाना मेरे वश की बात नही है लेकिन मैंने विस्मय और गौरवपूर्वक आपकी एक महान भूल देखी है और वह भूल यह है कि आप बहुत नम्र और बहुत निरभिमानी है जबकि विज्ञान के हित म आपको गर्वीला होना चाहिए। ऐसा मत मानिये कि विज्ञान के क्षेत्र म उद्दाम होने का अर्थ अहमन्यता है। आपके पास विश्व को देने के लिए एक उपहार है अभिमान के साथ दीजिये और निश्चिततापूर्वक दीजिये।

अपने मुख्यमंत्री पंडित पत को मानद उपाधि देते हुए उन्होंने कहा कि उनकी प्रशसा करना रिश्वत देने जैसा भ्रष्टाचार है। इसके बावजूद उन्होंने भारत के सबसे बड़े राज्य की समस्याओ के बारे म उनकी पूर्ण जागरूकता के लिए उनकी प्रशसा की और कहा

"मैंने इस प्रदेश म दिन प्रतिदिन उनका काय देखा है और मुझे मालूम नही कि वह कब सोते ह। मुझे यह मालूम है कि वह इस प्रदेश के लिए जागरूकता के सजीव प्रतीक बन गये है। वह उन लोगो म से ह जो उन परिस्थितियो म भी जिनम निजी और साप्रदायिक भावना का किंचित औचित्य हो सकता है समस्त निजी और साप्रदायिक भावनाओ म ऊपर उठ गये ह। अपने इसी निष्पक्ष साहस के कारण वह उत्तर प्रदेश के नायक बन गये ह।"

अपने जन्मदिन 13 फरवरी (1949) स कुछ ही पहले सरोजिनी नायडू दिल्ली गयी। जिस समय वह राष्ट्रपति भवन (उस समय गवनर जनरल का भवन) की

कार म बैठ रही थी उस समय उनका सिर कार की नीची छत से टकरा गया और ऐसा लगता है कि वह इस आघात स कभी नही उबर सकी। यद्यपि वह अपना नियमित काय करती रही तथापि उनके सिर म भयकर शूल होन लगा था। इसके बावजूद उन्होने राज्य के काम को प्राथमिकता दी और वह 15 फरवरी को लखनऊ लौट गयी जिससे कि वह कमला नेहरू अस्पताल के बेगम आजाद कक्ष का उदघाटन करने के लिए फरवरी के अत म गवनर जनरल राजगोपालाचारी के इलाहाबाद आगमन के अवसर पर उनके स्वागत की तयारी कर सके। वह यह सोचकर बहुत दु खी हो उठी कि वह राष्ट्र के प्रात म राष्ट्र के अध्यक्ष के प्रथम आगमन पर उनका स्वागत और परम्परागत सम्मान स्वय नही कर पायेंगी।

उस समय तक उनके सिर म बराबर दद बना रहने लगा। इसी निराशा मे उन्होने पद्मजा को राजाजी के सम्मान म स्वागत की तयारी करने और उस अवसर पर अपना प्रतिनिधित्व करन के लिए इलाहाबाद जाने को राजी कर लिया। उनकी दूसरी बेटी लीलामणि दिल्ली म विदेश विभाग म थी और उनका बेटा तथा पति हैदराबाद म। सयोग की बात है कि परिवार का कोई भी व्यक्ति इस समय उनके पास न था। 18 फरवरी को साम लेन म कठिनाई होने पर उन्हें आक्सीजन देनी पडी। 20 फरवरी का डा० विधान चन्द्र राय अपनी पुरानी मित्र को देखने लखनऊ आये जो उनक स्थान पर राज्यपाल बनी थी। हालाकि वह ठीक नही हो पायी फिर भी उनकी हालत म मामूली सा सुधार हुआ, लकिन—1 माच को उन्हें रक्त देना पडा। इसके बाद वह खूब सोयी और रात म देर से जगने पर उन्होने नस स गाने को कहा। जीवन भर उन्हें गीता पर प्यार रहा था। उनकी बेटी अपने बचपन की याद करके कहती है कि जब वह अधेरे म डरती तो ज़ोर ज़ोर से गाने लगती 'जीसस! मेरी आत्मा के प्रेमी, (जीसस! लवर ऑफ माई सोल)। उस रात किसी को मालूम न था कि अधेरा कितना समीप आ रहा है। वर्षों पहले शिमला सम्मेलन के अवसर पर इस पुस्तिका की लेखिका ने उनस पूछा था 'आपको क्या हुआ? और उन्हाने तत्काल फुर्ती स जवाब दिया था, 'मेरी बच्ची तुमको यह बताना मेरे लिए आसान होगा कि मुझे क्या नही हुआ है।' लेकिन बीमारी के बावजूद ज्या ही कोई उनके समीप आता था वे स्नेह स लबालब भरे हुए लप की तरह दीप्तिमान हो उठती थी। उसी मुद्रा म उन्हे देखकर मैंने मजाक म कहा 'जब तक आपके चारो ओर लोगा

का जमघट बना रहेगा तवतक न आप बीमार पडेंगी न मरेंगी ।" मुझे सपने म भी खयाल न था कि मेरी यह बात कभी भविष्य मे जाकर कितनी सही सिद्ध होगी ।

नस ने जब गाना बद किया तो वह बोली 'मैं चाहती हू कि मुझसे कोई बात न करे ।" बस यही उनके अतिम शब्द थे ।

लखनऊ म गोमती नदी के किनारे सरोजिनी नायडू का सादा-सा स्मारक है । उसके इद गिद विस्तत घास के मैदानो पर अब बच्चे खेलते हैं, उसकी सीढिया पर सटकर बैठे हुए प्रेमी आपस मे मद स्वर म बातें करते हैं और थके हुए नागरिक, तथा व्यस्त गृहिणी साझ पडे पल भर के विश्राम के लिए वहा चले जाते हैं । राजभवन के विस्तत बरामदा मे उनकी उत्तर प्रदेश की सतति ने उनके प्रति अतिम सम्मान प्रकट किया, भारत के नता इकटठे हुए और उनका परिवार उनके पास खडा रहा । वहा से लखनऊ के नागरिक उनके शव को राजकीय सम्मान के साथ यही लाये थे । उनकी अरथी के पास एक प्रधानमत्री और दो भावी प्रधानमत्री व्यथित चित्त से खडे हुए थे, और गवनर जनरल राजगोपालाचारी न शोकग्रस्त लागो को सात्वना प्रदान की थी । जिन लोगो न उनको अस्वस्थता और पीडा के बावजूद हमेशा इतनी प्रचुरता और स्पदनशीलता के साथ सजीव देखा था वे यह कैसे मान सकते थे कि काश्मीरी शाल और सु दर पुष्प-सज्जा के नीचे का शात शव उनका ही हो सकता है, लेकिन वह था उन्ही का शव भारत कोकिला का स्वर सदा के लिए मौन हो गया ।

3 माच 1949 को ससद म सरोजिनी को श्रद्धाजलि देते हुए प्रधानमत्री न एक लबे और हृदयद्रावक भाषण म कहा

"वह एक महान मेधावी, जीवनीशक्ति से परिपूण और मुक्त हृदय व्यक्ति थी वे बहुमुखी प्रतिभा की धनी थी, और इस सबने उन्ह पूणतया अनुपम बना दिया था । उन्होने अपना जीवन कवियित्री के रूप म शुरू किया और बाद म जब घटनाओ की विवशता ने उन्ह उनके सपूण उत्साह और तेज के साथ राष्ट्रीय आदालन मे घसीट लिया तो उनका समूचा जीवन एक कविता, एक गान बन गया और उन्होने वह आश्चयजनक काय कर दिखाया, जैसे राष्ट्रपिता ने राष्ट्रीय सघष को नतिक गरिमा प्रदान की थी ठीक उसी तरह उन्होने उसम कलात्मकता और काव्यात्मकता का समावेश कर

दिया। निस्सदेह, हम अनतकाल तक उनको स्मरण करते रहेंगे, लेकिन शायद हमारे बाद आने वाली पीढिया और व लोग जो उनके साथ नजदीक से जुडे नही रहे उस व्यक्तित्व की समद्धता को पूरी तरह नही पहचान पायेंगे जिस लिखित शब्दो और अभिलेखो म न पूरी तरह रूपातरित किया जा सकता है न तात्वातरित ही। इस तरह उ होने भारत के लिए काम किया। वे काम करना और खेलना दानो जानती थी और यह एक आश्चर्यजनक सयोग था। वे यह भी जानती थी कि महान प्रयोजना क लिए किस प्रकार आत्मबलिदान किया जाता है और वह भी इतनी शालीनता पूवक और महिमामय रीति स कि बलिदान भी सुगम लगने लगता था, तथा ऐसा न लगता था कि उसम आत्मा की व्यथा का किंचित भी समावश है जबकि उन जस सवेदनशील व्यक्ति के लिए उस मव म आत्मा का अत्यत व्यथित होना निश्चित है।

उसके पश्चात प्रधानमत्री ने सदन को स्मरण दिलाया कि वह भारत की एकता के प्रत्येक पक्ष उसक सास्कृतिक तत्व की एकता और उसके विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रा की एकता के समथन म भारत म अन्य किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा अधिक सन्नद्ध रही। यह एकता उनके लिए कामना बन गयी थी। वह उनके जीवन की बुनावट और उसका ताना-बाना बन गयी थी।"

अपने औपचारिक भाषण का बहुत असामान्य रीति स समाप्त करते हुए प्रधानमत्री ने सदन को बताया कि सरोजिनी अपन हजारा लाखा देशवासियो क उतनी ही समीप थी जितनी कि वह अपन सबधिया क निकट थी, और

अत इस सदन की ओर स हम वह सवेदना सदश भेजें पर वास्तव म स्वय हम सबकी ओर हम सबक हृदया की सात्वना क लिए भी उस सदश की उतनी आवश्यकता है।'

देश भर से राज्य विधानसभाओं मित्रा और साथियो की ओर स इसी प्रकार के सदश पीडित परिवार को प्राप्त हुए। डा० विधान चन्द्रराय न बगाल विधान सभा म अपन भाषण म उनक जीवन इतिहास का वणन किया और उन अनक महत्वपूण अवदाना का उल्लेख किया जो सराजिनी नायडू स भारतीय इतिहास को प्राप्त हुए। उन्होंने कहा कि इसके बावजूद, हमम स जिन लोगा को जीवन

मे उन्हें निकट से देखने का अवसर मिला वे जानते हैं कि सरोजिनी नायडू एक स्नेहसिक्त परिवार मे प्रिय पत्नी थी। परिवार के भीतर वह एक साथ नस, एक रसोइया और व्यथा के समय सवेदनशील व्यक्ति बन जाती थी। यह एक आश्चयजनक सयोग था। एक ओर वह स्वतत्रता सग्राम की सेनानी थी और उन्होने ब्रिटिश निरकुशवाद की पूरी चोट का सामना किया था, दूसरी ओर वह अत्यत कोमल थी उनम यह अदभुत गुण था कि जो कोई व्यक्ति उनके निकट सपक मे आता उसके साथ बहुत आत्मीयता का व्यवहार करती थी। उनके समान दूसरा व्यक्ति खोजना कठिन है। सरोजिनी नायडू अपने ढग की एक ही है। सभवत ससार भर म वह अकेली महिला थी जिसे एक बडे प्रात का भार सौंपा गया हो। मैं समझता हू कि ससार म रूस मे या सयुक्तराज्य अमरीका म कही भी राजनीतिक अथवा प्रशासकीय क्षेत्र मे इतना बडा भार किसी महिला को नही सौपा गया था।" और उनको श्रद्धाजलि देते समय डा० विधानचद्रराय ने अनजान मे ही भारत की महिलाओ को श्रद्धाजलि समर्पित की जो मानव जीवन के सर्वोच्च दायित्वो को वहन करना जानती है और साथ ही अपनी नारीसुलभ प्रकृति को कभी नही खोती। भारत के लिए यह सौभाग्य की बात है कि राजनीति और राज्य के प्रश्नो पर स्त्री-पुरुष भेद कभी नही पैदा हुआ न उनम समानता की ही होड मची। किसी तरह, और शायद सरोजिनी नायडू जैसी महिलाओ के कारण ही भारत की महिलाए पुरुषत्व धारण किए बिना ही मताधिकार स विभूषित हो गयी, क्योकि इन महिलाओ के नारीत्व, स्नहिल स्वभाव और उनकी कोमलता ने वह कठोर रूप धारण नही किया जो प्राय सावजनिक जीवन व्यक्ति पर लाद देता है।

यह बहुत उपयुक्त ही है कि भारत म सरोजिनी के जन्मदिन 13 फरवरी को महिला दिवस मनाया जाता है। यहा महिला दिवस इस जगत की कस्तूरबा सरीखी महिलाओ के जन्मदिन पर नही मनाया जाता जो सीता की तरह नारीसुलभ भक्ति की प्रतीक है वरन एक ऐसी महिला के जन्मदिन पर मनाया जाता है जो परिपूर्ण और प्रत्येक प्रकार से एक सपूर्ण महिला थी। उन्होंने कभी भी अपने नारीत्व के के साथ विश्वासघात नही किया, उनका हृदय एक विराट भवन था जिसम सबको शरण मिल जाती थी, उनके हृदय की करुणा उन्हे एक नारी के सामान्य जीवन से बाहर घसीट लाती थी तथापि उन्होंने कभी अपने परिवार का अपने स्नेह, सेवा

और भक्ति स वंचित नहीं किया, न उन्होंने एक उत्कट गृहिणी के तथाकथित लघु कत्तव्यों की ही अवहलना की। उन्होंन एक चमत्कारी ढग स दो असंभव धारा के बीच विराट शक्ति के साथ सामंजस्य स्थापित किया। उनकी महानता का एक प्रमुख तत्व उनकी यह अनुपम क्षमता थी कि वह जब जिस काम म लगती उसम पूरी तरह तन्मय हो जाती। व्यक्ति अथवा प्रयोजन क प्रति उनक इस सतत तत्काल समपण और तद्रूपता क कारण ही उनक काय व्यक्तियों और प्रयोजनों म जीवन फूक देते थ।

द्वितीय शिमला सम्मलन की दुगम समस्याओं क मध्य भी उन्होंन इस पुस्तक की लखिका क छोटे बेटे के बिस्तर क पास बठन का समय हर रोज निकाला। वह निमोनिया स पीडित था और लगभग अचेतनावस्था म था। उसस एक वष पहल वह हमार घर पर रही थी और उस समय मैं हर समय उनके साथ रहती थी। सरोजिनी नायडू प्रथम शिमला सम्मलन की बैठकों स लौटती और मुग्ध स्वर म आवाज देती 'वह बच्चा कहा है?' । इस वष वह खुशमिजाज छोटा बालक बीमार था और उसकी अपनी मरजी स बनी नानी भी अस्वस्थ थी। उसकी जर्जर काया को थपथपाकर वह चीखती 'उसकी छोटी छोटी बाहें कहा हैं?"। उस छोटी सी चारपाई क चारों ओर खड़े लोगों का मन उस समय भर आता था क्योंकि सरोजिनी जानती थी कि वह बच्चा जीवन और मौत के तराजू म झूल रहा था।

बम्बई राज्य सरोजिनी के लिए सबस अधिक अपना हो गया था, उसी की राजधानी बम्बई के सुन्दरबाई हाल म डा० राधाकृष्णन ने 7 माच, 1949 को एक शोकसभा की अध्यक्षता करत हुए कहा था 'उनका जीवन जितना हमारे देश के प्रति समर्पित था उतना ही ससार के कल्याण के प्रति भी समर्पित था। उन्होंने उस सबका परित्याग कर दिया था जो घृणा पैदा करता है और उस सबके लिए काय किया जो समीप लाता है और एकता स्थापित करता है। उनकी मेधा उनकी मुक्त सत्यप्रियता, उनकी कल्पनाशील प्रतिभा ये सब देश के हित के लिए समर्पित थी। उनके किसी भी काम या शब्द म घृणा अथवा कटुता नहीं होती थी। वह न कभी उत्तेजना पदा करती, न कठमुल्लापन दिखाती और न आलोचना करती थी। वह हमेशा न्यायपूण मित्रवत और दृढ रहती थी।' दाशनिक की तरह उन्होंन आगे कहा 'सभ्यता के युद्ध कभी अंतिम रूप से नहीं जीते जाते। उनम

से प्रत्येक म चद स्वर ही ऐसे होते है जिन पर यह निभर करता है कि युद्ध म विजय हुई या पराजय।'

सरोजिनी नायडू कहा करती थी कि "गाधी मेरा कन्हैया है और मैं उसकी नम्र वासुरी हू।' वासुरी वादक और वासुरी दोना ने मिलकर स्वाधीनता के सघष को प्रतिष्ठा और महानता प्रदान की, और यदि कही दाना म से कोई भी दूसरे के बिना ही होता तो शायद भारत का इतिहास कुछ और ही हाता। भारत के इतिहास को सराजिनी की देन अनेक प्रकार से अदश्य थी लेकिन वायु की तरह उसके जीवन के लिए अनिवाय थी। शायद दूसरी वाता से अधिक वह एक सह धर्मिणी थी, आध्यात्मिक रक्षक और जीवनकाप। यह एक एसी भूमिका है जिसके लिए प्राचीन हिन्दू समाज की मान्यता के अनुसार उच्चतम कोटि के जीव की आवश्यकता होती है। सचमुच गाधीजी के साथ अपने सम्पक साहचय द्वारा उन्होने आधुनिक भारत और उसके स्वाधीनता सग्राम को राष्ट्र के काय के प्रति आत्म समपण के माध्यम से यह महानतम नारी सुलभ सेवा प्रदान की।

सराजिनी नायडू जब छोटी बच्ची थी तब वह रात प्रति-रात स्वप्न देखती और कहती थी, 'मैंने ससार को बदलने के लिए क्या किया?' शायद यह तो कोई भी नही जानता कि उन्होने कितना किया, सच्चे मानवतावादी का काय कभी अभि-लेखा, टिप्पणिया और अभिलेखागारा तक नही पहुचता। वह इधर-उधर पन्नो म पडा रहता है लेकिन अधिकाशत वह उन लोगा के हृदया म ही पडा रह जाता है जो उनको जानत हो ता राष्ट्र की उपलब्धियो मे जो अनक लागा के सम्मिलित प्रयास का परिणाम होती हैं। वह अपने आपका कवयित्री गायिका कहती थी क्याकि सराजिनी नायडू अपनी प्रतिभा का, धरती पर मनुष्य की यात्रा की अल्पकालिकता को और उसकी उपलब्धियो की स्वरूपहीनता का भलीभाति समयती थी। वह अपने बचपन से ही यह बात भी जानती थी कि व्यक्ति आत्म-गौरव के लिए नही वरन अपनी शक्तिया को प्रतिभापूवक अभिव्यक्ति करन के काय करता है, भले ही वह शक्ति गान की हो या आत्मा की। सरोजिनी एक एभी महिला थी जिन्ह जीवन के अथ का बोध था इसीलिए उन्हाने हजारा लागा के हृदया और अपन देश के जीवन का अतुलनीय आभा और आह्लाद की भेंट प्रदान की।

उन्होने निजामत जग को लिखा था, "बहुत पहले जब मैं सपना म खाए रहन

वाली बालिका ही थी एक विश्वविख्यात व्यक्ति न सुझाव दिया था वही अपन क्षितिज का विस्तृत वणन करो और मानवजाति क दुख और सुख क साथ एकाकार हो जाओ तब तुम अमर कला का सृजन करोगी। उस व्यक्ति क लिए इन शब्दों म अधिक उपयुक्त और कोई स्मृतिलेख नहीं हो सकता जिसका क्षितिज समूचे ब्रह्माण्ड तक विस्तृत था और जिसका स्नेह ईश्वर की सृष्टि क छोट स छोट प्राणी पर भी बरसता था।

सरोजिनी नायडू का जीवन एक कलाकृति था। मृत्यु म वह अकेली थी लेकिन जीवन म वह समूची जीवसृष्टि क साथ थी और अपन जीवन म वह हमार संतो द्वारा निधारित कसौटी पर खरी उतरी   जगत म आत समय तुम रोत हो और जग हँसता है। ऐस जियो कि जब तुम जगत स जाओ तो तुम हँसो और जग रोए।